प्रकाशक और मुद्रक
जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

© सर्वाधिकार नवजीवन ट्रस्टके अधीन, १९५९

पहली आवृत्ति ३०००

स्व० जमनालालजीको

जब मै मूल गुजराती परसे अिस किताबका हिन्दी अनुवाद कर रही थी, तब मेरे पिताजी पू० जमनालालजी (जिन्हें हम काकाजी कहते थे) की पवित्र स्मृतिका मधुर वातावरण मेरे आसपास फैला हुआ था। पू० काकाजीको नित्य-नूतन स्थानोकी यात्रा करनेका और करानेका बडा शौक था। यात्राको वे शिक्षाका बडे महत्त्वका अग समझते थे। विदेशोमें भी अुनकी खास अिच्छा जापान जानेकी थी। लेकिन सारा समय हमारे देशके स्वतत्रता-सग्राममें जुटे रहनेसे वे अपनी अिस अिच्छाको प्रत्यक्ष रूपमें पूरी नही कर पाये।

अुन दिनो तो वे ब्रिटिश सरकारकी जेलकी चार-दीवारोंके भीतर ही विदेश-यात्राका मजा ले लेते थे।

पू० काकासाहबके लिअे अुनके दिलमें हमेशासे गहरा स्नेह था। काकासाहबके द्वारा की हुअी यात्राके अिस वर्णनानदको वे स्वय की हुअी यात्राके आनदके समान ही मान लेते। शायद अिसीलिअे आज यह जापान-यात्राका हिन्दी अनुवाद अुन्हीके स्मरणोंसे घिरा हुआ प्रकाशमे आ रहा है।

— ॐ

जिस साल स्व० जमनालालजी हिन्दी-साहित्य-समेलनके अध्यक्ष थे, अुनका और मेरा विचार था कि हम हिन्दीका सन्देशा लेकर पूर्व-अेशियाकी मुसाफिरी करे। लेकिन वैसा अुस समय हो नही पाया। अुन्हीकी लडकीके द्वारा किया हुआ मेरी जापान-यात्राका यह अनुवाद श्री जमनालालजीकी पवित्र स्मृतिको अर्पण करते मुझे दुगुना सतोष होता है।

— काका कालेलकर



राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली।

मार्च ३, १९५९
फाल्गुन १२, १८८० (श)

प्रिय बोस,

आशीर्वाद।

तुम्हारा २१ फरवरी का पत्र मुझे मिला। यह जानकर मुझे खुशी हुई कि काकासाहेब कालेलकर द्वारा जापान के सम्बन्ध में लिखित गुजराती पुस्तक का अनुवाद तुमने हिन्दी में किया है। उसका कुछ भाग जो तुमने जापान यात्रा पर जाने से पूर्व मुझे दिया था ~~और~~ उसे मैंने देखा भी था। आज हिन्दी में ऐसे साहित्य का बहुत अभाव है। वर्तमान युग में तो जबकि सभी देश एक दूसरे के इतने नज़दीक आ रहे हैं, यह आवश्यक हो गया है कि जनता दूसरे देशों के सम्बन्ध में कुछ जानकारी पा सके और हमारे सम्बन्ध दूसरे देशों से बढ़ें, हम लोग वहां की संस्कृति के बारे में कुछ जानें और सीखें। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यह पुस्तक जिसका नाम तुमने 'सूर्योदय का देश' रखा है प्रकाशित होने जा रही है। तुम्हारा यह प्रयास सफल हो और इसी प्रकार भविष्य में भी तुम्हारी रुचि ऐसी ऐसी पुस्तकों के लिखने में बढ़े। तुम्हें मेरी बधाई और आशीर्वाद है।

तुम्हारा,

राजेन्द्र प्रसाद

समभावी अनुवादिका

हमारी भाषामें स्वदेशके या परदेशके प्रवास-वर्णन बहुत कम हैं। अगर भारतीय जीवनको परिपुष्ट करना हो तो भारतवासियोको प्रवास, अध्ययन और सेवा द्वारा अपना विश्व-परिचय और विश्व-समभाव बढ़ाना ही चाहिये। भारतकी परिस्थिति भी कहती है कि जो चीज भारतकी अेक भाषामें प्रकट हुअी हो वह यहांकी दूसरी भाषाओंमें भी प्रकट होनी चाहिये। यह आसानीसे हो भी सकता है।

प्रवास-वर्णन — खास करके परदेशका प्रवास-वर्णन — जितना समृद्ध हो सके अुतना अच्छा ही है। किन्तु आजकी प्राथमिक अवस्थामें सामान्य प्रवासानन्दकी पुस्तकें ही ज्यादा लाभदायक होंगी।

मैंने जापानकी यात्रा दो बार की। अिस यात्रामें जापानका जो प्राकृतिक सौंदर्य और जापानी जीवनका जो माहात्म्य मैं देख सका, अुसका कुछ प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करनेके लिअे मैंने 'अुगमणो देश — जापान' नामक गुजराती-पुस्तिका लिखी। अिसके हिन्दी अनुवादके लिअे मुझे ओम्‌का ध्यान आया। अुसने भी अुसे स्वीकार किया। अिससे मुझे बड़ी खुशी हुअी।

चि० अुमाका असल नाम है ओम्। स्व० श्री जमनालालजीने अपनी लडकियोंके नाम कमला, मदालसा और ओम् रखे। अुसमें अुनकी आध्यात्मिक अभिलाषा और साधनाकी मंजिलें पायी जाती हैं। चि० ओम्‌के बचपनसे — करीब जन्मसे ही मुझे अुसका परिचय है। और अुसके सुन्दर विकासका मैंने कदम कदम पर निरीक्षण भी किया है। अुसके बचपनमें बंबअीके समुद्र-किनारे पर, आमके पेडोंमें बैठे हुअे कोयलोंके शब्दका अनुकरण करनेमें मैंने ही अुसे प्रोत्साहन दिया था।

माता-पितासे जैसे अनेक अुत्तम सस्कार ओम्‌ने पाये, वैसे ही पिताके सेवा-समृद्ध जीवनके कारण हिन्दी, मराठी, गुजराती — तीनो भाषाओंका

अुत्तम परिचय भी ओम्‌ने पाया। जब अिन भाषाओंमें वह बोलती है, तब अुस भाषाके स्वारस्यसे तद्‌रूप हो जाती है। भारतमें फैली हुअी आजकी भाषिक संकीर्णताके दिनोंमें यह विशाल आत्मीयता सचमुच अेक राष्ट्रीय लाभकी बात है। आजकल जिन लोगोंने भारतकी सब भाषाअें अपनायी हैं, अुनके द्वारा ही भारतकी अेकता, स्वतन्त्रता और सेवा-योग्यता मजबूत होनेवाली है। श्री जमनालालजी और श्री विनोबा जैसोंके पाससे अिन बच्चोंने अेक कीमती विरासत पाअी है।

मेरे प्रवास-वर्णनका अनुवाद करनेका अुत्साह ओम्‌ने दिखाया, अिससे मुझे परम संतोष हुआ। थोड़ा अनुवाद सुनाते समय ओम्‌ने जो शब्दचर्चा मेरे साथ की, अुससे अुसकी साहित्यिक अभिरुचिकी नजाकतका मुझे परिचय हुआ।

पश्चिमकी ओर यात्राके लिअे प्रस्थान करनेके कारण अिस पूर्वकी यात्राके वर्णनका अनुवाद मैं पूरा सुन नही सका। लेकिन अुसकी तनिक भी जरूरत नही थी। चि० ओम्‌को और अुसके अिस सुन्दर अनुवादको मैं अपने हार्दिक शुभ आशीर्वाद देता हू।

नअी दिल्ली, काका कालेलकर
५–६–'५८

पंचामृत

जापान देशमें — जिसका असली नाम निप्पोन अथवा नीहोन है, मैं दो बार हो आया हू। पहली बार गया था तीन वर्ष पूर्व १९५४ के अप्रैलमें, दो सप्ताहके लिअे। और दूसरी बार, पिछले साल जुलाअी-अगस्तमें, लगभग चार सप्ताहके लिअे गया था। पहली बार मैं वहाकी विश्वशाति परिषद्के लिअे गया था। अुसकी कुछ बातें अेक छोटी-सी डायरीमें लिख रखी थी। अुनके आधार पर अिस देशका विस्तृत वर्णन लिखनेकी अिच्छा थी। गाधी-स्मारक-निधिको अुस प रपद्की रिपोर्ट भी देनी थी। लेकिन दूसरे कर्तव्योके सामने यह सब रह गया। अिस बार मैं अेटम-बम और हाअिड्रोजन बमके प्रयोगोंके विरुद्ध दुनियाका पुण्यप्रकोप प्रकट करने और पृथ्वी पर सेनाओका भार हलका करनेके विषयमें प्रबल और प्रमत्त राष्ट्रोसे विनती करनेके लिअे होनेवाली परिषद्में भाग लेनेके निमित्त गया था। अिस बारकी यात्राका वर्णन भी गुजरातकी जनताके सामने लिखकर पेश करनेका काम रह ही जाता। लेकिन चि० सरोज ा अस बार मेरे साथ जापान न आ सकी थी, अिसलिअे मैं वहासे अुसे नियमित पत्र लिखता रहा। अुनमें यह वर्णन विस्तारके साथ और पुराने अनुभवोको जाग्रत करनेवाली व्यक्तिगत भावनाओके साथ सुरक्षित रहा। आखिरी प्रकरणकी बातें चि० सतीशको लिखे गये पत्रसे ली गअी है।

ये सब पत्र अिकट्ठे करके और मेरे साथ गअी हुअी मजुलाकी डायरीमें से थोड़ी बातें चुनकर कुछ परिवर्तन और परिवर्धनके साथ यह पुस्तक तैयार की गअी है।

पहली बार हमने टोकियोसे दक्षिणका जापान देश ठेठ कुमामोतो तक देखा था। अुत्तरका भाग अनदेखा ही रह गया था। अिस बारकी यात्रामें ठीक अुत्तरके किनारेसे लेकर ठेठ दक्षिणके किनारे तकका सारा जापान देश देखनेका मैंने निश्चय किया था। लेकिन पहली यात्रामें जो महत्त्वके स्थान देख लिये थे अुन्हें अिस बारके प्रोग्राममें नही रखा जा सका। अिसलिअे अिस बारका वर्णन अिस हद तक अधूरा रहता।

यह बात भी खटकने लगी कि जापानके अिस वर्णनमें क्योतो और नारा जैसे संस्कार-धाम रह जाये, हिरोशिमाके बलिदानका वर्णन न आवे, आसो जैसे ज्वालामुखीके रोमांचकारी दर्शनसे यह पुस्तक वंचित रहे और कुमामोतो शहरका तथा वहाके शांति-स्तूपका अुल्लेख भी न आवे, तो यह अिस वर्णनकी अेक बड़ी कमी ही मानी जायगी। आखिर चि० सरोजने हिम्मत की और अुस छोटी-सी डायरीके चौदह दिनके पृष्ठोंसे हम दोनोंने अपनी स्मरण-शक्ति ताजी करके अुस पुरानी यात्राका वर्णन लिख डाला। जसे-जैसे लिखते गये वैसे-वैसे कअी पुरानी चीजें मानो कल ही की हों असी लगने लगी। तब मैंने फिरसे अनुभव किया कि मनुष्य अपनी विस्मरण-शक्ति पर भी कभी विश्वास नही रख सकता। देखते-ही-देखते यह यात्रा-वर्णन तैयार हो गया; और नअी यात्राकी अिस पुस्तकका अग्रभाग बननेका हकदार भी बना।

पिछले १५–२० वर्षोंकी लगभग सभी छोटी-बड़ी यात्राओंमें चि० सरोज मेरे साथ रही है और देश-दर्शनके अिस आनन्दमें अुसने अुत्साहसे भाग लिया है। अिसलिअे तीन वर्ष पहलेकी अिस यात्राके सस्मरणोंको ताजा करनेमें अुससे बड़ी मदद मिली।

* * *

हमारे देशमें यात्रा-वर्णनकी पुस्तकें बहुत थोड़ी लिखी जाती हैं। विदेश-यात्राओंके वर्णन तो हमारे यहा नहींके बराबर हैं। अैसी स्थितिमें केवल यात्रा-वर्णनोंमें ही रस पैदा करना हो तो वह-विविध प्रकारकी अैतिहासिक और वैज्ञानिक जानकारीसे भरा हुआ नही होना चाहिये। सामान्य मनुष्य स्वाभाविक कुतूहलसे जितना देखता है और जिस तरहका आनन्द मना सकता है, अुतना ही यदि दे दिया जाय तो पढनेवालेको खुद सफर करनेका कुछ हलका-सा आनन्द मिल सकता है। अुसके बाद मौका मिलते ही वह खुद सफरको निकल पड़ेगा। और यदि असा न हो सके तो वह कमसे कम अुम देशके विषयमें जरूरी और महत्त्वकी बाते बतानेवाली पुस्तकें तो पढ़ेगा ही।

थोडी जानकारी देनेवाली और सरल वर्णन करनेवाली जिस दृष्टिके बारेमें मैंने अूपर कहा है वह दृष्टि अब पश्चिममें भी स्वीकार

की जा रही है। लेकिन वहां अिसका कारण बिलकुल अुलटा है। पश्चिमके लोग पिछले १००–२०० वर्षोंमें सारी दुनियाका प्रवास कर चुके हैं। अुन्होंने प्रत्येक देशकी रग-रगकी अैतिहासिक, भौगोलिक और जनपदीय अितनी सारी जानकारी अिकट्ठी की है कि हर देशके लोगोंको अपने देशके विषयमें जाननेके लिअे भी पश्चिमके लोगोंकी लिखी हुअी पुस्तकें ही देखनी पड़ती हैं। अिस तरह प्रत्येक देशके विषयमें शुद्ध और सबल जानकारीसे भरी हुअी भारी-भरकम पुस्तकें वहा अितनी अधिक सख्यामें तैयार हुअी हैं कि पाठकोंको अुनका अपच हो जाता है और वे सरल किताबोंके लिअे तरसते हैं।

अिस नअी दृष्टि अथवा वृत्तिके लिअे अेक दूसरा भी कारण है। आज तककी दुनियाका गठन प्रत्येक देशके प्रतिष्ठित लोगोंके हाथोंसे हुआ है। जिस तरह सारे महाभारतमें केवल ब्राह्मण और क्षत्रियोंका ही वर्णन आता है, अुसी तरह दुनियाके साहित्य तथा अितिहासमें अधिकतर अूपरके दस प्रतिशत लोगोंके ही पुरुषार्थका वर्णन किया जाता है। अब पिछले १०० वर्षोंसे सामान्य जनताके लोकयुगका प्रारम्भ हुआ है। अिसलिअे जिसका राजनीति, अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्रके साथ अधिक सम्बन्ध नही है, लेकिन जो केवल जीती है, प्रेम करती है और आनन्दसे रहती है अैसी जनताके जीवनमें ही आजके नये पाठक रस लेने लगे हैं। वे कहते हैं कि रूसके साम्यवादके पक्षमें या विरोधमें लिखे हुअे लम्बे-लम्बे प्रवचनोंको सुनकर तो हम तंग आ गये हैं। रूसकी सामान्य प्रजा कैसे जीती है, कैसे श्रम करती है, कैसे नाचती है तथा गाती है, बस अितना ही जाननेके लिअे हम अुत्सुक हैं। अिस तरहकी जिज्ञासाको संतुष्ट करनेवाली पुस्तकें सब जगह ढेरों बिकती हैं और पढ़ी जाती हैं।

और मैं तो मानता हू कि शिक्षित समाज तथा सामान्य जन-समाज जिन पर आधार रखता है तथा जिनसे हमारा श्वास चलता है और हमें पोषण मिलता है, वे पृथ्वी, जल और आकाश भी मनुष्यकी जिज्ञासाके प्रधान विषय होने चाहिये। और सृष्टिके अिस पोषण पर जीनेवाले पशु-पक्षी, कृमि-कीट, मछलिया और छोटे-मोटे कीड़ोंवाले शख और अिन सबको आधार देनेवाले वृक्षों तथा वनस्पतियोंको भी हम अपनी जिज्ञासासे

वचित कैसे रख सकते हैं? जीवन यानी अखण्ड जीवन! अुससे कुछ भी वहिष्कृत नही होना चाहिये।

मनुष्यने अपनी मति और वृत्तिके अनुसार छोटे-वडे अनेक पाप पैदा किये है तथा अुनको पोसा है। लेकिन सबसे बड़ा पाप है—अेकागिता। अिस अेकागिताके कारण मनुष्यके अनुभवमें और विचारोमें प्रमाण-वद्धता नही रहती। कोअी आदमी किसी सभा अथवा समारम्भकी वात करते हुअे यदि दरवाजे पर देखे हुअे जूतोका ही वर्णन करने लगे तो हम अनुमान लगा सकते है कि वह वर्णनकार या तो धन्धेसे निरा चमार होगा अथवा जूते सुधारनेवाला मोची। और यदि कोअी दूसरा आदमी अुसी समारम्भके केवल अध्यात्मका ही वर्णन करने लगे तो हम पहचान सकते हैं कि वह कोरा तार्किक पडित ही होगा। हम तो चाहते हैं जीवन-परायण, जीवनानन्दी और जीवनोपासक लेखक! जीवनके सारे पहलुओको सप्रमाण व्यक्त करना ही नये साहित्यका आदर्श होना चाहिये। यदि हम भविष्यके साहित्यको अिस दिशामें मोड सकें, तो भी वह शुभ मगलाचरण कहलायेगा।

जापानके विषयमें लिखनेको तो वहुत है। अेशियाकी पुनर्जागृतिके अिस जमानेमें अेशियावासियोको अेक-दूसरेका गहरा परिचय प्राप्त करना चाहिये। और अिस परिचयके द्वारा मिलनेवाले अिस जीवनानन्द और मानवानन्दको विकसित करना चाहिये। मेरी यह पुस्तक वहुत हुआ तो भोजनके प्रारम्भमें स्वाद जाग्रत करनेके लिअे दिये जानेवाले पेयके जैसी, अर्थात् पचामृत (appetizer) जैसी ही है।

गुजरातकी जनता पुरुषार्थी है। अुसकी महत्त्वाकाक्षा अब अनेक दिशाओमें जाग्रत हुअी है। व्यापार और अुद्योगके लिअे साहस करनेकी वृत्ति तो अिसकी रगोमें पहलेसे ही है। भारतके युवकोको अब जापान, चीन व कम्बोडिया जैसे पूर्वके देशोकी वारम्वार यात्रा करनी चाहिये। आजकलके नये साहित्यकार देश-देशान्तरोकी 'जमीन और जनता' के वारेमें, भारतकी अपनी दृष्टिसे लिखे हुअे वर्णनोको अिस अुदीयमान पीढीके सामने रखें यह वहुत जरूरी है।*

काका कालेलकर

* मूल गुजराती आवृत्तिकी प्रस्तावना।

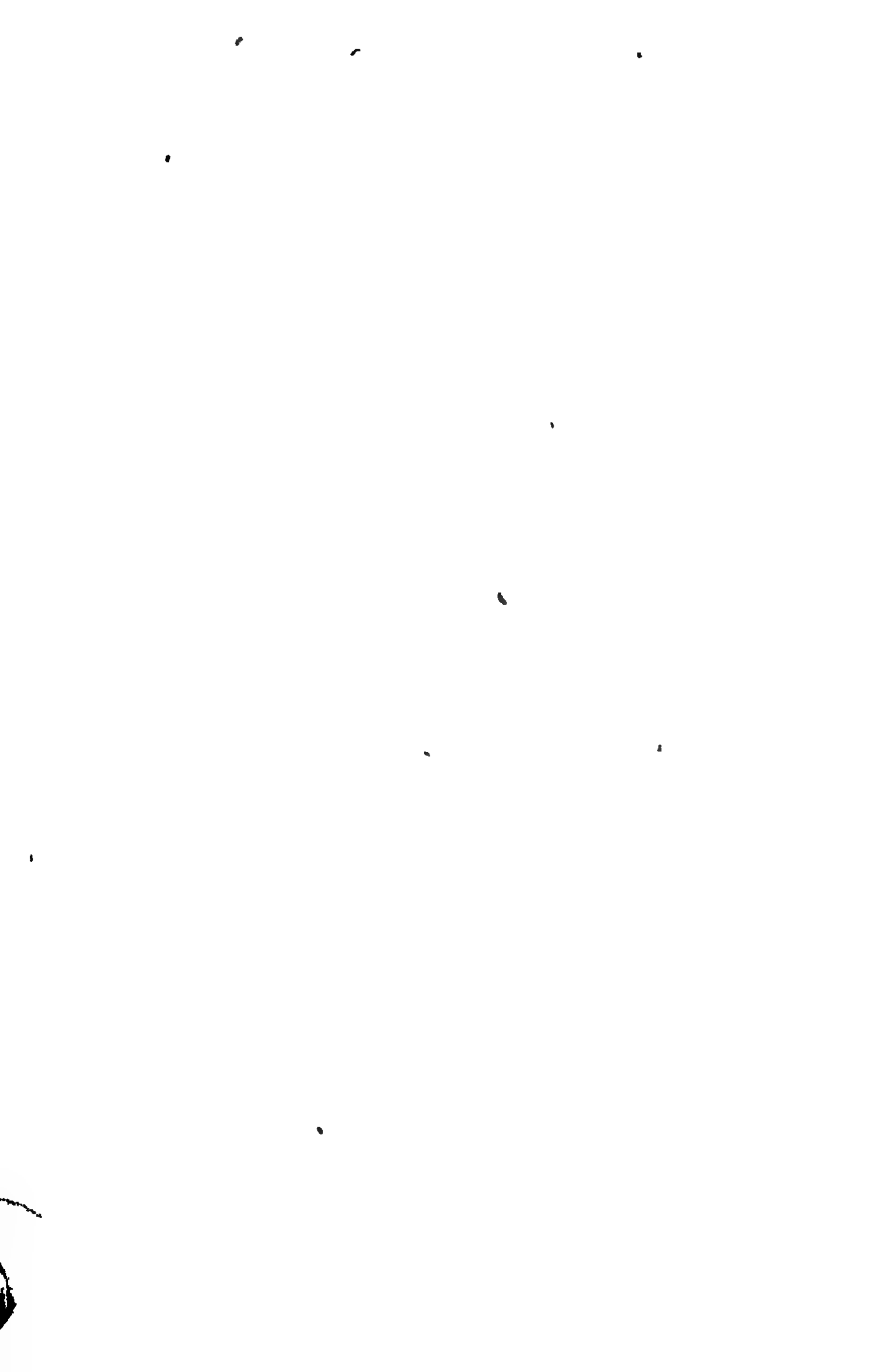
अनुक्रमणिका

पहली यात्रा — १९५४

दूसरी यात्रा — १९५७

सूर्योदयका देश

पहली यात्रा — १९५४



१

जापान बुलाता है

मैं कअी वर्षोंसे कहता आया हूं कि मेरी दुनियाके सारे देश देखनेकी अिच्छा है; लेकिन जापान व अमरीका देखनेकी खास अिच्छा नहीं होती। कोअी देश जितना अधिक पिछड़ा हुआ, अविकसित अथवा अुपेक्षित हो अुसकी ओर मेरा अुतना ही अधिक आकर्षण होता है। अुसके विषयमें मैं बहुत-कुछ जानना चाहता हूं। अुनके पास अपनी विशिष्ट प्रकृति तो होती है। लेकिन जापान और अमरीकाके विषयमें कुछ अैसा खयाल बन गया था कि ये दोनों देश अुधारी पूजी पर ही आगे बढे हैं। अिनके पास अपना मौलिक या गभीर कुछ नही हैं। जो कुछ भी है, लिया हुआ है, पैदा किया हुआ नही है। अिसलिअे अिन देशोंके लोग छिछले और अभिमानी होने चाहिये। अुनकी सस्कृति अथवा सम्पन्नता टिकते-टिकते भी कहा तक टिकेगी? घासकी ज्वाला भडक कर जलती है, किन्तु अल्पजीवी होती है। दूसरी ओर, लकडिया धीरे-धीरे जलती है पर वे सारी रात जल सकती हैं. . अित्यादि।

पर अब मैं देखता हू कि अिस विचारमें अुतावलापन था, दीर्घ दृष्टि नही थी। अुधार पूंजी लेनेवाले भी यथासमय मौलिकताका विकास कर सकते हैं और विशिष्टता प्रगट कर सकते है। खानदानियत तो अनुभव और समयकी अुपज है। मुरब्बा जिस दिन बनता है अुस दिन कच्चा ही होता है। श्रद्धा और धीरज रखनेसे ही वह तैयार होता है। मधु-मक्खियोंके शहदके बारेमें भी अैसा ही है।

मुझे अपने-आप तो जापान जानेका शायद ही सूझता। कहते हैं कि जापानके गुरुजी निचिदात्सु फूजीअी जब गाधीजीसे मिलने सेवाग्राम जा रहे थे तब मुझे ट्रेनमें मिले थे। स्वाभाविक जिज्ञासासे मैंने अुनके साथियोंसे कअी सवाल पूछे होंगे। पर मैं तो यह सब भूल गया था। अुसके बाद अुनके शिष्य अेकके बाद अेक सेवाग्राम आश्रममें आकर रहने लगे। चमड़ेका पखा बजाकर 'नम् म्यो हो रेगे क्यो' की प्रार्थना

करनेका तो अुनका नित्यका नियम था। आश्रमका प्रतिदिनका सौंपा हुआ कार्य वे बड़ी लगनसे करते और बाकीके वक्त अपनी चित्र-विचित्र लिपिमें लिखते रहते। जो कोअी भी मिलता अुसे प्रसन्नतापूर्वक नमस्कार करते। आश्रम-जीवनके दरम्यान अिन लोगोंने किसी तरहकी कोअी मांग नहीं की, न कभी किसीकी शिकायत की अथवा किसी तरहकी टीका-टिप्पणी ही की। वे तो बस काम करते, लिखते और हंसकर सबको नमस्कार करते। प्रार्थनाके पहले पखा बजाकर मंत्र बोलते और माथा टेककर प्रणाम करते।

अिन लोगोंकी कार्य-तत्परता, अिनका मेहनती स्वभाव और अिनका प्रसन्न संयम — अिन तीनोंका गांधीजीके मन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। युद्ध प्रारम्भ होने पर जापान राष्ट्रके ब्रिटेन-विरोधी दलमें शामिल होते ही भारतकी अंग्रेजी सरकारने आश्रमवासी जापानी साधुओंको गिरफ्तार कर लिया। आश्रममें से ये साधु अिस तरह गये अिसलिअे गांधीजीने अुनकी यादगारमें और अुनके सम्मानमें अुनका मंत्र आश्रमकी प्रार्थनामें सम्मिलित किया।

जापानके विषयमें मैंने पहले-पहल अट्ठारह सौ चौरानवेमें अपने बचपनमें सुना था। अुस समय जापानने चीनके साथ युद्ध करके विजय प्राप्त की थी। और अिससे पश्चिमके राष्ट्र जापानकी कदर करने लगे थे। अिसके बाद जापानकी बहुत ही सस्ती-सस्ती चीजें भारतमें आने लगीं। सन् अुन्नीस सौ चारमें रूस और जापानके बीच युद्ध छिड़ा। ये हमारे स्वदेशी हलचलके दिन थे। जापानकी विजयसे हम खुश हुअे। जापान अेशियाके गुरु-स्थान पर पहुंच गया। और हम अंग्रेजी मालकी जगह स्वदेशी मालकी जैसी भक्तिसे ही जापानी माल लेने लगे। हमारे कुछ विद्यार्थी जापान हो आये। दो कुशल जापानी मजदूरोंकी मददसे तलेगांवमें सार्वजनिक पैसे-पैसेके चन्देसे अेक कांचका कारखाना खोला गया। फिर तो लोग कहने लगे कि अपने देशमें कांचका कारखाना — यह तो अेक नया अवतार ही है।

अब शिन्टो, मिकाडो, बुशीडो, सामुराअी, हरिकेरी, जिनतान वगैरा जापानी शब्द लोगोंके कानोंमें पड़ने लगे। जापानकी सैनिक

बहादुरीके विषयमें हम अभिमान व्यक्त करने लगे। मारक्विस अीटो, अेडमिरल टोगो, जनरल कुरोकी, मार्शल ओयामा वगैरा सैनिक और राजनीतिक नेताओंके नाम हमें अैसे लगने लगे मानो वे हमारे घरके ही हों। पोर्ट आर्थरका किला, मुकडेनकी रणभूमि और सुशीमाकी खाडी, ये तीनों तो अेशियाके भाग्योदयके पुण्य-क्षेत्र ही बन गये।

पिछले महायुद्धमें जापानी लोग सिंगापुर और मणिपुर तक पहुंचे थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बोसने अुनके साथ सहकार किया था। आगे चलकर हिरोशिमा और नागासाकीमें पश्चिमके गोरोंकी संस्कृति और हमारी अेशियाअी संस्कृतिके बीचका सम्बन्ध स्पष्ट हुआ। जापानके विषयमें जो कुतूहल व आदरकी भावना थी वह अब सहानुभूतिमें बदल गअी। पर्ल हार्बर पर घातकी हमला करनेका जापानका कदम सभीको विचित्र लगता था। परन्तु पश्चिमके लोगोंने हमारे यहां अिन तरहके दगाबाजीके कृत्य न किये हों, अैसा नहीं है। अिसलिअे अिस घातकी कृत्यके विषयमें पश्चिमके लोगोंका रोष समझमें आना जरा कठिन था। मनमें तो यही लगता था कि शायद जापानके पक्षमें भी कोअी बचाव होगा, जिसे हम नहीं जानते। खैर, हिरोशिमा और नागासाकीके बाद तो जापानके विरुद्ध कुछ कहनेको जी नहीं चाहता था।

युद्ध समाप्त होने पर आश्रममें रहे हुअे अेक बौद्ध साधु आनन्दा मारुयामाका जापानसे पत्र आया कि अुनके गुरुजी गांधीजीके विचारोंका प्रचार करनेके लिअे अेक प्रदर्शनी कर रहे हैं। अुसके लिअे मैं गांधीजीका साहित्य और तसवीरें आदि कुछ सामग्री भेजूं। मैंने यह खुशीसे किया। बादमें सुना कि गुरुजी विश्व-शांतिके लिअे जापानमें जगह-जगह स्तूप-पेगोडाकी स्थापना करना चाहते हैं। मैंने अुन्हें लिखा कि जापानकी परिस्थितिमें भले ही अिस कार्यकी आवश्यकता व अुपयोगिता हो, लेकिन मेरे मनमें तो न अिसके लिअे विश्वास है और न अुत्साह है।

गुरुजीके शिष्योंने अुनके शांति-स्तूपोंके बहुतसे चित्र मुझे दिखाये। स्तूपोंकी आकृति और आसपासके प्रदेशको देखते हुअे वे सचमुच सुन्दर कलाकृतियां थीं। फिर भी विश्व-शांतिके आदर्शको जनता तक पहुंचानेकी अुनकी शक्ति अथवा अुपयोगिताके विषयमें तो मनमें शंका बनी ही रही।

जापानमे जिस बौद्ध-धर्मका प्रचार है वह महायान है। यह मैं जानता था। अिसलिअे पेगोडाके लिअे अुनका पक्षपात मुझे आश्चर्यजनक नहीं लगा। ब्रह्मदेशके हिनयानी — यानी थेरवादी बौद्ध भी जब नये-नये पेगोडे खडे करते है, तब वे सनातन वृत्तिवाले महायानी तो करेंगे ही।

अिसी बीच जापानमें शातिवादियोकी विश्व परिषद्का होना निश्चित हुआ। गुरुजीका निमत्रण आया कि मुझे अिस परिषद्के लिअे जापान जरूर आना चाहिये। वे तो यह भी चाहते थे कि मैं अिस परिषद्के बाद जापानमें महीने दो महीने गाव-गाव घूमकर अुनकी शाति-प्रवृत्तिमें सहायता दूं और खास कुमामोतोमें स्थापित होनेवाले सबसे बड़े शाति-स्तूपके अुद्घाटनके अवसर पर भी अुपस्थित रहूं।

जवाबमें मैंने कहलवाया कि पिछड़े वर्गोकी जांचके कमीशनका भार मेरे सिर पर है अिसलिअे नही आ सकूगा। महीने-दो-महीनेका वक्त निकालना तो असम्भव ही है।

अुनकी फिरसे चिट्ठी आअी कि यदि आप आठ-दस दिन भी निकाल सके तो अवश्य आअिये। हम आपकी जापानमें रहनेकी व्यवस्था तो अपनी ओरसे करेंगे ही साथ ही जापान-यात्राका अेक तरफका खर्च भी आपको देंगे जो हम किसी दूसरेको नही देते हैं। अुन लोगोने गाधी स्मारक निधिको भी लिखा कि हमारी शाति परिषद्में आपके किसी प्रतिनिधिका होना आवश्यक है। निधिने मेरा और श्री भारतन् कुमारप्पाका नाम पसन्द किया। परिषद्-वालोने मुझे अेक विशेष आग्रहपूर्ण निमन्त्रण तारसे भेजा तथा अुसमें अेक वाक्य यह भी जोड़ दिया — "We consider you to be the backbone of the Conference." प्रशंसा सुनकर अेकदम फूल अुठनेवाला तो मैं कभी था ही नहीं, अिसलिअे यह वाक्य व्यक्तिगत रूपसे मेरे लिअे ही है अैसा समझनेकी भूल तो मैं कैसे करता? गाधीजीका अुपदेश और भारतकी अहिंसक लडाअीकी प्रतिष्ठाके कारण जापानमें जो आशा बंधी थी वही अिसमें व्यक्त हो रही थी।

अितने आग्रहके बाद जापान गये बिना छुटकारा न था। पिछले युद्धके अन्तमें अमरीकाने शातिकी जो शर्तें जापान पर लादी थी, अुनमें

मुख्य यह थी कि जापान अबसे लडाओके लिअे सेना नहीं रखेगा। पराजित राष्ट्र अिस अपमानको पी गया। अुसने केवल भीतरी शातिके लिअे ही जरूरी सेना रखकर सतोष किया।

परन्तु कालका चक्र पलटा। अमरीकाको अब रूस व चीनका डर पैदा हुआ और अुनके विरुद्ध जापानको सशस्त्र करनेकी जरूरत महसूस हुअी। अमरीकाने राज्यका जो संविधान जापान पर लादा था अुसमें जरूरी हेर-फेर किये बिना जापान सशस्त्र नही हो सकता था। खुद लादे हुअे संविधानको अब बदलनेकी सूचना अमरीकाने जापानको दी। जापानके शांतिवादियोने अिसका विरोध किया। गुरुजी निचिदात्सु फूजीअी मूलमें तो साम्राज्यवादी थे और जापान द्वारा सारी दुनियामें बौद्ध-धर्म फैलानेकी महत्त्वाकाक्षा भी रखते थे। लेकिन महायुद्धमें हारनेके बाद और हिरोशिमा व नागासाकीके अनुभवोंके बाद गाधीजीसे सुनी हुअी अहिंसाकी नीति अुनके गले अुतरी। अुन्होंने प्रचार शुरू किया, "अमरीका द्वारा लादी हुअी नि.शस्त्रीकरणकी नीति सचमुच अीश्वरके आशीर्वादके समान है। अब अिसे नही छोडना चाहिये।" चारो ओर अुन्होने यही प्रचार चलाया। अिस काममें वे भारतकी सहानुभूति चाहें यह स्वाभाविक था। अिसीसे अुनका आग्रह था कि मैं विश्वशाति परिषद्में अुपस्थित रहू।

सोच-विचारके बाद सारा हिसाब लगाकर मैंने जापानके लिअे चौदह दिन निकालनेका निश्चय किया। और आते जाते रास्तेमें किसी भी देशको देखनेके लिअे नही ठहरूंगा अैसा संयम भी अपने लिअे निर्धारित कर लिया। मेरे आने-जानेका हवाअी-खर्च तो गाधी स्मारक निधिने दिया और जापानमें रहनेका खर्च वहींके लोगोने किया।

अिस तरह मेरी पहली जापान यात्राकी योजना बनी और सन् अुन्नीस सौ चौवनके मार्चकी २९ तारीखकी दोपहरको चि० सरोजके साथ मैंने भारत छोड़ा। भारतन् बादमें आनेवाले थे।

पिछले पन्द्रह-सोलह वर्षोंसे चि० सरोज लडकीकी तरह ही मेरे साथ रहती आअी है। मेरा लेखन और दूसरा सब काम भी वही संभालती है। अिसलिअे अुनका मेरे साथ जापान जाना स्वाभाविक था। अुसने अपने खर्चसे जानेका निश्चय किया और हम कलकत्तेसे चल पड़े।

२

विश्व-शांतिकी खोजमें

हम कलकत्तेसे २९ मार्चकी दोपहरको चले और शामको रगून पहुंचे। हमारा हवाअी-जहाज रातके सफरमें विश्वास नही करता था, अिसलिअे हमें अेक रात ब्रह्मदेशमें वितानी पड़ी। रातको हमारे रहनेका प्रवन्ध स्ट्रेंड होटलमें था। मित्रोने जिन लोगोको हमसे मिलनेके लिअे पत्र व तार भेजे थे वे अुन्हें नही मिले थे। अिसलिअे हमें जरा निराशा हुअी। लेकिन अिसी वीच श्यामजी प्रेमजी कम्पनीके श्री हरकचन्द भाअी हमें होटलमें मिले। पहले तो वे हमे घूमने ले गये। फिर अुन्होने ही वहाके प्रसिद्ध भाअी सीतारामजी (अेकाअुन्टेंट) को फोन करके वुलाया। अुन्हीके साथ हमने ओरिअेन्टल क्लवमें वैठकर सरोवरकी शोभा देखी। अुसके वाद हम भाअी रशीदके यहा गये। भाअी रशीद मूल भारतीय हैं। ब्रह्मदेशमें जाकर वही शादी करके अुन्होने वहाकी नागरिकता स्वीकार कर ली है। आज वे वर्मी सरकारमें मन्त्री-पद पर हैं। अुन्होंने वर्मी सरकारका पूरा विश्वास प्राप्त किया है और वे ब्रह्मदेशकी स्व-राज्य सरकारकी अुत्तम सेवा कर रहे हैं। अुन्हीके यहा हमें श्री और श्रीमती सलाहुद्दीन तैयवजी मिले। चि० रेहाना और सरोजकी वजहसे वे दोनो हमारे लिअे घरके जैसे ही थे। अुनसे अचानक मुलाकात हो जानेसे हमे वडी खुशी हुअी। वे भी वड़े खुश हुअे। भारत और ब्रह्मदेशके विपयमें अुनके साथ वहुत-सी वातें हुअी। प्रधान मत्री अू नू ने वौद्ध-धर्म-ग्रन्थके नव सस्करणके लिअे दो वर्ष तक चलनेवाली सगीति (परिपद्) वुलाअी है, यह चर्चाका मुख्य विपय था। सारे वौद्ध जगतके लिअे यह परिपद् वड़े महत्त्वकी थी।

रगूनसे सुवह वहुत जल्दी अुठकर हमे हवाअी अड्डे पर पहुचना था। सारे दिनका हवाअी सफर करके हम ठेठ शामको साढे सात वजे टोकियो पहुंचनेवाले थे। वहा जाते ही स्नान नही हो सकेगा अिसलिअे

आधी रातको करीब अेक बजे अुठकर हमने हरकचन्द भाअीके यहा ही नहा लिया। फिर हमने सवेरे साढे तीन बजे रंगून छोडा और शामको देरसे टोकियो पहुचे। रास्तेमें बैंगकॉक और हागकाग आये या नही यह अिस अिस समय याद नही आ रहा है।

प्रथानसार हमारे हवाअी जहाजने टोकियोकी अेक आकाशी प्रदक्षिणा की और बादमें नीचे अुतरा। अिस बीचमें हम टोकियोके विस्तारकी कल्पना अुसके सुन्दर रग-बिरगे दीयोसे कर सके। सचमुच, वह दीपावली अद्भुत थी!

हम हानेडा हवाअी अड्डे पर अुतरे। वहा हमारा कल्पनातीत स्वागत हुआ। भिक्षु मारुयामा तो अुसमें थे ही। भारतमें अुन्नीस सौ अुनचासमें हुअी शाति-परिषद्में मिले हुअे श्रीमती डॉ० टोमी कोरा वगैरा बहुतसे जापानी भी वहा आये थे। भारतके दूतावाससे श्री रणवीरसिंह (महाराजसिंहजीके लडके), श्री मौलिक और श्री मुखर्जी आदि भी थे। यहा जिन भाअीकी भारतके राजदूतके स्थान पर नियुक्ति हुअी थी वे अभी टोकियो नही पहुचे थे अिसलिअे अुनकी जगह श्री रणवीरसिंहजीने हमारा स्वागत किया और गाजे-बाजेके साथ हम अपने डेरे पर पहुचे।

निहोन सैनेन कान (जापान-युवा प्रासाद) नामका यह पाच मजिला भव्य भवन था। सारा मकान लडके-लडकियोसे भरा था। हमें तो सारे जापानियोंके चेहरे अेकसे लगते है। अूपरसे अिन लड़के-लडकियोंने गणवेश (यूनिफार्म) के तौर पर अेकसी ही पोशाक पहनी हुअी थी। क्या अुनका अुत्साह था और क्या गजबकी अुनकी अुछल-कूद थी! छुट्टियोमें सरकारकी ओरसे सारे देशके बच्चोंको बारी-बारीसे राजधानीमें लाकर सब-कुछ दिखाया जाता है। लडकोंके दलके दल किसी दिन पार्लमेंट देख आते तो किसी दिन बादशाहका राजमहल देखते। किसी दिन सग्रहालय देखते तो किसी दिन तरह-तरहके कारखाने! जब भी थोडा समय मिलता वे टेलीविजनके सामने बैठकर नाटक, क्रिकेट या टेनिसके खेल देखते। अुन दिनो टेलीविजन नया-नया तमाशा था। अिसलिअे लडके-लडकिया मधु-मक्खीकी तरह टेलीविजनके अिर्द-गिर्द अिकट्ठे होते थे।

हमारे लिअे तो वे सब अेक ही जैसे झुण्डके समान थे। लेकिन आपसमें वे सब अेक दूसरेको पहचानते थे, अपनी-अपनी संस्थाके लिअे अभिमान रखते थे, रिश्तेदारोंसे मिल आते थे और अध्यापकोंके साथ बैठकर आगेके अपने जीवन-क्रमकी तरह-तरहकी योजनाअें बनाते थे। वे सब अेक तेजस्वी और अुद्योगी राष्ट्रके प्रतिनिधि थे। हम कौन हैं, यह जाननेकी अुन्हें परवाह ही न थी। यदि होगी भी तो अुन्होंने अपने लोगोंसे पूछकर अपनी जिज्ञासा कभीकी तृप्त कर ली होगी। मैं अुनको निहार-निहारकर भविष्यके जापानी राष्ट्रका दर्शन कर रहा था और अेशियाके अुत्कर्षके दिवा-स्वप्नोंकी कल्पनामें खो रहा था। भारतके आजके जवान और जापानके युवा मिलकर कोअी भारी पुरुषार्थ नही करनेवाले हैं, अैसा कौन कह सकता है? हजारो वर्षोंके बाद सूर्य फिरसे पूर्वमें अुगना चाहता है। अभी अपनी पूरी तैयारी नही है। लेकिन जैसा कि विख्यात जर्मन लेखक स्पेंगलर कहता है, क्या पश्चिमका अस्त शुरू हुआ होगा? और आजकल वहा जो चका-चौंध करनेवाली प्रगति दिखाअी दे रही है वह क्या सचमुच सन्ध्याकी ही लाली होगी? रविबाबूने तो अुस सन्ध्याकी लालीका भयानक गीत गाया ही है।

सामान्यतया नये देशमें पहुचनेके बाद आसानीसे नींद नही आती। लेकिन सारे दिनकी थकावटने असर किया और बिना किसी टके-पैसेके खर्चके या बिना हवाअी जहाज जैसे वाहनकी मददके ही हम देखते-ही-देखते स्वप्न-सृष्टिमें पहुंच गये!

सुबह अुठकर हमने खिडकियोंके परदे हटाये। जिस प्रकार छोटे बच्चे बिना किसी कारण ही हसते हैं अुसी तरह हमें बाहर साकुराके पेड़ो पर पहले-पहल खिले हुअे शुभ्र रेशमी फूल मुस्कुराते हुअे दृष्टि-गोचर हुअे।

जापान देशको पश्चिमके लोग Land of the cherry blossoms कहते हैं। यह कितना सच है, अिसकी प्रतीति हमें अपने अिस चौदह दिनके सफरमें हुअी। जहां देखो वहां साकुराके फूल-ही-फूल दिखाअी दे रहे थे! डालियां धीरे-धीरे ढंक गअी थीं, पत्ते लोप हो गये थे। जापानके अिस

छोरसे अुस छोर तक बस साकुरा ही साकुरा दिखाअी देता था। वैसे तो तो ये फूल बिलकुल सफेद और निर्गन्ध होते हैं। अुनमें कोअी अुन्मादक तत्त्व नहीं होता। लेकिन अिनकी बहार तो अितनी अुन्मादक होती है कि सारी जापानी प्रजा साकुराके ही गीत गाने लगती है। सब जगह ये फूल अेक साथ ही खिलते है। कुदरतने मानो सलाह करके ही सारे देशमें अेक साथ साकुराके पेडो पर फूल खिलाये हो। और तीन-चार हफ्ते पूरे होते-न-होते सभी जगहकी बहार खतम भी हो जाती है। चित्रा-गदाका रूप-लावण्य ज्यादा नही फिर भी अेक वर्षके लिअे तो खिल ही अुठा था। लेकिन साकुराकी पुष्प-सृष्टि तो अेक ऋतु भी नही टिकती। पर जब ये खिलते हैं तो सारा देश अुनके पीछे पागल हो जाता है। अपने यहा तो तरह-तरहके फूल होते है। अेककी बहार फीकी नही पड पाती कि दूसरी आ जाती है। बारामासी फूल तो अपने नामानुसार छहो ऋतुओंमें अेक ही निष्ठासे खिलते रहते हैं। दो हफ्तेके बाद जब हमने अिसी टोकियोसे जापान छोड़ा, तब साकुराके पेडो पर फूलोंकी पूर्णताको पहुची हुअी बहारमें थोडी-थोडी हरी पत्तिया भी दिखाअी देने लगी थीं। वे अिशारा कर रही थी कि यौवन ढलने लगा है अिसलिअे जितना नयनोत्सव मनाना हो अभी अेकाग्रतासे मना लो!

पहले ही दिन आकासाका डायट (पार्लमेंट) के बडे दीवानखानेमें हमारी शांति-परिषद् शुरू होनेवाली थी। अिस जागतिक परिषद्में भाग लेनेके लिअे अनेक देशोंके प्रतिनिधि आये हुअे थे। अिसलिअे अैसी व्यवस्था हुअी थी कि कुल बारह अध्यक्ष बारी-बारीसे अिस कामको चलावें। अिनमें कअी जापानी थे और कअी बाहरके थे। बाहरके अनेक देशोंमें से किन-किन देशोंको यह सम्मान मिले और वह किस मात्रामें, अिसकी खूब चर्चा रही। अवसर मिलते ही मैंने कहा कि हमारे हिसाबसे तो सभी देश समान हैं। छोटे-बडे, अैसा भेद हम क्यो करें? और कुछ नही तो कमसे कम हम अिस परिषद्में विश्व-कुटुम्बका वातावरण तो पैदा करे! भारतकी ओरसे हमारा किसी भी तरहका आग्रह नही है। अध्यक्ष-मडलमें हमें स्थान न मिले तो हमें बुरा नहीं लगेगा। अिसका असर अच्छा हुआ। लेकिन मैंने सोचा था

अुससे विलकुल अुलटा! भारतकी ओरसे मैं और अध्यापक कालिदास नाग मंडलमें चुन लिये गये। असलमें तो श्री भारतन् कुमारप्पा हम दोनोंसे अधिक अुपयोगी साबित हुअे। अुनका नम्र व मीठा स्वभाव, भाषा व विषय पर पूरा काबू और अुनकी मेहनती वृत्ति — अिन सबके कारण सब जगह अुन्हींकी मांग थी। प्रस्ताव बनाने हों या वृत्तान्त तैयार करने हो, भारतन्के बिना किसीका काम ही नही चलता था। सचमुच अुस सारी परिषद्के वे अेक रत्न थे।

हमारी यह प्राथमिक परिषद् दोपहरको अेक बजे शुरू हुआी। अिससे पहले हम सब हिन्दी भाआी प्रथानुसार भारतके दूतावासमें हो आये। वहा डॉ० कालिदास नागके आग्रहसे हमने अेक प्रस्ताव पास करके प० जवाहरलालजीको तारसे भेजा। फिर बैंक 'आफ अिण्डियामें जाकर अपने पासके पाअुण्डोके जरूरी जापानी येन करवाये। डॉ० कोराके साथ जापानकी परिस्थितिके विषयमे बहुतसी बातें हुआी। मैंने रणवीरसिंहजीसे कहा कि जापानके प्राचीन आदिवासी आयनु लोगोके विषयमें मुझे जानना है। अुन्होने थोडीसी जानकारी दी और बताया कि अब अुन लोगोंमे काफी मात्रामें जापानी मिश्रण हो गया है। अनेक जापानियोंके साथ बातें करनेके बाद मैं अिस निष्कर्ष पर पहुचा कि अपने देशकी पिछडी जातियोंके साथ मिलना और अुन्हें अपनाना रूसी लोगोंको आता है। चीनी भी अैसा प्रयत्न करते है। लेकिन जापानियोने अभी यह कला नहीं सीखी है।

परिषद्की ओरसे हम दोनोकी मददके लिअे दो जापानी विद्यार्थी दिये गअे थे। वे स्थानीय विश्वविद्यालयमें हिन्दी सीखते थे। अेकका नाम था कीमुरा और दूसरेका नाम था कोबायाशी। दोनों स्वभावसे नम्र और मिलनसार थे। हर तरहसे अुपयोगी सिद्ध होनेके लिअे वे हमेशा तैयार रहते थे। अुनमे से भाआी कीमुरा तो अेक कोबेको छोडकर लगातार चौदह-चौदह दिन तक हमारे साथ घूमते रहे।

मेहमानोंकी व्यवस्थाका भार भिक्षु सातो-मान पर था। ये भाआी चतुर थे और थोडी अंग्रेजी भी जानते थे। चाहे जैसी मुसीबत हो, वे धीरज नही खोते थे और न किसी बातमें परेशान होते थे। बादमें मालूम हुआ कि वे भिक्षु होनेसे पहले जापानकी सेनामें थे और

हवाअी जहाजसे शत्रु पर बम फेंकनेके पराक्रम भी अुन्होंने किये थे। आज अुस कार्यके लिअे वे पछताते हैं और अुसकी बातें करते हुअे हमेशा सकोचका अनुभव करते हैं।

अिंग्लैण्डसे आये हुअे प्रतिनिधियोंमें मि० टकर और मिसेज विलि-यमसन थी। क्वेकर दलकी प्रतिनिधि श्रीमती ग्लैडिस ओवेनको तो हम भारतकी ही प्रतिनिधि मानते थे। अुनसे हमारी पहचान भारतमें ही मिस म्यूरियल लेस्टरकी मार्फत हुअी थी। (गांधीजी जब गोल मेज परिषद्के लिअे विलायत गये थे तब लन्दनके गरीबोंके मुहल्लेमें मिस म्यूरियल लेस्टरके मेहमान बनकर रहे थे। हम भी जब लन्दन गये थे तब खास तौर पर अुनसे मिले थे। अुन्होंने हमें अपने वहां सब जगह घुमाकर गरीबोंके घर व अुनके जीवनके बारेमें बताया था और वे लोग कैसा स्वाभिमानी जीवन बिताते है यह समझाया था।) मिस म्यूरियल लेस्टर जब दिल्लीमें हमारी मेहमान बनी थी तब ग्लैडिस ओवेन भी अुनके साथ थी। ये दोनो बहनें सेवापरायण और अुदार-हृदया हैं।

टोकियोमें डॉ० हावर्ड और अेना ब्रिन्टन, जिन क्वेकर दम्पतीसे हमारी जान-पहचान ग्लैडिस ओवेनकी मार्फत हुअी। अेम० आर० अे० वाले श्री और श्रीमती बैसिल अेन्टविसल भी मिले। अुन लोगोंसे जापानियोंके जीवनके विषयमें काफी जानकारी मिली। लेकिन हम दुनियाकी शान्तिकी चर्चा करनेके लिअे ही अिकट्ठा हुअे थे अिसलिअे दूसरी बातें हमें अधिक सूझती भी नहीं थीं और न हम अुनमें ज्यादा समय दे सकते थे।

पहली अप्रैलकी सुबह पार्लमेंटकी लायब्रेरीमें, शान्ति-परिषद्का पहला अधिवेशन यथाविधि शुरू हुआ। प्रारम्भमें अध्यक्षपद सभालनेका कार्य मेरे हिस्से आया। भारतकी कदर करनेकी दृष्टि तो अिसमें थी ही। अिसके अलावा गुरुजीका भी कुछ आग्रह होगा। मैं थोडा अंग्रेजीमें बोला। अुसका जापानी अनुवाद तुरन्त कर दिया गया। सुबहका अधिवेशन पूरा होते ही अमरेलीवाले भाअी प्रतापराय मेहता, जो अुसी वक्त टोकियो आये थे, मुझे और चि० सरोजको टोकियो होटलमें खाना खानेके लिअे ले गये। हमें क्या अच्छा लगेगा अिसका ध्यान

रखते हुअे श्री प्रतापभाओीने भोजनकी अुत्तम व्यवस्था करवाओी थी। श्री रणवीरसिंह वहांसे हमें टोकियो विश्वविद्यालय ले गये। कुछ गड़वड़ हो जानेके कारण हम जिनसे मिलने गये थे वे भाओी न मिल सके। लेकिन अुनके वदले अेन्थ्रोपोलोजी—नृवंशशास्त्रके प्रोफेसर ओीशीडा मिले। वे अंग्रेजी अच्छी जानते हैं, लेकिन वोलनेकी अितनी आदत नहीं है। मैंने यह भी देखा कि अिस विश्वविद्यालयमें नृवंश-विद्या पर अंग्रेजीकी पुस्तकें नहींके वरावर थी। ज्यादातर अच्छी पुस्तकें जर्मनमें ही थीं। प्रोफेसर ओीशीडाने जव देखा कि जापानके विषयमें मैं अंग्रेजी साहित्य खरीदना चाहता हूं, तव अुन्होंने अपना काम अेक ओर छोड़ा और अपनी शिष्या आकेमीको साथ ले वाजार आये। अुस दिन छुट्टी थी फिर भी ओीशीडाके कहने पर अेक वड़े दूकानदारने 'Ainu life and lore और दूसरी अुपयोगी कितावें मुझे निकालकर दी। अिन कितावोंके लिअे मैंने चौदह सौ येन दिये।

अितना वडा राष्ट्र अपना हिसाव येन जैसे छोटे-से सिक्केमें किस तरह करता होगा यह अभी भी मेरी समझमें नहीं आया है। ७५ या ७६ येनका अपना अेक रुपया होता है। अिसलिअे अेक येन अपने पुराने पैसेसे कुछ छोटा और नये पैसेसे कुछ वड़ा होता है। अेक हजारसे अधिक येन दो तव अेक अंग्रेजी पाअुण्ड मिलता है जो करीव अपने साढे तेरह रुपयेके वरावर होता है।

अपने यहां पुराने जमानेमें अिससे अुलटा था। अेक रुपयेके ६४ पैसे और ६४ कौडीका अेक पैसा। लोग वाजारमें सब्जी खरीदने जाते थे तव कौड़ियोंका अुपयोग करते थे। अेक पूरा पैसा खर्च करनेवाले अुड़ाअू तो अुस वक्त कोओी नहीं थे। अुत्तर भारतमें अेक दमड़ीके अंगूर सारा परिवार खा लेता था। नमक पैसे सेर और चने पैसे सेर यह तो अेक समयमें सामान्य भाव था। अव पैसे सस्ते हो गये हैं। भिखारी भी अेक आनेसे कम दान नहीं लेता।

वहन आकेमी अपने गुरुके साथ हमें टेलीविजन विभाग दिखाने ले गओी। वे वहीं काम भी करती थी। हमने वहांसे टेलीविजन टावर (मीनार) पर चढकर टोकियो देखा। पूरा शहर देखा अैसा तो नहीं

कह सकते। फिर भी हम काफी दूर तक देख सके। प्रोफेसर ओशीडा और आकेमी बहनके बीचका गुरु-शिष्य सम्बन्धी वात्सल्य-भाव हमें विशेष रूपसे रुचिकर लगा। सचमुच सारे अेशियाकी संस्कृति अेक ही है, अिसमें कोअी शक नहीं।

शामको हम फिर जागतिक परिषद्में गये। वहा मैं विश्व-शातिके लिअे सर्व-धर्म-समन्वयकी आवश्यकता पर थोडा बोला।

दूसरी अप्रैलको ९ बजे फिर परिषद्में पहुंचे। साढ़े दस बजे वहीं अेक कमरेमें सारे प्रतिनिधियोंने खाना खाया। हमारे हिस्सेमें अिजीप्शियन खण्ड आया था। अुसका सारा ठाठ, चित्र और खिलौने सब कुछ अीजिप्टकी शैलीके थे। दोपहरके अिस आन्तरराष्ट्रीय भोजनके बाद जापानके सबसे विशाल हालमें—जिसे हीबिया कहते हैं—टोकियो-वासियोंके लिअे अेक बड़ी सभा रखी गअी थी। विदेशसे आये हुअे हम सब प्रतिनिधियोंको स्वागतके लिअे विशाल रग-मच पर बिठाया गया था। फिर हम जितने मेहमान थे अुतनी ही जापानी बालाअें पुराने ढंगकी राष्ट्रीय पोशाकोंसे सजकर हाथमें फूलोंके बडे-बड़े गुच्छे लेकर आअी और ये गुच्छे अुन्होंने हमें दिये। सभाका सारा दृश्य भव्य था। अिस सभामें मेरे आग्रहसे भारतकी ओरसे श्री कुमारप्पा बोले।

अखबारवालोंने मुझे सभामें से कअी बार बाहर बुला-बुलाकर सवाल पूछे। दूसरे दिन समाचार-पत्रोंमें ये मुलाकातें छपी। फोटो तो लिये ही गये।

अेक भेंटमें मैंने कहा: "जापानने पश्चिमी विद्या अपनाकर अुसमें किसी भी अेशियाअी राष्ट्रसे अधिक सफलता प्राप्त की है और दुनियाको दिखा दिया है कि जापान चाहे तो पश्चिमी विद्यामें पश्चिमवालोंसे सफल स्पर्धा कर सकता है। अेक बार यह साबित करके अब जापान अपनी मौलिक संस्कृतिकी प्रवीणता केवल कलामें ही नहीं बल्कि अपने समस्त जीवनमें क्यों न सिद्ध करे? जिस तरह भारतने अहिंसा और सत्याग्रहका नया मार्ग अपनाकर अेक रास्ता दिखाया है, अुसी तरह जापान भी बौद्ध और शिन्टोके संस्कारोंसे से अुत्पन्न हुअी अेक निराली जीवन-परम्पराको विकसित करके दिखावे तो अिसमें क्या

आश्चर्य है? अुसी रास्ते वह शांतिका नया मार्ग-दर्शन भी करा सकता है।

स्त्रियोकी सस्थाओके प्रतिनिधियोंसे मुलाकात करते हुअे मैंने कहा कि पुरुषोने झगडालू सस्कृतिका विकास किया है। प्राण-घातक प्रतिस्पर्धामें पडकर अुन्होने मानव-जीवनका सत्यानाश किया है। अब स्त्रियोको दुनियाके काम-काज और व्यवहारका अधिकार अपने हाथमे लेकर स्नेहमयी सस्कृतिका विकास करना चाहिये।

युवकोको मैंने खास तौरसे कहा Do profit by the heritage of the past, but pray, don't belong to the past. You have to be loyal to the future of mankind.

"प्राचीनकी देनका लाभ अवश्य अुठाअिये, परन्तु भूतकालके बन्धनोको छोडकर। सारी मानव-जातिका भविष्य बनाना आपके ही सिर पर है। पुरानी परम्पराओसे मुक्त होओगे तभी भविष्यके निर्माता बन सकोगे।"

अिस तरहकी मुलाकातें अखबारोमें पढ़कर नये-नये लोग सभाओंमें आते रहे और मेरे साथ अुत्साहसे बातें करते रहे।

शाति-परिषद्के अन्तमें बाहर निकले तब भीडमें से अेक जापानी भाअीने अग्रेजीमें लिखा हुआ अथवा किसीसे लिखवाया हुआ अेक पत्र मेरे हाथमें दिया और डबडबाअी आखोसे मेरे साथ शेकहैंड किया। भीडमें अुस पत्रको पढनेका मौका नहीं था। अिसलिअे मैंने अुसे जेबमें रख लिया और अुनसे विदा ली। अेक भोले, रसिक और कुटुम्ब-वत्सल जापानी मजदूरके हृदयके अुद्गारोको जब मैंने पढ़ा तो मेरा हृदय गद्गद हो गया। 'निप्पोन'की जनता भारतकी ओर किस आशासे देखती है, यह बतानेके लिअे मैंने वह पत्र संभालकर रखा और पं० जवाहरलालजीको दिखाया। यह रहा वह मूल अंग्रेजी पत्र :

Dear Dr. Kalelkar,

I take the liberty of writing to you. I am a labour in the Japanese. In Japan, as you see, it is spring now. There are cherry-blosam in field and mountain and skylark's song over our heads

It is best season for picnic and cherry-blosam viewing to go out with family.

But I don't feel such delightful. Because it is A-BOMB that damaged some fishmen and fishes, we live on, by radiation ash and contaminated water. A certain Dietman said, if three A-BOMB exploded in Japan, she would were destroyed at once. A scientist declared that in future Japanese will never increase on account of effective for radiation. So I hav'nt any hope in future, when hear that.

I suppose, it is not only my trouble but also other people's.

To settle such tension of world. I believe that it is India to do that. Because your country don't belong Two Power. She has been neutral.

I heard that you had said "A-BOMB's experiment should be prohibited at once."

I support your opinion.

On April 8 is feted Budda's birthday, at every temple of note throughout Japan it is held ceremony as annual tradition.

We say it HINAMATSURI.

The 25th century ago Budda had been born in India, then Budda saved many people and gave them delightful hope.

The present time your country will give us that one.

Peace for Asia, for Asian and all mankind of world,

It is on your shoulder

Take care of yourself

Yours very truly

Sd. S. Nagamine

A labour

प्रिय आचार्य कालेलकर,

मै आपको पत्र लिखनेकी अिजाजत लेता हूं। मै अेक जापानी श्रमिक हू।

जैसा आप देख रहे है, आजकल जापानमें वसन्तका आगमन हुआ है। मैदानोमे और पहाडो पर चारो ओर साकुराके फूल खिले हुअे दिखाअी देते है तथा आकाशमें स्काअिलार्क पक्षियोका सुमधुर गान सुनाअी देता है।

कुटुम्बी-जनोके साथ वनभोजनके लिअे तथा साकुराके फूलोकी शोभा निहारनेके लिअे यह अुत्तम ॠतु है।

परन्तु मेरा हृदय अैसा अनुभव नही करता, क्योकि जिन मछलियोके अूपर हम जीते हैं वे मछलिया और हमारे मछुअे, दोनोका अणु-बमसे निकलनेवाली राखसे और समुद्रका पानी जहरीला हो जानेसे नाश हुआ है। हमारी लोक-सभा (पार्लमेंट) के अेक सदस्यने कहा है कि यदि अैसे तीन अणु-बम जापानमें फूट पडें तो सारे देशका तुरन्त नाश हो जायगा। अेक वैज्ञानिकने घोषणा की है कि बमसे फैलनेवाले रेडियेशनके प्रभावके कारण अब आगेसे जापानियोके वंशका विस्तार नही होगा। जब यह सब सुनता हूं तब भविष्यके लिअे मेरे मनमें किसी तरहकी आशा नही रहती है।

मै मानता हूं कि यह विपत्ति केवल मेरी ही नही है, औरोकी भी है।

दुनियामें यह जो तनातनी चल रही है अुसका निवारण करनेका काम भारतका है। भारत ही यह कर सकता है। क्योंकि आपका देश दोनोंमें से किसी भी महाशक्तिके पक्षमें नही गया है। आपकी भूमि तटस्थ रही है।

मैंने सुना है कि शांति-परिषद्में आपने कहा है, 'अणु-बमके प्रयोग अेकदम बन्द कर देने चाहिये। मै आपको अिस रायका समर्थन करता हूं।

८ अप्रैलको बुद्धका अुत्सव मनाया जाता है। जापानके सब प्रसिद्ध मंदिरोंमें वार्षिक त्यौहारके रूपमें यह अुत्सव मनाया जाता है। हम असे हिनामात्सुरी कहते हैं।

पच्चीस सौ वर्ष पहले भारतमें बुद्धका जन्म हुआ था। अुस समय बुद्धने अनेक लोगोंको अुबारा और अुन्हें मंगलमय आशा प्रदान की।

वर्तमान समयमें आपका देश हमें अैसी ही आशा प्रदान करेगा — अेशिया, अेशियावासी और संसारकी समस्त मानव-जातिके लिअे शांति देगा।

यह भार आपके कन्धों पर है। अपनी तबीयत सभालियेगा।

आपका
नागामिने (मजदूर)

आज भी हम फुरसत मिलते ही शहरमें घूमे। अिनमें खास देखने लायक था सर्व-वस्तु-भण्डार (डिपार्टमेन्टल स्टोर्स)। हमारे यहां अनेक वस्तुओंको बेचनेवाली बड़ी-बड़ी दुकानें बहुत हैं, परन्तु अुनसे अिस विराट सर्व-वस्तु-भण्डारका खयाल नहीं आयेगा। अिनमें सुअीसे लेकर हाथी तक कोअी भी चीज खरीदी जा सकती है। अैसा लगता है मानो अनेक मंजिलोंवाले अिस स्टोरके विशाल मकानमें सैकड़ों दूकानें मिलकर अेक हो गअी हैं। अिनकी बराबरी करनेवाली अेक दुकान लन्दनमें देखी हुअी याद आती है। अिस अेक भण्डारकी विशालता और अन्दरकी कीमती वस्तुओंकी विपुलता देखनेके बाद यह मानना मुश्किल होता है कि पिछले महायुद्धके कारण जापान तबाह हो गया था। अेक तरफ फूल और सब्जी मिलती हैं तो दूसरी ओर दुर्बीन, कैमरे और खेल-खिलौने मिलते हैं। तैयार कपड़े तो सारी दुनियाके खरीदे जा सकें अितनी तरह तरहके हैं। सारी व्यवस्था मानो घड़ीकी सुअीके समान ठीक चल रही थी। हमें आश्चर्य तो केवल अेक मंजिलसे दूसरी मंजिल पर आने-जानेवाली लिफ्ट पर हुआ। 'आरोह-अवरोह' करनेके वे कमरे लम्बे-चौड़े और मजबूत तो थे, लेकिन अुनमें अेक-

प्रिय आचार्य कालेलकर,

मैं आपको पत्र लिखनेकी अिजाजत लेता हूं। मैं अेक जापानी श्रमिक हू।

जैसा आप देख रहे हैं, आजकल जापानमें वसन्तका आगमन हुआ है। मैदानोमें और पहाडो पर चारो ओर साकुराके फूल खिले हुअे दिखाअी देते है तथा आकाशमें स्काअिलार्क पक्षियोका सुमधुर गान सुनाअी देता है।

कुटुम्बी-जनोके साथ वनभोजनके लिअे तथा साकुराके फूलोकी शोभा निहारनेके लिअे यह अुत्तम अृतु है।

परन्तु मेरा हृदय अैसा अनुभव नही करता, क्योकि जिन मछलियोंके अूपर हम जीते हैं वे मछलिया और हमारे मछुअे, दोनोका अणु-बमसे निकलनेवाली राखसे और समुद्रका पानी जहरीला हो जानेसे नाश हुआ है। हमारी लोक-सभा (पार्लमेंट) के अेक सदस्यने कहा है कि यदि अैसे तीन अणु-बम जापानमें फूट पड़े तो सारे देशका तुरन्त नाश हो जायगा। अेक वैज्ञानिकने घोषणा की है कि बमसे फैलनेवाले रेडियेशनके प्रभावके कारण अब आगेसे जापानियोंके वंशका विस्तार नही होगा। जब यह सब सुनता हू तब भविष्यके लिअे मेरे मनमें किसी तरहकी आशा नही रहती है।

मै मानता हूं कि यह विपत्ति केवल मेरी ही नहीं है, औरोकी भी है।

दुनियामें यह जो तनातनी चल रही है अुसका निवारण करनेका काम भारतका है। भारत ही यह कर सकता है। क्योंकि आपका देश दोनोंमें से किसी भी महाशक्तिके पक्षमें नही गया है। आपकी भूमि तटस्थ रही है।

मैंने सुना है कि शांति-परिषद्में आपने कहा है, 'अणु-बमके प्रयोग अेकदम बन्द कर देने चाहिये। मैं आपकी अिस रायका समर्थन करता हू।

८ अप्रैलको बुद्धका अुत्सव मनाया जाता है। जापानके सब प्रसिद्ध मंदिरोंमें वार्षिक त्यौहारके रूपमें यह अुत्सव मनाया जाता है। हम अिसे हिनामात्सुरी कहते हैं।

पच्चीस सौ वर्ष पहले भारतमें बुद्धका जन्म हुआ था। अुस समय बुद्धने अनेक लोगोंको अुबारा और अुन्हें मंगलमय आशा प्रदान की।

वर्तमान समयमें आपका देश हमें अैसी ही आशा प्रदान करेगा — अेशिया, अेशियावासी और संसारकी समस्त मानव-जातिके लिअे शांति देगा।

यह भार आपके कन्धों पर है। अपनी तबीयत संभालियेगा।

आपका
नागामिने (मजदूर)

आज भी हम फुरसत मिलते ही शहरमें घूमे। अिसमें खास देखने लायक था सर्व-वस्तु-भण्डार (डिपार्टमेन्टल स्टोर्स)। हमारे यहां अनेक वस्तुओंको बेचनेवाली बड़ी-बड़ी दुकानें बहुत हैं, परन्तु अुनसे अिस विराट सर्व-वस्तु-भण्डारका खयाल नहीं आयेगा। अिसमें सुअीसे लेकर हाथी तक कोअी भी चीज खरीदी जा सकती है। अैसा लगता है मानो अनेक मंजिलोंवाले अिस स्टोरके विशाल मकानमें सैकड़ों दूकानें मिलकर अेक हो गअी हैं। अिसकी बराबरी करनेवाली अेक दुकान लन्दनमें देखी हुअी याद आती है। अिस अेक भण्डारकी विशालता और अन्दरकी कीमती वस्तुओंकी विपुलता देखनेके बाद यह मानना मुश्किल होता है कि पिछले महायुद्धके कारण जापान तबाह हो गया था। अेक तरफ फूल और सब्जी मिलती है तो दूसरी ओर दुर्बीन, केमरे और खेल-खिलौने मिलते हैं। तैयार कपड़े तो सारी दुनियाके खरीदे जा सकें अितने तरह तरहके हैं। सारी व्यवस्था मानो घड़ीकी सुअीके समान ठीक चल रही थी। हमें आश्चर्य तो केवल अेक मंजिलसे दूसरी मंजिल पर आने-जानेवाली लिफ्ट पर हुआ। 'आरोह-अवरोह' करनेके वे कमरे लम्बे-चौड़े और मजबूत तो थे, लेकिन अुनमें अेर-

साथ कितने लोग चढ़ें अिसका कोअी नियम न था। जिस तरह दियासलाअीकी डिब्बियोंमें तीलियां खचाखच भरी होती है अुसी तरह स्त्री-पुरुप तथा बच्चे जितने ठूस-ठूंस कर भरे जा सकें अुतने अन्दर घुस जाते है और अूपर नीचे जाते-आते है। यहा अिस भीड़की किसीको कोअी परवाह ही नही है।

अेक बार डॉ० मेडम कोरा हमारे साथ आअी थी। चीजें पसन्द करके खरीदनेमें अुन्होंने हमारी मदद की। टोकियोके जीवनके विषयमे भी अुनसे कितनी ही बाते जाननेको मिली।

अिन दो-तीन दिनोमें हम टोकियो शहर खूब घूमे और बहुत-कुछ देखा। हमारे जैसे शाकाहारी लोग खा सकें अैसी जापानी वानगियां हमने जगह जगह पर खाअी। हमने लोगोका जीवन देखा और मनुष्य-जातिने जीवनकी कलाको कितनी तरहसे अुन्नत किया है, यह देखकर आश्चर्य-चकित हुअे। लेकिन साथ ही अिस विविधताके पीछे भी अेक ही हृदय काम करता है, अिसका आश्वासन भी प्राप्त कर सके।

अेक तो हम घूमते-घूमते थक गये थे और अूपरसे हमारे 'युवा-प्रासाद' का लिफ्ट बिगड गया था। मुकाम पर पहुचना यानी पाच मजिल चढना और पांच मजिल अुतरना। चि० सरोजने बडी हिम्मत बताअी, अिसलिअे कोअी खास परेशानी नही हुअी।

तीसरी अप्रैलको सैनान-कानमें नाश्ता करके हम परिषद्में गये। वहा मैं कोरियाके विषयमें बोला। परिषद्के बाद भारतीय दूतावासमें जाकर श्री रणवीरसिंहके साथ जरूरी बातें करके हम जापानी ट्रेन द्वारा सफरके लिअे निकल पडे। परिषद्से भिन्न यह हमारी व्यक्तिगत यात्रा थी। ठीक साढे बारह बजे हाटो अेक्सप्रेससे हमने टोकियो छोडा। स्टेशन पर रणवीरसिंहजी छोड़ने आये थे। हमारे साथ भिक्षु मारुयामा और ओमाओी-सान दोनो थे। हमें टोकियोसे ओसाका और कोबे जाना था। योकोहामाको तो टोकियोका विराट व्यापारिक अुपनगर ही समझिये— वैसे ही, जैसे कि पच्चीस मीलकी दूरी पर बसे हुअे 'ओसाका' और 'कोबे' अेक दूसरेके पूरक हैं।

दोपहरसे शाम तक यात्रा करके रास्तेमें सारे देशके सौंदर्यकी चर्चा करते हुअे हम ओसाका स्टेशन पर पहुचे। वहा हम अनेक जापानी और भारतीय भाअियोंसे मिले। बादमें हम मोटरसे पच्चीस मीलका रास्ता तय करके 'कोबे' पहुचे। वहा भाअी धर्मदास थाने-वालेके यहा हमारा ठहरनेका प्रबन्ध था। बिस्तर पर पहुचते-पहुंचते रातके लगभग पौने बारह बज गये।

३

संस्कार-धाम

अपने अपने ही होते है। बिना किसी पूर्व परिचयके भाअी धर्म-दास थानेवालेके यहा हमारे रहनेकी व्यवस्था की गअी थी। अुनका घर था तो बडा व्यवस्थित, लेकिन हमारे जैसे दो मेहमानोंके समाने लायक था, यह नही कह सकते। फिर भी भाअी धर्मदास और अुनकी पत्नी रसीला बहनने बडे परिश्रमसे हमारे लिअे सुन्दर व्यवस्था कर दी। अुनका बालक शिशिर 'चान' तो अपनी मधुर तोतली बोलीसे हमारा मनोरंजन करता ही रहा। छोटा अवरीष तो आश्चर्य ही करता होगा कि घरमें ये नये लोग कौन आ गये? चि० सरोजकी और रसीला बहनकी तो खासी दोस्ती जम गअी थी।

कोबेको अपना केन्द्र (हेडक्वार्टर) बनाकर ओसाका, क्योतो और नारा अिन तीन स्थलोंकी हमने यात्रा की। यहा मैंने देखा कि आद-रार्थमें 'सान' शब्द केवल मध्यम-वर्गके लोगोको ही नही लगाते बल्कि रसोअियेको भी 'कुक-सान' कहते है। बच्चे भी सान या 'चान' प्रत्यय के पात्र माने जाते है।

ओसाकासे हमें कअी लोगोंसे मिलना था। पहले तो ओमाअी-सान मिले। वह हमें दूसरे जापानी लोगोंके पास ले गये। जापानमें धर्ममें रस लेनेवाले लोगोको Religionist कहते है। अैसी दो बहनोंसे हम मिले। फिर हम क्योतो गये और वहाका अेक बहुत बडा शिन्टो मन्दिर देखा।

मन्दिरके पुजारियोने हमारा स्वागत किया। मन्दिरका वैभव और अुसमें छिपी सादगी बडी आकर्षक थी। प्रत्येक कमरेकी दीवारके अूपरी हिस्से पर लकड़ीके पटिये लगे हुअे थे, जिनका खुदाओका काम बारीक-कलाके अुत्तम नमूनोमे गिना जा सकता है।

यहाके मन्दिरके अेक विद्वान पुजारी टोपी पहनकर हमारे साथ आये। अुन्होने हमें अेक थियेटरमे हो रहे नृत्यके टिकट बड़ी मेहनतसे दिलवाये। नृत्य और नाटक करनेवाली स्त्रिया सब गेशा लड़किया थी। गेशाके लिअे हमारा पुराना शब्द गुणिका है जिसका रूप बादमें गणिका हुआ। गोवामे अिन्हे कलावन्तिन कहते है। अिनको केवल वेश्या कहना ठीक नही है। ये लोग संगीत, वादन, नृत्य, चित्रकला, नाट्य, अभिनय अित्यादि अनेक कलाओंमें प्रवीण होती है। सम्भाषण-चतुर तो होनी ही चाहिये। अिन लडकियोका मुख्य काम अुच्च-सस्कारी अभिरुचिका पोषण करनेवाली अपनी कलाओंसे मालिकोको या ग्राहकोको सतोष देना होता है। अिन लोगोकी कमाओ भी हैरतमें डालनेवाली होती है।

अेक अनजाने देशकी सस्कृतिके नमूनेके रूपमें ही हम यह नृत्य-नाटिका देखने गये थे। नाट्य-गृहका नाम था डोरैमिको। रंग-मंच प्रेक्षकोंके तीन ओर फैला हुआ था। नृत्य करनेवाली लडकिया जहा-तहा बडी तादादमे मूर्तियोकी तरह बैठी या खडी थी। सामनेका रग-मच चाहे जब जमीनमें से अूपर निकल आता था या भीतर चला जाता था। पर्दोका तो कहना ही क्या? पर्दा खीचे बिना भी अुनके दृश्य परिवर्तित होते थे। कभी शीत, कभी वसत तो कभी देखते ही देखते पतझड! अेक बार अुस पर्देके अूपर हमने समुद्री तूफानको अुठते हुअे और फिर शात होते हुअे भी देखा। अुस तूफानमें पड़ी हुअी मछलि-लियोके तड़पनेका दृश्य आसानीसे भूला नही जा सकता। साकुरा (cherry) और मोमो (peach) के फूलोंकी रंगीन बहार तो मनुष्यको अुन्मत्त करने-वाली थी।

नृत्यमें चेहरे पर हाव-भाव बिल्कुल नही थे। भाव प्रगट करनेका काम अंगोकी मरोड़से, हाथके पंखोसे और शरीरके कपडोंने किया जाता था। संगीत अुच्च कोटिका था। बीच-बीचमें तो अच्छा लगता था और

कभी कभी नीरस भी लगता था। 'पपेट-शो' और 'वेले' का यह अेक मिश्रण-सा था।

जापानी प्रेक्षक यह सब बड़ी शान्तिके साथ देख या सुन रहे थे — और अुसका आनन्द लूट रहे थे। 'वाह-वाह' 'बहुत अच्छे', 'क्या खूब', जैसे कोलाहलका यहा नाम न था।

नृत्यके बाद हम पहाडी पर स्थित अेक प्रख्यात मन्दिर देखने गये। जहा तक मुझे याद है अिस मंदिरके पास ही अेक छोटेसे अुपवनमें कअी पालतू हिरन अुछल-कूद कर रहे थे और अपने स्वच्छन्द विहारसे प्रेक्षकोका मनोरंजन कर रहे थे। क्योतोमें अनेक जगह घूमकर हम कोबे वापस आये। टोकियो और क्योतो शहर अलग हैं, लेकिन अुनके नामका अर्थ अेक ही है—राजनगर। यह क्योतो पुराना राजनगर था। आजके टोक्यो या तोक्योका पुराना नाम अेडो था।

भाअी धर्मदास थानेवालेने अपने घर पर ओसाका और कोबेके चालीन-पचास भारतीयोको अिकट्ठा किया था। अुनमें सिंधी, पंजाबी, सिक्ख, गुजराती आदि अनेक प्रकारके लोग थे, अेक बोहरा भाअी और अेक महाराष्ट्रीय भी थे।

अुन लोगोंने भारतकी स्थितिके संबंधमें अनेक सवाल पूछे। काश्मीर, पाकिस्तानको मिलनेवाली अमरीकाकी सैनिक सहायता और स्वराज्यमें भी प्रचलित घूसखोरी आदि अनेक प्रश्नो पर चर्चा हुअी। फिर अैसी चर्चामें हमेशा ही आनेवाला यह सवाल भी अुठा कि जवाहरलाल नेहरूके बाद भारतकी धुराका वहन कौन करेगा?

मैंने कहा कि बचपनसे ही अैसे सवाल सुनता आया हू। लोग कहते थे कि सर फिरोजशाह मेहता जैसा दूसरा नेता भारतको कहासे मिलेगा? फिर कहने लगे कि गोखले जैसा त्यागी, वक्ता और कुशल नेता अब मिलनेवाला नही है। लेकिन अुनसे भी अधिक तेजस्वी मिले लोकमान्य। अुनके बाद देशमें अन्धकार छा जायगा, अैसा लोग मानते थे। लेकिन अुनकी जगह महात्मा गाधी आये और दुनिया चकित हो गअी। अैसे नेता तो हजारो वर्षोंमें अेकाध ही होते हैं!! स्वराज्य मिला और देशकी बागडोर जवाहरलालजीने संभाली। वे तन और मन,

दोनोंसे स्वस्थ हैं। अभी कभी वर्षों तक वे भारतका मार्ग-दर्शन करते रहेंगे और दुनियाकी राजनीति पर प्रभाव डालते रहेंगे। वे थकेंगे तव तक कोअी और खड़ा होगा ही, अिस विषयमें मुझे शक नही है।

अेक पजावी भाअीने कहा कि अैसा आदमी कोअी आसमानसे थोड़े ही टपकेगा? आज भी कही तो काम करता ही होगा। लोग अुसे जवाहरलालजीके अुत्तराधिकारीके नाते शायद पहचानते भी होंगे।

मैंने कहा कि अैसे तो अेकसे अधिक हैं, कौन आगे आयेगा कैसे कहा जाय? लेकिन मैं मानता हूं कि जवाहरलालजी थकेंगे और निवृत्त होंगे अुसके पहले भारतकी ही नही वल्कि सारी दुनियाकी राजनीतिक स्थिति वदल गअी होगी। जीवन-मूल्य ही वदल गये होंगे।

अेक भाअीने पूछा, क्या आप यह सूचित करना चाहते हैं कि विनोवा भावे जवाहरलालजीका स्थान लेंगे? मैंने कहा, ये दोनों अपने अपने ढगके निराले हैं। विनोवा जवाहरलालजीका स्थान नही ले सकते। अुनका खुदका स्वतन्त्र और स्वयभू स्थान है। वे तो अकेले ही प्रयत्न करते रहेंगे और जनताको अूचा अुठायेंगे।

आजकी अिस मजलिसमे अेक जापानी प्रोफेसर भी शामिल हुअे थे। वे यहा हिन्दी सिखानेका काम करते हैं। सावा-सान अेक वार भारत हो आये हैं और दूसरी वार फिर जानेवाले हैं, अैसा अुनसे मालूम हुआ। [जैसा अुन्होंने कहा था, वे दुवारा भारत आये थे, मुझसे मिले थे और मैंने अुनके सफरकी थोडी व्यवस्था भी की थी।]

भारतसे मैं अपने साथ दो 'गावी-अलवम' ले गया था — अेक गुरुजीको भेंट दिया और दूसरा कोवेके भारतीयोको।

दूसरे दिन हम कोवेसे ओसाका होकर नारा पहुचे। नारा जापानका सवसे पुराना और महत्त्वका सस्कार-धाम है। अितिहास, साहित्य, सगीत, स्थापत्य और धर्म — हरेक दृष्टिसे अिसका अनोखा महत्त्व है। क्योतो और नारा दोनों जगह श्रीमती रसीला वहन अपने गिरिरको लेकर हमारे साथ घूमी। अिससे वड़ा आराम रहा। ओसाकामें आज कअी अखवारवाले मिले। अुनके साथ वार्तालाप करके अुन्हें अेक सन्देश लिख दिया।

नारा पहुंचते ही हम प्रख्यात होडियूजी मन्दिर देखने गये। यहाके मुख्य साधु शान्त, प्रसन्न और प्रभावशाली दिखे। श्रीमाओी-सानने कहा कि ये हमारे गुरुजीके खास मित्र है। अुनका नाम रियोकेन सायकी था। अुन्होने हमें मन्दिरके पुराने भित्ति-चित्रोकी नकलें भेंटमें दी। भारतीय चेहरोको और वेशभूषाको स्वाभाविक जापानी रूप देनेवाले ये चित्र बहुत आकर्षक है। कलाके समन्वयसे कितना अूचा पहुचा जा सकता है, अिसकी कल्पना ये चित्र देते है। प्रतिकृतिया (नकलें) देखनेके बाद मूल भित्ति-चित्र देखनेकी माग किये बिना कैसे रहा जाता? लेकिन मालूम हुआ कि मन्दिर लकड़ीका होनेके कारण अेक दुर्घटनामें जल गया था। मूल चित्रोंके नष्ट होनेसे पहले तैयार की हुआी ये प्रतिकृतिया ही अब अुपलब्ध है। यह वृत्तान्त सुननेके बाद दुखी मनके सामने अिन प्रतिकृतियोका महत्त्व बढ़ गया। मैंने वे चित्र संभालकर रखे है।

अेक जगह हमने अेकके अूपर अेक अैसा पाच छप्परवाला मन्दिर देखा। अूपरका कलश नीचेकी शोभा पर कलगीके समान लग रहा था।

अिस प्रदेशमें अवलोकितेश्वर भगवानकी भक्ति विशेष रूपसे होती है, अैसा मालूम होता है। अवलोकितेश्वर भगवानके मुह पर शान्ति, कारुण्य और किंचित् विषादका भाव दिखाओी देता है।

दूसरे अेक शिन्टो मन्दिरका नाम था तेन्री क्यो—यानी स्वर्गीय विद्या अथवा वाणी। यह सारा मन्दिर गरीब लोगोकी सेवासे बना है। अिसलिअे अधिक पवित्र माना जाता है। यहा पुजारियोने हमें काले कोट जैसे दो झब्बे दिये जिनके अूपर अुनके अिस मन्दिरके विषयमे कुछ लिखा हुआ था। अिस सस्थामें काम करनेवाले कर्मचारी और मजदूर भी काम करते वक्त अैसे ही कपडे पहनते है। भक्तिका अैसा ढिढोरा मुझे पसन्द नही आया। अच्छा था कि कपड़ो पर लिखी बातें हम पढ नही सकते थे। हमारे लिअे यह सभी आड़ी-तिरछी रेखाओंकी चित्रकारी जैसा ही था।

अेक बार जापानके अेक बादशाहने अपने सरदारो और प्रजाके बीच मतभेद हो जानेके कारण चलनेवाले झगड़ोंसे तग आकर अेक साधुकी सलाह मागी। साधुने कहा कि अुपदेशसे अेकताकी स्थापना नही

हो सकती। अिन लोगोंको कोअी बड़ा और सर्वमान्य काम सौंप दें तो लोग झगडा भूलकर आपसमें सहयोग करने लगेंगे। साधुकी सलाहके अनुसार सम्राटने वैरोचन बुद्ध भगवानकी ध्यानमें बैठी हुअी तिरपन फुट अूची अेक भव्य मूर्ति बनवाअी और अुसके लिअे मन्दिरकी स्थापना की। अिस राष्ट्रीय धर्म-कार्यके लिअे लोगोंमें अितना अुत्साह अुत्पन्न हुआ कि सचमुच वे झगडा भूल गये। राष्ट्रमें हार्दिक अेकताकी स्थापना हुअी देखकर सम्राट सन्तुष्ट हुआ।

नारासे कोबे वापस आकर हमने सोलंकी सानके यहां खाना खाया और लम्बी यात्राके लिअे ट्रेनमें बैठे। अीमाअी-सान ओसाकासे आये थे। अिन जापानी ट्रेनोंमें सोनेकी सुन्दर सुविधा होती है।

४

भीषण ज्वालामुखी और सौम्य दीपक

६ अप्रैल। आज हम अपना द्वीप छोड़कर अेक दूसरे द्वीप कियुशुमें जानेवाले थे। सुबह होने से पहले शिमोनोसेकी स्टेशनसे मोजी स्टेशन तक समुद्रके नीचेसे जानेवाली अेक सुरग द्वारा हमारी गाडीने यह द्वीपान्तर-यात्रा की। रेलकी यात्राके लिअे यह बहुत बडा सुविधा थी। ट्रेनसे जहाजमें और जहाजसे फिर अुस पारकी ट्रेनमें अिस तरहकी अदला-बदली कुछ भी नहीं करनी पड़ी। अितना ही नहीं बल्कि नींदमें भी कोअी बाधा नहीं हुअी। शिमोनोसेकीमें जापानका सबसे बड़ा लोहेका कारखाना है। संपूर्ण अेशियामें अितना बड़ा लोहेका कारखाना शायद ही दूसरा हो।

हमें हाकाटा अथवा फुकुओका स्टेशनसे गाड़ी बदलकर कुमामोतो जाना था। बीचमें थोड़ासा समय मिलता था। अुसका फायदा अुठाकर हम शहरके अेक अुद्यानमें बोधिसत्त्व निचिरेनकी अेक बड़ी मूर्ति थी, वह देख आये। अिन साधु निचिरेनके विषयमें कअी चमत्कार बताये जाते हैं। कहते हैं कि अिनके हुकुमसे अेक प्रचण्ड बवण्डर आया और

जापानके अूपर हमला करनेवाले चीनी जहाज समुद्रमें डूब गये!! यह सात सौ वर्ष पुरानी बात है।

हाकाटासे हम कुमामोतो आये। कियुशु द्वीपका यह अेक महत्वका मध्यस्थ शहर है। यही गुरुजीने अेक पहाड़ीके अूपर शान्ति-स्तूप बनवाया है जिसके अन्दर भारत सरकार द्वारा मिले हुअे भगवान बुद्धके शरीरके कुछ अवशेषोंकी आज ही स्थापना होगी। हाकाटा स्टेशनसे बहुत-से यात्री अिस अुत्सवके लिअे आ रहे थे। अिसलिअे मानो विजय-प्रवेश कर रही हो, अैसी धूमधामसे हमारी ट्रेन स्टेशन पर पहुंची। हमारा डेरा मात्सुनोअी नामके सुन्दर जापानी होटलमें था। हमारे लिअे दो स्वतन्त्र कमरे थे। अेक दीवानखाना था और अुसके सामने जापानी ढंगका सुन्दर बगीचा था। जापानी बगीचा यानी अुसमें अक छोटा-सा तालाब, अेक छोटा-सा पुल, थोड़े-से झाड, सम्भव हो तो अेक छोटा-सा प्रपात और अिधर-अुधर जाने-आनेके लिअे सुन्दरतासे रखे हुअे गोल चपटे पत्थर होते ही है। बगीचेके अुस पार कअी जापानी मजदूर काम कर रहे थे। अुनके मजबूत गठे हुअे शरीर और काम करनेकी अुमग देखते ही बनती थी।

पहुचते ही अखबारवालोंने हमारे फोटो लिये और वहांके दनिकोंमें छापनेके लिअे मुलाकातें भी ली। यहा हमें तीन दिन रहना था और तीनों दिनोंका कार्यक्रम बडा व्यस्त था।

७ अप्रैलका दिन तो सदा याद रहेगा। अिस दिन हम दुनियाका सबसे बडे द्रोण (crater) वाला, धधकता हुआ ज्वालामुखी देख आये। अिसका नाम 'आसो' है। और यह अखण्ड धुआ और ज्वाला फेकता रहता है।

सुबह उटकर नाश्ता करके अेक सुन्दर बडी बसमें साढे नौ बजे हम चल पडे। पूरे दो घण्टेकी लम्बी यात्रा करके आसपासके प्रदेशकी शोभा निहारते हुअे हम ज्वालामुखीकी तलहटीमें जा पहुचे। अिन दो घण्टोंमें दूर-दूरके छोटे-बडे अनेक पहाड देखे। अिनमें से अेक पहाडीने मेरा ध्यान खास तौरसे खीचा। अिसका आकार अेक सुन्दर कछुअे जैसा था। अिस पहाडी पर लोगोंने बाड जैसी अेक दीवार बनाअी हुअी थी। अिनका क्या अुपयोग होगा, यह कुछ समझमें नही आया। अिसकी विशेषता

तो यह थी कि अिस पहाड़ीके चारो ओर कोअी रास्ता बनाना चाहता हो, अिस तरहका अिसका कुछ अनोखा पथरीला घाट था। अिसी कारण वह कछुअे जैसा लगता था। हमारे रास्तेका घुमाव भी अैसा था कि अिस पहाड़ीको हम कअी ओरसे देख सके। रास्ता करीव-करीव पूरा होने आया तब हम अेक छोटेसे अन्तिम गावमें ठहरे। यहा खाना खाया। छोटे-छोटे बच्चोको खेलते देखा। अिसके बाद ही ज्वालामुखीके अुस अुजड़े हुअे प्रदेशमें हमारी बसने प्रवेश किया।

अेक बात तो लिखनी छूट ही जा रही थी। हमारी बसमें लोगोको टिकट देनेके लिअे अेक बहन कन्डक्टर थी। जहा जहा बसका स्टेंड आता वहा कोअी अुतरने या चढनेवाला हो या न हो पर यह बहन तो बसका दरवाजा खोलकर नीचे अुतरती, अेक क्षण ठहरकर वापस अूपर चढ़ती और फिर दरवाजा बन्द कर लेती। अुसकी अिस नियम-निष्ठाको देखकर हमें बडा कुतूहल हुआ हाथमें छोटा-सा लाअुड स्पीकर लेकर यात्रियोको सूचना देनेका काम भी अुसीका था! बीच-बीचमे यात्रियोके मनोरंजनके लिअे वह सुन्दर-सुन्दर गीत भी गाकर सुनाती थी। अुसका कण्ठ अच्छा था। कअी राग तो भारतीय रागोका स्मरण कराते थे। हमारे साथके कुछ दुभाषिये जापानियोने अिस बहनके द्वारा गाये गये लोक-गीतोके अर्थ हमें समझाये। लोक-गीत अकसर करुण ही होते है और सामान्य प्रजाके सामान्य सुख-दु.खको अमर करते है। अुस बहनका अेक गीत साकुरा (फूलो) की बहारके विषयमें था। चारों ओर ये फूल खिले हों और बसमें अिनका ही गीत गाया जाता हो तब यात्रा पूरी तरह काव्यमय बन जाती है। अेक जगह लोगोंने बसमे अुतरकर साकुराके फूलोंकी बहुतसी डालिया अिकट्ठी कर ली और अुन्हें बसमें जगह-जगह खोसकर अुसे पुष्पिताग्रा बना दिया।

लोग मौजमें आ गये। अेकने सुझाया कि बसमें जब आन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन जैसा ही है तो फिर हर आदमी अपने-अपने देशका गीत क्यो न सुनाये। सूचनाका अनादर नही हुआ और आनोके रास्तेकी हवामे अनेक देशोंके राग गूंज अुठे।

जहा-जहा बस ठहरती वहा बच्चे तो अिकट्ठे होते ही। जापानी बच्चे यानी छोटी छोटी आखें, अुठे हुअे गाल, अुनके बीचमें छिपी हुअी चिपटी नाक, प्रसन्न हास्यसे खिले हुअे दात और भरे हुअे हाथ-पैर। अैसे बच्चोंके देखते ही ममता अुमड पडती है। कोअी भी बच्चा रोता हुआ या किसी भी तरह परेशान दिखाअी नही दिया।

अब हम ज्वालामुखीकी तलहटीमें जा पहुचे। यहा हमें बससे अुतर कर आध घण्टेकी कडी चढाई चढनी थी। झाड-झंखाड़का कही नाम भी न था। अूबड-खाबड प्रदेशमें किसी तरह रास्ता निकालते हुअे सब लोग अूपर चढने लगे। सब मिलकर यात्री सौ सवा सौके लगभग होंगे। मेरे साथ भिक्षु वातानावे और जापानी विद्यार्थी किमुरा थे। चढते चढते और भी लोग मिलते जाते थे। यात्री पीछे मुडकर सारा दृश्य देखते, अभी और कितना चढना है अिसका अन्दाज लगाते और छातीमें नया श्वास भरकर फिर अूपर चढने लगते थे। छाछ और दहीके मटकोंके मुह पर अुफनकर निकलती हुअी दूध-दहीकी सफेद धारिया जैसे चारो ओर दिखाअी देती हैं अथवा जैसे शुरू-शुरूमे खाना सीखनेवाले बच्चोंके मुहके आसपास दाल-भात चिपके होते हैं, वैसे ही अिस बड़े ज्वालामुखीके मुहके आसपास दूर-दूर तक सफेद और काले रगकी राख जमी हुअी थी। अुसमें से हम रास्ता निकालते-निकालते ठेठ अूपर तक जा पहुचे। कअी ओरसे अुस द्रोणके भीतर झाका। ज्वालामुखीके भयानक मुहमें करीबसे झाककर देखना यह कोअी साधारण अनुभव नही था। अुस विशाल और टेढे-मेढे द्रोणमें से कितनी ही जगहोंसे सफेद, नीले और काले धुअेंके बादल अुठ रहे थे। बीच-बीचमें खीलोंके चटकनेके समान पत्थर भी अुछल रहे थे। किसी-किसी जगह अुस धुअेंमें से ज्वाला भी फूट निकलती थी, तब अुसका सौम्य ताम्र रग अैसा डरावना दिखाअी देता था कि अुसकी तुलनामें रातकी धधकती ज्वाला कही अच्छी कही जा सकती है।

मेरे साथ चलनेवाले भिक्षु वातानावेके हाथमें भारतका तिरगा झण्डा था। मुझे खुश करनेके लिअे अुन्होने वह झण्डा मेरे हाथमें देनेके लिअे आगे बढाया। लेकिन अिसके बदले मैंने दूसरे अेक भाअीके हाथमे लाल

सूर्यके बिम्बवाले जापानी झण्डेको हाथमे लिया और वातानावेके आस-पास अिकट्ठे हुअे जापानी लोगोको समझाया कि अिस जगह मेरे हाथमें अपने देशका झण्डा शोभा नही देता। मैं जापान-विजय करनेके लिअे आया हुआ कोअी आक्रमणकारी योद्धा नही हूं जो अभिमानसे अपना झण्डा लेकर अिस भूमि पर फिरू। हमारा तिरंगा झण्डा मेरे लिअे प्राण-तुल्य अवश्य है। अिसकी अिज्जतकी खातिर भारतमे हम कितनी ही वार लडे हैं। लेकिन यहा तो हमारी आवभगत करनेवाले और भारतके साथ प्रेम-सम्बन्ध जोड़नेवाले जापानियोके हाथमें ही यह झण्डा शोभा देता है। अिसी प्रकार जापानका अुत्कर्ष चाहनेवाले और जापानियोकी दोस्तीकी अिच्छा रखनेवाले मेरे हाथमें आपका चण्ड-प्रतापी सूर्यका झण्डा ही सुन्दर दिखाअी देता है। मेरी अिस विवेक-मीमासामे आसपासके सब लोग खुश हुअे। अेक भाअीने वीरेसे कहा, आपने तो हमारे दिलोको जीत लिया।

अिसके बाद कअी कैमरे बतखकी बोलीकी तरह क्लिक-क्लिक करने लगे। मैंने देखा कि जहा हम खड़े थे, अुससे भी थोड़ा अूचा अेक शिखर बाअी ओर है। फिर वहा पहुचे विना कैसे वापस लौटते? यह सबसे अूची जगह थी, जाना जरा मुश्किल था, लेकिन अिसीसे अुसका दुगुना आकर्षण था। पैरोंको संभालते-संभालते अुस शिखर पर पहुचे। यहासे पर्वतके द्रोणकी लम्बाअी ज्यादा अच्छी तरह दिखाअी देती थी और धुओंके बादल भी अधिक अूचे जाते हुअे दिखाअी देते थे।

अैसी जगह बेहिसाब अुमडी हुअी अपनी भावनाओंसे मन परेशान होता है। जिन्दगीका यह अेक असाधारण सुन्दर अवसर है, अिसलिअे प्रत्येक क्षणका अुत्तम-से-अुत्तम अुपयोग कर लो — अिस तरह आंखोको और हृदयको मन समझा रहा था। आगे और पीछे, दाअें और बाअें, अूपर और नीचे, दसो दिशाओंमें आखें तबीयत भरकर देखना चाहती हैं। कोअी भी अंश अनदेखा न रह जाय अैसी सावधानी रखकर देखना चाहती हैं और स्मृति-पट पर अुनके अनेक चित्र अंकित कर लेती हैं। दूसरी ओर हृदय अिस सारे प्रसंगकी गभीरताको पहचानकर भक्ति-नम्र होता है और गहराअीमें अुतरता है।

दो तीन साल पहले कुछ लोग यहा आये थे और अेकाअेक ज्वालामुखीका गम्भीर विस्फोट हो जानेके कारण वे सभी लोग अुस दुर्घटनामें वहा जल मरे थे। लेकिन यह जानते हुअे भी क्या कोअी मनुष्य अैसी जगह जानेसे रुका है? खतरा कहा नही है? किसी वक्त जोखिम आयेगी और घेर लेगी, अिस डरसे क्या मनुष्य किसी भी कालमे अैसे भव्य विश्व-रूप-दर्शनसे वचित रहा है? जीवित-आशा, धनाशा, विजय-आशा और सुख-लालसा अिन सबसे अधिक सार्वभौम जिज्ञासा और अदम्य कुतूहल ही बलवत्तर साबित हुअे हैं। अीश्वर ज्ञान-स्वरूप है। ज्ञानमें वृद्धि करते-करते ही अीश्वरका साक्षात्कार हो सकेगा। अैसी भव्यताके दर्शनसे ही दृष्टि दिव्य होती है। अैसा 'अैश्वर-योग' निहारनेके लिअे हर अेक भक्तको अीश्वर 'दिव्य-चक्षु' देता ही है और जो भगवान दिव्य-चक्षु देता है वह हृदयकी समृद्धि भी देता है।

कहा भारतवर्ष और कहा निप्पोनका यह प्राची-द्वीपका प्रचण्ड ज्वालामुखी! यहा आकर कृतार्थ हुआ। अेक क्षण भी अैसा नही लगा कि पराये मुल्कमें हू। जहा भाषा-भेद है वहा भले ही परायापन महसूस हो पर कुदरत तो सब जगह अेक ही है। मैं हिमालयकी अुत्तुग हिम-राशिमें जो विश्वात्मैक्य अनुभव कर सका था, अुसी विश्वात्मैक्यको अिस रक्षा-पर्वतके शिखर पर धूम्र और ज्योतिके बादलोंके बीच अनुभव करनेमें मुझे जरा भी कठिनाअी नही हुअी। वह अनुभूति हृदयमें मुह तक भर गअी और तुरन्त ही ज्ञानेश्वरकी ये दो पक्तिया मुहसे निकल पड़ी .

हे विश्वचि माझें घर, अैसी जयाची मति स्थिर,
किं बहुना चराचर, आपणचि झाला।

अर्थात् यह अखिल विश्व ही मेरा घर है अैसी जिसकी मति स्थिर है अथवा जो चराचरमें अपनेको ही व्याप्त देखता है वही, मेरा भक्त है।

मेरे लिअे यात्रा कोअी कुतूहल-तृप्तिका विषय नही है। यह तो विधाताके आद्य अवतारका प्रत्यक्ष दर्शन है। जिसके अुद्धारके लिअे भगवानने दस-चौवीस या अनन्त अवतार लिये, वही यह विश्व स्वयं

भगवानका आद्य और विराट अवतार है। अुसके साथ तादात्म्यका अनुभव करना यही तो सबसे बड़ी साधना है।

जिस तरह मूर्ति-पूजा और मानस-पूजा — यह द्विविध-पूजा भक्तोंको सूझी है अुसी तरह पृथ्वी-पर्यटन और तारा-निरीक्षण ये भी दर्शन-भक्तिके दो विराट प्रकार हैं। जैसे-जैसे मौका मिले वैसे-वैसे अिन दोनोंकी अुपासना करके मनुष्य अनुभवसमृद्ध होता है।

आसोके अिस सर्वोच्च शिखर पर अिससे निम्न विचार आ ही नहीं सकते। ज्वालामुखीकी अग्नि 'कालोऽस्मि लोक-क्षय-कृत् प्रवृद्ध.' अैसा कह सकती थी। लेकिन मुझे तो अुसमें विश्व-कल्याण-कामना और अुसके लिअे धारण किया हुआ अुसका संयम ही प्रतीत हुआ।

समाधिके बाद जिस तरह काल-क्रमसे व्युत्थान होता है अुसी प्रकार हम ज्वालामुखीके द्रोण-दर्शनसे कृतार्थ होकर नीचे अुतरने लगे। अूपर चढते हुअे जो अनेक प्रकारकी चर्चाअें चल रही थी वे सब अब बन्द हो गअी। हास्य रसके फव्वारे लोप हो गये। हरअेकके मुह पर प्रसन्न-गम्भीरता छाअी हुअी थी। 'मन मस्त हुआ फिर क्यो डोले'? लेकिन यह स्थिति देर तक न टिकी। जैसे-जैसे हम अुतरने लगे वैसे-वैसे जगह चौड़ी होती गअी। यात्री अनेक धाराओंमें बिखर गये। फिर सबको अेक-दूसरेके अनुभव सुननेंकी सूझी। पुराने अनुभव ताजे होने लगे और लोग विनिमयानन्दमें मग्न हो गये।

नीचे आते ही कअियोंने चाय पी। मैंने चि० सरोजके दिये चाकलेटके टुकड़े खाये, और आजकी यह कृतार्थता किस प्रकार संग्रह करके रखी जाय, अिसी चिंतामें बाकीका दिन बिताया।

जिस रास्तेसे गये थे अुसी रास्ते वापस आये। फिर वही बच्चे दिखाअी दिये। अुसी कछुआ-पहाडीने हमारा स्वागत किया। अुन्ही साकुराके वृक्षोंने अपने हाथमें फूल लेकर हमें पुष्पाजलिके आशीर्वाद दिये और अन्तमें हमने कुमामोतोमें फिरसे प्रवेश किया। सुबह अुठकर जानेवाले हम वापसीमें वही नही थे। प्रत्येक व्यक्ति अेक कीमती-से-कीमती अनुभवके भारसे दबा हुआ था और अुससे प्रसन्न था। तब भला सन् १९५४ की यह सातवीं अप्रैल कसे भुलाअी जा सकती है?

२

अगली सुवह स्तूपोत्सव होनेवाला था। अुसके सम्मानमें कुमा-मोतो शहरके लोगोंने रातको जापानी दीपोका अेक जुलूस निकालनेका निश्चय किया था। देश-देशान्तरोंसे आये हुअे हम प्रतिनिधि मेहमान भी अुसमें भाग लेनेवाले थे। अिस तरहके अुत्सवकी श्रीवृद्धि करनेका निमन्त्रण कौन छोडता?

जुलूसमें हजारो वच्चे अेक-अेक लकडीके सिरे पर बंधे हुअे कागजके दीप लेकर चल रहे थे। अुनके पीछे सुन्दर-सी वसमें वैठकर हम मेहमान चले। हमें भी अैसे ही दीप दिये गये थे। पीले कटहलके आकारके ये कागजी दीप वजनमें विलकुल हलके होते हैं। अिनकी तली पर लगाअी हुअी मोमवत्तीका प्रकाश कागजके कारण सौम्य रीतिसे फैल रहा था। सौम्य-प्रकाशके ये असख्य गोले जब हवामें डोलते-डोलते चलते हैं तब अुसका मन पर वड़ा खुशनुमा और जादुअी असर होता है।

जुलूस शुरू होनेके स्थान पर हम समयसे पहुच गये। अंधेरा होने लगा था, लेकिन शहरके रास्ते हमेशाकी तरह रग-विरगे दीयोसे प्रकाशित थे। रास्तो पर यदि पहले जमाने जैसा अंधेरा होता तो हमारे अिन कागजी दीयोंका महत्त्व वढ़ जाता। खैर हमें तो कुमामोतो शहरकी शोभा भी देखनी ही थी। नगर सचमुच सुन्दर था। प्रमुख मार्ग और वाजार तो गन्धर्व-नगरीकी-सी शोभा दे रहे थे। हम सब वसमें वैठ गये थे और हमें मिले हुअे दीपोंको हमने लकडीके द्वारा खिड़कीके वाहर लटका रखा था। भीतर की मोमवत्तीके बुझते ही या खत्म होते ही तुरन्त कोअी-न-कोअी आकर अुसमें नअी मोमवत्ती जला जाता था।

सदा शर्मीले और अलिप्त रहनेवाले भारतन् कुमारप्पा भी अिस सारे वातावरणसे प्रभावित हुअे और खुशीमें आकर वच्चोंके साथ खिलवाड़ करने लगे।

घण्टो तक हम सारे शहरमें धीरे-धीरे घूमे। जहा-तहा लोग घरो और दुकानोंसे वाहर निकलकर जुलूसका अभिनन्दन कर रहे थे। चि० सरोजने मुझसे कहा . "अिन वच्चोंका अुत्साह अधिक या घण्टो तक रास्ते

पर पैदल चलनेकी धीरज अधिक, यह कहना मुश्किल है। अच्छे-अच्छे कपड़े पहनकर अितने सारे बच्चोंका शान्ति और अुत्साहके साथ दीयोंका जुलूस निकालना कोअी छोटी-मोटी सिद्धि नही है।"

किसी भी देशकी दुकानोंकी अपेक्षा जापानके बाजारकी दुकानें अधिक सुन्दर, सजी हुअी और आकर्षक मालूम होती हैं। हमारे लोगोंको तो केवल अिसके लिअे ही जापान जाकर यह कला सीख लेनी चाहिये। प्रत्येक वस्तु आकर्षक तरीकेसे सजाकर रखी हुअी तो होती ही है। दुकानकी सर्व-सामान्य रचना भी अैसी होती है कि जिससे सारी दुकानका व्यक्तित्व चमक अुठता है। और जब जापानी ग्राहकोंकी टोलियां दुकानोंमें घुसती हैं तब अैसा लगता है मानो वे भी दुकानकी शोभा बढानेके लिअे ही निमन्त्रित किये गये हैं। अिस तरह दुकानकी सुन्दरतामें वे बिलकुल घुल-मिल जाते हैं। अिस प्रजामें यह विशेषता किसने और कब पैदा की होगी? अितना लम्बा जुलूस सारे शहरमें घूमा लेकिन किसी भी जगह आवागमनमें न रुकावट हुअी और न अव्यवस्था हुअी। यह जुलूस भी हमारे लिअे अेक कीमती अनुभव था। सारे शहरकी भीड़में हम भी मिल गये। आखिर बड़ी देर बाद घर जाकर अपने कमरेमें ही पेट-पूजा करके हम निद्राधीन हुअे। मौका मिलने पर मनुष्य कितना कीमती अनुभव अेक ही दिनमें पचा सकता है, अिसका अन्दाज हमें अुस दिन मिला।

५

बुद्ध-धातुकी स्थापना

आजका और अगला दोनो ही दिन विशेष महत्त्वके थे। ८ अप्रैलको कुमामोतोके पासकी पहाडी पर बनाये गये स्तूपमें भगवान बुद्धके अवशेषोकी स्थापना होनेवाली थी। देश-देशान्तरके शान्तिवादी अिस प्रसंगका स्वागत करनेके लिअे अिकट्ठे हुअे थे। अिस स्थानसे बुद्ध भगवानकी सनातन वाणी 'न हि वेरेण वेराणि सम्मन्तीव कुदाचनं' सुनकर दूसरे ही दिन हमें हिरोशिमा जाना था। वहा लाखो अमर शहीदोको श्रद्धाजलि अर्पण करनी थी और अिस बुद्ध-वचनका अनुभव करना था कि — 'दुःख शेते पराजितो।'

सुबह जल्दी अुठकर, नहा-धोकर नौ बजे हम बसमें बैठकर निकले। स्तूपकी पहाडी पर पहुंचकर अेक सौ चालीस सीढिया चढे, तब कही अुत्सवके लिअे तैयार किये गये अेक विशाल शामियानेमें स्थानापन्न हुअे। अुत्सवका प्रारम्भ होने ही वाला था कि अितनेमें अेक केनेडियन अथवा अमरीकन यात्री हाफता-हाफता वहां आ पहुचा और कहने लगा, "मैं टोकियोमें ही अुपस्थित रहना चाहता था, लेकिन पासपोर्ट व वीसाकी कुछ गडबड़ होनेके कारण देरसे निकल सका। आजके अुत्सवमें भी कही देर न हो जाय, अिस डरसे स्टेशनसे सीधा भागा आ रहा हू।" मैंने अुससे पूछा, "आपका सामान कहा है?" वह बोला — "अिस पहाड़ीके नीचे अेक बुढ़िया कुछ बेचने बैठी थी, अुससे किस भाषामें बोलता? मेरा सफरका सन्दूक — जिसमें मेरा सब कुछ है — अुसके सामने रखकर अूपर भाग आया हूं। मेरे अिशारोसे वह जो समझी हो सो ठीक।"

मैंने पूछा, "आप अुस बहनको पहचान भी सकेंगे? और वह भी पहचान लेगी क्या कि आपने ही वह सन्दूक अुसके पास रखा था?" अुसने कहा, "भगवान भरोसे रख आया हू। मेरा विश्वास है कि मेरी

श्रद्धा गलत साबित नही होगी।" अुत्सवके बाद व्यवस्थापकोमें से अेकको मने यह बात बताअी। अुस भाअीको अपना सन्दूक बिना किसी कठिनाअीके सही-सलामत मिल गया।

अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूपका यह अुत्सव शुरू हुआ। भव्य पेगोडाके सामने अेक अुच्च आसन पर गुरुजी सहित अनेक साधुगण विराजमान हुअे। पासमे अेक बडा ढोल लकड़ीकी घोड़ी पर रखा था। अेक साध्वी बुढ़िया अुसे ताल-बद्ध बजा रही थी जिससे चारो ओर अुत्सव शुरू होनेकी खबर फैल जाय।

अनेक मन्त्र बोले गये। प्रारम्भिक धर्म-प्रवचन गाये गये। अुसके बाद भारतके प्रतिनिधियोने बुद्ध भगवानके अवशेपोकी पिटारी (मजूषा) जापानके बौद्ध-साधुओको अर्पण की। देनेवालोमें प्रमुख थे—अेक बौद्ध साधु, जिनके साथ डा० कालिदास नाग व दूसरे सज्जन भी अुपस्थित थे। लेनेवालोंमे गुरुजी निचिदात्सु फूजीअी और दूसरे अनेक जापानी बौद्ध साधु थे।

दो राष्ट्रोके बीच हजारो वर्षके बाद होनेवाले अिस पवित्र आदान-प्रदानका महत्त्व हम सब अपने-अपने मन पर अकित कर रहे थे कि अितनेमे भौरेकी तरह आवाज करता हुआ अेक विमान आकाशमें आया और बहुत नीची अुडान लेकर अुसने स्तूप पर और आगेकी भीड़ पर पुष्प-वृष्टि की। अिस अकल्पित पुष्प-वृष्टिसे वहां अेकत्रित हुअे हजारो लोगोके हृदय पुलकित हो गये। पुष्प-वर्षाके बाद रेशमकी लम्बी-लम्बी डोरियोकी वर्षा हुअी। आकाश-मार्गसे कोअी सर्प अुतरते हो अैसे ये अुलझे हुअे गुच्छे-जैसे दिखाअी दे रहे थे। अुन डोरियो पर जापानी मन्त्रोके छपे हुअे अक्षर सुन्दर लग रहे थे।

बुद्धके अवशेष अेक झरोखेके रास्ते स्तूपके अन्दर रखे गये। हम सब लोगोने अुन्हे धूप-दीप अर्पण किये। जगह-जगह फूलोके ढेर सारे प्रसंगकी शोभा बढा रहे थे। भेंटमें चढाअी हुअी तरह-तरहकी वस्तुअें भी भक्ति बढ़ानेके लिअे वहा सजा दी गअी थीं।

अब भाषणोकी बारी आअी। भारतकी ओरसे मुझे बोलना था। अैसे मगल-प्रसंग पर मैंने भारतकी राष्ट्रभाषामें ही बोलना पसन्द किया।

भिक्षु मारुयामा-सान मेरे पास खडे होकर मेरे हिन्दीके हर वाक्यका जापानी अनुवाद कर रहे थे। सारी जापानी जनता भारतका सन्देश बड़े हर्षके साथ सुन रही थी। मारुयामाजी प्रसगको शोभा देनेवाले अुत्साहसे मेरे भाषणका अनुवाद कर रहे थे। मेरा भाषण पूरा होते ही हर्षविभोर मारुयामा मुझसे लिपट गये। वहासे मैं अपने स्थान पर जा बैठा। यहां यूरोप व अमरीकासे आये हुअे प्रतिनिधियोको मैंने अपना भाषण अंग्रेजीमें संक्षेपमें समझाया। बेचारे विदेशी न हिन्दी जानते थे, न जापानी! आगे चलकर प्रबुद्ध अेशियामें अुनका स्थान कहा है यह वे समझ गये।

सबसे अधिक प्रभावशाली व्याख्यान गुरुजीका था। अुसका सार मारुयामा मुझे बादमें बतानेवाले थे। लेकिन बेचारेको वक्त ही न मिला।

जापानी अुत्सव भी अपने अुत्सवोकी तरह लम्बे चलते है। अिसके बिना धर्म-वृत्तिको सन्तोष नही होता। अिस अुत्सवको देखनेके लिअे आअी हुअी बहनोमें से जो वृद्धा थी अुनकी आखोंमे आनन्दाश्रु टपक रहे थे और वे मुहसे कोअी न कोअी मन्त्र भी बोलती जा रही थी। अुत्सवके बाद पासके ही अेक बडे कमरेमें हमें ले जाया गया। वहा स्थानीय व्यक्तियो और साधुओंके साथ हमारा परिचय कराया गया। वही थोडा कुछ खाकर हम धीरे-धीरे नीचे अुतरे। पूरा गाव-का-गाव अुत्सव-विभोर था।

हम दो बजे होटलमें पहुचे और तीन बजे कान्फरेन्समें। वहा बहुतसे भाषण हुअे। जहा-तहा भारतन् कुमारप्पाकी ही माग हो रही थी।

अेक मजेदार प्रसग यहा लिखने लायक है। मेरे जैसेको हिन्दीमें बोलता देख, अुस अमरीकी भाअीको सूझा कि वह स्पेनिशमें बोले! अुसे विश्वास था कि यह भाषा यहा न कोअी समझ सकेगा और न कोअी अनुवाद ही कर सकेगा। अुसने केवल विनोदके लिअे ही स्पेनिशमे बोलना शुरू किया। अुसे क्या पता था कि भारत तो सनातन कालसे भाषा-भक्त है! अुन सज्जनके वाक्य पूरे होते ही बेचारा जापानी दुभाषिया परेशानीसे अिधर-अुधर देखने लगा। अितनेमें कालिदास नाग खडे हुअे और धारावाही वाणीमें स्पेनिशका सुन्दर अंग्रेजी अनुवाद

कर दिया। वह आश्चर्यचकित अमरीकन बड़ा खुश हुआ। अुसकी आंखोकी चमक देखने लायक थी। तभी चारो ओरसे तालियोका अभिनन्दन सुनाअी दिया!

दो बजे परिषद् खतम हुअी। अुसमें भी मुझे भाषण देना ही पडा। अुसके अलावा यहांकी आकाशवाणीके लिअे दो प्रश्नोत्तरिया भी मेरे लिअे रखी हुअी थी।

अेक प्रश्नमें अुन्होने वहाके स्तूपके विषयमें मेरा अभिप्राय पूछा। जवाबमें मैंने कहा "स्तूपोका प्रारम्भ भारतसे ही हुआ है। छोड़े-वड़े अनेक स्तूप भारत और नेपालमें मिलते है। लका और ब्रह्मदेशमें कितने ही वड़े-वड़े स्तूप हैं। स्तूप बनाना हो तो अुस पहाडीकी अूंचाअी, अुसका घेरा आदि ध्यानमें रखना चाहिये और आसपासके सारे स्वरूपके साथ वह मेल खा सके अैसा होना चाहिये। अिस कसौटीके अनुसार कुमामोतोका यह स्तूप बहुत ही सुन्दर है। अुसमें सब तरहके परिमाणका ध्यान रखा गया है। यह तो हुअी कलाकी दृष्टि! अिस सबंधमे जापानी लोगोंसे कहनेको कुछ रहता ही नही है। आकृति और परिमाणकी रक्षा करनेकी बातमें आप लोग दुनियाका गुरु-स्थान ले सकते हैं। बुद्ध भगवानके शरीर-धातु अिसमें पहली बार रखे गये है। अिसलिअे हम सबके लिअे यह भूमि आज सनाथ हुअी। मुझे खुशी है कि आजके अुत्सवके लिअे मैं यहा अुपस्थित रह सका। अिस स्तूपके कारण निप्पोन और भारतका हृदय अेक हो सकेगा।"

हमारे होटलमे अितने सारे लोग रहते थे और अुन सबसे मिलनेके लिअे अितने अधिक स्थानीय लोग आते थे कि मानो वह कोअी अखण्ड चलता हुआ निजी सम्मेलन ही हो। अिसमें कअी महत्त्वकी बातें हो सकी।

बहुतसे जिम्मेदार जापानियोने हमसे कहा कि भारतसे यदि आप यहाकी खेती सीखनेके लिअे नौजवानोको भेजें तो अुनको अुसकी तालीम देनेकी जिम्मेदारी लेनेको हम तैयार हैं। अिसी तरह यदि आप भारतमें जापानी ढगकी खेतीका प्रयोग करना चाहते हो तो हम अपनी ओरसे बहुतसे अनुभवी युवक किसानोंको भेजनेके लिअे तैयार हैं।

दूसरे अुद्योगों और अुद्योग-कलाओंके विषयमें भी अिसी तरहकी कोशिश करनेकी तत्परता अुन्होंने बताओ।

रातको मुख्य सम्मेलनकी कार्यतन्त्र-समिति (स्टीयरिंग कमेटी) बैठी। अुसमें अधिकतर भारतन् कुमारप्पाने ही हिस्सा लिया।

दूसरे दिन यानी १० अप्रैलको हमें हिरोशिमा पहुंचना था। बड़े सवेरे चार बजे अुठकर हमने पाच बजे कुमामोतो छोड़ा। हाकाटा होकर मोजीके पास सामुद्र-धुनि लांघकर दोपहरको दो बजे हम हिरोशिमा पहुंचे। वह प्रसंग अितना अधिक भव्य था कि अिसका वर्णन अलग प्रकरणमें ही करना होगा।

६

हिरोशिमाको श्रद्धांजलि

विश्व-शांतिकी परिषद्के कारण हर जगह हमारा स्वागत अुत्साहसे तो होता ही था, लेकिन हिरोशिमाने तो गजब ही कर दिया। अितनी भीड़ थी कि हम तो अुसमें खो ही से गये। स्टेशनसे बाहर भीड़में से रास्ता निकालकर हम सब प्रतिनिधि बड़ी मुश्किलसे अिकट्ठे हुअे। यहां फूलोंके हार और गुच्छोंसे तो हम बिलकुल ढक ही गये। फिर सारी व्यवस्था ठीक हो जाने पर स्वागत-समितिने प्रत्येकके सामने बारी बारीसे ध्वनि-विस्तारक यंत्र (माअीक्रोफोन) रखा। तब हम अपना संदेश अुस विशाल भीड़के सामने रख सके। यहां अनुवाद कैसे हो सकता था? अखबारवालोंने हरअेकके मुक्ता-फलोंका चयन किया और अुनका जापानी अनुवाद करके दूसरे दिन सारे जापानको अुनका हार पहना दिया।

स्वागतके ठंडे पड़ने पर हम सब अेक साथ अेक मंदिरमें गये। वहां पर मृतकोंकी शांतिके लिअे जैसी विधि होती है वैसी कुछ विधि हुअी। यह मंदिर था तो नया, लेकिन अुसकी भव्यतामें जरा भी कमी न थी। अिसके बाद हम अुस खास स्थान पर गये जहां हिरोशिमाके शहीदोंका स्मारक बनाया गया था। अिस स्मारकका आकार

बैलगाड़ी पर लगाअी हुअी चटाअीका-सा अथवा रेलकी सुरंगका-सा था। अनेक धर्मके लोगोंने वहा अपने-अपने ढंगसे श्राद्ध किया। अंग्रेजीमें अैसी विधिको 'सर्विस' कहते है। प्रारम्भ अीसाअी पादरियोंसे हुआ यह सब प्रकारसे योग्य ही था। अुन लोगोंकी गम्भीर मुख-मुद्रा, भरी हुअी दाढ़ी, अूची टोपी, लम्बा झब्बा और गलेमें चमकता हुआ चादीका क्रास यह सब कुछ बड़ा रुआबदार और गम्भीरतापूर्ण था। लेकिन मुख्य बात तो यह थी कि बौद्ध जापानके लाखो लोगोको अेक क्षणमें मटियामेट करनेवाला राष्ट्र खुदको अीसाअी कहलवाता है, अिसलिअे यह श्राद्ध अुन्हीके द्वारा प्रायश्चित्त रूपमें प्रारम्भ हो यही अुचित था। शहीदोंके स्मारकके अूपर भारतकी ओरसे पुष्प-गुच्छ अर्पण करते हुअे मैंने अीशोपनिषद्का पाठ किया। ओम् क्रतो स्मर; कृतं स्मर (हे पुरुषार्थ करनेवाले! तेरी की हुअी करतूतें याद कर!) यह आर्ष चेतावनी बोलते हुअे मनमें आया कि यदि पश्चिमकी सारी दुनिया अिसे दोनो कानोंसे सुने और समझे तो सचमुच दुनियाका अुद्धार हो।

हमने सामने दिखाअी देनेवाले हिरोशिमाके लोगोंके प्रति और अुनके दारुण दुःख व बलिदानके प्रति सहानुभूति तो व्यक्त की लेकिन बादमें ध्यानमें आया कि अुस हत्याकाण्डमें से बचा हुआ कोअी भी अब अिस शहरमें नही रहा है। अेक पूरी पीढी—बूढे, जवान, बच्चे, स्त्री और पुरुष सबके सब अेक क्षणमें साफ हो गये। जो थोड़ेसे बचे, वे आज अितने सालोंके बाद भी अस्पतालोमें पड़े-पड़े बचनेका अफसोस कर रहे हैं। और जो अच्छे हो गये अुनकी आजीविकाका खयाल दूसरोंको ही करना पड़ता है। आज हिरोशिमामें जो हजारो-लाखो लोग बसते हैं वे सब वहा आसपाससे आकर रहने लगे हैं। नये घर बनाकर नये सिरेसे सारी ही प्रवृत्तिया चलानेवाले अिन नये लोगो पर हिरोशिमाके शहीदोंके नाते सहानुभूति किस तरह जताते? अिसलिअे सारे जापान राष्ट्रके प्रति ही हृदयकी भावना व्यक्त करे यही ठीक था। हिरोशिमाको तो नअी सस्कृतिका ही प्रारम्भ करना चाहिये। मैंने तो कहा भी कि हिरोशिमा सिद्ध करता है कि संहार-शक्तिसे सजीवन होनेकी शक्ति अधिक प्रतापी और श्रेष्ठ हैं।

जहां यह स्मारक बना है वहा पासमें ही अेक बौद्ध मदिर बनाया गया है। वहां हम सबको लकड़ीके छोटेसे डिब्बेमें हिरोशिमाके भग्नावशेषोंके टुकड़े दिये गये। अीटका टुकडा, जले हुअे मिट्टीके बर्तनोंके ठीकरे —अैसी कोअी न कोअी चीज अिन डिब्बोमें रखकर देश-देशान्तरके लोगोको बेची जाती हैं। महासंहारके अवशेषोमें से भी आयका साधन बनानेवाली अिस सेवा-भावी व्यापार वृत्तिकी जरूर कदर करनी चाहिये। वर्ना हमेशा आनेवाले सस्कार-यात्री (टूरिस्ट) अिन तरहकी सुविधाके बिना हिरोशिमाकी यादगार कैसे प्राप्त कर सकते?

जापानी लोगोने सारे हिरोशिमाका और भी अच्छी तरह फिरसे निर्माण कर लिया है। सिर्फ जहा बम गिरा था अुस स्थानकी अेक अिमारतका ढाचा स्मारकके तौर पर अब भी ज्योका-त्यो संभालकर रखा हुआ है।

दूसरी अेक जगह हमने देखा कि अेक मकान पूरा-का-पूरा बच गया है, लेकिन अुसके भीतरका सभी कुछ जल गया था। सो यहा तक कि लोहेकी चीजें गरम होकर पिघल गअी थी। कही किसी कमरेमें रहनेवाले लोगोमें अेक ही आदमी बच गया और बाकीके सब मर गये। अिस तरहके चमत्कारोकी बातें सुनते-सुनते हम विश्व-शातिकी परिषदमें जा पहुचे। अध्यक्षके स्थान पर अेक बहन थी। यहा लोगोमें—खासकर स्त्रियोमें विशेष जाग्रति दिखाअी दी। विश्व-शाति-परिषद्का अेक अधिवेशन हिरोशिमामें हो यह सब तरहसे अुचित ही था।

शामको सातसे नौ तक हम सब प्रतिनिधियोंके स्वागतका कार्यक्रम था। अुसमें नृत्यका कार्यक्रम बडा ही सुन्दर रहा। अुसके अन्तमें लोगोने मुझे अपना अभिप्राय प्रकट करनेको कहा। मैंने कहा, "हमारे देशमें नृत्य-कला अितनी अधिक बढी हुअी है कि सामान्य तौरसे हम मानते हैं कि हमें दूसरे लोगोंसे सीखनेको कुछ खास नही होगा। लेकिन आपका आजका कार्यक्रम देखकर मुझे लगता है कि हमारे दोनो देशोंकी जनताके लिअे परस्पर विनिमय करने योग्य बहुत कुछ है। खासकर नृत्यके बारेमें तो बहुत है।

अैसे प्रसंगों पर खुश करनेके लिअे मनचाहा बोलनेका रिवाज है। लेकिन अुस कलामें मैं प्रवीण नही हूं और नृत्य-शास्त्र तो मैं जरा भी नही जानता। फिर भी नृत्य देखे बहुत हैं अिसलिअे मुझे जसा लगा वैसा ही बोल दिया। रातको दस बजे होटल कैनानसोमें पहुचे। वहा जापानी ढगकी और सारी सुविधाअें तो अुत्तम थी लेकिन शौच-गृहकी सुविधा अनुकूल नही थी। अिसलिअे दूसरे दिन हम वान-शो-अेन होटलमें रहने गये। वहा हमारे लिअे अेक सुन्दर झोंपड़ीके जैसा कमरा रखा गया था। वह हमें बहुत पसन्द आया।

दूसरे दिन सुबह फिरसे परिषद् शुरू हुअी। खानेके लिअे परिषद्‌का काम मुलतवी रखनेके बदले, हम जहा बैठे थे वही पुस्तक-जैसे आकारके लकड़ीके डिब्बेमें सेंडविचिज (डबलरोटीके तिकोने टुकड़ोंके बीचमें टमाटर या ककड़ी आदि रखते हैं।) और अेक-अेक फल दिया गया। लोग खाते जाते थे और भाषण सुनते जाते थे। कागजकी नलीसे नारगीका रस पी रहे थे और आपसमें बातें भी कर रहे थे। खानेके डिब्बे लेनेसे पहले हमें याद रखकर कहना पड़ता था कि हम मासाहारी नही है अिसलिअे हमें शुद्ध शाकाहारी डिब्बे ही दें।

दोपहरको हिरोशिमा विश्व-विद्यालय जानेका कार्यक्रम था। वहा मेरा अेक भाषण गाधीजी और टैगोरके विषयमें रखा गया था। डॉ० कालिदास नाग अेक बार रवीन्द्रनाथ ठाकुरके साथ अिस देशमें आये थे। अिसलिअे अुनका भाषण कविके सदेशके विषयमें था। कुमामोतोमें मिले हुअे अेक नये दुभाषियेने हमारी ठीक मदद की। अिसे बतानेका कारण यह है कि पिछले दस दिनो तक परिषद्‌में जो जापानी भाअी हमारे अंग्रेजी भाषणोका अनुवाद जापानीमें करते थे और जापानी भाषणो का सार हमें अंग्रेजीमें सुनाते थे अुससे हम बिलकुल अूब गये थे। बेचारेको कुछ आता ही नही था, शब्द भी तुरन्त नही सूझते थे, अिसलिअे हर वाक्यके बीच-बीचमें अ—अ—अ—अ—करते जाते थे। आपसमें बातें करते वक्त तो मैंने अुस भाअी का नाम ही अ—अ—अ—अ—रख दिया था! यद्यपि मैं जानता था कि अैसा मजाक अतिथि-धर्ममें शोभा नही देता।

श्री कालिदास नागने अपने भाषणमें पुरानी चीजोंका जिस तरह जिक्र किया वह हममें से कुछको पसन्द नही आया। जापानी लोगोंको अगर कुछ बुरा भी लगे तब भी वह अुनके चेहरेसे प्रकट नही होता। अुनकी संस्कृतिकी यह विशेषता है।

हिरोशिमा विश्वविद्यालयके अध्यक्षने भाषणके प्रति आभार प्रदर्शित करते हुअे हमें लकड़ीका अेक-अेक सुन्दर पगोड़ा भेंटमें दिया जो अभी भी मेरे कमरेमें शोभा दे रहा है और हिरोशिमाका स्मरण दिलाता रहता है। Nehru on Gandhiji पुस्तक का जापानी भाषान्तर भी अुन्होंने हमें भेंटमें दिया।

अिन अध्यक्षके कमरेमें हमने पत्थरमें खुदी हुअी अेक मूर्ति देखी जिसमें अेक बालक और अेक बालिका आमने-सामने खडे होकर भेंट करनेकी तैयारीमें थे। मूर्तिकारने पूरे आत्म-विश्वाससे अिसे गढा था। अैसी जीती-जागती कला-कृतिया सब जगह देखने को नही मिलती।

शामको प्रथानुसार हमारी परिषद्के विषयवार तीन विभाग किये गये। धर्म-परायण लोग विश्व-शातिकी स्थापनाके लिअे क्या कर सकते हैं अिस प्रश्नकी चर्चा करनेवाले विभागमें हम पहुचे। मैंने अपने भाषणमें कहा, "अेक जमाना था जब कि धर्मके नाम पर आपसमें युद्ध चलते थे और अुसे धर्म-युद्ध कहते थे। अब धर्मके नाम पर कोअी लड़ाअी नही छेडता यह ठीक है, लेकिन सारे ही धर्म और अुनके पथ परस्पर लडकर अप्रतिष्ठित और निर्वीर्य हो गये हैं। अिसलिअे धर्मोंको अब सबसे पहले अपने अन्दर सर्व-धर्म-समभाव पैदा करना चाहिये।" लोगोंको मेरी यह बात पसन्द आअी, लेकिन भारतके अेक बौद्ध भिक्षुने सवाल अुठाया, "हम आत्माको नही मानते, आप मानते है, फिर हम लोगोंमें समन्वय कैसे हो?" मैंने अुनका अुत्तर देना आवश्यक नही समझा। जिससे सबको बडी राहत मिली। पाच बजे हिरोशिमाके गवर्नरकी ओरसे अेक स्वागत था। अुसमें हम गये।

स्वागतकी व्यवस्था बहुत ही अच्छी तथा कलापूर्ण थी। स्वाद-रसिकों व चटोरोंको तो अुस दिन असाधारण तृप्ति मिली होगी। किसीने लिखा है कि भगवान जिनसे रूठता है अुनको शाकाहारी, मद्य-

पान-निषेधी या विरोधी बनाता है और यदि अधिक नाराज हो तो मनुष्यको संन्यासी बना देता है! जीवनके श्रेष्ठ आदर्शकी अिससे अधिक दिल्लगी और क्या हो सकती है!

अन्तिम दिन सुबह हिरोशिमासे ही बहुतसे लोगोसे विदा लेनी थी। भिक्षु मारुयामाने अैसे कअी लोगोंको वान-शो-अेनमें अेकत्र किया था। वहां हममें से कअियोंने सुन्दर बागमें छोटे-छोटे पुलो पर चलकर झरनो और प्रपातोंकी शोभा देखी। फिर लोगोंने हमारे फोटो लिये। अितनेमें समाचार मिले कि जिस हवाअी जहाजसे हम टोकियो जानेवाले थे वह बिगड़ गया है। अिसलिअे हमें रेलगाड़ीसे जाना पड़ेगा। अिस कारण ओमाअी-सान टिकटें लेने स्टेशन गये और हम अपने हिन्दी दुभाषिये भाअी किमुराके साथ हिरोशिमाके चौड़े और सुन्दर बाजारमें चीजें खरीदनेके लिअे निकले। मुख्य अुद्देश्य तो बाजार देखनेका ही था। बाजारकी खूबी यह थी कि रास्तोके अूपर आमने-सामनेकी दुकानों तक कपडे तानकर छाया की गअी थी। हमारे यहा भी सक्कर और शिकारपुर आदि शहरोमें अिस तरहसे रास्तों पर छाया की जाती है। लेकिन ये रास्ते बहुत संकरे होते है और दुकानें अितनी पास-पास होतीहै कि मानो अेक-दूसरेके साथ शेकहैंड करना चाहती हो। हिरोशिमाके रास्ते तो अितने अधिक चौडे थे कि वहां अेकसे अधिक मोटरे अेक साथ दौड सकती थी। बाजारमें बच्चोका चित्रमय साहित्य बहुत ही आकर्षक था। लेकिन जिनको हवाअी जहाजसे यात्रा करनी होती है अुनको अपरिग्रह व्रत ही पालना पडता है। चीजें देखो, अुनकी कद्र करो लेकिन साथ अुठाकर न लाओ, यह आजके सफरका मूल-तत्त्व है, और पैसोंकी तंगीके दिनोमें तो अिस मूल-तत्त्वका कड़ाअीसे पालन करना पड़ता है। बच्चोकी किताबोंमें तो जापानी चित्र-कला सचमुच सोलह कलाओ सहित प्रगट होती है। हमारे यहा अभी भी अंग्रेजी कला का अनुकरण होता है अिसका दु:ख जापानी किताबें देखनेके बाद और भी बढ जाता है।

हम स्टेशन पहुचे और हमारे ओमाअी-सान नदारद! कहां खो गये राम जाने! अब क्या करते? अनजान मुल्कमें भाषा भी नही जानते थे। लेकिन हिम्मतके साथ बिना टिकटके ही रेलगाड़ीमें जा बैठे। अपने

पैसोंका हिसाब किया तो मालूम हुआ कि पासमें पूरे जापानी सिक्के नहीं हैं। खाने पर खर्च करें तो सोनेकी सुविधा छोड़नी पड़ती है! और यदि सोनेकी सुविधाका आग्रह रखें तो भूखे पेट सोना पड़ता है! चि० सरोजने और मैंने अिस सारी मुसीबतको हंसीसे टाल दिया। सरोज कहने लगी कि अैसा अनुभव न होता तो यात्रामें अितनी कमी ही रह जाती।

दो चार स्टेशन के बाद कन्डक्टरने आकर कहा कि हिरोशिमासे आपके लिअे तार आ गया है, आप परेशान न हों। असके बाद हमने अपने पासके पैसे खुलकर खर्चे। हम तीन सौ येन खा गये और निश्चिन्त होकर सोये। अेक बात यहां कह देनी चाहिये। कोबे स्टेशन पर रसीला बहन साग-पूरी दे गअी थीं वे यहां बहुत काम आअीं।

हमारा वह सारा दिन निरीक्षणमें गया। छोटी-बडी सुरंगें आतीं और चली जातीं। हर सुरंग कह रही थी: पश्याश्चर्याणि भारत! (यहां भारत शब्द अर्जुनके लिअे नहीं था। वह भरत-खण्डके समस्त निवासियोंके लिअे लागू होता था)। समुद्र, गांव, घरोंके छप्पर, आसपासके बगीचे, आदर्श खेती, रंग-बिरंगे फूल और फूलसे भी अधिक प्रसन्न बच्चे—अिस तरह यह सारा रास्ता अखण्ड चलते हुअे पिकनिकके समान था। लोग हमें देख रहे थे, हम लोगोंको देख रहे थे और अेक-दूसरेका मनोरंजन कर रहे थे! फूजीयामा पहाड़ न देख सके अिस अेक अफसोसको छोड़ दें तो कह सकते हैं कि हमने पेट भरकर खाया, जी भरकर देखा और भरपूर सोये! लोरियां गानेका काम तो रेलगाड़ी कर रही थी। आखिर १३ तारीखको बड़े सवेरे ही हम टोकियो स्टेशन पर पहुंचे। अिस बार हमने पहलेसे ही अपने दूतावासके रणवीरसिंहजीके मेहमान बनकर रहना स्वीकार कर लिया था।

७

पुनरागमनाय च

अब तो टोकियो शहर हमारे लिअे पूर्व-परिचित था। हम जैसे ही अुतरे ड्राअिवर अिवाओका-सान ने हमें तुरन्त पहचान लिया। अितनेमें श्री रणवीरसिंहजी भी आ गये। टिकटकी कथा स्टेशनवालोंसे कहकर हम श्री रणवीरसिंहजी के घर पहुंचे । वहा अुनकी पत्नी खानम मिली। अुन्होंने हमारे रहनेकी व्यवस्था बड़ी सुन्दर कर रखी थी। अुनका दो बरसका लड़का पोपो अितनी मीठी बातें करता था कि हमारे लिअे खातिरदारीका सबसे बढिया नमूना तो वही था। अेक होशियार जापानी लडकी अुस बच्चेको सभालती थी और मेहमानोंकी सुविधाका भी खयाल रखती थी। वह पूरा दिन हमने बातोंमें, चीजें खरीदनेमे और रणवीरसिंहजीने हमसे खासकर मिलनेके लिअे पार्टीमें जिन लोगोको बुलाया था अुनसे विचार-विनिमय करनेमें बिताया। ये लोग जब पहले-पहल मिले थे, तब चूंकि हम नये थे, हमें जापानके विषयमें जानकारी देते थे। लेकिन अब तो ये लोग हमारे बारह-तेरह दिनके अनुभवका सार जाननेके लिअे अुत्सुक दिखाअी दे रहे थे। रणवीर-सिंहजीको तत्त्व-ज्ञानमें बहुत रुचि थी। अिसलिअे अतिथियोंके जानेके बाद हम वार्तालापमें व्यस्त हो गये। भारतकी राजनीतिकी बातें तो बीच-बीचमें चलती ही थी। लेकिन ज्यादातर हम शुद्ध ज्ञानकी तत्त्वचर्चामें ही मग्न रहे।

१४ तारीख हमारे लिअे अनेक कार्यक्रमोंसे व्यस्त साबित हुअी। सोशलिस्ट पार्टी की सदस्या श्रीमती कोराने World Government Association के सामने मेरा अेक व्याख्यान रखा था। ओमाअी-सान भी हमारे साथ थे। अुसी जगह अुनका अेक शाकाहारी मण्डल भी चलता था। मेरे व्याख्यानके बाद अुन लोगोंके साथ हमारे खानेकी व्यवस्था थी। अुन लोगोंने मुझे दूधिया काचकी रकाबी पर गाधीजी का फोटो छपवा

कर भेंट में दिया। वे गाधीजीके शाकाहार और निसर्गोपचार-सम्बन्धी विचारोंसे प्रभावित हुअे थे। ये लोग हमारी तरह दूधका अपयोग नही करते। अिस दर्जे तक अिन पर पश्चिमी शाकाहार का असर है। ये गुड़ या खाड भी नही लेते; यह अिनकी खुदकी विशेषता है। हम भारतके शाकाहारी दूध-घी वगैरा लेते है, अिस विषयमें मैंने अुन्हे अपना दृष्टिकोण समझाया; लेकिन मैं नही मानता कि वह पूरी तौरपर अुनके गले अुतरा। हमारी दृष्टि जीव-दयाकी यानी अहिंसाकी है, जबकि पश्चिमके शाकाहारियोंकी दृष्टि मांस जैसा पदार्थ मनुष्य जातिकी नैसर्गिक खुराक है ही नही, अिस सिद्धान्त पर आधारित है। मनुष्यके दात न निकलें तब तक वह माता का दूध पिये यह ठीक है। लेकिन दात निकलनेके बाद प्राणीके शरीरमें से अुत्पन्न हुआ दूध मनुष्यको नही पीना चाहिये, अैसा अिनका आग्रह होता है। जापानी शाकाहारी खुराकमे खाडको क्यो टालते हैं यह मुझे वे ठीकसे समझा न सके। लेकिन यह चर्चा चल रही थी कि अुसमें से अेक नअी ही बात निकल आअी। अुन्होने कहा कि हमारे लोगोका स्वास्थ्य मत्स्याहारके बिना टिकता ही नहीं अैसा अनुभव होने से हमने खुराकमें बीस फी सदी मत्स्याहारकी छूट रखी है। मैं तो चकित ही रह गया। दुग्धाहारकी हमारी छूटके विषयमें अेतराज करनेवाले ये लोग मछली खानेको कैसे तैयार हो जाते हैं यह मैं किसी भी तरह समझ न सका। 'बहुरत्ना वसुन्धरा,' और क्या?

चर्चा और भोजनके बाद सारी भीड आगनमें बैठी और वहा हम सब लोगोका फोटो लिया गया। अिस सारे समाजकी बातचीतमें और सह-भोजनमें हम सब अेक कुटुम्बके जैसी आत्मीयता महसूस कर रहे थे। अिस समाजके सस्थापक श्री ओसावा अुन दिनो कलकत्तेमें थे और वहांके जैन लोगोंके साथ मिलकर प्रचारकार्य कर रहे थे।

अिस मण्डलके सदस्योंसे विदा लेकर हम मेजी (Meiji) मदिरमें गये। यह राष्ट्रीय मदिर अेक विशाल अुपवनमें बादशाही ढग पर बनाया हुआ है। अन्दर मोटर आदि वाहनोको नही जाने देते अिसलिअे हम वहा खूब घूम सके। दूसरे प्रेक्षकोंके भी दलके-दल घूम रहे थे। अेक जगह

वडे मकानमें चित्र-संग्रहालय था। जापानके वादशाहोके और राष्ट्रीय महत्त्वके अैतिहासिक प्रसंगोके चित्र अच्छे-अच्छे चित्रकारोंसे वनवा कर यहा लगाये गये थे। अिन चित्रोंका अैतिहासिक और कलात्मक महत्त्व अितना अधिक है कि जापान जानेवाला प्रत्येक संस्कार-यात्री अिनका अलवम तो खरीदता ही है। भीमकाय वृक्षोंके तनोको आकार देकर दरवाजो पर तोरणके समान स्थान-स्थान पर सजा देना यह जापानी स्थापत्यकी विशेषता है। हमने मेजी मदिर जी भरकर देखा। आते-जाते, भीतर-वाहर सव जगह साकुराके फूलोंकी तो भरमार थी ही।

पानीसे भरी हुअी खाअीसे घिरे अेक किलेके अन्दर वादशाहका महल था। वाहरसे यह महल दिखाअी भी नही देता था। जापानी लोग अपने राजाको अीश्वरका अंश अथवा विभूति मानते है। राजाके प्रति वफादारी यह जापानी मनुष्यका सर्वोपरि धर्म है। वे राजाके लिअे मर मिटनेमें ही जीवनकी सर्वोच्च कृतार्थता मानते है। यह संस्कार जापानियोकी रग-रग में समाया हुआ है।

पिछले महायुद्धमें जव जापान हारा तव अमरीकी लोगोने जापानके वादशाहसे अिस तरहका अिकरार लिखवा लिया कि वे अीश्वरीय अंश नही हैं और अिस प्रकार राज्यकी सारी सत्ता प्रजाको दिला दी।

यहां से हम जापानी पार्लमेंट का विशाल भवन देखने गये। अिसे यहा 'डायट' कहते हैं। मैं नही मानता कि अिग्लैण्ड की पार्लमेंटका भवन भी अिसकी तुलनामें ठहर सकता है। पार्लमेंटमें श्रीमती कोराने समाजवादी पक्षके कुछ सदस्योको वार्तालापके लिअे अिकट्ठा किया था। श्रीमती कोराकी अिच्छा थी कि भारतकी ओरसे कुछ जापानी कुटुम्वोको निमत्रण देकर अुन्हे भारतमें वसाया जाय। भूदानमें अितनी जमीन मिलती है तो अुसमें से थोड़ी जापानियोंको वसानेके लिअे क्या नही दी जा सकती? अिस तरहकी वात अुन्होने छेड़ी। मैंने अुन्हें विवेक के साथ कहा कि भारतकी जन-सख्या वहुत है। हमारे पास परती ज़मीन अधिक है ही नही कि जिस पर जापानियोको वसाया जाय।

आखिरमें मैंने कहा कि समाजवादी लोगो पर मैं जरूर विश्वास रख सकता हूं। लेकिन यह हम कैसे भूलें कि अेक समय

जापानी राष्ट्र पूरा साम्राज्यवादी था? हमारे देशमें जापानियोको बसानेकी बात लोगोंके गले अुतारना बड़ा मुश्किल होगा। यदि आप हमारे यहा आकर हमें खेती-बाड़ीके नये ढग सिखावें तो हम धन्यवाद देंगे। हमारे लडके आपके यहा आकर तरह-तरहके गृह-अुद्योग सीख सकें तो हम आपका अुपकार मानेंगे। मत्स्य-विद्या (fisheries) भी आपसे सीखने लायक है। अिस प्रकार मैंने अपनी बात अत्यन्त मिठास और स्नेह-भावसे कही। जापानको आस्ट्रेलिया और साअिबेरियामें बसने के लिअे जमीन मिलनी चाहिये अिस विचारका मैं समर्थक हू। अिसे वे जानते थे। अिसलिअे वे हमारी दिक्कत आसानीसे समझ सके।

अिस तरह सारा दिन महत्त्वकी बातोंमें व्यतीत करनेके बाद हम यथासमय अिन्श्योरेन्स कम्पनीवाले श्री देसाअीके यहा, जिन्होने हमें खानेका निमत्रण दे रखा था, पहुचे। मैं जब तक परदेश नही गया था तब तक यह नही समझ सका था कि लोग स्वदेशी भोजनके लिअे अितना क्यो तरसते है। लकामें, ब्रह्मदेशमें और पूर्वी अफ्रीकामें हमें अधिकतर स्वदेशी ढंगका ही आहार मिलता था। अिसलिअे यहा पहली ही बार मैंने स्वदेशी और विदेशी भोजनके बीचका फर्क अनुभव किया। यद्यपि हमें जापानी लोगोंके यहा अुत्तमसे अुत्तम खाना मिलता था फिर भी शरीर अपनी आदतोंको छोड़ता नही है। मैं तो भारतके सब प्रान्तोंमें रहा हू और प्रत्येक जगहके शाकाहारी भोजनका अितना आदी हो गया हू कि मुझे किसी जगह दिक्कत नही आती।

देसाअीके यहा ही हमने तीन हजार येन देकर सफरका जीवन-बीमा करवाया और तैयार होकर हानेडा हवाअी अड्डे पर पहुचे। वहां अनेक लोग विदा देनेको अिकट्ठे हुअे थे। अुनमे किसीके साथ विस्तारके साथ बात करना असम्भव था। लेकिन जहा प्रेम और कृतज्ञता प्रदर्शित करनेका सवाल हो वहा भाषाके विस्तारकी जरूरत ही नही पडती। अीश्वरने मनुष्यको आखें देकर कृतार्थ किया है। दो भीगी आखें मनचाहा भाव पूरी तरह व्यक्त कर सकती हैं। मैंने सब लोगोंसे अितना तो कहा ही कि फिरसे आपके देशमें आये बिना तृप्ति होनेवाली नही है। सुबहवाले शाकाहारी मण्डलके लोग फूल और भेंट

लेकर काफी बड़ी संख्यामें हमें विदा करने आये थे। गुरुजीके शिष्योंने पंखे बजाते हुअे 'नम् म्यो हो रेगे क्यो' से हमें विदा दी। आधी रात होने आअी थी। विमान आकाशमे अुड़ते ही टोकियोकी रत्न-नगरीका विस्तार हमारे आखोंके सामने आ गया। नीद आनेमें बड़ी देर लगी। आंखें लगी ही थी कि अितने में हमने अेक प्रचण्ड तूफानका अनुभव किया।

हम ओकीनावा द्वीप परसे गुजरे होंगे कि अितनेमें आकाशमें अेकाअेक झंझावात शुरू हुआ—'झंझावातः सवृष्टिकः।' वर्षाकी झडी शुरू हुअी और हमारा हवाअी जहाज बादलोंसे घिर गया। पथरीली जमीन पर मोटर जिस तरह दौड़ती है अुस तरह हमारा विमान हवामें खड़खड़ करता हुआ और डोलता हुआ चलने लगा। धक्के बढने लगे। चालक (पायलट) ने कमर पर पेटी (belt) बांधने की सूचना देनेवाली बत्ती जलाअी। सारे यात्री चौंक पडे। लेकिन कोअी कर ही क्या सकता था? क्या हो रहा है और क्या होनेवाला है अिसकी कल्पना करते हुअे अपने स्थान पर डटे रहें, बस यही हमारा कर्तव्य था।

अितनेमें विमानके अूपरका वायरलेसका तार तडाकसे टूट गया। अुस तारके दोनों टुकड़े चाबुककी तरह विमानकी पीठ पर प्रहार करने लगे। यह आवाज सचमुच भयकर थी। पायलटने तूफानसे बचनेके लिअे विमानको हजार फुट अूपर चढाया। फिर भी कोअी फर्क न पडा। बिजली चमक रही थी, वर्षा हो रही थी और वायरलेसके टुकड़े फटाक-फटाक चाबुकके समान मार मार रहे थे। विमानके यात्रियोंका ध्यान रखनेवाली सेविका भी जो हर वक्त प्रसन्नतासे काम करती थी अब घबड़ा गअी। अुसका चेहरा पीला पड़ गया। यात्री स्तम्भित होकर अेक-दूसरेका मुह देखने लगे।

अिस तरह कोअी दो घटे निकल गये, फिर भी तूफान कम होनेके लक्षण दिखाअी नही दिये।

अितनेमें विमानका अेक पायलट अपने कमरेसे बाहर आया। मैंने अुनसे पूछा 'चाबुककी-सी आवाज आ रही है, यह क्या है?' अुन्होंने कहा: यह तो वायरलेसका तार टूट गया है।' चिंतातुर होकर

मैंने पूछा ‘तब तो हम अपनी हालत बाहरकी दुनियाको किसी भी तरह नहीं समझा सकेंगे।’ अुन्होंने कहा, ‘अैसा तो नहीं है, विमानके पेटके नीचे दूसरा तार है। बात असलमें यह है कि हम अिस क्षण ओकीनावा और हागकाग दोनो जगह संदेश भेज रहे हैं। आजका तूफान सचमुच खराब है। जोखिम-जैसा तो नहीं है, लेकिन हमने अिससे पहले अैसा तूफान नहीं देखा।’

अब तो विमानके चारो ओर जोरोकी बारिश शुरू हो गअी। फट-फटकी तालबद्ध आवाज परेशानी पैदा करनेवाली न होती तो मैं अुसे मजेदार ही कहता।

मैंने अनुभव किया है कि जोखिमके वक्त चि० सरोज बिलकुल भी परेशान नहीं होती। हम पास-पास बैठे तूफानकी प्रत्येक क्रियाका अवलोकन कर रहे थे और अुसीकी बातें करते जा रहे थे। अुसके बाद स्वाभाविक तौरसे जोखिमें कितनी प्रकारकी हो सकती हैं, किस-किस तरह मृत्यु आ सकती है अिनकी बातें हमने ठंडे दिमागसे — अथवा बंधे पेटसे — कीं। अिन परसे फिर हम आत्माकी अमरत्वकी बातो पर आ पहुंचे। न बातें खतम हुअी और न तूफान ही बन्द हुआ। दो सौ तीन सौ मीलका यह तूफान हमने अिस ओरसे अुस ओर तक पूरा पार किया होगा। अुसके बाद ही आखिर आकाशकी कालिमा बदली। बाअी ओर पौ फटनेका-सा आभास हुआ। फिर तो अुषाका प्रकाश भी बादलोकी आज्ञा लेकर हम तक आ पहुचा। तूफान शात हुआ, यात्रियोंके जीमें जी आया और हम सही-सलामत हागकागके पासके काअुलून हवाअी अड्डे पर पहुच गये।

हागकागसे ग्यारह बजे हमारा विमान फिरसे अुड़नेवाला था अिसलिअे हमें मिलने आये हुअे भाअी शशिकांत नानावटीकी मोटरमें बैठकर हम थोडा घूम आये। हागकाग बन्दरगाह असाधारण सुन्दर है। आन्तरराष्ट्रीय अड्डा होनेके कारण यहा सब चीजें सस्ती मिलती हैं। भोगविलासका तो यह पीहर माना जाता है। हमने अिधर-अुधर घूमकर आस-पासका दृश्य देखा, नाश्ता किया और कुछ दूर ‘टाअिगर’ नामका अेक पैगोडा दिखाअी दे रहा था अुसके बारेमें बातें सुनी और फिरसे विमान पर चडे।

६३४

वैंकाकमें हमारा विमान जरा वीमार हो गया, अिसलिअे अुडनेमें थोड़ी देर हुअी। शामको रंगून पहुचे। अुस दिनकी रात भी हमें पहली वारकी तरह वहीं वितानी पड़ी। रास्तेमें वर्मी लोग रग-पंचमीका अुत्सव मना रहे थे। हवाअी अड्डे पर हमें कोअी लेने नहीं आया था अिसलिअे स्ट्रेंड होटलमें रात विताअी। फिर सुवह अच्छी तरह नहा-धोकर हम आगे वढे। हमारा विमान कलकत्ता पहुंचनेसे पहले पाकिस्तानकी राजधानी ढाकामें रुका था। अुसके वाद की हवा वड़ी खराव थी। कितने ही लोगोको अुससे तकलीफ हुअी। आखिर हम दोपहरके वारह वजेके वाद कलकत्ता पहुंचे। कलकत्तासे चि० सरोज सीधी दिल्ली गअी और मैं सर्वोदयके वार्षिक सम्मेलनके लिअे वोधि गया पहुंचा। वहा मुझे श्री विनोवाके साथ जापानके अनुभव की, वौद्ध जगतकी और धर्म-समन्वयकी वातें करनी थी।

अिस तरह चौदह-पन्द्रह दिनमें अेक महान संस्कृतिके प्रतिनिधि जापान देशकी यात्रा पूरी करके हम वापस आये। हमें मनुष्य-जातिके और खासकर अेशियाके राष्ट्रोंके अनेक सवालोंका प्रत्यक्ष परिचय हुआ, दृष्टि व्यापक हुअी और भारतके युग-कार्यका खयाल हमारे मनमें स्पष्ट हुआ।

हम लोगोंको सूर्योदयके अिस देशके साथ परिचय वढाना ही चाहिये। भारत और जापानके वीच केवल व्यापारी लेन-देन ही नहीं, वल्कि सस्कृतिका लेन-देन भी होना चाहिये और वढ़ना चाहिये।

यह जगत अेक और अविभाज्य है। प्रत्येक देशके सवाल सारी मनुष्य-जातिके सवाल हैं। हम सव अेक-दूसरेके हैं। सव मिल-कर ही मनुष्य-जाति वनती है। अिस वस्तुका साक्षात्कार हमारे अंदर दृढ़ होना चाहिये।

सूर्योदयका देश

दूसरी यात्रा — १९५७

१
तैयारी

मद्रास जाते हुअे चलती ट्रेनमें से,
८-६-५७

दूसरी बार जापान जानेकी बात तय हो रही है। मेरी अिच्छा तो वहा जानेकी थी ही; अब वहाके लोगोका निमत्रण भी आया है, अिसलिअे मैंने हा कर दी है। सन् १९५४ में हम लोग अेक बार जापान हो आये हैं। अुस बार राजधानी टोकियोसे दक्षिणकी ओरका सारा जापान देश हमने देखा था। अिस बार मैंने निमत्रण भेजनेवालो पर यह अिच्छा प्रकट की है कि अुत्तरसे दक्षिण तकका सारा जापान देखनेकी सुविधा वे हमें कर दें। अुत्तरकी तरफके होक्कायडो द्वीपमें मैं खास तौरसे घूमना चाहता हू। अिसका कारण यह है कि वह प्रदेश रमणीय जापानमें भी विशेष रमणीय है। लेकिन अिसके अलावा अेक खास बात यह है कि अुस द्वीपमें जापानकी 'आयनु' नामकी आदिम जाति रहती है। यह जाति जापानियोकी तरह पीले मंगोल-वश की नहीं है, बल्कि यह लम्बे बालोवाले काकेशियन वंशकी है। धीरे-धीरे ये लोग नष्ट होते जा रहे हैं। अिसलिअे अिन लोगोको देखने की मेरी खास अिच्छा है।

तुम्हें याद होगा कि अेक बार सीलोन-यात्राके विषयमें बताते हुअे मैंने तुम्हें लका को वेद्दा जातिकी जानकारी दी थी। यह जाति भी मिटती जा रही है। अिन लोगोंके बारेमें मैंने जब पहली बार सुना था, तब अिनकी संख्या तीन-तीन हजार बताओ जाती थी। लेकिन बादमें सुना कि यह तीन-चार हजार ही रह गओ है। अब तो कहते हैं कि सीलोनमें वेद्दा जातिके कुल सौ-दो सौ परिवार ही बचे हैं। सभ्यतामें आगे बढे हुअे अिस जमानेमें, जब कि जीनेकी कला का सब तरहसे विकास हुआ है और मनुष्य अपनी सामाजिक जवाबदारी भी

पहचानता है, तब कोअी जाति अिस तरह नष्ट होती जाय और अुसके लिअे हम कुछ भी न कर सके, तो मनमें बड़ा दु:ख होता है।

[मेरी माने अपनी आखिरी बीमारीमें काफी कष्ट अुठानेके बाद अेक दिन मुझसे कहा, 'दत्तु, तुम्हे और तुम्हारे पिताजीको अितनी मेहनत करते देखकर मुझे विश्वास हो गया था कि अिस बीमारीसे मैं अच्छी हो जाअूगी। पर अब लगता है कि तुम लोग मुझे बचा नही सकोगे। अवस्था हो जाने पर अिस दुनियासे अुठ जानेके अलावा कोअी चारा भी नही है। लेकिन तुम लोगोको छोड़कर जाने का मन नही होता।' अितना कहकर वह रो पडी और अेक लोक-गीतकी कड़ी गुनगुनाने लगी:

'सोडूनियां पिल्ले कशी जाअू वना'।

अर्थात् अिन बच्चोंको छोडकर किस तरह वनमें जाअू।

'वेड्डा' अथवा 'आयनु' जैसी जाति का अस्तित्व हमारे बीच से मिट जानेवाला है, अैसा जब कुछ लोग बडी आसानीसे कहते है, तब मुझे न मालूम कैसी बेचैनी-सी होने लगती है। मानव-जातिके अिन अपने ही भाअी-बन्धुओके विनाशको रोकनेका क्या कोअी भी अिलाज नही है?]

खैर। और कुछ नही तो कम-से-कम अिस जातिके लोगोके दर्शन करू, और अुनके जीवन-क्रमको देख-परख कर जापानके लोगोंके साथ अुसकी चर्चा करू, अैसी अिच्छा पहली यात्राके समय भी मेरे मनमें थी। लेकिन अब जब अुस प्रदेशको देखनेका मौका मिल रहा है, तब तुम साथ नही चल सकती, अिसका मुझे सचमुच अफसोस है।

जब हम नये अनुभव प्राप्त करते है तब पुराने अनुभवोंको याद करके नये और पुरानो की तुलना करना बडा ही आनददायी होता है। अैसा करने से हमारा जीवन भी समृद्ध बनता है। अिन पन्द्रह-बीस वर्षोमें हमने न मालूम कितनी यात्राअें साथ-साथ की है। हिमालयकी तराअीसे लेकर कन्याकुमारीके सागरसगम तक और सिंधके मचर सरोवरसे लेकर असमके अुतने ही विशाल लवतक सरोवर तक हम कअी बार घूमे है और जी भरकर हमने भारतका दर्शन किया है। अिसी तरह अफ्रीका और यूरोप में भी हम साथ-साथ घूमे है। मुझे स्वप्नमें भी यह खयाल नही था कि दुनियाकी कोअी भी यात्रा मैं

तुम्हारे विना कर सकूंगा। लेकिन तुम्हारी तबीयतने धोखा दिया, अिसका क्या अिलाज? खैर। कोअी-न-कोअी तो सफरमें मेरे साथ रहेगा ही। लेकिन हमने साथ-साथ रहकर जो यात्राअें की हैं, अुनके संस्मरणोंकी पूंजी भला दूसरेके पास कहांसे हो सकती है।

मराठीमें अेक कहावत है: 'दुवाची तहान ताकावर भागवावयाची'। दूधकी भूख छाछ पीकर मिटाना। अिस न्यायके मुताबिक अिस यात्रामें मैं जो कुछ देखूंगा, कहूंगा और सोचूंगा, अुसका सब हाल तुम्हें बराबर लिखता रहूंगा। समय-समय पर वहांके अपने पते भी मैं तुमको लिखूंगा ही। फिर भी वहांके दो स्थायी पते तो तुम्हें दे देता हूं। वहांसे हम जहां भी हों वहां तुम्हारा पत्र तुरंत पहुंच जाय, अैसी व्यवस्था करवा देंगे। पहला पता :–

Bhikhu Imai San,
Nipponzan Myohoji,
Ryogoku Nihonbashi,
Chuo-ku,
Tokyo Japan

दूसरा पता –

C/o The Indian Embassy,
Tokyo Japan

आजादी मिली तब से यह दूसरी सुविधा हमें आसानीसे मिल जाती है। मेरे पुराने पासपोर्टके सारे पन्ने भर गये हैं अिसलिअे नया पासपोर्ट बनवा लिया है और अुनके आधार पर जहां-जहां जाना है, अुन देशोंके वीसा भी ले लिये हैं।

अब हैजेका और चेचकका टीका लगवाना बाकी है। विदेशमें खर्चके लिअे पैसे साथ ले जानेकी अिजाजत भी सरकारसे लेनी पड़ती है और फिर अुसके मुताबिक यात्री-हुण्डी (ट्रैवलर्स)चैक भी लेनी पड़ती है। यह सारी तैयारी अभी करनी है। सुना है कि दो सौ सत्तर रुपये तक साथ ले जानेके लिअे सरकारकी अिजाजत नहीं लेनी पड़ती। लेकिन अितनेसे हमारा काम नहीं चलेगा, अिसलिअे कुछ अधिक रकम साथ

जाने की अिजाजत तो लेनी ही पड़ेगी। आशा है कि अिसमें कोअी दिक्कत नही होगी।

चि० शरद और बच्चोंको मेरे सप्रेम शुभाशिष कहना। तुम्हारे लिअे तो सदा मेरे सप्रेम शुभाशिष है ही। तुम्हारे माता पिताने तुम्हे फूलका नाम दिया है और वह भी भारतके प्रतीक सरोजका। अिसलिअे तुम्हारे लिअे तो फूल जैसे ही कोमल व ताजा शुभाशिप भेजने चाहियें। आजकल तो पत्र हवाअी जहाजसे अुड़कर पहुंचते है, अिसलिअे फूलोंके आशीर्वाद भी बासी नही होगे।

२

साथी

'सन्निधि', राजघाट
नअी दिल्ली-१
१४-७-५७

कल चि० अवनीका ट्रंक-काल आया था। अुन्होने चि० मजुको मेरे साथ भेजना तय किया है। अिस बारेमें कल तुम्हे ट्रंक-कालमे बताया ही है। लेकिन सब बात विस्तार से लिखू, यह अच्छा है।

चि० बालकी बड़ी अिच्छा थी कि चि० रेवतीको मैं अपने साथ ले जाअू। रेवतीको अुसके माता-पिताने कालेजकी शिक्षा दी, लेकिन अुसे परदेश जानेका मौका अभी तक नही मिला । मैं कहा करता हूं कि देशाटनके बगैर शिक्षा पूरी नही होती। यात्राके द्वारा जो ज्ञान व संस्कार मिलते है वे कालेजकी शिक्षाकी अपेक्षा हजार गुने अधिक महत्त्वके होते है। अिस कारण बालकी अिच्छाका स्वागत करू तो अिसमें आश्चर्य ही क्या! बालने यह भी कहा कि "सरोजबेन आपके साथ जाती तब तो कोअी सवाल ही न था। लेकिन जब वे नही जा रही है तब अिस अुमरमें आपके साथ घरका कोअी हो तो अच्छा रहे।" मैं मानता हू कि सफरमें मैं अपनी सार-संभाल ठीकसे रख सकता

हूं। पश्चिमी अफ्रीकाकी और मिस्रकी सारी यात्रा मैंने अकेले ही की थी। फिर भी साथ में कोअी हो तो अच्छा, यह सोचकर रेवतीको साथ में ले जानेका तय किया है।

अिसी बीचमें टोकियोसे भिक्षु मारुयामाका पत्र आया —'आपके साथ अेककी जगह दो बहनें आवें तो हर्ज नही है।' अिसलिअे मैंने अवनीको लिख दिया कि 'यदि बहुत देर न हुअी हो और आप सब व्यवस्था कर सकें तो आपकी अिच्छानुसार चि० मजुको मैं अपने साथ ले जा सकता हू।' वे राजी हो गये है। लेकिन मुझे डर है कि वीसा, स्वास्थ्य-प्रमाण-पत्र (हैल्थ सर्टिफिकेट) तथा विदेशी-मुद्रा आदिकी व्यवस्था करना आसान नही है। अिसलिअे मेरी कल्पनाके अनुसार मजुका जाना सभव नही मालूम होता। फिर भी अवनीकी कार्य-शक्ति गजबकी है। दौड-धूप करके सब ठीक-ठाक कर लेगा, अैसा लगता है।

मैंने यह सोचा कि जब अवनीने अिच्छा प्रकट की है और यदि व्यवस्था हो सकती है तो अुसको पूछ ही लेना चाहिये। । दूसरे मैंने यह भी सोचा कि दो बहनें साथमें होगी तो अेक-दूसरेके सहवाससे प्रसन्न रहेंगी। कोअी भी अकेली रहेगी तो मुझे अुसकी ओर ज्यादा ध्यान देना होगा। अिसलिअे मैं समझता हूं कि अवनी आखिरी वक्त भी मजुकी तैयारी करा देगा और हम तीनो जापानकी यात्राको निकल पडेंगे।

साथमें मुझे जितने पैसे लेने हैं अुसकी अिजाजत लेनेके लिअे बबअीमें रिजर्व-बैंकके श्री आयगरसे मिलना होगा। मैं कलकत्ता अितवारको पहुचूगा, अिसलिअे वहा अिस सबधमें कुछ हो नही सकेगा। अिस कठिनाअीकी ओर चि० अमृतलालने मेरा ध्यान दिलाया। अिसलिअे बम्बअी अेक दिन पहले पहुचकर सारी व्यवस्था वहीसे कर लेंगे। विदेशी व्यापारकी आजकी परिस्थितिके कारण हमारे देशकी फारेन-अेक्सचेंजकी हालत अभी विषम है। अिस कारण अिन दिनो देशका पैसा परदेशमें ले जाना हितकर नहीं है।

यहाके अेक बडे अफसर ने मुझसे कहा था —"आप तो राज्य-सभाके सदस्य हैं, आपको विदेशी-मुद्रा मिलनेमें दिक्कत नहीं होनी चाहिये।" अुनका यह कहना ठीक था। लेकिन राज्य-सभाके सदस्यका

धर्म तो यह है कि वह स्वराज्य-साकारकी नीतिका ज्यादा अच्छी तरह पालन करे। अिसलिअे अत्यत आवश्यक पैसोंकी ही अिजाजत लेनेका मेरा विचार है। यहासे विदेश जाकर अनेक देशोंमें घूम-फिर-कर वापस आनेके लिअे हवाअी जहाजकी टिकटें वगैरा लेनी होगी। अुनके पैसे यही अेयर अिंडिया अिन्टरनेशनलको दे देने है। जापानमें मेरे अकेलेका खर्च तो वहा के लोग ही अुठानेवाले है। अिसलिअे मुझे पैसोंकी खास दिक्कत नही होगी। लेकिन विदेश जायें और पासमें पूरे पैसे न हो और अुस कारण किसी कठिनाअीमें पड़ जायं, यह शोभा नही देता। अिसलिअे दो-तीन हजार रुपयोंकी फारेन-अेक्सचेंज लेकर जो रुपये वहा खर्च न हो वे वापस लाकर यहां जमा करा देनेका मेरा विचार है।

२

खिड़कीके बाहर

(वर्धा स्टेशन आनेवाला ही है)
दोपहरको १२ बजे
२०-७-५७

भुसावलसे पहले हमारा अेन्जिन बिगडा। अिसलिअे गाडी बड़ी देर तक खड़ी रही। अब दूसरा अेन्जिन हमें खीच रहा है। सुबह अुठकर श्री कुदरकी पुस्तककी पांडुलिपि पढ़ी और पाच पन्नोंकी प्रस्तावना चि० रेवतीको लिखाअी। कुछ बाकी रहे हुअे कामोंको भी पूरा किया। ट्रेनमें अेक अमरीकी (मूल स्विस) क्वेकर दम्पती मिले। अुनसे साढे नौ बजे तक बातें हुअीं। भारतमें मध्यम वर्गके कुटुम्बोंमें तलाक करीब-करीब होता ही नही, यह जानकर अुस बहनको बड़ा आश्चर्य हुआ।

सुबह खिड़कीके बाहर देखते हुअे मैंने रेवतीसे कहा, "जब कोअी अैसा मनमोहक और सुन्दर दृश्य दिखाअी देता है तो अुसमे आनन्द-विभोर होना सरोजको खूब आता है। प्रकृति-रसिक साथीका साथमें होना अेक

अहोभाग्य ही है।" रेवतीने अपने बचपनकी और खडाला घाटमें खोपोलीके पास रहने व घूमने-फिरनेकी बातें बताअीं।

अभी वर्धा स्टेशन आने ही वाला है। वहा हम बरसो रहे हैं। तब कअी बार पूज्य बापूजीमे मिलने भी जाया करते थे।

४

प्रस्थान

डमडम हवाअी अड्डा
२१-७-५७

थोडी ही देरमें हवाअी जहाज पर चढकर हम भारतका आकाश छोडनेवाले है! मैं लिखने लगा था कि 'भारतका किनारा छोड़नेवाले हैं,' लेकिन न तो कलकत्ता समुद्रके किनारे है और न मेरी यात्रा ही समुद्री जहाजसे हो रही है।

दोपहरको करीब तीन बजे हम कलकत्ता पहुचे। आम तौर पर अितनी देर नही होती। मैंने श्री सीतारामजीके यहा नहा-धोकर खाना खाया तथा वहा मिलने आये हुअे जापानी लोगोंसे मिला। अपने लोग तो काफी मात्रामें आये ही थे।

वर्धा सेवाग्राममें मैदा नामके अेक जापानी प्रोफेसर काम करते हैं। वे भी यहा मिले। अुनकी बहन सेवाग्राममें रहनेके लिअे जापानसे आअी है। अुसे लेने वे यहा आये हैं। अुस बहनने हमें 'गुल्छडी' के सुन्दर फूल दिये। वे फूल ताजे, सुगंधित और बड़े सुन्दर थे। अुनकी सुगंध यदि पत्रके द्वारा भेजी जा सकती तो कितना अच्छा होता!

हमारा जहाज बम्बअीसे आ पहुचा है। अुसमें चि० मंजु आअी है। अुससे मिलने अुसके पिता ठाकोरभाअी और अुसके भाअी जयंती भाअी वगैरा काफी लोग आये हैं। मंजुने मेरे नामका तुम्हारा पत्र मुझे दिया। बडी खुशी हुअी। अुसे आरामसे फिर पढूगा, वरना यह पत्र पूरा नही हो पायगा। मै अभी-अभी अेअर अिंडिया अिंटरनेशनलके

जलपान-गृहमें स्वादिष्ठ चोकोलेटका दूव पी आया हूं। ये लोग वड़े सज्जन हैं। यात्रियोंकी सव प्रकारसे सहायता करते हैं। मंजुके आते ही अुसको अुसके पिताजीसे मिलानेकी सुविवा भी मैं अिन लोगों की मददसे कर सका।

वस अव अविक लिखने का समय नही है। न मालूम भारतका दर्शन अव फिर कव होगा?

५

वातावरण और अुदावरणके वीच

हांगकांग छोड़नेके वाद
दोपहरको १ वजे
२२-७-५७

हांगकांग छोड़नेके वाद यह खत लिख रहा हूं।

कल रात करीव पौने दस वजे कलकत्तासे हमारा जहाज अुडा। अुसके वाद तुम्हारा खत आरामसे पढ़ा। फिर प्रार्थना की और सो गये। अिन लोगोने हम तीनोको वैठनेकी जगह पास-पास ही दी है। सुवह चार वजे वैंगकाक आया। वहाका हवाअी-अड्डा परिचित था। कॉफी पीकर आंखोंसे नींद अुड़ाअी। और हांगकागकी प्रतीक्षामें नीचेका देश देखते हुअे आगे वढ़े।

अपने कमिश्नर श्री अडारकरको चि० सतीशका पत्र मिला ही नही था। अिसलिअे वे मिलने कैसे आते? मैंने हवाअी-अड्डेसे अुनको फोन किया तव अुन्हे वड़ा आश्चर्य हुआ। आखिरी वक्त दौड़कर आना तो संभव था ही नहीं, क्योंकि हांगकांग शहर तो अेक द्वीप पर वसा हुआ है और हवाअी-अड्डा है खण्डस्थ भूमि काअूलून नामकी जगह पर। मोटरसे आते हुअे समुद्र पार करना पडता है। अुसीमें आवा घंटा तो आसानीसे निकल जाता है।

हागकांग पहुचते ही तुम्हारी व्यवस्थाके अनुसार रेवतीने तुम्हारा अेक खत मुझे दिया। अव हम अुसी आकाश-खण्डमें आ पहुचे हैं जहां तीन साल पहले टोकियोसे हांगकाग जाते हुअे हम रातको दो वजेके वाद हवाओी तूफानमें फसे थे।

तुम्हें याद होगा कि अुस समय हमारा हवाओी-जहाज समुद्रके जहाजकी तरह डोल रहा था। वायरलेसका अेक तार टूटकर जहाजकी पीठ पर फटाक्-फटाक् कोड़े मार रहा था। तूफानसे बच निकलनेके लिअे सारथीने जहाज हजार-दो हजार फुट अूपर ले जाकर देखा, लेकिन दो सौ मील तक तूफानने हमारा पीछा छोडा ही नही। तुम्हे यह भी याद होगा कि जव मैंने सारथीसे पूछा था तो अुसने वताया था कि वतार (वायरलेस) का अेक ही तार टूटा है दूसरा सही-सलामत है। और यह कि वे ओकिनावा और हागकागके साय वेतारसे वात कर रहे हैं। अुन्होंने वताया था कि कोओी खतरेवाली वात तो नही है, लेकिन अैसा खराव तूफान हम पहली ही वार देख रहे हैं।

यात्री सव अवाक् रह गये थे। वेचारी अेअर होस्टेस भी घवडा गओी थी। शान्त थे केवल सारथी, अुसके साथी और हम। चाहे जैसा कठिन प्रसग हो तो भी तुम घवडाती नही हो। मेरे लिअे अपनी यात्राकी यह अेक वड़ी विशेषता है। हम अुस दिन आत्माकी अमरता, लडाओीके सैनिकोकी मनोवृत्ति वगैरा कओी विपयो पर वातें कर रहे थे और खिडकी के रास्ते अरुणोदय की राह देख रहे थे।

अुस दिनके अनुभवके वाद आजका आकाश और नीचेका समुद्र विल्कुल ही शान्त — सलोना समुद्र माफ करे तो — अलोना लग रहा था। मैंने चि० रेवतीको और मजुको पिछला सारा हाल वताया। हवा अितनी शान्त थी कि सामान्यतया विमानकी गति का जो अनुभव होता है वह भी आज नही हो रहा था। नीचे के समुद्र पर भी लहरियोकी कोओी खास लीला नहीं दिखाओी दे रही थी।

हमारी वातें खतम होते ही मेरा मन अभी तक देखे हुअे सागरोके चित्रोंको ताजा करनेमें लग गया। समुद्री जहाज (स्टीमर) से समुद्रका जो दर्शन होता है वह प्रत्यक्ष है और विमानमें से जो होता है

वह परोक्ष है — अैसी अेक भावना मेरे मनमें वैठ गअी है। यद्यपि समुद्री जहाजसे तो पानीका दो सौ-तीन सौ मीलका विस्तार ही दिखाअी देता है, जब कि विमानमे से हजारो मील तकका विस्तार एक साथ दिखाअी देता है। अुसमें विश्व-रूप-दर्शनकी यह वन्यता होते हुअे भी समुद्रकी लहरे अितने अूंचेसे विल्कुल निर्जीव-सी लगती है, यही मुझे नही रुचता है। दससे वीस हजार फुटकी अूचाअीसे समुद्रके किनारेकी प्रचण्ड लहरे अितनी गरीव-सी लगती हैं कि समुद्रके प्रति दया हो जाती है।

अिस तरह देखें तो जब हवाअी जहाजसे जमीन दिखाअी देनी वंद हो जाती है और विमानके नीचे व आसपास क्षितिजके वलय तक केवल पानी-ही-पानी दिखाअी देता है, तव अपने जगतके विषयमें तरह-तरहके विचार मनमे आते है। कही भी जमीन दिखाअी न दे और जिसके पेटमें अपना यह विमान अथवा हम जी ही न सकें अैसा पानीका विस्तार दिखाअी दे तव जमीनवासीके नाते मेरा मन अस्वस्थ हो जाता है।

जव हम जमीन पर होते हैं तव हमें अूपरका आकाश अवाव विस्तार और स्वतत्रताका आश्वासन देता है। लेकिन यहा वही आकाश समुद्रके अूपर रखे हुअे अेक डिब्वेके ढक्कन जैसा मालूम होता है और किसी तरहका आश्वासन तो देता ही नही है।

वंवअीसे भावनगर जाते-जाते जो समुद्र दिखाअी देता है वह तो घरका-सा ही लगता है। अुसके प्रति आत्मीयता हो जानेसे वह भव्य नही लगता। अफ्रीकाके अमरसर (लेक विक्टोरिया) के अूपर होकर हम गये थे तव तो वह विल्कुल अुथला लगता था। मोम्वासासे लिंडी तक रुकते-रुकते अलग-अलग टुकडोमें गये तव महासागर और महाद्वीप आपसमें शेकहेंड कर रहे हो, अैसा लगता था। दारेस्सलामसे हम जंजीवार गये तव अुडे और अुतर पड़े—अैसा अनुभव आया था और अिसलिअे अैसा ही लगता था कि मानो समुद्रका अपमान कर रहे हों। गगोत्रीमें गगाके छोटेसे प्रवाहके दाअें किनारे पर अेक पैर और वाअें पर दूसरा पैर रखनेसे जैसे अुस प्रवाहके प्रति आदर नही वढना अुसी प्रकार दारेस्सलामसे जजीवार जाते हुअे समुद्रके संवंधमें अनुभव होना है।

अेडिस अबाबा से अेडन जाते वक्त हम लोग आकाशमें अैसी जगह पहुचे थे जहासे अेक ओर अफ्रीकाका किनारा और दूसरी ओर अेशियाका किनारा दिखाअी देता था। वहा भी भूमिकी अपेक्षा जलका महत्त्व विशेष है अैसा नही लगता था।

भूमिकी अल्पता पहले-पहल तभी ध्यानमें आअी जब मैंने काहिरासे बम्बअी जाते वक्त १८००० फुटकी अूचाअीसे सारा काठियावाड अेक नजरमें देखा।

समुद्रकी भव्यता तो अीरानकी खाडीमें, भूमध्य सागरमें और लन्दनसे लिसबन जाते समय अटलांटिक महासागरमें दिखाअी पड़ी। अुसके बाद पश्चिमी अफ्रीका जाते वक्त दक्षिणके अटलाटिक महासागरने तो मेरा मन ही हर लिया!

लेकिन मेरी भक्ति तो यह महासागर ही पा सका है। न मालूम क्यो? अुसकी विशेष गहराअीसे? या अुसके अितने बडे विस्तारसे? या अुसके मनमोहक सूर्योदयसे? यह कहना मुश्किल है। लेकिन प्रशात महासागर देखते ही मनमें यह भाव आता है कि मनुष्यको अुसके सामने नम्र होना चाहिये।

अिस पृथ्वी पर जमीनसे तीन गुना पानी है। अुन पानीके अन्दर फैली हुअी जीव-सृष्टिको हम गौण क्यो मानें? अैसा विचार मनमें आया पर वह टिका नही। हम लोगोने आकाशके साथ जितनी दोस्ती कायम की है अुतनी समुद्रके साथ अथवा अुनकी गहराअीके साथ पैदा नही की है, यह तो कबूल करना ही होगा। हम सब वातावरणकी प्रजा है, अुदावरणकी नही।

अभी ओकीनावा द्वीप आयेगा। जब जब यह द्वीप देखता हू तब-तब अिसकी प्रजाके लिअे मनमें सहानुभूति जागृत होती है। अमरीकी लोगोंने अिस द्वीपको हवाअी जहाजका बडा सैनिक अड्डा बनाया है। नतीजा यह हुआ है कि वहाके लोग और अुनका जीवन गौण व अपमानित बन गया है। यह जापानका ही अेक हिस्सा होते हुअे भी अुनसे अलग करा दिया गया है और वहा जबरदस्त सैनिक तैयारिया बढाते ही जा रहे हैं।

प्रशांत महासागरमे सैण्डविच द्वीप समूहमें हवाअी नामका अेक टापू है। अुसके अन्दर होनोलूलूका ज्वालामुखी अखण्ड प्रज्वलित रहता है। लेकिन यह ज्वालामुखी अितना विस्फोटक नही है जितनी ओकीनावाकी आजकी सैनिक तैयारी है। किसीकी छातीके सामने पिस्तौल तान कर हम अुसे कहें "तू स्वस्थ चित्तसे अपना काम करता रह।" अुसी तरह अमरीकी लोग ओकीनावामें सैनिक तैयारी बढाते हुअे अेशियाके लोगोसे कहते है:" आपको अभयदान है, हम आपके जीवनमें दखल नही देना चाहते। आप चाहे तो हम मदद भी करेगे।"

मैं अेक वार जापान हो आया हू। वहाके लोगोसे परिचय हुआ अिसलिअे अिस वार अुस परिचयको वढ़ानेकी अुत्सुकता है। जव हम पहले गये थे तब अज्ञात प्रदेश देखनेकी अुत्सुकता थी। वह अिस वार नही है। लेकिन आत्मीयता वढती जा रही है।

६

टोकियोमें – १

टोकियो,
२३–७–'५७

हम कल रातको आठ वजेसे पहले ही टोकियोके हवाअी अड्डे — हानेदा पहुच गये। भारतके विदेश कार्यालयके सचिवालयसे मेरे आनेकी खवर यहां पहुच गअी थी। अिसलिअे यहांके दूतावासके प्रथम सचिव श्री मल्लिक हमें मिलने आये थे। हम लोग जव अिथियोपियाकी राजधानी अेडिसअवावा गये थे तव श्री मल्लिक हमें मिले थे, यह तुम्हें याद होगा। वहा वे अपने राजदूत सरदार सतसिहजीके मातहत काम करते थे। पहले वे मेरी दाढी देखकर जरा चकराये, लेकिन फिर अुन्होने सोचा कि भारतसे हवाअी जहाज द्वारा आये हैं अिसलिअे और कौन हो सकते हैं? हवाअी अड्डे पर दूतावासके लोगोंको सवसे पहले मिलने देते हैं अिसीलिअे वे सर्वप्रथम मिले। अुसके वाद मिले — गुरुजीके पट्टशिष्य — हमारे आनन्द

मारुयामा-सान। अुनके साथ कअी भक्त पत्तो जैसे ढोलोंको वजाते हुअे खड़े थे। कस्टमसे सामान छुड़ानेमें कोअी कठिनाअी नहीं हुअी, लेकिन कुछ देर जरूर लगी। श्री टोकुओ-सान मासूअी नामके अेक भक्त हैं, वे हमें अपनी मोटरमें घर ले गये। किनोकुनिया नामका अुनका अेक वड़ा भण्डार (जनरल स्टोर) है। वह अितना अच्छा है कि अमरीकी लोग भी यहां खरीदने आते हैं। अुनके छोटे भाअी नुनुमु-सानके यहां हमारे ठहरनेकी व्यवस्था की गअी थी। घर पहुंचकर नहाने-धोने व खानेमें ग्यारह वज गये। हवाअी अड्डेसे घर आते वक्त वारह मीलका रास्ता टोकियो शहरके वीचसे तय करना पडा था। वारिशके कारण रास्ते चमक रहे थे। रास्ता किसी तरह खत्म ही नहीं हो रहा था।

यहां अितना कह दूं कि टोकियो अव दुनियाका सवसे वडा शहर वन गया है। अिसका विस्तार लगभग नव्वे वर्गमील है। यदि मैं भूलता न होअूं तो यहांकी आवादी करीव अस्सी लाख है।

पिछले महायुद्धमें अत्यधिक संहार सहनेके वाद भी जैसे वर्लिन और लन्दन फिरसे सजीव हो अुठे हैं वैसे ही टोकियोने भी शीघ्र पुनर्जीवन प्राप्त किया है और अमरीकाके शहरोंको भी मात करके दुनियामें प्रथम स्थान ग्रहण कर लिया है। अिससे न्यूयार्क अथवा वाशिंग्टनवालोंके दिलों पर क्या वीतती होगी?

हमारे मेजवान मासुअी वन्धुओंकी वृद्धा मां — श्रीमती टोकुनोने हमारा वडे भावसे स्वागत किया। वे अितनी शांत व प्रसन्न दिखाअी देती हैं कि हमने अुन्हें 'माताजी' कहना ही पसन्द किया। यहांकी भाषामें माताजीके लिअे 'ओका-सान' शब्द है। अुनमें 'का' अक्षरकी आवाज अूंची चढानी होती है। खानेके लिअे तो वहुत-सी चीजें तैयार की गअी थीं। हम शाकाहारी हैं यह भी वे जानते थे। दूध-दहींकी अिफरात थी और फलोंका तो क्या कहना, ढेरके ढेर थे। अुनकी अपनी ही अुत्तम वेकरी है। अिसलिअे डवल रोटीके विषयमें तो कहना ही क्या?

अिन वौद्ध भक्तोंके घरोंमें अेक कमरा तो देव-घर और प्रार्थना-घरके लिअे होता ही है। हम तीनों अुस प्रार्थना-मंदिरमें ही सो गये।

अितनी सुन्दर गाढ़ी नींद आओी कि कोओी छोटा-सा सपना भी पास फटक न सका।

सुबह हम Anti Atom Bomb and Hydrogen Bomb और For disarmament वाली परिषद्‌के दफ्तरमें गये। आन्तर-राष्ट्रीय पूर्व तैयारीकी समितिमें (International Preparatory Committee) में पहुंचते ही अुसके अेक मत्री मि० मॉरो, जो आस्ट्रे-लियासे आये है, खड़े हुअे और अुन्होने मेरा अभिनन्दन करते हुअे बताया: "कल ही हमने आपको अपनी समितिका अुप-प्रधान चुना है। आपको पूछनेके लिअे भी हम नही ठहरे!" अिस सम्मानके लिअे मैंने अुनका आभार माना और कहा: "मैं जानता हूं कि भारतकी सरकार और भारत-राष्ट्र विश्व-शांतिके लिअे जो कुछ कर रहा है अुसीकी कदर करनेका आपका हेतु है।" अुनसे मैंने यह भी कहा: "टोकियोमें रहकर अुनके काम-काजमें मैं हिस्सा नही ले सकूंगा, क्योंकि मेरा कार्यक्रम जापानके सारे देशमें घूमनेका है। आन्तरराष्ट्रीय समितिमें बैठकर काम करनेके महत्त्वको तो मैं स्वीकार करता हूं, लेकिन मैंने तो अपना समय सारे देशमें घूमकर जन-सम्पर्कके लिअे देना निश्चित किया है। परिषद्‌के दिनोंमें तो मै जरूर अुपस्थित रहूंगा। आपकी पूर्व तैयारीमें मदद देनेके लिअे भारतसे पं० सुन्दरलाल आनेवाले हैं। वे पूरा समय आपके साथ रहेंगे।"

अिसके बाद समितिमें अेक गम्भीर प्रश्न पर चर्चा हुअी।

जापानके हवाओी अड्डे अमरीकाके अधिकारमें है। अणु-बमके लिअे अिनका अुपयोग करना हो तो अिन हवाओी अड्डोका काफी विस्तार करना होगा और आसपासकी खेतीकी जमीन भी फौजी कामके लिअे अिस्तेमाल करनी होगी। जापानी सरकार अिस तरह जमीन देनेके लिअे तैयार हो जाय यह यहांकी प्रजाके लिअे असह्य है।

अेक तो जापान छोटा देश है, अिसके अलावा वहा चारो ओर पहाड ही पहाड़ हैं। जनसंख्या बेहिसाब बढी हुअी है। खेतीके लायक जमीनका क्षेत्रफल मुश्किलसे चालीस फी सदी है। अिसलिअे खेतीकी जमीनका दूसरी चीजोंमें अुपयोग किया जाय अिसे जापानी लोग कैसे

सहन कर सकते हैं? आजकल अिसी सिलसिलेमें कही-कही सत्याग्रह भी चल रहा है। समितिमें किसीने सवाल अुठाया कि जब हम लोग अिसी कामके लिअे अेकत्र हुअे हैं तब हमें अिस सत्याग्रहमें भाग लेना चाहिये या नही? कुछ लोग कहने लगे कि हम लोग अिस देशके रहनेवाले नही हैं। यहाकी सरकारकी अिजाजत लेकर मेहमानके नाते आये हैं। हमें यहाके सत्याग्रहमें भाग नही लेना चाहिये। अिस विषयमें जब मेरा अभिप्राय पूछा गया तब मैंने कहा — सत्याग्रहमें हम भाग तो नही ले सकते। लेकिन जहा सत्याग्रह चल रहा हो, वहा निरीक्षक (observer) के नाते व्यक्तिगत रूपसे किसीको जाना हो तो हम अुसे रोक नही सकते। अिस तरह जानेवाला व्यक्ति पहलेसे ही जाहिर कर दे तो अच्छा कि वह तटस्थ होकर केवल निरीक्षणके लिअे ही जा रहा है।" मेरे अिस अभिप्रायसे सब लोग सहमत हुअे और प्रारम्भमें ही अुठा हुआ अेक मतभेद टल गया।

रिवाजके मुताबिक मैं अपने दूतावासमें तुरन्त ही गया। वहा मालूम हुआ कि हमारे राजदूत श्री झा कही सफर पर गये हुअे हैं। लेकिन श्री मल्लिकने हमारी सारी व्यवस्था करनेकी तत्परता प्रकट की। मुझे तो अितनी ही सुविधा चाहिये थी कि दूतावासके पते पर मेरे नाम जो पत्र आवें वे मेरी यात्राके क्रमके अनुसार यथास्थान मुझे तुरन्त मिलते रहें। श्री मल्लिकने यह कार्य दफ्तरके अेक जापानी कर्मचारीको सौंप दिया।

आजके दिन टोकियोमें थोड़ा आराम करके कल हम विमान द्वारा सीधे अुत्तरमें बसे हुअे होक्कायडो द्वीपके मुख्य शहर सप्पोरो जानेवाले हैं। हमारी सारी व्यवस्था करनेके लिअे श्री ओमाओ-सान वहा कभीके पहुच चुके हैं। मारुयामा आज रातको ट्रेनसे रवाना होंगे। गुरुजीकी तबियत अच्छी रही तो वे खुद हमारे साथ विमानसे चलेंगे।

खा-पीकर डटकर सोया। बस, अभी अुठा हू। दोपहरके तीन बजे हैं। अब सुरगमें से जानेवाली ट्रेनके द्वारा बाजार जायगे वहा मेरी कर्णिका (hearing aid) के लिअे बैटरिया लेनी हैं।

७

टोकियोमें — २

टोकियो
२४–७–'५७

मैंने सोचा कि अेक वार सफरकी दौड़-धूप शुरू हो जाने पर यहाके नाटक अथवा नृत्य देखनेका समय नही मिलेगा। हमको होक्कायडो जानेसे पहले अेक दिन मिलता है अुसमें कुछ देख लें तो अच्छा। यहां 'कावूकी' नामके पुराने ढगके नाटक होते हैं। ये नाटक पुराने ढगके होते हुअे भी अितने अधिक लोकप्रिय हैं कि टिकटोके लिअे हमेशा ही भीड लगी रहती है। फिर भला अैन मौके पर हमें कहांसे टिकटें मिलती? दिन वेकार न जाय अिसलिअे हमने जापानी सिनेमा कैसा होता है यही देखना तय किया। चि० मजुको आश्चर्य हुआ कि 'काका साहेव और सिनेमा देखने जाअेंगे!' मैंने अुससे कहा, "भारतमें मैं शायद ही कभी सिनेमा देखता हू, लेकिन परदेशमें जव थोडे ही दिनोमें सारा देश देखना है तव सामाजिक जीवनका कुछ अन्दाजा तो नाटक व सिनेमाके द्वारा ही मिल सकता है। अिस देशकी वर्तमान समयकी रसिकता व कलाकी अभिरुचि भी रग-मंच पर आसानीसे परखी जा सकती है।" हम सिनेमा देखने गये। हमारे साथ अेक वौद्ध साधुको भी जाना पडा। सामान्यतया साधु सिनेमा देखने नहीं जाते, लेकिन मेहमानोंके लिअे जाना पड़े तो अिलाज क्या? फिर हमारे साथ वैठनेके वाद वे अुसमें रस न ले यह जरूरी नही था। हमें वे वीच-वीचमें समझाते जाते थे। भली ओकासान भी हमारे साथ आयी थी। सिनेमाकी कहानी मजेदार थी। अभिनय सुन्दर था। लेकिन मुझे लगा कि अभिनयके वारेमें सारी दुनियामें अेक ही सर्वसामान्य ढंग (mannerism) वनता जा रहा है। अिसलिअे सिनेमामें हमें विशेप रस नही आया।

माताजी ओकासानने हमारे लिअे अपने घर पर ही अेक नृत्यका कार्यक्रम आयोजित किया था। लड़कियोको नृत्य सिखानेवाली नृत्यमें

पारंगत अेक वहनको अुन्होने वुलाया था। ओकासानने वाद्य वजानेका काम अपने अूपर लिया। अुन्होने कहा, "पिछले तीस वर्षोंसे मैंने यह वाद्य नही वजाया है। ये शिक्षिका वहन सादी पोशाकमें ही आपको नृत्य दिखायेंगी, अुनका साथ मैं न दू तो ठीक नही रहेगा।" नृत्य सुन्दर था। अुसमें तरह-तरहके भाव व्यक्त हो रहे थे। अुस शिक्षिकाका चेहरा सादा ही था, लेकिन जव नृत्य करती थी तो अेकदम दमक अुठता था। वहुतसे कलाकारोंमें यह खूवी होती है कि नृत्यके वक्त वे कुछ निराले ही दिखाओी देने लगते हैं।

जैसे नृत्यको वाद्यका साथ होता है वैसे ही यहा जापानी पखेका साथ भी होता है। पंखेको घडीमें वद करना, घडीमें फैलाना और अुसे अनेक प्रकारसे घुमाना, अिसका अपना अेक पूरा शास्त्र ही रचा हुआ है।

दूसरे दिन मेरी कर्णिका (hearing aid) के लिअे वैटरी खरीदने हम सर्ववस्तु-भडार (departmental stores) में गये। तीन साल पहले हमने यह भण्डार देखा ही था। अिसलिअे मेरे लिअे अिसमें कुछ नवीन नही था। लेकिन रेवती और मजु तो अिसे देखकर चकित ही रह गअी। प्रत्येक मजिलको देखते हुअे हम ठेठ अूपर तक गये। अखण्ड चढती-अुतरती सीढियोकी घटमाल (रहट-माला) देखनेमें हम सवको वडा मजा आया। जहा वहनोंके लिअे तैयार कपडे विकते हैं, अुस विभागमें अेक जगह जापानी स्त्रियोंके और दूसरी जगह अमरीकी स्त्रियोंके पुतले खडे करके कपडे किस तरह फिट होते हैं, अिसका प्रदर्शन किया गया था। सैंकडो पुतलोंके द्वारा अिन लोगोने मनुष्यके और कपडोंके सौन्दर्यकी कल्पना व्यक्त की थी। विकारोको कैसे पोसा जाय अिसकी कला आजके जमानेने खूव विकसित की है। वच्चोंके पुतले वडे ही मनोरजक थे। अेकदम अूपर जानेके वाद टोकियो शहरका विस्तार दिखाओी देता है। वहा तक मैं नही गया, क्योकि वहाके लिअे लिफ्ट न थी। छत पर लकडीके घोडों और हिंडोलोंके अूपर वच्चे खेल रहे थे, वह मजा देखता हुआ मैं वैठा रहा। वच्चे अनजान लोगोंके प्रति अधिकतर लापरवाह होते है, फिर भी कअी वच्चे काले कोट पर मेरी सफेद दाढी कैसी जचती है यह जरा झाककर देख ही लेते थे।

सर्व-वस्तु-भण्डारमे कर्णिकाकी बैटरी नही मिली। पर आश्चर्यकी बात तो यह थी कि भंडारकी अेक बहनने मेरी पुरानी बैटरीके अूपरके नम्बर वगैरा देखकर अैसी बैटरी टोकियोमें कहा मिल सकेगी यह अेक निर्देशिका (directory) मे से ढूढकर अचूक बता दिया। हमें किसी तरहकी दिक्कत नही हुअी। अिस विशाल नगरमें अेक कोनेकी छोटीसी दुकानमे सीधे पहुच कर हमने वह बैटरी खरीद ली। भिक्षु तास्से-सान साथ थे अिसीसे यह हम आसानीसे कर सके।

टोकियोमे और सारे जापान देशमे केवल जापानी भाषाका ही प्रयोग होता है। अंग्रेजी बिल्कुल नही चलती। रेलवे, तार-घर, डाक-घरके नाम और सरकारी दफ्तरोंमें भी कही अंग्रेजीका प्रयोग नही होता है। केवल स्टेशनोके नाम और रास्तोके नम्बर जापानीके साथ अंग्रेजीमें भी दिये गये है। अितना भी अमरीकाके राजनीतिक और आर्थिक प्रभावके कारण ही अुन्हें मजबूरन चलाना पडता है।

आज भी हम पूर्व तैयारीकी समितिमें (Preparatory Committee) गये। वहां मुझसे प्रेसके लोग मिलने आनेवाले थे। वे समय पर नही आये। अिसलिअे अुस बीचमे मैं P E.N क्लबकी मुख्य मंत्राणी योको मात्सुओका — Yoko Motsuoka से मिल लिया। अुनके साथ अेक सज्जन और थे। जिन्होंने कअी सवाल पूछकर अुसे अेक मुलाकातका ही रूप दे दिया।

बादमें मालूम हुआ कि जो प्रेसवाले मुझसे मिलने आनेवाले थे वे आये थे और राह देखकर चले गये। मुझे किसीने बताया ही नही। दोनो पक्षोको बड़ी निराशा हुअी। पूर्व तैयारीकी समिति-वाले बडे नाराज हुअे। अिस भूलको सुधारनेके लिअे बादमें प्रेसवालोंको हमारे निवास-स्थान किनोकुनियामें ही बुलाया गया। मुलाकात हुअी। फोटो भी लिये गये। अिन सबसे निवृत्त होकर फिर हम सप्पोरो जाने के लिअे हवाअी अड्डे पर पहुचे।

८

सप्पोरो जाते हुअे

सप्पोरो जाते हुअे,
२४-७-'५७

J.A.L. यानी 'जापान अेयर लाअिन्स' के अेक विमानमें बैठकर हम लोग सप्पोरो जानेके लिअे निकले हैं। सप्पोरो होक्कायडोकी राजधानी है। (राजधानी शब्द ठीक नहीं लगता, मुख्य शहर अथवा कारभार-धानी कहना चाहिये। संस्कार-धानी तो यह है ही)। अिस द्वीपका क्षेत्रफल तीस हजार वर्गमीलसे अधिक है। अिस आकडेसे तो हमें कोअी मतलब नहीं है। लेकिन यदि समुद्री जहाजमें बैठकर अिस द्वीपकी प्रदक्षिणा की जाय तो डेढ हजार मीलकी समुद्री-यात्रा करनी होगी। यह कल्पना सचमुच आकर्षक है। होक्कायडो यानी 'अुत्तर सागरकी तरफका प्रदेश'। चीनी भाषामें और जापानी भाषामें 'हाय' यानी समुद्र। यह शब्द होक्कायडोमें छिपा हुआ है। 'होकु' यानी अुत्तर।

अिसी द्वीपके अुत्तरमें साघालिन टापू है जिसके विषय में बचपनसे ही पढ़ता आया हूं। अिस द्वीपका यह दुर्भाग्य है कि यह रूसी साअि-बेरियाके किनारे और जापानके अुत्तरमें स्थित है। जापानी लोगोंने सबसे पहले साघालिन द्वीप पर बसना शुरू किया था, लेकिन प्राचीन समयमें जापानी राजसत्ता वहां ठीक तरहसे नहीं जम सकी। अिसलिअे रूसी मछियारे वहां पहुंच गये। आयनु लोगोंके विषयमें हमने कअी बार चर्चा की है। अुनको देखनेके बाद मैं अुनके विषयमें अधिक लिखनेवाला हूं। ये आयनु लोग भी अुत्तरकी ओर खिसकते-खिसकते अिस साघालिन द्वीपमें पहुंच गये हैं। मेरे बचपनमें रूस और जापानके बीच युद्ध हुआ था (१९०५ में) तब साघालिन द्वीप पर रूसका राज्य था। जापानकी विजय हुअी अिसलिअे जापानने रूससे आधा द्वीप ले लिया। फलतः जापानको खुराक प्राप्त करनेका प्रश्न कुछ आसान हुआ। पिछले

महायुद्धमें जापानकी हार हुअी जिससे फिरसे पूरा साघानिल द्वीप रूसके हाथमें चला गया। अब अुत्तरी सरहदकी रक्षा करनेके लिअे होक्कायडो द्वीपको सुदृढ किये विना और कोअी चारा ही नही है। अिस द्वीपको हम अष्टावक्र कह सकते हैं। किनारा टेढा-मेढा, जहा-तहा पहाड़ और सरोवर भी सब तरहसे टेढे-मेढे ।

अिस द्वीपके विषयमें मैने आयनु लोगोकी अेक दन्तकथा पढ़ी थी; जैसी याद है यहां लिख रहा हू। स्त्री जातिके विषयमें अैसी अनुदार वातें दुनियाके सभी देशोमें और सभी लोगोंमें न मालूम क्यो प्रचलित है? भिन्न-भिन्न वश और भिन्न-भिन्न जातियोंके लोग अेक-दूसरेके विषयमें हलके खयाल रखें यह तो समझमें आ सकता है। अनजान और पराये लोगोंके विषयमें तो गलतफहमी होती ही है। लेकिन स्त्री-पुरुष मिलकर ही समाज बनता है। प्रत्येक पुरुष किसी स्त्रीके पेटसे ही जन्म लेता है। अुसका दूध पीकर बड़ा होता है और फिर किसी स्त्रीके सहारे ही गृह-संसार चलाता है। अुसके अिच्छित बच्चे भी अुसे स्त्रीके द्वारा ही मिल सकते हैं। अितना परस्परावलम्बन होते हुअे भी पुरुष स्त्री जातिके विषयमें हलके विचार क्यो रखता होगा राम ही जाने!

आयनु लोगोकी मान्यताके अनुसार भगवानने अपने देवी-देवताओंको अनेक देश रचनेका कार्य सौंपा। होक्कायडो द्वीपको बनानेका काम अेक देवीको सौंपा गया। अुसने गारा-कंकड-पत्थर आदिसे अपना काम अुत्साहसे शुरू किया। लेकिन अुसके साथ बातें करनेके लिअे अेक दूसरी देवी वहां आ पहुंची। जहा दो स्त्रिया मिली और बातोंका ताता चला। किसी तरह भी बातें खतम नहीं होती थी। दिया हुआ वक्त पूरा हो चला। भगवानने पूछा· 'सौंपा हुआ काम पूरा हुआ?' काम कहांसे पूरा होता। अब क्या अुपाय? भाडमें जाय द्वीप! जैसे-तैसे कुछ कर-कराके देवीने अुत्तर दिया—'हां जी, यह रहा द्वीप। बिलकुल तैयार।' अिस तरह स्त्रियोंका बातूनी स्वभाव अिस सारे प्रदेशके लिअे हानिकारक सिद्ध हुआ।

आयनु पूर्वजोंका अभिप्राय चाहे जो रहा हो लेकिन यह प्रदेश बड़ा ही मनोहर है और यहां खेतीकी पैदावार भी कुछ कम नहीं है। हम

सप्पोरो शहर, कुशीरो बन्दरगाह, आकान नामका कानन और हाकोदाते नामका दूसरा बन्दरगाह आदि सब देखना था। मैंने पढा था कि आकान-काननमें बड़े ही सुन्दर-सुन्दर सरोवर है और अिसी प्रदेशमें आयनु लोग भी रहते हैं। अिसलिअे यह सारा प्रदेश देखनेकी बडी अुत्कण्ठा थी।

मैं समझता हूँ कि भविष्यमें शीघ्र ही अिस द्वीप का महत्त्व काफी बढनेवाला है। केवल फौजी दृष्टिसे ही नहीं, बल्कि जापानकी समृद्धिकी दृष्टिसे भी। यहां सरोवरोंके किनारे गर्म पानीके चश्में है जिसमें नहानेसे चमड़ीके कुछ रोग मिट जाते है। ठंडके दिनोंमें यहा लोग तग बर्फीले पहाडी रास्तोंपर फिसलने (ski-ing)का खेल खेलते है। अिसके बाद ठंडके अन्तमें प्रसन्न होकर फिर ग्रीष्मका आनन्द लूटते हैं।

गुरुजी फूजीअी अिस द्वीपमें तीन-चार स्तूप बनाकर धर्मप्रचार और धर्म-संगठन बढाना चाहते हैं। मैं भी मानता हूं कि अुसके लिअे यह भूमि अनुकूल है।

यह लो, देखते-ही-देखते सप्पोरो आ भी गया। तीन बजे टोकियो छोडा था। अब छह बजनेवाले हैं।

चि० रेवती और मजुके बीच न मालूम क्या हमी-मजाक चल रही है! मुझे अितना वक्त मिला तभी यह पत्र पूरा कर सका ।

९

सप्पोरो

सप्पोरो
२६–१०–'५७ की रात्रि।

आखिर हमने सप्पोरो देख ही लिया!

तीन घंटेमें पाच सौ अड़तीस मीलका सफर करके सप्पोरोके हवाओ अड्डे 'चितोसे' पर हम २४ तारीखकी शामको ही पहुंच गये। हर शहरके नामके साथ अुसके हवाओ अड्डेके अलग नामका भी ध्यान रखना पड़ता है। (अपवाद केवल बर्लिनका है, क्योंकि वहाका विराट हवाओ-अड्डा शहरके बिलकुल बीचो-बीच है।) हवाओ अड्डे मुख्य शहरसे पाच-पाच, दस-दस मील दूर होते हैं। लेकिन चितोसेसे सप्पोरो तो पूरा पच्चीस मील दूर है! परन्तु जिस आनन्दके साथ हमने यह सफर किया अुसका विचार करते हुओ पच्चीसके बदले तीस मील भी होता तो हमें भारी नहीं पड़ता। जैसे ही हम पहुचे स्वागतके लिओ आयी हुओ अेक छोटी टोलीने हमें सप्पोरोकी नगरपालिका द्वारा भेजी गओ अेक बादशाही ठाठकी अमरीकन मोटरमें बिठाया और तुरन्त मोटरके रेडियोने सुन्दर जापानी संगीत शुरू किया। सारा रास्ता तारकोलका बना था। कओ पहाड़ियों परसे चढते-अुतरते और घुमाव लेते हुओ हमें जरा भी धक्के महसूस नही हुओ। अैसा लगता था कि मानो हम पानीमें तैर रहे हैं और बीच-बीचमें लहरोंके कारण अूपर-नीचे हिलोरे भी लेते जा रहे हैं। जब अमरीकी लोगोंने जापानका फौजी कब्जा लिया तब अुन्होंने यहा अच्छे रास्ते बनाये और कामचलाअू मकान भी बनाये। शामका वक्त और यह मनमोहक प्रदेश! हरी-भरी पृथ्वी पर तरह-तरहके फूल हमारा मनोरंजन कर रहे थे। साथ ही मस्कारी मधुर संगीतके कारण सारा आनन्द और भी मुखरित हो अुठा था। अैसा लगता था मानो हृदय ही अुत्फुल्ल और रागमय हो गया है।

ओमाओी-सान हमें सप्पोरोकी सीमा पर मिले और हमें अेक बड़ी दुकानके हालमें ले गये। वहा हमारा सार्वजनिक स्वागत हुआ। छोटी-बड़ी लडकियोने हमें फूलोंके गुच्छे दिये। नगरपालिकाके प्रमुख लोगोने स्वागत भाषण किये। आभार मानते हुअे मैं हिन्दीमें थोडा बोला। ओमाओी-साननें अुसका जापानी अनुवाद किया। भारत और निप्पोनको स्नेह और मैत्रीमें जोड़नेवाला बौद्धधर्म है। अुस धर्मका प्रचार करनेवाले अनेक लोगोंमें से गुरुजी निचिदात्सु फूजीओीने विश्व-शांति और विश्व मैत्रीका काम अपने सिर पर लिया है। मैं अुनके निमंत्रण पर यहा आया हूं — अित्यादि बातें संक्षेपमें कही। फिर हम अेक सुन्दर जापानी होटलमें ठहरने गये।

अुस होटलका निचला भाग अिस तरह सजाया गया था मानो अेक संग्रहालय ही हो। अुसमें आयनु लोगोंके कपडे, हथियार, वाद्य, मूर्ति व चित्र आदि बहुत कुछ था। अिसके अलावा वहाके प्राचीन कालके अवशेष और बादशाहोंकी मूर्तियां वगैरा भी थी। लेकिन यहा मैं अुनका वर्णन नही करूगा।

जापानी मकान भीतरसे सादे दिखाओी देते हैं, लेकिन अितने सुघड, कलापूर्ण और प्रमाणबद्ध होते हैं कि देखते ही चित्त प्रसन्न हो जाता है। सुनता हू कि अिन सादे मकानोंको बनाना भी कम खर्चीला नही होता। पश्चिमके होटलोंमें अैशोआराम आदिकी सारी सुविधा होती है। लेकिन हम अेशियावासियोंको यह जापानी रहन-सहन ही अधिक संतोष देता है। चटाओीवाली जमीन पर मोटे-मोटे गद्दे बिछाकर सोते हुअे स्वदेशी वातावरणमें ही रहनेका अनुभव होता है। गद्दियों जैसे नरम आसन पर चौकी जितनी अूची मेजके आसपास बैठकर चाय पीना अितना सुन्दर लगता है कि मानो किसी धार्मिक अथवा सांस्कृतिक विधिमें बैठे हो!

सचमुच जापानी लोगोंने चाय पीनेकी विधिको अत्यधिक सांस्कृतिक महत्त्व दिया है। फूलोंकी रचना, बैठनेका ढंग, चाय परोसनेका तरीका, चाय पीते समय मिठाससे बोलनेकी भाषा और ढीले-ढीले 'कीमोनो' के आसपास लपेटनेकी 'ओबी' की खूबिया — आदि सब

मिलकर अैसा अनुभव होता है मानो हमें जापानी वनानेकी या वननेकी दीक्षा ही मिल रही है। जव हम जापानी ढंगसे रहते है तव स्वाभाविक रीतिसे यहाके लोगोमें आत्मीयता जागृत होती है। यदि हमें यहांके लोगोंकी थोड़ी-सी भापा भी आ जाय तो वह सोनेमें सुगवके समान हो। मुझे अिस जापानी रहन-सहनके ढगके प्रति महज ही आकर्पण हो गया।

जापानी घरोमें जहां-तहां निश्चित नापकी चटाअियां विछी हुअी होती है। यहा तक कि 'अमुक कमरा चार चटाअी जितना वड़ा है अथवा साढे पाच चटाअी जितना वडा है' अित्यादि कहकर समझाते है।

पश्चिमके लोग जूते पहनकर सव जगह घूमते है। हमारे यहा लोग घरके दरवाजे पर जूते अुतारकर नंगे पैर घरोंमें घूमते है। पर जापानियोंने वीचका सुन्दर रास्ता निकाला है। किसी भी घरमें जायें तो पहले घरभरके लोग अथवा नौकर आकर आपका स्वागत करेंगे और घरमें अिस्तेमाल करनेकी खड़ाअू सामने रखेंगे। अपने जूते निकालकर अिन खड़ाअुओको पहननेके वाद ही घरमें प्रवेश किया जाता है। घरके अन्दर भी पाखानेके खडाअू अलग होते हैं। वे दूसरी जगह नही ले जाये जाते।

नहानेके कमरोमें कपडे रखनेके लिअे खूटिया नही होती, लेकिन वेंतकी अथवा अैसी ही दूसरी प्रकारकी टोकरियां रखी होती है। अेक टोकरीमें अुतारे हुअे व दूसरीमें नये पहननेके कपड़े रखे जाते हैं। नहानेके लिअे लोटे अथवा प्यालेकी जगह लकडीके वालिश्त-दो-वालिश्त चौडे कटोरेका अुपयोग होता है। अुसे भरकर सिर पर पानी डालनेमें पूरी कसरत हो जाती है। आखिर मैंने तो अुस प्यालेके सरदारको दोनों हाथोंसे ही अुठाना पसन्द किया। अुसमें से गरम-गरम पानी सिर पर डालनेमें वडा सुख मिलता था।

अिनमें से कअी वस्तुअें तो तुम जानती ही हो, लेकिन वर्णन करनेके रसमें मगन हो जाने पर अेक चित्र पूरा करनेका मन हो ही जाता है। वहा कितने ही लोग तुमसे यह पत्र लेकर पढेंगे। अुनकी सुवियाके लिअे विस्तारसे लिखू तो तुम अूवोगी नही अिसका मुझे विश्वास है।

दूसरे दिन २५ तारीखकी सुवह अेक अूची पहाडी पर अेक वडा स्तूप वनानेका काम शुरू होनेवाला था। वहुतसे स्त्री-पुरुष वहा अिकट्ठे हुअे थे। अपने मारुयामा-सान अिस अुत्सवके पुरोहित थे। जहा स्तूप तैयार होनेवाला था वहा अेक पुराना वहुत ही छोटा-सा काम-चलाअू स्तूप था। लोग असके चारो ओर वैठ गये थे। सामनेकी ओर छोटे-छोटे वच्चे सज-धजकर वैठे थे। हम लोग वच्चोंके मस्तक पर अथवा दो भौंहोंके वीच विन्दी लगाते हैं। कभी-कभी काजलकी विन्दी भी लगा देते हैं। यहां अिसके वदले दोनों भौंहोंके अूपर लेकिन अेक-दूसरेसे दूर नही अैसी दो काली विन्दिया लगानेका रिवाज है। अिन लोगोंको जरूर यह विन्दी सुन्दर लगती होगी। वच्चोंके सिर पर पुराने ढंगका सुनहरी मुकुट पहना देते हैं। सिरके आकारसे यह वहुत छोटा होता है अिसलिअे अिसे कानके पाससे गलेके नीचे वाधना पडता है।

सारी विधि दो तक घटे चली। तव तक ये वच्चे चुपचाप वैठे रहे, न कोअी रोया और न कोअी अिधर-अुधर दौडा ही। किसीने वातें भी नहीं कीं। केवल अुन्हें भूख लगी तव अुनकी माताओने आकर अुनको खिला-पिला दिया। सचमुच जापानी वच्चोका धैर्य प्रशसनीय है। अिन लोगोको जन्म-घूट्टीमें ही अपनी भावनाओ पर कावू रखनेके सस्कार मिले होते हैं। यह तो अिनकी सारी संस्कृतिकी विशेषता है।

पहाडी पर चढ़ना मेरे लिअे आसान नही था। मोटर जहा तक जा सकी वहा तक अुसीमें गये। अुनकी परेशानी देखकर मैंने कहा कि आप चिन्ता न करें, वाकी चढाअी मै चढ लूगा। अीमाअी-सानके मजवूत कधो पर हाथ रखकर मैं चढ़ ही गया। विधिके अतमें कुछ भाषण हुअे। अुसमें मुझे भी वोलना पडा। जापान की अिस यात्रामें मेरा यह सवसे पहला भाषण था। मनमें विचार आया कि अितनी दूर पूर्वमें और अुत्तरमें आया हू और ये लोग मुझे अपने अुत्सवमें आदर व प्रेमके साथ वोलनेको कह रहे हैं, सचमुच यह भगवान और महात्मा गाधीका प्रताप है। हिन्दुस्तानमे मैं अुत्तरमें चौंतीस या पैंतीस अक्षांश तक ही गया हूं, लेकिन सप्पोरो तो तैंतालीस अक्षाश पर वसा

हुआ है। पूर्व दिशामें भी अितनी दूर अिससे पहले नही आया था। यहांकी भाषा, यहाके रिवाज कुछ भी नही जानता हूं। फिर भी अिन लोगोसे, अिनकी भावनाओं और महत्त्वाकांक्षाओंसे, पूरी-पूरी सहानुभूति रखता हू और प्रेमके कारण तथा स्वतंत्रता, शांति और बन्धुत्वके आदर्शके कारण अिन लोगोंके साथ मैं अेक प्रकारका हार्दिक अैक्य अनुभव करता हू। अीश्वरके यहां न कोअी स्थान दूर है और न कोअी दृश्य पराया है। हम अेक दूसरेकी बोलचालकी भाषासे अनजान थे। लेकिन आखोंके द्वारा अेक-दूसरेके समक्ष आत्मीयताको और भावनाओंको सहज ही व्यक्त कर सकते थे।

मेरी भाषा समझनेवाले यहा दो ही व्यक्ति थे। अुनमें से अीमाअीसान कही गये हुअे थे अिसलिअे श्री मारुयामाने मेरे भाषणका जापानी अनुवाद किया। सारी विधि पूरी होनेके बाद मैंने अपने जुड़वा दुर्बीनसे सप्पोरोका विस्तार देखा। पासकी पहाड़ी पर ठंडमें जब बरफ जम जाती है तब दूर-दूरसे लोग फिसलने (ski-ing) का खेल खेलने आते हैं। यह खेल सचमुच बड़ा रोमांचकारी होता है। सौ दो सौ फुट अथवा अुससे भी अधिक अूचाअीसे निर्भयतापूर्वक फिसल जाना और वह भी बैठकर नही, लेकिन पांच-पांच फुटके तलेवाले जूते पहनकर! अिसका आनन्द और रोमांच अनोखा ही होता है।

सप्पोरोकी आबादी पांच लाखकी है। अुसमें सत्तर स्कूल और अेकसे अधिक विश्वविद्यालय हैं।

स्तूपके अुत्सवमें भाग लेकर हम नीचे अुतरे। दोपहरके खानेके बाद थोड़ी नीद ली।

अुस दिन फिर हमने आराम ही किया। शामको थोड़ा-सा शहरमें घूमे-फिरे। अिस सुन्दर शहरकी रचना अमरीकी ढंगकी है। अिसलिअे जापानकी नगर-रचनासे अलग पड जाती है। हम जिन होटलमें ठहरे हुअे थे अुसके पीछे अेक बड़ी अिमारत थी। रातको वहां बड़ी देर तक दीये जलते थे। पूछने पर पता चला कि वह केश-कर्तन महाविद्यालय है। अिसमें नाअियोंको बाल काटनेकी कला सिखाअी जाती है। यह अभ्यास-क्रम अेक वर्षमें भी पूरा नही होता!

दूसरे दिन सुबह यानी २६ को हमने सप्पोरोका ठीकसे निरीक्षण किया। सबसे पहले अेक शिन्टो मन्दिर देखा। जिसमें मूर्ति नहीं होती; लेकिन बीचका कमरा पवित्र माना जाता है। जिसमें पुजारी ही जा सकते हैं। भक्त लोग दरवाजेमें से ही अन्दर देखकर ताली बजाकर नमस्कार कर लेते हैं।

शिन्टो जापानियोंका राष्ट्रीय धर्म है। चीन और कोरियासे आये हुअे बौद्ध धर्मकी जिस शिन्टो धर्म पर कलम चढ़ाओी गओी। आगे चलकर राष्ट्रीय सरकारको यह बात न रुची। जिसलिअे दोनों धर्म बादशाहके हुक्मसे अलग-अलग कर दिये गये।

शिन्टो धर्ममें प्रकृतिकी पूजा तो है ही, लेकिन जिसमें अधिकतर पूर्वजोंकी पूजा होती है। अैसी भावनाके कारण ही जापानी लोग अपने सम्राटको दैवी पुरुष मानने लगे और राज-भक्ति व देश-भक्तिके बीच अभिन्नता सिद्ध कर सके। जिस मन्दिरसे निकलकर हमने यहांका जू-चिड़ियाघर, गवर्नरका प्रासाद, वानस्पत्यम् (बोटेनिकल गार्डन) और स्टेडियम-क्रीडांगण आदि देखे।

करीब चार वर्ष पहले यहांसे नजदीक ही अेक ज्वालामुखी फट पड़ा था और अुसने तीनसौ पचास फुटकी अेक पहाड़ीकी भेंट दी थी जिसका हाल सुना। अुसके बाद हम खेती-बाड़ी और पशु-पालनकी संस्था देखने गये। यहांकी गायें मजबूत और काफी दूध देनेवाली होती हैं। यह सब देखकर हम लगभग बारह बजे यहांके ग्राण्ड होटलमें पहुंचे। नगरपालिकाकी ओरसे हमें यहां दावत दी गओी थी। नगरके प्रतिष्ठित लोगोंके साथ खाना खाकर और बातें करके हम घर लौटे।

जिस प्रदेशके बड़े-बड़े घरोंमें प्रयत्नपूर्वक ठिगने कदके झाड़ रखे जाते हैं। ग्राण्ड होटलमें अेक आलेमें रखा हुआ अैसा अेक झाड — जिसे मैंने वालखिल्य नाम दिया है — तीन सौ साल पुराना है।

रातको हम ८-४० की ट्रेनसे त्सुगीरो जानेके लिअे निकले। यहांसे अेक जापानी बहन भी हमारे साथ शामिल हुओी। अुनका नाम श्रीमती याअेको ओीवामुरा था। ओीमाओी-सानको होक्कायडोमें प्रचार कार्यमें जिन्होंने जितनी अधिक मदद की है कि ओीमाओी-सान अपनेको अुनके

घरके कुटुम्बीजन जैसा ही मानते है। होक्कायडोके सारे सफरमें यह हमारे साथ घूमेंगी । अिनके गावका नाम ओतारु है।

अब तो होक्कायडोकी शिरोमणि शोभा आकन-कननमें पहुंचकर ही तुम्हें पत्र लिखूगा। खुशीरोमें हम अधिक नही रहनेवाले हैं।

१०
'खुश रहो'

आकनूको,
२७–१०–'५७

अब हमारी रेल-यात्रा शुरू होती है।

जापानी ट्रेनोंकी यह खासियत है कि आपको जहां जाना हो अुसकी टिकट पहले खरीद लीजिये। यह टिकट किसी भी ट्रेनके लिअे अिस्तेमाल हो सकती है। यदि आपको जल्दी जाना हो तो थोड़े अधिक पैसे देकर अेक पूरक टिकट खरीद लीजिये जिससे आप अेक्सप्रेसमें बैठ सकेंगे। नियम अैसा है कि यदि यह अेक्सप्रेस ट्रेन नियमित समयसे अेक घटेसे अधिक देरसे पहुचे तो अेक्सप्रेसके लिअे दिये हुअे अधिक पैसे आपको वापिस मिल जायंगे। अिसी तरह यदि आपको सोते हुअे जाना हो तो अुसके लिअे भी कुछ पैसे और देकर पूरक टिकट ली जा सकती है। अपने देशकी अपेक्षा यहाकी रेल-यात्रा कुछ महगी जरूर है, किन्तु यहाकी रेलोंमें सुविधा काफी होती है। तुम्हें याद होगा कि ट्रेनके साथ चलनेवाले यहांके रेल-कर्मचारियोंमें जरा भी मिजाज नही होता। हमारे यहां तो हमने अंग्रेजोंके समयका मिजाज और स्वराज्यके बादकी अपने कर्मचारियोंकी सज्जनता दोनोंका ही अनुभव किया है। राज्यकर्त्ताओंके मानसका प्रतिबिम्ब कर्मचारियों पर पड़ता ही है।

सप्पोरोसे खुशीरो तक लगभग बारह घंटेका रातका सफर था। यह प्रदेश अितना अधिक अुत्तरकी ओर है कि अिन दिनों यहां सुबह चार बजे ही पौ फटती है। देशका सृष्टि-सौंदर्य देखनेके लिअे निकले हुअे हमारे जैसे तो रेलका सफर ही पसन्द करते है। वक्त बचानेका

सवाल न होता तो यात्रीके नाते मैं विमानमें अुडकर जाना पसन्द नहीं करता। सुबहके दो-तीन घंटे ट्रेन के दोनों ओर दौड़ती हुआी कुदरतका और सुन्दर पहाड़ोंका जी भरकर ध्यान करते-करते हमने प्रार्थना की। अुसके बाद हमने पेट भर तो नहीं, लेकिन कामचलाअू नाश्ता किया और सात बजे खुशीरो पहुंचे। अिस स्टेशनका नाम याद नहीं रहता था अिसलिअे मैंने अिसे 'खुश रहो' नाम दिया। और अिस बन्दरगाहकी बढती हुआी आबादी और समृद्धि देखते हुअे 'खुश रहो' नाम सचमुच शोभा भी देता है।

अिसी नामकी अेक दक्षिणवाहिनी सरयू अथवा सरो-जा नदी अिस शहरके पास ही समुद्रसे मिलती है। अिस सुविधाको देखकर ही मनुष्य यहां काफी तादादमें बस गये हैं।

जबसे मैंने कन्याकुमारीकी शोभा देखी है, तबसे मुझे दक्षिणकी ओर गरजनेवाले समुद्रका विशेष आकर्षण है। लंकाके दक्षिणमें भी लगभग अैसी ही शोभा है। पश्चिम अफ्रीकाके दक्षिणमें भी अैसी ही छटा दिखाओी देती है और अिस समय यहां खुशीरोमें भी अैसा ही सौंदर्य देखकर पुराने स्मरण ताजे हो आये।

गुरुजीके भक्तोंने यहां अेक बडा स्तूप बनानेका काम अपने जिम्मे लिया है। प्रथम अिसे देखने हम वहां गये। काम करनेवाले सारे ही भक्तिभावसे प्रेरित थे और देखरेख करनेवाले शहरके लोग भी धर्म समझकर मुफ्तमें काम कर रहे थे। फिर काम सुन्दर हो और तेजीसे चले अिसमें आश्चर्य ही क्या? बौद्ध साधु भी मजदूरोंमें मिलकर काम करनेको तैयार थे। यह दृश्य मुझे बडा ही अच्छा लगा। पुराने ढंगके स्तूपोंके अन्दर नये ढंगकी वैज्ञानिक सुविधा देखकर अिस प्रजाकी व्यवहारकुशलताके प्रति मनमें सम्मान अुत्पन्न हुआ। अिस स्तूपको देखकर हम अुनके अेक मंदिरमें गये। स्टेशन पर क्या और मंदिरमें क्या, हमारा स्वागत चमडेके पखोंकी आवाजके साथ 'नम् म्यो हो रेंगे क्यो' वाले मन्त्रसे ही हुआ। यह मंत्र जापानी भाषाका है। चीनी लोग कहते हैं कि यह चीनी भी है। अिसका अर्थ है — "सद्धर्म-पुण्डरीकका, बुद्ध भगवानके कल्याणकारी अुपदेशका सर्वत्र विकास हो, विजय हो। अुसीकी शरण हम लें।"

जापानके निचिरेन पंथके साधुओंके लिये और भक्तोंके लिये भी यह मंत्र धर्म-सर्वस्व है। यह मंत्र बजाते हुए वे सब जगह घूमते हैं। इस मंदिरमें भक्त काफी संख्यामें इकट्ठे हुए थे। मुझे यहां थोड़ा बोलनेको कहा गया। वक्त थोड़ा, भाषाकी दिक्कत व दुभाषियेकी मार्फत बातें करना इसलिए मतलबकी मुख्य-मुख्य बातें छोटे-छोटे वाक्योंमें भारपूर्वक कहनी थी। इसका असर वक्तृत्वपूर्ण व्याख्यानोंसे ज्यादा अच्छा होता है। इतनी दूरसे, बुद्ध भगवानकी पुण्य-भूमिसे आया हुआ और उसमें भी महात्मा गांधीके साथ रहा हुआ आदमी, उसके शब्द ध्यानपूर्वक और श्रद्धापूर्वक सुनने ही चाहिये — ऐसा अनुकूल मानस लेकर आये हुए लोगोंके सामने उदाहरणों और दलीलोंके विस्तारकी जरूरत नहीं होती। बालक जैसे माका दूध पीकर उसे अनायास ही हजम कर लेता है, उसी तरह भक्त-हृदय, जिसके प्रति श्रद्धा होती है उसके वचन स्वीकार कर लेते हैं।

मैंने उन लोगोंसे कहा कि हमारे यहां मंदिरों, मस्जिदों और गिरजाघरोंके झगड़े देखकर हम नये युगके लोग ईंट-चूना-पत्थरकी रचनाके प्रति उदासीन बन गये हैं। इसलिए मैं प्रथम आपके गुरुजीके स्तूप-निर्माणके प्रति उदासीन था। लेकिन जापानकी बात दूसरी है। आप लोगोंको स्तूप जैसी चीज जीवित प्रेरणा दे सकती है। गुरुजी अपनी श्रद्धा आपमें भर सके हैं।

गुरुजी महात्मा गांधीसे मिले थे। उनके बीच बड़े महत्त्वका धर्म-संवाद हुआ था। गुरुजी भी महात्मा गांधीकी तरह अहिंसाके द्वारा विश्व-शांतिकी स्थापनाके लिये जूझ रहे हैं।

हमारे शास्त्रोंमें एक सुन्दर वचन है: धर्मो रक्षति रक्षितः — हम यदि धर्मका रक्षण व पालन करें तो धर्म भी हमारा रक्षण व पोषण करता ही है। हमारे यहां सेनाकी दृष्टिसे जो स्थान महत्त्वके गिने जाते थे वहां पुराने लोग या तो किले बनाकर फौज रखते थे अथवा मंदिर बनाकर भक्तोंको इकट्ठा करते थे। ऊंची पहाड़ीके ऊपर स्थित मंदिरका धर्म-निष्ठासे रक्षण करें तो सारे देशका रक्षण अपने आप ही हो जाता है। धर्म-रक्षण और देश-रक्षण दोनोंको एक करनेवाले धर्म-नेता जिस देशमें पनपते हैं उस देशका कल्याण ही है। होक्कायडोमें ऐसे

चार स्तूप बन जावें और अुनके प्रति निष्ठा रखनेवाले भक्त भी हो तो धर्मकी और देशकी रक्षा अेक साथ ही होगी।

पश्चिमके लोगोने विज्ञानकी अुपासना करके अणु-बमका आविष्कार किया है। अुसका प्रथम प्रयोग अुन्होने आपकी भूमि पर किया। यदि अेशियाका हृदय अेक हो तो आपका दुःख सो हमारा दुःख अैसा हमें लगना ही चाहिये। अेकका सकट यानी सबका सकट। जब हम अैसा समझेंगे तभी बच सकेंगे। पश्चिमके लोगोने जैसे विज्ञानकी अुपासना की है वैसे ही हमें आत्म-शक्तिकी और धर्म-शक्तिकी अुपासना करनी चाहिये। भगवान बुद्धने हमें निर्भयताका और विश्व-मैत्रीका सदेश दिया है। ढाओी हजार वर्षसे हम यह संदेश सुनते आ रहे है। अब अैसा जमाना आ गया है कि यदि हम अिस सदेशको अमलमें नही लायेंगे तो मनुष्य-जाति टिकनेवाली नही है। अिसलिअे जिन लोगोने यह अुपदेश अपनाया है अुन हम अेशियावासियोको विशेष प्रयत्न करना चाहिये। अैसी कुछ बातें कहकर मैंने अुन लोगोंसे विदा ली।

जलपान कराये विना ये लोग छोडनेवाले नही थे। खास-खास लोगोंके साथ अिधर-अुधरकी बातें करते-करते हमने नाश्ता किया। अिनमें हमारे बम्बओीवाले जापानी साधु वातानबेके अेक सम्बन्धी किचिमात्सु भी थे। ये यहा ठेकेदारीका काम करते हैं। हमारे वातानबेके लिअे यहा घरके लोगोंमें बडा आदर है। अिनके बाद हम मोटरमें बैठकर आकन् जानेके लिअे निकले। थोडा नदीके किनारे, थोडा नदी पार करके रास्ता नापते हुअे हम त्सुशीरोके बाहर पहुचे। फिर तो जहा देखो वही हरी-भरी कुदरतकी शोभा दिखाओी दे रही थी। मनुष्यकी आबादीका असर कम होने लगा और कुदरतका अनिर्बन्ध साम्राज्य दिखाओी देने लगा। मनुष्योंके घरोंसे आगे निकलकर व खेतों और झाड-झखाडोंको पार करनेके बाद जंगलमें प्रवेश करते हुअे अेक तरहकी राहत-सी मिलती है। कारण यह है कि मनुष्यकी दुनिया चाहे जितनी सुन्दर और संस्कारी हो, फिर भी अुसमें अनिर्बन्ध आनन्द नहीं होता। वह आनन्द तो अरण्यमें ही मिलता है। पर यहा वनकी शोभा सोलह कलाओंसे प्रगट होते हुअे भी पक्षियोंके दर्शन नहीं हुअे और न ही अुनका

कलरव सुनाओी दिया। जिससे सभी कुछ सुनसान-सा लगता था। अेक वजे तक हम आकन्‌को सरोवरके किनारे अेक वडे सुविधावाले और मनोहर यादोया (होटल) में डेरा डाल चुके थे।

यहासे चिट्‌ठियां भेजनेकी सुविधा होती तो यह पत्र यही पूरा करके तुरन्त भेज देता। जिसके वादके दो दिन तो अब पहाड़, जंगल, सरोवर और नदियोंकी मस्तीके ही होंगे। आजका दिन भी सागर, सरिता और सरोवर जिन तीनोंके अेक साथ दर्शनमें ही वीता।

११

आकन-कानन

विहोरीसे हाकोदाते जाते हुअे ट्रेनमें,
२९-७-५७

आजका पत्र मुझे सरोवरके वर्णनसे ही भरना है। अंग्रेज लोग तो जिस प्रदेशका नाम Lake District ही रखते। यहांके लोग जिसे आकन नेशनल पार्क कहते हैं। मै भी जिसे आकन अरण्य कहनेवाला था लेकिन आकनके साथ कानन शब्द ठीक जचता है जिसलिअे आकन-कानन नाम देना ही मैंने ठीक समझा।

हमने पूनामें जव पहली ही वार नौका-विहार किया था तवसे पानीके विस्तारके प्रति तुम्हारा आकर्षण मै जानता हूं। हम कितनी ही जगह तालावो, सरोवरो व नदियोको देखकर खुश हुअे है। भारतके दोनों ओरके किनारों पर वने हुअे दो वड़े-से-वड़े सरोवरो — मचर (मिस्र) और लवतक (असम)में हम नौकामें बैठकर कितना अधिक घूमे हैं!

अभी यहां जिन तीन-चार सरोवरोको हमने देखा अुस समय तुम हमारे साथ नही थी, जिसका दुःख तुम्हें अधिक होगा या मुझे, जिसकी चर्चामें अुतरे विना अुन सरोवरोंका वर्णन ही तुम्हें भेज देता हूं। अुनसे यहां तुम हमारे साथ ही हो अैसा मानकर यह प्रदेश तुम देख सकोगी। जिस पत्रके द्वारा कल्पनाकी आंखोंसे जिस दृश्यको देखनेके आनन्दमें

तुम्हारा स्वाभाविक दुःख हल्का होगा, अैसा मै मानता हूं। हमने बहुत कुछ साथ-साथ देखा है और अुनके आनन्दकी जितनी अधिक सुन्दर चर्चा भी की है कि यहाका वर्णन बिलकुल सादे शब्दोंमें लिखू तो भी तुम मेरे हृदयके भाव आसानी से समझ सकोगी। दूसरोकी भावनाओंके साथ अेकरूप होनेकी अपनी समभाव-शक्तिकी मददसे तुम कल्पना-शक्तिकी पूर्णताको पहुच ही सकती हो।

यहाके होटलोमें हमारा यह होटल सबसे बढिया माना जाता है। जिसके अेक ओरसे आकन्‌को सरोवरके विस्तारकी झलक दिखाअी देती है तो दूसरी ओर पासके छोटे-से अुपवनमे वन-भोजनके लिअे आये हुअे जापानी युवक-युवतियोका शोर-गुल आकर्षित करता है। अिस स्थान पर जहा देखो वही होटल-ही-होटल है। आजकल पिकनिकका खास मौसम होनेसे सभी होटल संस्कार-यात्रियों (Tourists) से भरे पडे है। जगह-जगह आयनु लोगोकी बनाअी हुअी वस्तुओंको बेचनेकी दुकानें है। यहाके जगलोमें रीछ और हिरण अधिक मात्रामें है। पर हमारे भाग्यमें अुनके दर्शन नही थे। यहाके लोग जगलकी अेक विशेष लकड़ी लाकर अुसके छोटे-बडे टुकडे कर लेते है। फिर अुसे तराशकर अुनसे तरह-तरहके पैतरो-वाले रीछ बनाते हैं।

मौका मिलते ही हमने सबसे पहले सरोवरके किनारे जाकर टिकटें ले ली और अेक जहाजके आते ही अुसमें जा बैठे। मै अेक छोटी-सी नावमें ही घूमना पसन्द करता, लेकिन थोडे समयमें ज्यादा घूमना था। अिनके अलावा जहाजमें जानेका अेक और भी कारण था। अिस सरोवरमें 'मारीमो' नामकी अेक वनस्पति होती है। जिसका आकार गेंद जैसा होता है। यह गेंद धीरे-धीरे बड़ा होता जाता है। कहते हैं कि टेनिसके गेंद जितना आकार धारण करनेमें अिसे दो सौ साल लग जाते है। अिस वनस्पतिकी खूबी यह है कि यदि हवा अच्छी हो तो ये हरे गेंद पानीमें काफी अूपर तक आ जाते हैं। हवाका मिजाज जरा भी बिगड़ा कि तुरन्त ये मारीमो डुबकी लगाकर बिलकुल नीचे पहुच जाते हैं। मारीमोके अिन गेंदोको देखनेके लिअे जहाजमें दो-दो बैठकोंके बीच, पानी तक पहुचनेवाला अेक-अेक पाइप लगा हुआ था। हमारे खयालसे तो हवा अच्छी थी।

मजेकी धूप थी। जहाजमे कितनी ही लडकिया सुन्दर गाने भी गा रही थी, लेकिन मारीमोका मन नही ललचाया। वे अूपर आये ही नही! यह वनस्पति दुनियामे दूसरी जगह कही नही मिलती। जापानमें अितने सरोवर हैं लेकिन अुन सबमे भी मारीमो नही है। यह सरोवर किसी भी जगह सौ फुटसे अधिक गहरा नही है, लेकिन अिसका घेरा खासा १५ मीलका है। अिसका आकार टेढे-मेढे त्रिकोण जैसा है और अेक तरफ पूछ-सी बढी हुअी है। जापानी भाषामें 'को' यानी सरोवर। यह सरोवर आकन-अरण्यमें है अिसलिअे अिसे आकनको कहते हैं। यह नाम ही कितना काव्यमय है! अेक जापानी गीत कहता है कि आकनको यानी चिर यौवन। यह बासी अथवा वृद्ध होनेवाला नही है। अिसका रक्षण करनेके लिअे दोनो ओर अूचे-अूचे दो भव्य पर्वत हैं। कवि कहते हैं कि ये दोनो पहाड स्त्री-पुरुष हैं। पुरुष पहाड़का नाम है — 'ओ आकान' और स्त्री पहाडका नाम है 'मे आकान'।

पुरुष पहाड लगभग तीन तरफ सरोवरसे घिरा हुआ है। अिन दो पहाडोकी प्रेम-गोष्ठी कवियोने सुनी है और अपने काव्योमें अमर कर दी है। लैला और मजनू तो आखिर मनुष्य थे। लेकिन ये तो विशालकाय पर्वत-युगल हैं। अिनका जीवन लाखो वर्षोका है। अिनका प्रेम सवाद भी अितना ही भव्य होना चाहिये।

सभी यात्री आखे गड़ा-गडाकर मारीमो देखनेकी कोशिशमें व्यस्त थे। मैंने सोचा कि अिस अध्रुव (अनिश्चित वस्तु) के पीछे समय खराब करना बेकार है। अितना काव्य सरोवरके रूपमे और अुसके भाअी-बन्धु पहाडोके रूपमे स्थिरतासे फैला हुआ है, अुसकी क्यो अुपेक्षा करें। जहाजमे बैठकर हम धीरे-धीरे अुस पार गये। वहा थोडी देर ठहर कर आसपासकी वनश्री निहारी, अेक छोटे-से टापूकी प्रदक्षिणा की और वापस लौटे। अेक ओर सरोवरके बढे हुअे पानीको मार्ग देनेके लिअे अेक परीवाह बनाया हुआ है। दूसरी ओर अेक नदी अिस सरोवरसे जन्म लेकर दूसरे सरोवरमें जा गिरती है और वहा बिना ठहरे रास्ता बनाती हुअी समुद्रमें जा मिलती है। यहांके जंगलोमें जो रीछ होते हैं वे सब तैरनेमें कुशल होते है। वे कभी-कभी अपनी मनचाही मछलिया खानेके लिअे

विश्वशान्तिके लिअे स्थापित किये जानेवाले बौद्ध स्तूपोंका नमूना।



आगो ज्वालामुखीसे लौटते हुअे। जापानी साधुके हाथमें हमारा तिरंगा झंडा है। (देखिये पृष्ठ २९.)

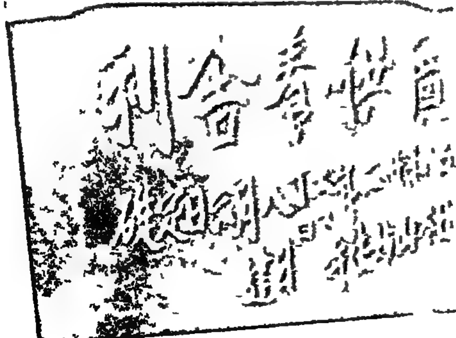


जापानी साधु मि० मरोजको और मुझे आगो ज्वालामुखीके चित्र दिखा रहे हैं।

ओकासान और सुमिकोसान भारतीय वेशमें। चि० रेवती और मंजु जापानी वेशमें।

ओकीनावाके प्रतिनिधियोंके बीच काकासाहब (देखिये पृष्ठ २०७)

कोफू स्तूपकी दो आधार-शिलाओंके आसपास। [दाहिनेसे बायें]
१. पखेवाले मारुयामा, २. गुरुजी, ३. ओमाओी-सान, ४ काकासाहब,
५. मंजुला, ६ रेवती और अन्य साधु। (देखिये पृष्ठ १५७)



आधार-शिलाओंकी स्थापना। ओक पर गुरुजीके हस्ताक्षर जापानी लिपिमें तथा दूसरी पर काकासाहबके नागरी लिपिमें। (देखिये पृष्ठ १५९)



कोबेके भोजन-समारम्भके बाद। (देखिये पृष्ठ १७९)

पानीमें अुतरते भी हैं। हमारे जहाजने लौटते हुअे जब सीटी दी तब आसपासकी पहाड़ियोंने भी स्वागतम्-स्वागतम्‌की प्रतिध्वनि की। ये पहाड़िया न तो संस्कृत जानती हैं और न अुन्हें जापानी भाषा सीखनेकी ही परवाह है। अिनकी भाषा तो प्रकृतिके पीछे पागल लोग ही समझते हैं। लेकिन दूसरोंको सिखानेकी अुन्हें सख्त मनाही है।

अपनी और सरोवरकी प्रतिष्ठाको शोभा देनेवाली धीर-गम्भीर गतिसे हमारा जहाज चल रहा था। अितनेमें यन्त्रसे चलनेवाली अेक छोटी-सी नाव अमरीकी निर्लज्जतासे पानी अुडाती हुअी हमसे आगे दौड गअी। अितने वेगसे पानी काटनेमें अेक तरहका अुन्माद तो होता है लेकिन अुसमें जीवनका काव्य जरा भी नही मिलता! "ये निकले, और ये पहुचे।" वापस लौटे और पलक मारते ही मूल स्थान पर आ धमके! अिसमें मजा ही क्या आया?

सरोवरमें जो टापू थे अुन पर खडे रहने लायक भी समतल जमीन नही थी। जहा देखो वहीं पत्थरोंके ढेर और अुनके बीच बढे हुअे झाडोंका घना जगल। कितने ही पेड़ोंके तनों पर लाल रगके ठप्पे लगे हुअे थे। मनुष्यने किसलिअे यह तकलीफ की होगी यह कोअी बता न सका।

पानीका विस्तार यानी शीतल शाति, प्रसन्नता और पावनता। मौजी और विलासी मनुष्य भी सरोवरकी पवित्रताको अधिक नही बिगाड सकता।

खुगीरो नदीका यहीं कहींसे अुद्‌गम होता है और वह दक्षिण की ओर सौ मीलकी यात्रा करके अपने आपको सागरकी गोदमें अर्पण कर देती है।

मनमें विचार आया कि जहाजमें बैठे हुअे हम सब अेक ही अुद्देश्यसे जकडे हुअे हैं। फिर भी प्रत्येकका जीवन-प्रवाह भिन्न-भिन्न है। सरोवरकी शोभा देखकर सबकी आखोंमें अेक-सी प्रसन्नता छलक रही है, पर क्या हर आदमीके दिमागमें अेक ही विचार चलता होगा? जैसे मैं अपने पुराने अनुभव ताजे कर रहा हूं क्या वैसे ही प्रत्येक व्यक्ति कर रहा होगा? अिन सबमें कितनी विविधता होगी! अितने लोगोंके जीवनमें केवल अिस घटे सवा घटेकी जीवनानुभूति समान है। अिसे छोडकर हम सबमें और

क्या समानता हो सकती है? हमारी ही वात लें। मैं अिस आकंकोको देखकर पहले देखे हुअे देश-विदेशके अनेक सरोवरोके साथ अिसकी तुलना कर रहा हू। मजु अपने देखे हुअे सरोवरोको याद कर रही है और रेवतीको गोआकी खाडीके मोड़में किये हुअे नौका-विहारकी याद आ रही है। अिस तरह आककोके आनन्दकी प्रत्येककी आवृत्ति भिन्न-भिन्न है। हम तीन तो अेक भारतके ही रहनेवाले हैं। हमारे जीवनानदमें अमुक साम्य भी होगा। पर अिन जापानियोको तो न मालूम कैसा आनन्द आ रहा होगा। अिन सरोवरोके विषयमें अपने कवियोंके रचे हुअे स्तोत्र गाकर वे भावना-समृद्ध होते होगे — जिस भावनाकी दुनिया मेरे लिअे अनजान है और शायद सदाके लिअे अनजान ही रहनेवाली है!

कितनी तरहके लोग प्रतिवर्ष यहां आकर आनन्द प्राप्त करते हैं? अिस सरोवरको अुनके विषयमें क्या लगता होगा?

वनारसमें असख्य यात्री सैकड़ो वर्षोसे आते है और जाते हैं। वनारसकी पवित्र भूमिको, गगा माताके प्रवाहको और प्रवाह तक स्नान-लोलुप यात्रियोंको लानेवाले गंगाके अनेकानेक घाटोको क्या अिन सवका स्मरण रहता होगा? अेक सावुसे पूछने पर अुसने कहा, "यहाके रास्तो पर घोड़ागाड़ी अथवा टमटम चलाकर आजीविका प्राप्त करनेवाले गाड़ीवालोको यात्रियोके वारेमें जितना लगता होगा गंगा माताको अुतनी भावना भी आपके विषयमें नही अुठती होगी।"

मैंने कहा, "सावू महाराज! जव आपने गंगाको माता कहा तभी आपने अपनी वातका खण्डन कर दिया। माताके लिअे तो अेक वच्चा हो या असख्य वे सव समान हैं। अुसकी तुलना वाजारू गाड़ीवालेके साथ नही की जा सकती।"

तव क्या अिस सरोवरको, यहां आनेवाले लहरी और गम्भीर, मस्त और दुखी, थके हुअे और अुत्साही, अिन तमाम यात्रियोका स्मरण रहता होगा? सरोवरको भले ही स्मरण न रहे, किसीको तो होना ही चाहिये। अीश्वरकी अेकाध विभूति तो सर्वसाक्षी होगी ही। फिर यहांके लिअे अैसी विभूति यह सरोवर ही क्यो न हो। सरोवरने जरा मुस्कराकर कहा, "यह काम सर्व-पिता आकाशका है।" मैंने आकाशकी ओर देखा। वहां

न तो वादलोकी खास रचना दिखाओी दी न निखरा हुआ सूर्य-प्रकाश। रेवतीने मेरा ध्यान खींचा कि पश्चिमकी ओर फटे हुअे वादलोंमें से सूर्य-प्रकाशका विपुल प्रपात चमकीली वर्षाका दृश्य प्रकट कर रहा है। बीच-बीचमें जापानी सगीत अपनी ध्वनिकी गुजारसे हमें आनन्दविभोर कर रहा था। लोग मारीमोकी गेंद न देख पानेकी बातें कर रहे थे, पर हम तो आककोकी ही यादमें मग्न थे।

हमने अिस आककोका दर्शन चौबीस घटेसे भी कम किया होगा। और जहाजमें बैठकर नजरके जोरसे कल्पनाके जालमें जिस आनन्दको हमने पकडा अुसमें अधिकसे अधिक सवा घंटा गया होगा। लेकिन आककोकी याद तो जन्म भर रहेगी। जब कभी वह जागृत होगी अुस समय अेक मीठी अस्वस्थताका अनुभव होगा। लेकिन अतमें तो प्रकृतिके साथ अैक्यसे अुत्पन्न हुअी आनन्ददायी शाति ही स्थायी रहेगी।

शामको देरसे मैंने आयनु लोगोंकी बस्ती देखनेका अवसर ढूढ निकाला। अुसके लिअे मुख्य रास्ता छोड़कर अेक पग-डण्डीसे जगलमें जरा भीतर जाना था। आयनु लोगोंके जीवनकी खोज-खबर लेनेका अुत्साह रेवती व मंजुमें नही था। अुनको अधेरेमें अूबड़-खाबड रास्तेमें ले जाना मुझे पसन्द भी नही था। अिसलिअे होटलके पासकी अेक दुकानकी चीजें देखने-खरीदनेके लिअे अुन्हें छोडकर ओमाओी-सान और मैं आयनु लोगोंकी खोजमें निकले।

अिनकी बस्तीके बीचों-बीच अेक बडी झोपडी थी। अुसमें सारे गावके आयनु लोग पूजा आदिके लिअे अिकट्ठे होते हैं। हमने वहा जाकर पुरोहित जैसे लगनेवाले अेक सज्जनको अपना अुद्देश्य बताया। वे अुत्तरकी तरफकी जापानी भाषा जानते थे। यद्यपि आपसमें वे आयनु भाषा ही बोलते थे।

झोपडीके बीचोंबीचमें अेक चौकोर गड्ढा था। यह अेक बुझी हुअी धूनी थी। झोपडीके अेक किनारे घासके बनाये हुअे अेक विशेष प्रकारके चाबुक रखे हुअे थे। ये अिन लोगोंके देवता थे। झोपडीके पीछेकी ओर खिडकी-जैसी अेक खुली जगह थी। देवताओंके

लिअे नैवेद्य मुख्य दरवाजेसे भीतर नही लाया जाता, वह अिस खिड़कीनुमा रास्तेसे ही भीतर लिया जाता है।

हमारा अुद्देश्य मालूम होने पर पुरोहितजीने सारी बस्तीमे खबर की। फिर तो बहुतसे लोग हमें झोंपड़ीमे देखने आये। अपना कुतूहल पूरा होने पर वे लौट जाते थे। काफी राह देखनेके बाद कुछ स्त्री-पुरुष अेक जगह जमा हुअे। अिनमें से कअी स्त्रियोको तो हमने दुकानो पर बैठकर लकड़ीके रीछ आदि चीजे बेचते हुअे देखा था। अिन्हें देखनेके कौतूहलसे आये हुअे यात्रियोंके आनन्दके लिअे ये लोग दुकानो पर और नाचते वक्त पुरानी आयनु ढगकी पोशाक ही पहनते हैं। अिन कपडो परका कसीदा-काम अिस कौमकी विशेषता है। घासकी बनी हुअी अेक डोरी माथेसे पीछे तक बाधकर ये लोग अपनी शोभा कुछ बढा लेते हैं। नाच दिखानेकी अुनकी खास अिच्छा नही थी। मैं भारतसे आया हू, अिस दलीलका अुनपर क्या असर हो सकता था! लेकिन अीमाअी-साननें अुन्हें समझा ही लिया। फिर तो अुन्होने दो-तीन तरहके नाच दिखाये। मै वश-शास्त्रकी दृष्टिसे अुनके नाक, कान, आखें, बाल और गालोकी हड्डियोको बड़े ध्यानसे देख रहा था।

पुरानी पीढीके लोग मुहके आसपास और अूपर-नीचेके होठ नीले रगसे गुदवा लेते हैं। हमारी अपनी अभिरुचिके अनुसार यह सब बडा भद्दा दिखाअी देता है। अच्छा हुआ कि नृत्यमें भाग लेनेवाले किसी भी स्त्री-पुरुपने अिस तरहके गोदने नही गुदवाये थे। अुनके बीच कअी दशाब्दियो तक रहे हुअे अेक मिशनरी रेवरण्ड बेचलर द्वारा लिखी हुअी 'Ainu Life and Lore' नामक पुस्तक मैने १९५४ में खरीदी थी। अुसमे अैसे गोदनोंके चित्र दिये हुअे थे। यह रिवाज अभी लोप नही हुआ है, यह सिद्ध करनेके लिअे ही मानो दूसरे दिन जो अेक-दो आयनु मैंने देखे अुनके नाकके नीचेका सारा मुंह नीला और काला दिखाअी दे रहा था। नाचनेवाले लोगोंमें कअियोंके मुह बिलकुल मध्य-अेशियाके लोगोंसे मिलते-जुलते थे। कअियोंके चेहरोंका रग तो बिलकुल गाजर जैसा था और कअी लगभग जापानी जैसे लगते थे।

मैं जानता था कि यह जाति धीरे-धीरे निर्वंश होती जा रही है। अिसीलिअे अब ये जापानी बच्चोको गोद लेकर अुन्हें आयनु भाषा और

रिवाज सिखा रहे हैं। जापानी लोगोंके साथ विवाह करनेमें दोनों पक्षोंको कोओी खास आपत्ति नहीं है। अितने पर भी अिस जातिकी विशेषता अब तक टिकी हुआी है। जंगलमें जाकर रीछके बच्चोंको पकड़कर अुन्हें सिखानेमें ये लोग होशियार हैं। अिन लोगोंका नाच देखनेके बाद हमने अुन्हें अेक हजार येन देकर सन्तुष्ट किया। अेक हजार येन यानी लगभग तेरह-चौदह रुपये। नृत्य पूरा होने पर वे सब लोग चले गये। फिर अुनके नेता पुरोहितजीके साथ मैंने थोड़ा वार्त्तालाप किया। अुनकी धार्मिक मान्यताओं, अुनकी पूजाकी विधि और अुनके विवाह-शादीके नियम आदिके बारेमें मैंने मुख्य-मुख्य सवाल पूछे। मैंने Life and Lore पुस्तक हालमें ही फिरसे पढ़ी थी अिस कारण बहुत कुछ तो जानता था। फिर भी पूछकर निश्चय कर लेना अच्छा है अिस हेतुसे मैंने ये सवाल पूछे थे। पुरोहितजीने कहा कि आप पूछते हैं वैसे खास कड़े नियम अथवा बन्धन हमारे यहां नहीं हैं। लेकिन अिस तरहके कुछ रिवाज तो जरूर हैं। ये रिवाज कोओी तोड़े तो अुनके लिअे समाजकी ओरसे कोओी सजा नहीं होती, बल्कि नापसन्दगी भी जाहिर नहीं की जाती। मैंने देखा कि यह जाति अधिकतर अलिप्त रहनेवाली है। फिर भी जापानके रीति-रिवाजका असर अिस पर पड़ता जा रहा है।

अिस जातिके विषयमें पहले मुझे जो चिन्ता हो रही थी वह अब कम हुआी। मालूम होता है कि यह जाति अेक दो पीढ़ीके अन्दर ही जापानी प्रजामें घुल-मिल जायगी। यदि मेरे जैसे यात्री कुतूहलसे आयनु जीवन और अुनके प्राचीन रीति-रिवाजोंकी खोजमें यहां न आते और ये रिवाज कुतूहल-तृप्ति व कमाओीका साधन न बनते तो यह मिल जानेकी अथवा निमज्जनकी क्रिया कभी की पूरी हो गयी होती। यात्रियोंके कुतूहलका प्रभाव अिन लोगों पर अच्छा नहीं होता, यह तो स्पष्ट था। हमारे यहां-की कओी पिछड़ी हुआी जातियोंके लोग 'साब पैसा दो, बंग्शिश दो' कहकर जैसे गोरोंके पीछे पड़ते थे; बिल्कुल वैसा तो नहीं लेकिन अुससे मिलता-जुलता असर यहां भी स्पष्ट दिखाओी दे रहा था। अब तो बहुत-से आयनु लोग शहरोंमें जाते हैं, मेहनत-मजूरी करते हैं और अुद्योग-हुनर भी सीखते हैं।

आखिर आयनु जातिके विपयमें मेरा चिर-सचित कुतूहल तृप्त हुआ। अैसा लगता था कि मानो सिरका अेक वोझ हलका हुआ। सच पूछो तो अिस वोझका कोअी अर्थ नही था। अपना मजाक मै खुद कर सकता था और कह सकता था: "मिया दुवले क्यो? तो कहने लगे कि शहरके अंदेशे से!"

रातको वडे आरामसे सोये। दूसरे दिन दस वजे तक अिवर-अुवर चक्कर लगाये, दुकानोमें सजायी हुअी सुन्दर-सुन्दर चीजें देखी-भाली और आगेकी यात्राके वारमें कुछ कल्पनायें की। अिसके वादकी यात्रामें ओमाओ-साननें स्वतंत्र मोटर किराये पर लेनेके वदले वसमे वैठकर जाना ही पसन्द किया। मोटरके लिअे रास्ता भी अच्छा नही था और वस वडी ही सुविधाजनक थी। अिस सुन्दर यात्राका वर्णन अिसके वादके पत्रके लिअे सुरक्षित रख रहा हू।

१२

मात्स्यु और खुशारो

हाकोदाते,
३०–७–'५७

आकको जैसे ही दूसरे दो सुन्दर सरोवर देखनेका अिरादा करके हमने ता० २८ को सुवह दस वजे आकंको छोडा। शाम तक हमें कवायु पहुंचना था। सीवे रास्तसे जाते तो मात्स्यु सरोवर नही देख पाते। अिसलिअे लम्वा रास्ता पकडा और वस चलतें ही रहे। यहाका प्रदेश काफी अूचाअी पर है। पहाड तो यहां जितने चाहो अुतने है और अेकसे अेक अूचे भी। वनश्रीका सवसे ज्यादा वैभव अिसी जगह देखनेको मिलता है। लेकिन दिनभरके सफरमें न तो कोअी पक्षी देखनको मिला और न कोअी रीछ अथवा हिरन! अिस चीजके लिअे अफमोस नही करेंगे, यह पहले ही तय कर लिया था। फिर भी आश्चर्यकी वात तो यह थी ही कि आखिर सारे पशु-पक्षी गये कहां? कोअी वता नही सका।

बसमें बठनेके बाद भी कुछ दूर तक आकंको सरोवर थोडा बहुत दिखाओ दे रहा था। कहीं-कहीं बडे-बड़े पेड़ोंके कारण सरोवरके दर्शन बराबर नहीं हो पाते थे। जब सरोवर ओझल होनेवाला ही था तब मैंने अुसे कृतज्ञ आंखोंसे नमस्कार किया। 'पुनरागमनाय च' वाला मन्त्र प्रामाणिक तौर पर बोलनेकी हिम्मत नहीं हुओ। जिन्दगीके अुत्तरार्धमें पूर्वमे भी पूर्व और अुत्तरसे भी अुत्तरकी ओर यहा तक मैं अेक बार आ सका यही बडा अहोभाग्य है। आज भी हम कुछ और ज्यादा अुत्तरमें ही जा रहे थे।

थोडा-सा पूर्वकी ओर जाने पर रास्तेसे ही मात्स्यु सरोवर दिखाओ दे सकता था। अिसलिअे बड़े-बड़े पहाडोको लांघकर और घने-से-घने जगलोको पारकर टेशीकागा शहरके अुस पार हम अुस सरोवरकी खोजमें निकले। जिन स्थानसे सरोवरका दृश्य सबसे सुन्दर दिखाओ दे सकता था वहा जाकर हम सब बससे नीचे अुतरे लेकिन बड़ी ही निराशा हुओ। चारो ओर कुहरेका क्षीरसागर फैला हुआ था। न आकाश दिखाओ दे रहा था न पृथ्वी। फिर जगल और सरोवर तो क्या दिखाओ देते! गीतामें कहा है न कि सब स्थान जल-मग्न होने पर कुओं, गड्ढे और तालाबोका कोओ भिन्न अस्तित्व नहीं रहता। बिलकुल वैसी ही स्थिति यहा दिखाओ दे रही थी। बीच-बीचमें कुहरा कुछ हलका होकर सरोवरकी सलवटोंके जैसी लहरोंका दर्शन करा देता था। लेकिन अुससे अिस बातका विषाद मनमें और भी ज्यादा बढ जाता था कि हम अितने सुन्दर दृश्यसे वंचित रहे। अुन पर तुर्रा यह कि अेक जापानी बहनने अिस मात्स्यु सरोवरके दस-बीस रंगीन पोस्टकार्ड भी दिखाये! अेकसे अेक बढिया दृश्य! विस्तृत दृश्य अेक साथ दिखानेके लिअे अुनमें अेक-दो जुडवा पोस्ट-कार्ड भी थे। डाकखानेके ढगके नहीं, लेकिन लग्न-पत्रिकाके जैसे अेक कोने पर जुडे हुअे। अिन चित्रोंको देखकर जी और भी कुढा और अैसा लगा कि अिनसे तो ये सुन्दर फोटो न देखते वही अच्छा था! अज्ञान परम सुखम्! चित्र दिखानेवाली अुस जापानी बहनको हमने धन्यवाद दिये और जो देखनेको नहीं मिला अुसका दुःख करनेके बदले जो मिलनेवाला है अुसकी कल्पना करनेमें ही अक्लमन्दी और सुख है, यह विचार करके हम पश्चिमकी ओर प्रवृत्त हुअे। और करीब सवा तीन बजे कमाद् पहुचे।

रास्तेमें हमने अेक अूचे पहाड़का टेढ़ा-मेढ़ा और फटा हुआ द्रोण (क्रेटर) देखा। जंगलकी अिस हरियालीके बीच अितना ही भाग वनस्पति-विहीन देखकर मनमें कुछ डर और दर्द पैदा होता था। कुछ आगे चलकर हमने दिशा बदली। वहा तो सफेद धुअेंके बादल अूपर जाते हुअे दिखाअी दिये। गधककी गंध भी गजबकी थी। गन्धक शब्द गन्धसे ही आया है अिसलिअे अुसकी अुग्रता कितनी थी यह कहनेकी जरूरत नही है।

जैसे ही हमारी बस ठहरी, यात्री कैमरा लेकर दौड़े। कअी तो धुअेंकी तरफ ही चढ़ने लगे और सब तरफसे फोटो लेने लगे। हम भी अुनके पीछे-पीछे जाते, लेकिन चि० मंजुकी आंखकी हालत मै जानता था, अिसलिअे मैंने अुसे जानेसे मना किया। आज्ञा कठोर तो थी पर आवश्यक थी। अुसकी निराशा जरा सुसह्य करनेके लिअे मैंने भी न जाना ही ठीक समझा। चि० रेवतीको भी रोक सकता था लेकिन अुसका मन था। वह अेक अनोखा अनुभव कर प्राप्त कर सके तो यह अच्छा ही है, यह सोचकर मैंने अुसे तो जाने दिया। मजुको मना किया था अिससे अुसने मान लिया था कि अुसे भी अिजाजत नही मिलेगी। अनपेक्षित अिजाजत मिलते ही वह दौड़ पडी। गन्धकके धुअेंके बादलोंने अुसका बड़े अुत्साहसे स्वागत किया। अुसे भी धुअेंकी घबराहटके अनुभवका संतोष मिला। अैसी जगह कब विस्फोट हो जाये यह कहा नही जा सकता। लेकिन बिना जोखिम अुठाये जिन्दगीका आनन्द कैसे मिल सकता है?

तुम्हे याद होगा कि अफ्रीकाके अेक अभयारण्यमें हिप्पोके झुण्डको पानीमें लोट-पोट होते हुअे देखनेके लिअे हम अुस डबरेमें अुतरे थे। यदि हिप्पो हमला कर दे तो तुम दौड़कर कगार पर चढ़ नही सकोगी, अिस डरसे मैंने पहले तो तुम्हे जानेसे मना किया था। लेकिन फिर मुझे ही लगा कि अिस तरह जरा भी जोखिम न अुठावें तो कैसे काम चल सकता है? अितनेमें कमलनयनने भी कहा: 'काकासाहेब, सरोज बहनको भी साथ ले लें।' फिर हम किनारे तक गये और अुन अहदी जानवरोंको हमने जलोत्सव मनाते हुअे जी भरकर देखा था।

वहा यदि मैं रेवतीके साथ चला जाता तो अितनी चिंता नही होती। मनमें विचार आया कि यदि विस्फोट हो और अुसमें रेवतीको कुछ हो जाय तो मुझे अुसके वगैर स्वदेश लौटनेमें कैसा लगेगा! पर मुझे विश्वास है कि चाहे जितना बुरा लगता, फिर भी अुसे जाने दिया अिसके लिअे मुझे अफसोस नही होता। जातिके रूपमें हम लोगोंको खतरा अुठानेकी आदत डालनी ही चाहिये।

तीन साल पहले जब हम जापानके दक्षिणमें कुमामोतो गये थे, तब वहासे आसोका ज्वालामुखी देखने गये थे। अुसकी याद तुम्हें भी होगी। तब दुनियाका सबसे बडा जलता हुआ द्रोण देखनेका मौका मैं न खो दू अिस खयालसे तुमने मुझे द्रोणके मुह तक जाने दिया था। यह बात भी मुझे यहा स्मरण हो आअी।

अब हम कवायु पहुंच गये। अेक सबसे सुन्दर, सुघड़ और स्वच्छ होटलमें हमने डेरा डाला और कुचारो अथवा खुशारो देखनेकी अुत्कण्ठा बढी। लेकिन हमारे मेजबान व मार्गदर्शक—स्वामी अीमाअी-सान तो बरफ जैसे ठडे दिखाअी दिये। "देर हो गअी है। सरोवर दूर है" आदि अनेक दलीलें अुन्होंने दी। सरोवर देखनेकी मेरी अुत्कण्ठा तीव्र थी, लेकिन अीमाअी-सानकी मरजी न हो तो मेहमानोंको मेजबानकी असुविधाका विचार करना ही चाहिये, अिस सिद्धान्तके अनुसार मैं ढीला पड गया। लेकिन अीश्वरने चि० मजुको अुत्साहके साथ हिम्मत भी दी। अुसे आगे करके मैं भी दृढ हो गया। तब अीमाअी-सानको अेक टैक्सी मगानी ही पडी। सरोवर कुछ दूर तो था। हम अेक टेढा-मेढा रास्ता पार करके सरोवरके किनारे पहुचे। देखते ही मनमें खयाल आया कि यह पानीका सरोवर नही है, यहा तो विशुद्ध काव्यमय आकर्षण ही छलक रहा है! फिर अधिक कौन सोचता? तुरन्त ही हमने अेक नाव मगानेका प्रस्ताव किया। यहा हमारी अेक परीक्षा और होनेवाली थी। आकाश घिर आया। शाम हो चली थी। भरे हुअे बादल पीछेके पहाड पर रात्रिके विश्रामके लिअे अुतरे। दाहिनी ओर दूर पहाड़ पर बारिश होती हुअी दिखाअी देती थी। अेक-दो बूदें हमारे सिर पर भी पडी! अीमाअी-सानने कहा—'अेक बार शुरू पडे तो चालीस मिनटसे पहले थाम नहीं

आ सकेंगे। काकासाहव भीगें और वीमार पडें तो सारा कार्यक्रम विगड जायगा। अिस वड़े सरोवरमें तूफान भी आते हैं। मेरे जैसा मजवूत आदमी तो तैरकर किनारे पहुंच भी सकता है, लेकिन आप लोगोका क्या होगा?' अुनकी वात मानकर मैंने मंजुसे कहा 'तव रहने दो न!' लेकिन जव अिसका अुस पर कोअी भी असर नही हुआ, तव आखिरी निर्णय मैंने अपने हाथमें लेकर कहा: 'चिंताकी कोअी वात नही है। भीगेंगे तो घर जाकर कपड़े सुखा लेंगे। लेकिन अिस सरोवरके अुस पार तो जाना ही है।'

फिर मैंने वताया कि अेक समय मैं भी अच्छा तैराक था, यद्यपि अिस वातमें अव कोअी अर्थ नही था। जवानीमें खूव तैर सकता था, अिसलिअे सरोवर मेरी दया थोड़े ही खानेवाला था! लहरें तो कहती कि हम दया खानेकी आदी नही हैं, हम तो मनुष्योको ही खा जाती हैं। खैर, आखिर वेचारे अीमाअी-सान भी मान गये! तुरन्त ही पाच-छह लोग बैठ सकें अितनी वडी नावका अिंजिन धक्-धक् करने लगा और हम चल पडे। अिस मौके पर यदि हम हार जाते तो सचमुच जीवनके आनन्दका अेक स्वर्ण-अवसर खो वैठते।

सरोवरका पानी गहरा नीला और हरा था। अैसे रंगको जेड (Jade) की अुपमा दी जाती है। मैंने जेडके कीमती पत्थर कोअी कम नही देखे हैं। अुन सख्त पत्थरोंमें से कारीगरोंके वनाये हुअे छोटे-छोटे वर्तन और मूर्तिया भी मैंने वहुत देखी हैं। जेडकी गहरी और हलकी छटाओंको मैं जानता था। फिर भी सरोवरके अिस पानीके रंगको जेडकी अुपमा देनेके लिअे आज मैं तैयार नही होता।

देखते-ही-देखते हमारी नाव अुत्तरकी तरफ वढने लगी। आगे वाअीं ओर नाकानोशीमाका वड़ा द्वीप दिखाअी दिया। अैसा लगता था मानो कोअी पुराण-पुरुष तपस्या कर रहा हो। नाकानोशीमाका अर्थ होता है वीचका द्वीप। दक्षिणकी हवा थी। जव तक हमारी नौकाने गति नहीं पकड़ी तव तक अुसकी ध्वजा फड-फड़ करती हुअी हमारे आगे-आगे चल रही थी। अैसा लगता था मानो अिंजिन काम नही कर रहा है, वल्कि

हवा ही हमें धकेल रही है। थोड़ी देर बाद जब नावने गति पकडी तब पवनकी गति और नावके अिंजिनकी गति दोनों अेकसमान हो गअी। तब ध्वजा ढीली होकर नीचे लटकने लगी मानो हवा हो ही नहीं!

अेक बार बम्बअीसे रत्नागिरि जाते हुअे हमारा जहाज तेज हवामें हवाकी ही दिशामें व अुसीके वेगसे चल रहा था। अिसलिअे अैसा लगता था मानो हवा थी ही नहीं। डेक पर खडे-खड़े हम लोगोंको लग रहा था कि हम बिलकुल शान्त वातावरणमें ही चल रहे हैं। लेकिन जब बन्दरगाह आया व जहाज ठहरा तब हवाके जोरसे कहीं अुड न जायें अैसा डर लगने लगा।

ध्वजा क्यों ढीली पडी अिसके बारेमें मैं नायकी बहनोंको समझा रहा था कि अितनेमें हवाको शायद दक्षिण-पश्चिमकी ओरसे गति मिली और हमारी ध्वजाकी पूंछ पूर्वकी ओर फड़फड़ाने लगी। जानकार लोग ही अिन सारी खूबियोंका आनन्द अुठा सकते हैं।

अब हम आधे रास्ते आ पहुंचे। पानीमें खुशीकी लहरें अुठ रही थीं। अुनका रंग कुछ ज्यादा गहरा होने लगा। जैसे-जैसे वह चमकता वैसे-वैसे अुनका रंग और भी चैतन्यमय दिखाअी देता।

काश्मीरमें झेलम नदीके अुद्गमके पासके तालावका पानी गहरा नीला है। अुसकी शोभा कुछ और है। और आजके अिस सरोवरके जेड रंगके पानीकी शोभा कुछ और है। वहां लगता था कि शायद किसीने तालावमें नीले कपडे धोये हैं या किसी रंगरेजने नीला रंग घोल दिया है। अिस खुशारो सरोवरमें कृत्रिमताका शक जरा भी पैदा नहीं हो सकता। हम जैसे-जैसे आगे बढे वैसे-वैसे सामनेके पहाड़के जंगलके अूंचे-अूंचे पेड अधिक स्पष्ट दिखाअी देने लगे। अुनके बीच कुछ चट्टानें खिलखिलाते हृदयाविष्करण कर रही थीं। लेकिन अुनकी भाषा कौन समझता? पाषाणकी भाषा जापानी भी नहीं जानते और दो हजार वर्षसे अिस ओर बसे हुअे आयनु लोग भी नहीं जानते। फिर हम तो अितनी दूर भारतसे यहां आये हुअे थे।

पहाड़ी प्रदेश महाराष्ट्रमें जन्मा हुआ होनेके कारण मैं पहाड़ी पत्थरोंको आसानीसे पहचान लेता हूं। अुनका भाव भी कुछ समझ लेता

हूं। लेकिन अुसे व्यक्त करनेकी मुझे मनाही है! मैंने अपनी जुड़वां दूरबीन अेक ओर रख दी और तब मैं अुस पहाड़ी खोहके साथ अेकदिल हो सका। अन्तमें मैंने अुसे हृदयसे नमस्कार किया!

बिलकुल नजदीक जाने पर हमने देखा कि मनुष्यने सरोवरके चारों ओर अेक रास्ता बनानेका सोचा है। अिसे देखकर मुझे आनन्द भी हुआ और दु:ख भी। अब अिस सरोवरके अेकान्तका हनन होगा, अिसके चारो ओर मोटरे दौडेंगी, कैमरे कअी ओरसे बतखोकी तरह क्लिक-क्लिक करेंगे और प्रकृतिकी अिस जलदेवीको मनुष्यकी सेवा करनेवाली दासी बना देंगे! यह विषादका कारण था। आनन्द अिस-लिअे था कि अैसा करने पर भी मनुष्य-जातिको प्रकृति माताका अधिकसे अधिक दर्शन हो सकेगा, मनुष्यके जीवनकी कृत्रिमता कुछ कम होगी और किसी दिन अुसे जीवन-धर्मकी दीक्षा भी मिलेगी। आखिर जहा देखो वही प्रकृतिकी जो छटा फैली हुअी है, अुसका कुछ तो अैसा अुपयोग होना ही चाहिये। प्रकृतिके साथ तादात्म्य अनुभव करनेके लिअे वैराग्य बढ़ानेकी जरूरत नही है। तटस्थता प्राप्त होना ही काफी है। बल्कि यही सच्ची साधना है।

हमारे देखे हुअे तीनो सरोवरोमें से यह सरोवर सबसे बड़ा है और मेरे खयालसे सबसे गहरा भी। विचार आया कि अिसके बीचके नाकाझीमा टापू पर क्या किसी साधुने तपस्या नही की होगी? प्रकृतिका अितिहास करीब अेक लाख सालका तो है ही। अितने वर्षोंमें क्या अेक भी आत्मवीर अिस टापूमें नही पहुंचा होगा? पानीके अितने स्वच्छ और शीतल विस्तारमें विश्व-चैतन्यको अपनी छटाके साथ प्रकट होते देखकर किसी न किसी साधकको तो यहा अन्तर्मुख होनेकी प्रेरणा जरूर मिली होगी। अुसने यहां कृतज्ञताके साथ अिस पानीमें डुबकी लगाकर अद्वैतानन्दका अनुभव भी किया होगा।

वापस लौटनेसे पहले हम बाअी ओर यानी पश्चिमकी तरफ आगे बढे। अब हवा हमारी नावके बाअी ओर टकराने लगी। नाव डोलने लगी। साथ ही हमारे हृदय भी भीतर संगृहीत आनन्दसे डोलने लगे। तूफान तो नही था, लेकिन अुसकी याद आ रही थी। वापस

लौटते समय जरूर हवामें कुछ तूफानके आसार दिखाओी देने लगे। अब हमारी ध्वजा जिस दिशामें फड़फडा रही थी अुसी दिशामें हमारी नाव भी जा रही थी, जिस कारण अुनका परस्पर विरोध मिट गया। फलतः ध्वजाका फड़फड़ाना तो कम हुआ, लेकिन अुसका बदला हवाके साथ खेल करनेवाली लहरोंकी फुहारोंने लिया। लहरें नावकी नाक पर टकराती थीं और अुसमें से निकले हुअे पानीके अुदार छींटे हमारा आश्रय ढूंढते थे। हमारे बीच में ही कुछ सुरक्षित था। मेरे सामने ओीमाओी-सान बैठे थे और वे जापानी बहन भी थीं। दाओीं ओर रेवती थी और बाओीं ओर नौका-विहारका आग्रह करनेवाली मंजु थी। पानीकी बूंदें अुनके प्रति खास पक्षपात दिखावें तो अिसमें आश्चर्य ही क्या!

यह छोटा-सा तूफान हमारे नौका-विहारका आनन्द बढा रहा था। जोखिम तो कुछ थी ही नहीं, फिर भी मनमें तरह-तरहके विचार और पाप-शंकाअें अुठने लगीं। जोरकी आंधी आ जाय तो? लहरें दुगुने वेगसे अुछलने लगें तो? और यदि सचमुच यहीं जल-समाधि लेनेका हम सबके भाग्यमें लिखा हो, तो डूबते-डूबते हर आदमीके मनमें कैसे विचार आयेंगे?

मुझे अपने बारेमें तो विश्वास था कि मैं अकेला होता तो तूफानके साथ अद्वैतानन्दका ही अनुभव करता। तुम साथमें होती तो भी अिसमें फर्क नहीं पडता। लेकिन जब दूसरे साथी साथमें होते हैं तब अुनका विचार पहले आता है। कल्पना जाग्रत हुअी और दोनों बहनोंके दो-दो बच्चे नजरके सामने घूमने लगे। चारों बच्चे मानो मुझसे पूछ रहे थे 'आपको किसने कहा था कि अैसे पागलपनको बढावा दें? आपने ओीमाओी-सानका कहना क्यों नहीं माना? हमारा विचार भी नहीं किया?'

लेकिन यह तो केवल मेरी कल्पनाका दृश्य था। वह आखिर कहां तक टिकता? सरोवरकी छोटी-छोटी लहरें भी पानीकी बच्चियां ही थीं। वे आनन्द और मौजकी पिचकारियां भरने लगीं। अुनकी कल्पना पानीमें डूब गअी और केवल 'जीवन' का तरलानन्द ही तैरने लगा।

जब वापस किनारे पहुंचे तब हमारा जीवन कितना भरा-पूरा-सा लगता था! केवल पौन घंटेके अिस सफरमें अितना अनुभव, अितना आनन्द और अितनी आत्मीयता प्राप्त करके हम सचमुच समृद्ध बन गये थे। दुनियाके प्रति हमारा सद्‌भाव बढ गया था। जो भी मानव दिखाओ देता, अुसे हम मानो दिलसे भेंटने लगे। और हमें लेनेके लिअे आओी हुअी टैक्सीमें बैठकर अेक गहरे संतोषके साथ मुकाम पर जा पहुंचे।

जीवनके अन्तमें भी यदि अिसी तरह मुकाम पर पहुच सके तो समझो कि सचमुच जीत गये!

जापानमें जाकर अेकके बाद अेक अिन तीनों सरोवरोंको देख सकनेकी आत्मतृप्तिके साथ हम निद्रादेवीके अधीन हुअे। किंतु आजका यह अनुभव तो हमेशा ही जागता रहेगा।

अिसके बादकी यात्राका वर्णन दूसरे पत्रमें शुरू करना ही ठीक होगा। अिसलिअे यही 'सुनिगम्' कहता हूं और सरोवरके आनन्दसे भरा हुआ शुभ आशिष भेज रहा हू।

१३

अुत्तर जापानके पहाड़ी प्रदेशमें

हाकोदाते,
३०-७-'५७

जापान आनेसे पहले ही मैंने श्री ओमाओी-सानको लिख दिया था कि अिस बार मैं होटलोंमें नही रहना चाहता, मुझे जापानी लोगोंके घरोंमें रहकर अुनका जीवन नजदीकसे देखना है। अिसमें हमें कुछ असुविधा भी अुठानी पड़े तो कोओी बात नही है। अधिक असुविधा तो हमारे मेज-बानोंको ही होगी। हमारे लिअे तो आत्मीयताके विकासका आनन्द छोटी-बड़ी सारी असुविधाओंसे अधिक महत्त्वका होगा।

मेरी अिस अिच्छाके अनुसार टोकियोमें हमें मासुओी बन्धुओंके घरमें ठहराया गया था। लेकिन सुदूर होक्कायडोमें अैसा करना अशक्य था।

यह प्रदेश गरम चश्मोंके लिअे प्रख्यात है। अिसलिअे यहा लोग चश्मोंके समीपवर्ती होटलोंमें रहनेके लिअे ही जाते हैं। बहुतसे अच्छे-अच्छे जापानी होटलोंमें रहनेके बाद मुझे लगा कि यह अनुभव भी लेने लायक था। होटल चलानेवाले भाअी-बहनोंका जापानी शिष्टाचार हमें जापानी संस्कृतिकी खुशबूका अनुभव कराता है। सपूर्ण घरकी निर्माण-कला, कमरोंकी सुघड़ता व सजावट आदि सब कुछ सूक्ष्मतासे समझने लायक होती है।

अेक पौराणिक कथा है कि पाण्डवोंके जमानेमें मयासुर चीनमें जाकर वहाका अेक राजप्रासाद अुठा लाया था। यानी राजमहल बनानेकी वहाकी कला सीखकर अुसने अुसे अिन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापुरमें दाखिल किया — जहां जमीन हो वहा पानीका भास हो और जहा पानी हो वहा जमीन जैसा लगे, अैसी करामात अुसने कर दिखायी थी। पुराणोंमें वर्णित और विस्मृत वे प्राचीन दिन तो गये। मेरे खयालसे तो अब असमके अथवा पश्चिमी हिन्दुस्तानके किसी अुत्साही शिल्पीको जापान जाकर अुनके घरोंका अध्ययन करना चाहिये और जरूरी हेरफेर करके अुस पद्धतिको अपने यहा दाखिल करना चाहिये। असमके कितने ही घरोंमें लकडीके चौखटमें घास अथवा बेंतके डठल जमाकर अुनकी दीवारें बनायी जाती है। दोनो ओर मिट्टीसे लीपकर सफेदी कर देते है तब दीवारें और भी सुन्दर लगने लगती है। अुन लोगोंको जापानी ढग अपनानेमें जरा भी दिक्कत नही होगी।

केवायुसे (२९–७) सुबह नहा-धोकर निकलते-निकलते दस बज गये। यहाके लोगोंको हमारी पोशाकके बारेमें अितना कुतूहल था कि सब जगह हमारे फोटो लिये जाते थे। अिनके अलावा, दो जापानी बहनोंने तो चि० मजु और रेवतीसे हमारे कपडे पहनना सीखकर अुस पोशाकमें अपने फोटो भी खिचवाये। मेरी दाढी भी अिन लोगोंको बडी मजेदार लगती है। हमारे बीच यह अेक कहावत ही बन गअी है कि 'साड़ीसे और दाढीसे' हम भारतीय हैं यह जापानी लोग सरलतासे पहचान लेते हैं।

आगेका रास्ता भी बहुत सुन्दर था। चढाअी तो थी ही। टैक्सीमें बैठकर धीरे-धीरे पहाड चढे। पूरे समय कुमारी सरोवरका साथ रहा।

नाकाशीमा द्वीप दूर-दूर जाने लगा। दूसरे छोटे-छोटे टापू भी बीच-बीचमें लुकाछिपीका खेल खेलने लगे। जैसे जैसे अूपर चढते गये वैसे वैसे सरोवरका पूरा विस्तार और दूर-दूरके पहाड़ोंको मिलाकर अेक अखण्ड, विशाल और विशालतर दृश्य होता गया। नीचे जो वृक्ष सरोवरके दर्शनमें विघ्नरूप थे, वे ही अब हमारी अुन्नति (अूंचाअी) की वजहसे पैरों तले जा रहे थे और सारे प्रदेशकी शोभा बढ़ानेमें अुन्होंने मदद की है, अिस भावनासे संतुष्ट दिखाअी दे रहे थे।

आखिर हम अिस प्रदेशके ठीक सिर पर पहुंच गये। हमारे देशमें जब हम किसी पहाड़के अूपर पहुंचते हैं तब वहां किसी बड़े पत्थर पर सिंदूर लगा हुआ देखते हैं। चढ़ाअी चढनेका पुरुषार्थ सफल हुआ अिसकी कृतज्ञता व्यक्त करनेके लिअे गाड़ीवाले अैसी जगह नारियल भी फोड़ते हैं। नारियलकी जटाओंका ढेर देखकर लोगोंकी बढती श्रद्धाका अनुमान लगाया जा सकता है।

यहा हम विहोरोकी चढ़ाअी चढ़े तब वहां सबसे अूंची जगह पर हमने अेक चौरस-पत्थरका अूंचा स्तंभ देखा। अुस पर जापानीमें 'विहोरो घाट' लिखा भी था। यह लिपि चित्र जैसी होनेके कारण पत्थरकी शोभा भी बढाती थी। यहासे कुशारो सरोवरका आखिरी और रमणीयतम दर्शन होता था। अिस सरोवरकी ओर पीठ करके स्तंभके चारो ओर हम पांचों खड़े हो गये और वहीं मिले अेक फोटोग्राफरसे हमने अपना फोटो खिचवाया। बादलोंने भी विचार किया कि अितनी सुन्दर पृथ्वीके अूपरका आकाश बिलकुल नीला व फीका रहे तो यह बुरी बात होगी। अिसलिअे बीच-बीचमें सफेद बादल आकाशमें फैल गये और अुन्होंने हमारे फोटोकी शोभा बढ़ाअी। सचमुच अिससे फोटो खिल अुठा। अुन बादलोंको मैंने कृतज्ञतापूर्वक अनेक धन्यवाद दिये। शायद अुनके भारसे ही बादल धीरे-धीरे नीचे झुकने लगे।

विहोरोकी वह अूंचाअी, वहासे देखा हुआ सरोवरका दृश्य और अुस प्रकृति-सौंदर्यके बीचमें बैठकर किया हुआ वनभोजन — नाश्ता यह सब आसानीसे नहीं भुलाया जा सकता।

अब हमारी टैक्सीके भाग्यमें धीरे-धीरे अुतरना ही था। आसपासके गांवोंके रास्ते, सुन्दर-सुन्दर वाडियां, अुनमें से झाकते हुअे रंग-बिरंगे फूल—सब हमारे आनन्दको पूर्णता प्रदान कर रहे थे।

डेढ बजे हम लोग विहोरो स्टेशन पहुचे और वहा हाकोदाते जानेवाली ट्रेनका अिन्तजार करने लगे। पर हमें अधिक राह नही देखनी पडी। धूपसे बचनेके लिअे हम स्टेशनके पुलकी छाया ढूढ रहे थे, अितनेमें ही ट्रेन आ पहुची।

अब हमें होक्कायडोका लगभग सारा द्वीप देखकर, बिच्छूके डंक-जैसे टेढे-मेढे दक्षिणी होक्कायडोमें प्रवेश करना था और ठेठ दक्षिणमें हाकोदाते बन्दरगाह तक पहुचना था। ट्रेनकी अिस अेक ही यात्रामें हमने होक्कायडो द्वीपका सारा पूर्वी भाग, आखें थकने और अधेरा होने तक, जी भरकर देखा। फिर हमने ट्रेनमें ही खाना खाया और आठ-नौ बजे तृतीय श्रेणीके सोनेके डिब्बेमें पहुच गये। यहा तीन मजिलवाले अेक कमरेमें हम टिके, जिसमें छह बिस्तर बिछे थे। सप्पोरोसे हमारे साथ आअी हुअी स्नेही बहन श्रीमती याअेको ओवामुरा रास्तेमें ओतारु-स्टेशन पर अुतरनेवाली थी (यह स्थान सप्पोरोके पूर्वोत्तरमें है), अिसलिअे सोनेसे पहले अुन्होंने हमसे विदा ली। अुन्होंने हमें सुन्दर-सुन्दर आयनु खिलौने दिये। हमने अुनसे कहा कि ये खिलौने हमारे यहाके लोगोंको बहुत पसन्द आयेंगे। लेकिन हमें तो खास अुनका सौम्य अेव सस्कारी साथ ही हमेशा याद रहेगा। यात्रामें ये बहन हमारी सुविधाका भी थोड़ा-बहुत खयाल तो रखती ही थीं, लेकिन अुनका भक्त-हृदय साधु ओीमाओी-सानको किसी भी तरहकी तकलीफ न हो अिसका पूरी तरहसे ध्यान रखता था।

१४

हाकोदाते

ता० ३०को सुवह छह वजे हम हाकोदाते पहुचे। स्टेशनसे मुकाम पर पहुंचनेके लिअे काफी लम्वा रास्ता काटना पड़ा। अिस तरह हम अिस वन्दरका वड़ा भाग सहज ही देख सके। समुद्रके किनारे नावें और जहाज काफी वडी सख्यामें खड़े थे। हवामें जहा जाओ वही मछलीकी गन्ध फैली हुअी थी। गन्धककी गन्ध अधिक अुग्र होती है अथवा मछलीकी, यह कहना मुश्किल है। भाग्यसे जहां हमें रहना था वहां यह गन्ध नही पहुचती थी। हम जहा ठहरे थे वह आधा घर था और आधा होटल। यहा हमें हर तरहकी सुविधा देनेके लिअे गृहपति विशेष प्रयत्नशील थे। अितने लम्वे सफरके वाद आरामकी जरूरत तो थी ही। चि० मंजुने अपनी डायरीमें जो लिखा है, अुसके दो वाक्य यहा दे रहा हूं: "आज कोअी खास प्रोग्राम नही था। दोपहरके वाद ही वाहर जाना था। घर अवनिभाअीको अथवा और किसीको पत्र लिखनेका मन भी नही था। लेकिन श्री काकासाहेवने मुझे और रेवती वहनको लिखनेके लिअे आमने-सामने जवरदस्ती विठा ही दिया। फिर तो कोअी चारा ही न था। मैंने पूज्य मातुश्रीको तथा प्रदीपको पत्र लिखे।"

अिन दोनोंकी पत्र लिखनेकी स्वतत्रतामें वाधा न पहुचे अिसलिअे मै अुनके पत्रोंको देखना टालता हूं। लेकिन यात्रामें चौवीसो घटे तरह-तरहके नये अनुभव लेते हुअे और आनन्दका आदान-प्रदान करते हुअे आत्मीयता अितनी वढ जाती है कि अुन्हें मिले हुअे और अुनके लिखे हुअे पत्र मुझे दिखाये विना अिनसे रहा ही नही जाता। और मैं तो स्वभावका शिक्षक ठहरा! अुनके पत्र पढ़नेके वाद अेकाध शब्द सुझाये विना मैं कैसे रह सकता हू? मजुको अेक अत्यन्त प्रेमालु और अनुभवी सास मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सासने मंजुके दोनो वच्चोंको सभालकर अुसे निश्चिन्त कर दिया है। वह तो अुलटे घर वैठे मजुको ही

हर तरहसे चिन्ता करती रहती है। जापानसे भेजे हुअे मजुके पत्रोंमें अुनकी सासको तसल्ली मिलती है। नानके पत्रोंमें निश्चिन्तता के अैसे अुद्‌गार पढकर मजु बडी खुश होती है। मुझे भी सतोष होता है।

रेवतीके दोनो बच्चोंकी जिम्मेदारी अुसकी माने ली है। माकी मददके लिअे रेवतीकी बहन हेमाताओ भी दिल्ली जाकर रहती है। फिर भला रेवती क्यो चिंता करने लगी? लेकिन बालका पत्र न मिलने पर वह बिलकुल मुरझा जाती है। तब मुझे बालके बचावमें जितनी दलीलें सूझती है, अुतनी सब अुसके सामने रखनी पडती है। अुसे समझाता हू कि बालने तो काफी खत लिखे होगे, लेकिन डाकखानेकी गफलतसे यदि वे हमें न मिलें तो अिसमें अुनकी क्या गलती?

खैर। अब मैं अपनी बात कहू? कलकत्ता और हागकागके बाद मुझे तुम्हारा अेक भी पत्र नही मिला था। जापानमें पैर रखनेके बाद आज पहली बार तुम्हारा १९ तारीखका पत्र मिला है। बडी खुशी हुआी। तुम्हारे पत्रमें चि० बाल, दीपक तथा सिद्धार्थके और मजुके घरके व अुनके बच्चोंके समाचार होते ही है। अिसलिअे तुम्हारा पत्र हम तीनोको अेक साथ ही प्रसन्न कर देता है। हमारे तीनोंके अप्रकट आशीर्वाद व धन्यवाद सुगन्धकी तरह तुम्हारी ओर बह रहे है।

मजु और रेवतीको तो मैंने घर पत्र लिखनेको बिठा दिया है। अिसलिअे आज पहली बार तुम्हें अपने हाथसे पत्र लिख रहा हू। यह भी मेरे लिअे अेक आनन्दकी बात है। अिसे शायद तुम नही समझ सकोगी। अपने हाथसे लिखनेका मेरा आलस्य तुम जानती ही हो। लेकिन अिसीलिअे जब कभी अपने हाथसे लिख पाता हू, तब विशेष सतोष होता है। और यहा तो वक्त भी काफी मिला।

हाकोदातेमें और यहा आसपास देखने लायक काफी है। लेकिन हमने अिन पाच दिनोंमें अितना अधिक देखा-भाला है कि अब अुसमें वृद्धिकी ओर गुजायश ही नहीं रह गअी है। अिस द्वीपमें सप्पोरोके बाद यही बडा शहर है। आबादी ढाओ लाखके करीब है। अिस शहरके अुत्तरमें सत्तर मील दूर 'ओनुमा' नामका अेक सरोवर है। अुसका घेरा अिक्कीस मीलका है। शोभाकी दृष्टिसे यह सरोवर भी अप्रतिम

गिना जाता है। वहा बरफ कम पड़ती है, अिस कारण बारहो महीने अुसके आसपास घूमनेका आनन्द अुठाया जा सकता है।

(देरसे आओमोरी जाते हुअे जहाजमें)

अितने बड़े शहरमें आनेके बाद अखबारवाले मुलाकात लिये बिना कैसे रहते? तीन बजे हम नगरपालिकाके दफ्तरमें गये। वहा यहाके डिप्टी मेयरसे मिले। (मेयर विदेश गये हुअे है)। यहाके दीवान-खानेमे जापानके और होक्कायडोके बडे-बड़े वैज्ञानिक नक्शे थे। अिन्हें देखकर मेरी घुमक्कड़ अन्तरात्मा प्रसन्न हुअी। थोडा समय मिलते ही मैंने रेवती और मंजुको अिन नक्शोकी मददसे काफी चीजें समझा दी।

यहासे हम पहाड़ीके अेक स्तूप पर गये। अूपर पहुचना अितना आसान नही था। यहा भी भक्तगण काफी सख्यामें अेकत्र हुअे थे। कैमरेवाले भी स्वधर्म समझकर हाजिर थे। मैंने अपने प्रवचनमें भगवान बुद्धके विषयमें, तमाम वासनाओके अुन्नयनके विषयमें और विश्वशातिके लिअे त्याग और बलिदानकी आवश्यकताके विषयमें थोडा कहा। कितने ही भक्त पैदल ही अूपर आये थे। अुनको हाफते देखकर मैंने कहा — "आरोहणम् तु सायासम्। किसी भी समाजको, राष्ट्रको अथवा व्यक्तिको जब चढना होता है तब बडा भारी पुरुषार्थ करना पड़ता है।" गिरनेका रास्ता तो हमेशा ही आसान होता है। अन्तमें मैंने कहा कि मन पर यह पाठ अंकित करनेके लिअे ही ये सारे स्तूप अूचो पहाडीके अूपर बनाये जाते है। अिस अन्तिम वाक्यका जब अीमाअी-सानने जापानीमें अनुवाद किया, तब यह स्तूप बनवानेवाले और वहा पूजाके लिअे आनेवाले सारे भक्तोंको मुखमुद्रा पर अंकित धन्यता देखने लायक थी।

साढे चार बजे नगरपिताओकी ओरसे हमारा स्वागत था। अिसके साथ खानेकी बढिया व्यवस्था तो होती ही है। यहा भी स्तूपके विषयमें, गुरुजीके कार्यके सम्बन्धमें और अीमाअी-सान भारत व निप्पोनके बीच अेक कडीके समान है, अिस बारेमें मैंने थोड़ा-बहुत कहा। मेरे भाषणोका जापानी अनुवाद अीमाअी-सान बहुत अच्छा करते थे, लेकिन अुस नगरके प्रतिष्ठित लोग जो कुछ बोले अुसका हिन्दी अनुवाद करना मारुयामाजीके

लिअे सरल नही था। खैर। भाव तो हम समझ ही गये। 'धर्मो रक्षति रक्षित' वाली मेरी दलील अिन लोगोको बहुत अच्छी लगी।

पौने छह बजे हमने हाकोदाते छोडा। सब तरहकी सुन्दर सुविधा-वाला यह बढिया जहाज हमें साढे चार घटेके समुद्री सफरके बाद आओमोरी बन्दर पहुचा देगा। वहासे ट्रेन पकड़कर हम सुबह तक सेन्डाओ पहुच जायगे।

होक्कायडोमें बिताये हुअे पांच दिनोंका और वहा लूटे हुअे आनन्दका जब मैं विचार करता हूं तब ओश्वरके प्रति हृदय भक्तिसे नम्र हो जाता है। भगवानने अितनी जीवन-समृद्धि प्रदान की है, अुनका मैं अुदारतासे वितरण करू तभी वह सफल हुओ कही जायगी। नहीं तो — गीताकी भाषामें — मैं चोर ठहराया जाअूगा। मेरा विश्वास है कि होक्कायडो द्वीपका महत्त्व भविष्यमें जल्दी ही बहुत बढनेवाला है।

अेक तरफ मैं अैसे गभीर विचारोमें डूबा रहता हू और अुधर मजु व रेवतीके मुख आनन्द और अुल्लाससे खिले ही रहते हैं। दोनोकी खासी दोस्ती जम गओ है। सारे दिन हसती रहती है। हंसनेके लिअे अुन्हें अितनी बातें कहासे मिल जाती हैं यह तो वे ही जानें। लेकिन जब चित्त प्रसन्न हो तब कारणकी जरूरत भी क्या? अिस जहाज पर लोग टोलियोमें जमा होकर अिन दोनोकी साड़ियो व अिनकी आखोको देखते है और अेक-दूसरेको अिशारोंसे बताते है। जापानी लोगोंकी छोटी-छोटी आखोका तुम्हें खयाल है ही। अुन्हें हमारी आखें कैसी लगती होगी?

अिन चार घटोंके सफरके लिअे भी ओमाओ-सानने हमारे लिअे sleeping berths (बिस्तरोंकी) व्यवस्था की है। सचमुच ओमाओ-सान बड़े ही प्रेमालु और चतुर व्यक्ति हैं। पहलेसे ही सोचकर सारी चीजोंकी व्यवस्था कर लेते हैं। अेक भी चीज भूलते नही है। प्रत्येककी सुराककी भी बारीकीसे ध्यान रखते है। खुद तो त्यागी व सहनशील भिक्षु हैं, लेकिन दूसरोंकी सुविधाका विचार किसी स्नेहमयी माताकी कोमलतासे करते हैं। अब यदि हम आराममें सोनेका आनन्द लेनेकी सोचते तो बढते हुअे अधेरेमें बदरकी शोभा देखना रह जाता। जहाजमें से समुद्रका पानी सुन्दर दिखाओ दे रहा था। लेकिन पतवारके पास जब पानी अुछलकर

चमकता था तब अुसमें फीरोजी रंगकी नीलिमा दिखाओ देती थी। अिस ओर रेवतीने मेरा ध्यान खींचा। बड़ी देर तक समुद्रकी शोभा देखी और कुछ खाये बिना ही थोड़ा-बहुत सो लिये। जहाजके संगीतने हमारे लिअे लोरियोंका काम किया।

१५

भव्यताका पीहर : निक्को

नागाओका
१–८–'५७

आज तो मुझे बड़े अुत्साहसे अुभरते हुअे आनन्दको समेटकर खूब लिखना है। निक्को यानी जापानका प्राकृतिक सौंदर्य-धाम, पुरानी और नअी मानवीय कलाका संग्रहालय, बौद्धोंका अेक धर्म-क्षेत्र और सब तरहसे भव्यताका पीहर। आज मुझे अिसी निक्कोके विषयमें लिखना है। निक्कोकी बड़ाअी मेरे जैसा करे अिसमें आश्चर्य ही क्या? पश्चिमके लोग बड़ाअी करें तो वह भी समझा जा सकता है। लेकिन जापानी खुद कहते हैं, अुनकी यह कहावत ही है: "निक्को न देखें तब तक केक्को न कहें।" "केक्को" यानी तृप्त होना। निक्कोके अनुभव और आनन्दके विषयमें जी भरकर लिखूं अुससे पहले पिछले पत्रके सिलसिलेमें रही हुअी कुछ बातें पहले लिख डालता हूं, जिससे फिर वे बीचमें टांग न अड़ाअें।

अब तकका सारा सफर अुत्तरी द्वीपमें किया था। अब हमने होनशुमें प्रवेश किया है। यह जापानका मुख्य द्वीप है। जिस जमानेमें होक्कायडोको येड्डो अथवा येज्जो कहते थे, अुस जमानेमें जिस होनशु द्वीपको ही निप्पोन कहते थे। अब निप्पोन अथवा निहोन यानी चार मुख्य द्वीप और अुनके छोटे-छोटे हजारों टापू मिलकर बना हुआ जापानियोंका सारा प्रदेश।

जब तीन साल पहले हम आये थे तब होनशुका दक्षिणी भाग और कियुशु द्वीप हमने देखा था। चौथा द्वीप शिकोकु भी जरूर आकर्षक होगा, लेकिन वहा अधिक लोग नही जाते हैं अिसलिअे वह बेचारा हमेशा ही बिना प्रशसाके रह जाता है। पिछली बार हमने जो स्थान देखे थे अुन्हें छोड़कर अिस बार नये स्थान देखना तय किया है। हमारे पास काफी समय होता तो हाकोदातेसे आओमोरी आते ही हम तोवाडाका सुन्दर सरोवर और अुसके आसपासके अरण्यकी शोभा देखनेका अवसर नही छोड़ते। पर अुपाय क्या! हमें तो रातों-रात चोरकी तरह, जहाजसे सीधे स्टेशन जाकर द्वितीय श्रेणीके सोनेके डिब्बेमें (जहा हमारी जगह नियुक्त थी) जाकर सो जाना पड़ा। ३१ को सुबह सात बजे हम सेन्डाअी स्टेशन पहुच गये। अितिहास अथवा सौंदर्यकी दृष्टिसे सेन्डाअीका महत्त्व कम नही है। हम चाहते तो यहां भी आसपास काफी घूम सकते थे, लेकिन हमें निक्को पहुचनेकी जल्दी थी। दूसरा अेक सतोष यह भी था कि जहा जायेंगे वहा प्रकृति-सौंदर्य अेक-सा ही बिखरा हुआ मिलेगा। खुशीकी बात है कि अिस देशमें प्रकृतिका प्रसाद और मनुष्यका पुरुषार्थ दोनो मानो अेक-दूसरे पर मुग्ध हो अिस तरह अपनी हर तरहकी कलाका विस्तार करते है। सेन्डाअीमें हमने गाडी बदली और अुत्सुनोमिया गये। जहा देखो वही पहाडकी शोभा, नदियोंकी अुछल-कूद, परिश्रमी किसानोकी प्रसन्नतासे की हुअी खेती और प्रत्येक दृश्य पर अधकारका पर्दा डालकर नया दृश्य दिखानेवाली रेलवेकी सुरगें — सब मिलकर चित्तरूपी सागरको बिलोते ही रहते थे। कभी-कभी आनन्द भी थककर कहता · "जरा ठहरो तो! बिलोये हुअे मक्खनको अेकत्र तो कर लेने दो।" लेकिन जापानमें अैसा मौका या अितना आराम हमें मिलना कहा सम्भव था!

हमें अुत्सुनोमियासे निक्को ले जानेके लिअे अेक मोटर तैयार थी। निक्कोका अेक शब्दमें वर्णन करना असम्भव है। जैसे दीवाली मानो अनेक त्योहारोंका सम्मेलन, वैसे ही निक्कोको सैर-सपाटे और 'पिकनिक' का महापर्व ही समझो!

निक्को पहुचते हुअे अुसका मंगलाचरण वीस-पच्चीस मीलके राज-वन-पथसे ही शुरू हो जाता है। वहां पहुचने पर मोटरसे सुन्दर चालीस मीलका सर्पाकार रास्ता चढ़ना पड़ता है। अुस अूचाअीसे अुन्नतिके अुत्सवकी खुशी मनानेका और विशालसे विशालतर सृष्टि देखनेका आनन्द प्राप्त होता है। अूपर पहुचनेके वाद चार हजार फुटकी अूंचाअी पर चुझेन्जी सरोवरका चमकता हुआ विस्तार दिखाअी देता है। वहासे मानो सोनेकी खानमें अुतरते हो अिस तरह अेक तलघरमें अुतरते है। यहा अेक अद्‌भुत प्रपात और अुसीके परिवारके वाल-वच्चोका दर्शन होता है। सरोवरके किनारे भिन्न-भिन्न कालमें वनाये हुअे वौद्ध मदिरोका स्थापत्य, आसपासके वगीचे, अुसके वाद दो पहाड़ियोके शिखरोको जोड़नेवाली रोप-ट्रोली (रस्सेके आवार पर लटकनेवाला वाहन) का चमत्कार और अन्तमें अितनी अूचाअीसे कुछ ही पलोमें तलहटी तक ले जानेवाली रोम-हर्षण ट्राम — अितनी विविधता सिरमें चक्कर लानेके लिअे काफी है। लेकिन निक्कोका मुख्य आकर्षण तो अभी वाकी ही है! यह सारा प्रदेश अनेक पहाड़ियों, अनेक सरोवरो और अुनके वीच खेलती-कूदती व डग-डग पर नाचती हुअी छोटी-मोटी नदियोंके जालसे भरा पडा है। अैसे प्राकृतिक अुत्सवमें मनुष्यके लगाये हुअे वृक्ष, वनाअे हुअे मदिर, तोरण-स्तम्भ व विशालकाय दीप और भीतर व वाहर फैली हुअी रंग-विरंगी चित्र-कला आदि विभिन्न प्रकारके आकर्षणोकी भी यहां कमी नही है। यह सव देखने, अनुभव करने और आनन्द लेनेमें मेरे जैसे रसिकको भी अपच होने लगता है। डेढ दिनमें जो मिला अुसे हजम करनेमें न मालूम कितना समय लगेगा। लेकिन यदि अिसे तुरन्त ही न लिख डालू तो साराका सारा ही रह जायगा। अिसलिअे किसी भी तरह अिसकी फुटकर जानकारी यहासे लिखकर भेज देना चाहता हू।

और सच कहूं तो यह हृदयमें भरा हुआ अनुभवानन्द तुम्हारे सामने न अुड़ेलू तव तक अुसकी अकुलाहट या वेचैनी कम न होगी। जैसे मनुष्यको पैसे अपनी जेवमें सुरक्षित नही लगते, लेकिन अुन्हें वैंकमें जमा करके वह निश्चितता अनुभव करता है, अुसी तरह मुझे लगता है

कि यह सारा अनुभवानन्द अिस पत्रके द्वारा तुम्हे भेज दू तो आगेकी यात्राके लिअे हलका हो सकूगा।

अब पहले बाअीस मील लम्बे अुस राज-वन-पथकी बात कह दू। रावलपिंडीसे श्रीनगर जाते हुअे अतिम दो दिनोमें रास्तेके दोनो ओर हमने सफ़ेदा (poplar) के पेड देखे थे। तब लगता था कि अैसी शोभा दुनियामें और कही नही हो सकती। पर यहा तो डेढ-डेढ सौ फुट अूचे बीस-तीस हजार सीडरके पेड बडे-बडे राजपुरुषोकी तरह रास्तेके दोनो ओर खडे है। पेड समझते होगे कि वे हमारा बादशाही स्वागत करनेके लिअे ही खडे हैं। लेकिन हमें लगता है कि अिनके सामने हम कितने तुच्छ प्राणी है!

सीडरका पेड यो भी बहुत अूचा, सीधा, फिर भी घेरवाला और शानदार होता है और अुस पर यदि किसी तरह भी खतम न होनेवाली अुनकी पक्तिया रास्तेके दोनो ओर खडी हो तो मनुष्यकी भावनाकी क्या स्थिति हो! यदि कोअी सारा दिन अुनके बीच चलता ही रहे तो भी अुनका पार नही पा सकता। हम तो मोटरमें वेगसे जा रहे थे, फिर भी हमारा धीरज खतम हो गया।

अीसवी सन् १६२५ के आसपास यहाके अेक गवर्नरने अिस वन-वीथीकी कल्पना की होगी। बीस वर्षकी मेहनतसे चालीस हजार पेड लगाये गये। जो पेड कमजोर हो अथवा मर जायें अुनकी जगह दूसरे लगाते जाना, आधी-तूफान आये और लगाये हुअे पेडोका नाश कर दे तो अुन्हें फिरसे लगाना — अिस प्रकार करते-करते अिन महावृक्षोकी यह सेना यहा कायम हो सकी है। मध्यकालीन युगमें हर किसी आदमीको अिस रास्तेसे जानेकी अिजाजत नही थी। आजकल तो अितना चौड़ा रास्ता भी मोटर आदि वाहनोके लिअे सकरा साबित हुआ है। अिसलिअे बीच-बीचमें अिस वीथीके बाहर समानान्तर नये रास्ते बनाये गये हैं, जिनसे गुजरते हुअे छाती पर पडा हुआ मानसिक दबाव कुछ हलका होता है और यह आश्वासन मिलता है कि आकाश लुप्त नही हो गया है।

अिस राज-वन-वीथीके खतम होने पर हम निक्को पहुचे। जापानमें सारे ही शहर सुघड और आकर्षक होते हैं। दुकानोकी सजावट तो

जापानियोकी खास कला ही है। मैंने सोचा था कि निक्को जाकर तुरन्त किसी होटलमें आराम करेंगे, लेकिन ओीमाओी-सानकी योजना कुछ और ही थी। अेक दुकानके अन्दर हमारा सामान अुतार कर हमें सीधे सरोवर पर ले जानेका अुनका अिरादा था।

प्रारम्भमे ही हमने लाल रगका अेक कमानीदार पुल देखा। अुसके नीचे नदी कलरव करती हुओी दौड रही थी और अपने ठडे जलमें पैर धोनेका निमत्रण दे रही थी। मालूम हुआ कि अिस पवित्र पुल परसे किसीको जाने नही देते। यह पुल तो मदिरोके लिअे बादशाही भेंट लानेवाले गवर्नर या राजदूतोके लिअे ही है। यहाके पुराण कहते है कि अेक पुजारीको अिस ओरके अेक पहाड पर पचरगी बादल दिखाओी दिये। वह अुस ओर चला। वहा जाते हुअे रास्तेमें अेक नदी पडी। पुरोहितने बौद्ध-सूत्रोमें से मत्रोका अुच्चारण किया, त्योही वहा दो सर्प प्रगट हुअे —— अेक लाल और दूसरा नीला। अुन्होने आमने-सामनेसे आकर अपना ही अेक पुल बना दिया। अैसे विचित्र और सजीव पुलको अिस्तेमाल करनेकी पुरोहितकी हिम्मत न पडी। अुसने अेक किसानकी मददसे पुल पर घास बिछाओी और अुस पार गया।

यह पौराणिक कथा नही होती तो भी अिस पुलकी और आसपासकी शोभा देखनेके लिअे हम थोडा समय यहा रुके बिना नही रहते।

अब हम धीरे-धीरे पहाड पर चढने लगे। किसी भी स्थान पर प्रकृतिके सौदर्यमें फीकापन न था। किसी जगह सुन्दर पत्तियोका आकर्षण था तो किसी जगह तितलियोका, किसी जगह झरनोका नाद हमें रोक लेता था तो किसी जगह अूपरके बादल हमारा ध्यान खीचकर गर्दनमें दर्द पैदा कर देते थे। सारा रास्ता अग्रेजीके कओी जेड (Z)-अक्षरोके आकारका था। हर मोड़ पर अुसका क्रमाक और अूचाओी लिखी हुओी थी। अैसे मोडोका मुख्य लाभ यह है कि बार बार दिशा बदल जानेसे आप आगे-पीछे दोनो ओर देख सकते है। अत वनश्रीका अेक भी पार्श्व नजरसे चूकता नही। जैसे-जैसे अूपर जाते है वैसे-वैसे हवा अधिक स्फूर्तिदायी होनेसे अुत्साह बढाती जाती है; और नजरके लिअे प्रकृतिका विस्तार जितना बढता जाता है अुतना ही सृष्टिके साथ हमारे तादात्म्यका विस्तार

बढनेसे नशा भी चढता जाता है। अुन्नति और विस्तार अिन दोनोंका प्रमाण अिस प्रकार अच्छी तरह सुरक्षित रहता है। अिसीसे मनुष्यमें विश्व-रूप-दर्शनकी योग्यता आती है। गीतामें भगवानने अर्जुनसे कहा है कि तुम अपने रोजके चर्म-चक्षुसे मेरे विश्व-रूपका दर्शन नही कर सकते। तुम्हें दिव्य-चक्षु देता हू। अिसी तरह यहा प्रकृति भी हमें कहती है— 'मेरा विस्तार यदि दो आखोंसे कण्ठ तक पान करना हो तो अुनके लिअे मेरे अुन्नत शिखर हाजिर हैं और वहा आपके फेफडोंके लिअे विरल-तरल प्राणवायुकी भी व्यवस्था है।" हमें अूपर पहुचनेकी जरा भी जल्दी नही थी क्योंकि हर मोड पर अेक-से-अेक नया दर्शन-सुख मिल रहा था।

लेकिन जैसे ही हम अूपर पहुचे अुन्नति-क्रमका यह सारा अनुभव अेक क्षणमें चमकते हुअे सरोवरके विस्तारमें डूब गया। अैसा लगा मानो जन्मान्तर करके हमने अेक नअी दुनियामें प्रवेश किया हो। हम चार हजार फुटकी अूचाअी पर पहुचे थे, फिर भी सरोवरके आसपास पहाडियोंकी कमी न थी। अीसाअी-सान कहने लगे कि जरा आराम करके आसपासके बौद्ध मदिर देखने चलेंगे। हम नजदीकके अेक आराम-गृहमें पहुचे। अिस आराम-गृहको चलानेवाला कुटुम्ब गुरुजीके भक्तोंमें से अेक था। आराम-गृह सरोवरके किनारे पर होनेके कारण वहासे दृश्य बहुत सुन्दर दिखाअी देता था। चि० सजु जुडवा दूरबीन लेकर आराम-गृहके छोटेसे बगीचेमें पहुच गअी और रेवती नावोंको निहारनेमें मग्न हो गअी। अिस तरह अुन्हें दुहरा लाभ मिला। प्रकृतिकी शोभा तो अुन्हें जी भरकर पीनेको मिली ही, साथ ही स्वागतमें आअी हुअी जापानी चाय पीनेके सकटसे भी वे बच गअी। अुन्हें विश्वास था कि तीनों प्यालोंकी कडवी चाय मैं खुशीसे अकेला ही खाली कर दूगा। भक्तोंके साथ बातचीत करके मैं भी बगीचेमें जा पहुचा। मैंने भी चमकते हुअे पानीकी लहरें — नही यह शब्द कुछ बडा है — पानीकी सलवटें और अुनकी बदलती हुअी आकृतिया देखी। अितनेमें अीसाअी-सानने अेक सुन्दर कीमती कार्डबोर्ड मेरे सामने रखकर सल्लीन रोशनाअीमें भीगी हुअी अेक कूची मेरे हाथमें दी। गृहपतिके लिअे अुस पर मैंने नागरी अक्षरोंमें "नम् म्यो हो रेंगे क्यो' लिखकर अुसके नीचे सत्य और अहिंसाकी विजयकी कामना

व्यक्त की। मेरी यह स्वाक्षरी प्राप्त करके भक्त लोग बडे खुश हुअे और अुनकी सरोवरकी तरह झिलमलाती और भक्तिसे गीली आखें देखकर मैं भी प्रसन्न हुआ।

यहासे हम बौद्ध मदिर देखने गये। यहा जापानकी अुत्तमसे अुत्तम कारीगिरी देखनेको मिलती है। मदिर-कलाका दर्शन प्रवेश-द्वारसे ही शुरू हो जाता है। फिर अन्दरका बगीचा, अुसके छोटे-बडे पेड, बीच-बीचमें सजाये हुअे पत्थरके दीपक, सीढियोसे लेकर ठेठ छप्पर तक औचित्यसे अुभरते हुअे मदिर, मूर्ति, चित्र और बर्तन — अिस सारी समृद्धिका कोअी ठिकाना था! अेक बडा चौकोर अथवा गोल पत्थर लेकर अुसमें आमने-सामने दो आर-पार छेद करके भीतर रखे हुअे दीयेका प्रकाश चारो दिशाओमें जा सके अैसी व्यवस्थावाले जापानी दीपक हमने तीन वर्ष पहले भी देखे थे। प्रवेश-द्वारके सामने जैसे दोनो ओर दो खम्भे होते है और अुनके सिर पर पत्थरकी टोपी होती है, अुसी तरह अिस पत्थरके दीपक पर भी अेक टोपी होती है। जापानकी यह खासियत अुत्तरसे दक्षिण तक सभी जगह देखनेको मिलती है। जिस तरह पत्थरको खोदकर अैसे दीपक बनाते है, अुसी तरह कासेके भी बनाते है। यहा तो अेक सूबेदारने अपने प्रातकी तीन वर्षकी आमदनी खर्च करके लोहेके दो अूचे-अूचे दीपक बनवाकर निक्कोके अेक मदिरको चढाये है। अुस जमानेमें जापानमें लोहा दुर्लभ था।

अेक जगह अेक बड़ा चिकना पत्थर देखा, जो शायद आकाशसे गिरी हुअी अुल्काका होगा। अिसे यही देखा था या और कही, यह याद नही आ रहा है।

मूर्तियोमें भगवान बुद्धकी अथवा बोधिसत्त्वोकी मूर्तिया अलग-अलग है। ये शांत, प्रसन्न और भीमकाय होते हुअे भी सौम्य दिखाअी देती है, जब कि भगवान बुद्धके शिष्योकी मूर्तियोमें अनेक प्रकार होते है। अिन्द्र, विरोचन आदि देव-दानवोकी व द्वारपालोकी मूर्तिया तो अुग्र और कभी-कभी विकराल भी होती है।

अेक-अेक मदिर यानी धार्मिक कलाका सग्रहालय। मदिरके पुजारी और वहा रहनेवाले साधु धीर-गम्भीर व स्वमानका महत्त्व जाननेवाले दिखाअी दिये। हमारे यहा तो कअी मदिरोमें पुजारी दक्षिणा मागकर

हैरान करेंगे, यह डर लगा रहता है। यहाके मदिर समृद्धिमें हमारे यहाके मदिरोंसे कम नही हैं। हमारे पुजारी कब समझेंगे कि 'बिन मागे मोती मिलें मागे मिले न भीख'?

यहा अेक मदिरके बगीचेमें कितने ही पेडोकी डाली-डालीमें कपडे और कागजके चिथड़े बधे दिखाओी दिये। मानो किसी मध्यकालीन शूर-वीरके शरीरका कण-कण घायल हो गया हो। कुतूहलसे अुन चिथडोका अर्थ पूछने पर अेक मजेदार रिवाज जाननेको मिला। जो प्रणयी-युगल विवाहका निश्चय करने पर भी घरके या बाहरके विघ्नोके कारण तुरन्त विवाह नही कर सकते, वे अिस पेडके नीचे आकर प्रार्थना करते हैं और शादीके बाद भेंटके रूपमें ये चिथडे डालो पर बाध जाते हैं। अैसे चढाये हुअे अितने सारे चिथडे यहा देखकर श्रद्धा कहती थी कि यहाकी प्रार्थना जरूर सफल होती होगी।

(यहा कोअी यह अभद्र शका न करे कि प्रार्थना करनेके बाद भी जो तुरन्त शादी न कर सके हो अैसे युगलोकी सख्या जाननेका साधन आपके पास कहा है?)

अुन प्रणयोत्सुक असख्य युगलोके प्रति मनमें समभाव लाकर हमने अुन पेडोंकी ओर आदरसे देखा।

मालूम हुआ कि पासके अेक सरोवरका बढा हुआ पानी दौडकर दो छलागोमें ही अपने चुअेन्जी सरोवरसे मिलता है। जो प्रतिग्रह स्वीकार करता है, अुसे दान देना ही पडता है। अिसलिअे चुअेन्जी सरोवरने पचीस फुट चौडे अेक परीवाहके द्वारा बढे हुअे पानीको छोडनेकी व्यवस्था की है। सरोवर देखनेके लिअे हमें जितनी अूचाअी चढनी पडी अुतनी ही अूचाअी अुतरनेकी जिम्मेदारी अिस परीवाहके सिर आ पडी है। 'जीवन' को भला डर किस बात का? अुसे मौका मिलते ही अुसने पहली ही कूद तीन सौ फुटकी मारी! अुसके बाद अैसे ही छोटे-बडे प्रपातोका पानी जिकट्ठा करके और खेलते-कूदते अुसने आगे जाना पसन्द किया। यही कूद प्रख्यात 'केगोन प्रपात' है। अिसकी शोभा देखनेके लिअे देश-विदेशके असख्य लोग यहा अिकट्ठे होते हैं।

जापानी लोगोंकी विज्ञान-विद्या और कला-रसिकताके संयोगसे अिस तालावके दुहरे दर्शनकी सुन्दर-से-सुन्दर सुविधा की गअी है। सरोवरके किनारेसे अेक रास्ता हमें अेक सुरंगके मुहकी ओर ले जाता है। हम कोलारकी सोनेकी खान देखने गये थे। वहां अेक लिफ्ट जैसा झूला अथवा कमरा विजलीकी मददसे पृथ्वीके पेटमें ले जाता है। वैसी ही यहाकी व्यवस्था है। टिकट खरीदकर हमने जैसे ही अुस लिफ्टमे प्रवेश किया कि घर-ररर घर-ररर करती वह नीचे पहुच गअी। अब पहाडीसे बाहरकी ओर निकलनेके लिअे अेक सुरग पार करनी थी, अुतना चलकर हम अेक प्लेटफार्म — मच पर पहुच गये। वहासे नाहन प्रपातकी पहली झलक दिखाअी दी। अेकदम नजदीकसे अुसकी शोभा और गर्जनाका अनुभव करनेके बाद हमने दाअी ओर देखा। वहा हाथीकी सूडकी तरह लटकता हुआ केगोन प्रपात दिखाअी दिया। अिस सुन्दरताको दूसरी कोअी अुपमा देना कठिन है। हाथीकी सूड अूपरसे चौडी और नीचेसे सकरी होती है। यह दृश्य अुससे विलकुल अुलटा था। लेकिन हाथीके गण्डस्थलसे जिस ठाठसे सूड लटकती है, अुसी शानसे यह प्रपात अूपरसे नीचे गिरता है।

अितना पराक्रम करनेके बाद अनेक आकार धारण करता हुआ अिसका पानी नीचे कूदता जाता है और सारी घाटीको अपनी चहल-पहलसे निनादित करता रहता है। आसपासकी वनश्री भी अिस भव्यताको बढाती है। केगोन प्रपातका अुसके बाल-बच्चोंके साथ निरीक्षण करनेके लिअे यह स्थान जिसने पसन्द किया होगा, वह स्वभावसे जरूर बडा रसिक कवि होना चाहिये। अुसका कृतज्ञतापूर्ण तर्पण किये विना यह स्थान छोडना मुश्किल था।

अिस स्थानमें अेक ही कमी थी; वह यह कि सीढियोंसे प्रपातका निरीक्षण करते हुअे जिसमें से यह प्रपात निकलता है अुस सरोवरका दर्शन यहासे नही होता। यह कमी दूर करनेके लिअे अपने निसर्ग-प्रेमी कविने दूसरा अेक स्थान पसन्द किया। अितना ही नही, लेकिन वहा जानेके लिअे विज्ञानकी मदद लेकर अेक काव्यमय अुपाय भी ढूढ निकाला। अुसका विवरण भी यहा देने लायक है।

हमने फिरसे सुरगमें प्रवेश किया और बिजलीके झूलेमें बैठकर अूपर पहुचे। वहासे अेक पहाडीके सिरेसे दूसरी पहाडीके सिरे तक लोहेके तारोंके बने हुअे रस्से बंधे हुअे थे। अुनके आधारसे आने-जानेवाले दो कमरे अिन पर टगे हुअे थे। बिजलीकी मददसे अेक कमरा अिस पारसे अुस पार पहुचे तब तक अुस पारका कमरा अिस किनारे आ जाता है। हम अैसे अेक कमरेमें बैठकर चले। आधे रास्ते जाने पर नीचे खाअीमें देखनेसे कोअी डर न होने पर भी स्वाभाविक ही मनमें विचार आया कि रस्सा टूट जाय तो? हवाअी जहाजमें अुड़नेकी आदत होनेसे अिस विचारका कोअी महत्व नही था। नीचे अूचे पेडोका घना जमघट देखकर मनको थोडा आश्वासन भी मिला कि यदि कमरा टूट पडे तो भी अुसका और हमारा चूरा-चूरा शायद नही होगा। ये सारे पेड अपने आपको मिटाकर भी हमें जिला सकेंगे।

अुस पार पहुचने पर चुजेन्जी सरोवर, अुसमें से गिरता हुआ केगोन प्रपात और आसपासका विस्तीर्ण प्रदेश अेक साथ दृष्टिगोचर होने पर प्रकृतिका समस्त सौंदर्य अपने स्वच्छ व शुद्ध रूपमें दिखाअी देने लगा।

हृदयसे अुद्‌गार निकले 'धन्य-धन्य!' लेकिन आखें कहती थीं कि 'हम तो जिह्वारहित हैं, कुछ कह ही क्या सकती है!' शामका वक्त भी हो रहा था, अिसलिअे हमने तुरन्त ही लौटनेकी तैयारी की। आने-जानेके लिअे जिस बिजलीकी ट्रामकी बात पहले आअी है वह ट्राम अेक प्राअीवेट (खानगी) कम्पनीकी है। देर हो जानेसे आजके लिअे वह बन्द हो जायगी, अिस डरके मारे भी हमें जल्दी करनी पडी। हम ट्रामके स्टेशन पर पहुचे तब नीचेसे अूपर आअी हुअी ट्राम नीचे जानेकी तैयारीमें ही थी। हमें बहुत ठहरना नही पडा। अिस ट्रामकी अुतराअी अितनी कडी थी कि अिसके मुकाबलेमें अुटकमण्ड, दार्जिलिंग अथवा शिमलाकी पहाडी ट्रेन कुछ भी नही है। स्विटज़रलैण्डमें हम 'रॉशेर द नेय' गये थे। अुस पहाडी रेल्वेको देखकर अिस चढाअीकी कुछ कल्पना आ सकती है। अुससे भी अधिक अच्छी कल्पना बैंकवर्ड व गनेज कमीशनके दिनोंमें हमें पश्चिम हिमालयमें जो अनुभव मिला था अुससे आ सकेगी। लेकिन अुनका वर्णन करने बैठू तो यहीं रात हो जायगी और हम

वक्तसे होटल नही पहुच सकेंगे। यह रास्ता बारह सौ मीटरका है और अिसकी चढाअी अधिकसे अधिक सैंतीस अंश जितनी कठिन है। अिसमे अेक पुल है जो दो सौ मीटरका है। सारी घाटीकी मनमोहक शोभा निहार कर हम नीचे पहुचे। वहा मोटर हमारी राह देख ही रही थी।

होटल पहुचकर खाया-पिया। अब तो स्वप्न-सृष्टिके अूपर राज्य करने जितना भी मस्तिष्कमें अवकाश नही था। फिर दूसरे दिन निक्कोके मदिर और अुसके आसपासके अूचे-अूचे वृक्ष देखने ही थे। वहा काफी पैदल चलना व चढना था। अिसके लिअे भी मनकी तैयारी करनी थी। अिसलिअे सवेरे तक अैसे डटकर सोये कि मानो दुनियाका लोप ही हो गया हो।

दूसरे दिन पहली अगस्त थी। कितनी ही बातें अिस तारीखके साथ याद आअी। लोकमान्य तिलकका अवसान और राष्ट्रव्यापी सत्याग्रहका प्रारम्भ अिसी दिन हुआ था। अिसलिअे सुबहकी प्रार्थनाके बाद मैंने मजु और रेवतीको अिस दिनका माहात्म्य समझाया। मजुने कहा कि अुसका जन्मदिन भी अिसी महीनेमें है। यहाके होटलवाले भी गुरुजीके भक्त थे, अिसलिअे अुनसे भी थोड़ी बातें की। आठ बजे हम अुस पवित्र लाल पुलके पास पहुच गये। आज मोटरका अुपयोग करना सम्भव नही था। चढाअी-अुतराअी भी काफी थी। अिसलिअे मुझे कभी ओमाअी-सानके और कभी मजु अथवा रेवतीके कन्धोका सहारा लेना पडता था। और कभी-कभी तो सीढिया चढते अथवा अुतरते हुअे मैं दोनोके कन्धोका अेक साथ अुपयोग करता था। अच्छा हुआ कि अिस समय कोअी फोटोग्राफर नही था, जो अिस दृश्यके फोटो लेकर मुझे शर्मिन्दा करता!

निक्कोके मदिरोका जी भरकर वर्णन करू अैसा विचार था, लेकिन अब लगता है कि यह होना मुश्किल है। जापानके राजपुरुष, पुरोहित और भावुक लोगोने मिलकर सदियो तक अपनी भक्ति, अभिरुचि, कला-रसिकता और समूचे जीवनकी सस्कारिता जिसमें ढाली है और प्रकृतिकी भव्यतामें किसी तरहकी आंच आये बिना जिसकी वृद्धि की है, अुनका वर्णन कहा तक करू? यहाके मदिरोकी रगीन तसवीरोकी किताब तुम्हारे समक्ष रखकर प्रत्यक्ष समझाने बैठू तभी मुझे सतोष होगा।

अेक-अेक मंदिरके तरह-तरहके छप्परोंका वर्णन करूं तो अुसीमें अेक अलग पत्र पूरा हो सकता है। हमारे मंदिरोंमें जैसे सारी कला शिखरों पर और अुनके नीचेकी दीवारों पर खर्च की जाती है, वैसे ही जापानी लोग बाहरके, भीतरके और आसपासके प्रवेश-द्वारों पर ही सारी कला अुंडेल देते हैं। ये द्वार और अिन द्वारोंके छप्पर अितने अूंचे, चौड़े और मोटे होते हैं कि अुनका भार सहन करनेके लिअे मोटे-मोटे खम्भोंका आश्रय लेना पड़ता है। ये खम्भे अपने आसपास चाहे जितनी कारीगरीका समावेश कर सकते हैं। कहते हैं कि प्रवेश-द्वारकी यह कला जापानी लोग चीन देशसे लाये हैं। जो भी हो, अिन्होंने अुनमें अपना व्यक्तित्व अुंडेलकर अुसे पूरी-पूरी अपनी बना ली है। प्रवेश-द्वारके साथ द्वारपाल तो होते ही हैं। दोनों ओरकी दीवारों पर पशु-पक्षी खोदे हुअे और चित्रित किये हुअे दिखाअी पड़ते हैं। अशुभ कुछ न सुनने, न देखने और न बोलनेका व्रत लेनेवाले बन्दर मूलतः यहांके स्थापत्यमें से ही लिये हुअे हैं। पूज्य बापूजीने अिन बन्दरोंको अपना गुरु बनाया अिसलिअे भारतीय चित्रकारोंने भी अुन्हें हमारे देशमें लोकप्रिय बनाया है। अिन मंदिरोंका अितिहास सुनने बैठें तो जापानका लगभग अेक हजार वर्षका अितिहास आंखोंके सामने थोड़ा-बहुत प्रत्यक्ष हो जाता है। अेक जगह अेक कांसेका बड़ा स्तंभ खड़ा है। अुसके अूपरकी छोटी-छोटी घंटियां भक्तोंको निमंत्रित करती हैं और भूत-पिशाचोंको भगा देती हैं। अुसके पास कांसेके दो बड़े दीपक हैं। अुन्हें तीन शहरोंके रेशमके व्यापारियोंकी पंचायतोंने यहां अर्पण किया है। रेशमके व्यापारियोंकी जाति अूंची नहीं मानी जाती थी, अिसलिअे ये दीपक भीतरी आंगनमें नहीं रखे गये हैं।। अिन मंदिरोंके बीचमें अेक सुन्दर मकान है, जिसमें पुरानेसे पुराने धर्म-ग्रन्थोंका संग्रह किया हुआ है।

कअी मंदिरोंमें भीतरके दीवानखाने अितने विशाल हैं कि अुन्हें भरनेके लिअे न मालूम कितनी दूर-दूरसे साधुओंको लाना पड़ता होगा। मंदिरोंके बीच अथवा झाड़ियोंके अन्दर कुछ राजाओं और सरदारोंकी सुन्दर कब्रें भी बनी हुअी हैं। लेकिन अुन्हें जिधर-अुधर छिपाकर रखा हो, अैसा ही लगता है।

अिन्ही दिनों — यानी तीस-चालीस वर्ष पहले — यहां अेक बड़ा संग्रहालय बनाया गया है। अिसकी वजहसे भेंटमें चढाअी हुअी छोटी-बड़ी महत्त्वकी और अद्वितीय चीजें अेक जगह रखनेकी और अुनका अभ्यास करनेकी सुविधा हो गअी है।

अितनी सारी भव्यताकी संसृष्टि देखनेके बाद कहना पडता है कि अिन अूची-नीची पहाड़ियों पर अुगे हुअे पुराण-पुरुषों जैसे भव्यतर वृक्षोंके सामने मानवी भव्यता केवल वामनावतारके समान है। ये सारे वृक्ष बुजुर्गोंकी तरह आशीर्वाद देकर वात्सल्य भावसे अुसे पोस रहे थे।

गौतम बुद्धने तपस्या करके मानव-हितका चिंतन किया और अिस गहरी तपस्याके परिणामस्वरूप अुन्हें जो सत्य प्राप्त हुआ, अुसका चालीस वर्ष तक गया और बनारसके बीचके प्रदेशके लोगोंमें प्रचार करके कअी तरहसे अुन्होंने अुसे मानवके सामने स्पष्ट किया। अुनके अिस सत्यकी और संकल्प-शक्तिकी कितनी अमोघ तेजस्वी शक्ति थी कि अुनके स्वप्नमें भी न हो अितने विस्तीर्ण भू-खण्डमें, युगों तक, अनेक वंशके असंख्य लोगोंने अनेक भाषाओंमें अुसका प्रचार किया और अुसके द्वारा अनेकविध जीवनोंका अुद्धार किया! आज जब हम अेक कानसे सुनी हुअी बातें दूसरे कानसे निकाल देते हैं और किसी भी विचारका — वह बासी हो गया अिसी कारण — अनादर करते हैं, तब दूसरी ओर आजीवन कष्ट अुठाकर भारतका धर्मज्ञान चीनमें ले जानेवालोंकी, वहांसे अुसे कोरियामें दाखिल करनेवालोंकी और अुन दोनों देशोंमें विशेषरूपसे जाकर अुसे अपने देशमें ले आनेवाले जापानी बौद्धोंकी श्रद्धा कितनी अजरामर होगी कि हजारों वर्ष तक अेकके बाद अेक कितने ही युगोंने अुसके पीछे अपना जीवन-सर्वस्व खर्च कर दिया। क्या कवि और क्या कलाकार, क्या गायक और क्या चित्रकार, क्या वैराग्यशील साधु और क्या अुत्सवप्रिय गृहस्थाश्रमी, सबने अेक सादे और ठोस अुपदेशका शृंगार करनेमें, अुसे हृदयंगम करनेमें और पीढी-दर-पीढी अुसका विकास करनेमें कृतार्थता मानी है!

अिस तरह निक्कोका संस्कार-वैभव देखकर हम दोपहरको वहांसे चले, और अेक बहुत ही सुविधाजनक और सुन्दर ट्राममें बैठकर सत्तर मीलका सफर करके टोकियो पहुंचे। यहां अधिक नहीं ठहरना

था, अिसलिअे हम अपने पुराने मुकाम पर भी नहीं गये, अेक भक्त दुकानदारके यहां खाना खाकर सीधे स्टेशन पहुंच गये। हमें शाम तक नागाओकाकी शांत व सुन्दर जगह पर पहुंचकर डेढ़ दिनका आराम करना था। टोकियोमें दुकानदारकी लड़की सुमीको-सानने हमें प्रेमपूर्वक खाना खिलाया।

टोकियो पहुंचते ही हमें सबसे बड़ी खुशी तो घरसे आये हुअे पत्रोंको देखकर हुअी। तारीख २२, २३ व २४ के तुम्हारे पत्रोंका जवाब तो पहले लिख चुका हूं। अभी जो तुम्हारे तीन पत्र मिले अुनमें से अेक टाअिप किया हुआ था। टाअिपिंग बहुत अच्छा है, लेकिन मैं मानता हूं कि बीमारीकी अैसी हालतमें तुम्हें मुद्रा-लेखनकी हलकी मेहनत भी नहीं करनी चाहिये।

चि० अवनिके दो पत्र आये हैं। अेक मंजुके नाम और अेक मेरे नाम। मंजु और अवनि अेक-दूसरेमें अितने ओत-प्रोत हैं कि दोनोंके प्रति मेरे मनमें अेक साथ ही वात्सल्य-भाव जाग्रत होता है।

प० सुन्दरलालजी टोकियो पहुंच गये हैं। अब परिषद्की तैयारीकी समितिमें मेरा स्थान वे लेंगे। रामेश्वरीजी पांचवीं या छठीको आयेंगी।

अनुभव बताता है कि ओसाओी-सानके पते पर लिखे हुअे पत्र हमें शीघ्र मिलते हैं। अिसलिअे यदि अवनि दिल्लीसे वापस आ गये हों तो अुन्हें फोन पर कहना कि ओसाओी-सानके पते पर ही पत्र लिखें।

चि० बालका अेक पत्र मिला। रेवती अब प्रसन्न है। अुसने सिद्धार्थका वजन तो लिखा लेकिन वह ठीक है या कम यह किस तरह मालूम हो? तुम्हारे पत्रमें डॉ० शरदबहनका यह अभिप्राय कि साढ़े बारह पौंड वजन ठीक है पढ़कर रेवती खुश हो गअी।

चि० बसन्तको स्कूलमें चरखा चलाना पड़ता है और अुसमें अुसे खूब रुचि है, यह जानकर प्रसन्नता हुअी। अुसको अेटलसमें हमारी यात्राके स्थान अुसे बताना और कहना कि जैसे यूरोपके पश्चिममें ब्रिटेनके द्वीप हैं, वैसे अेशियाके पूर्वमें जापानके द्वीप हैं। अिन दोनों देशोंकी प्रजा चतुर और पुरुषार्थी है।

ओमाओी-सान हमारी पूरी देखभाल करते है और हर जगहकी थोड़े शब्दोंमें जरूरी जानकारी भी देते रहते है। कल हम अेक सुरंगमें से गुजर रहे थे। तुरत ही अुन्होंने आकर कहा — "यह हमारे देशकी सबसे बडी सुरग है।"

जापान देश ही अैसा है कि अेक सुरगमें से पार होते ही समुद्र दिखाओी देने लगता है। अुसके किनारे अेक-दो शहर और गांव, थोड़ी-सी बढिया खेती, कुछ बगीचे — फिरसे पहाड़ और सुरगें — अिस तरह मानो हम प्रकृतिके चित्रोंकी मजूषा (अेल्बम) के पन्ने ही पलटते रहते है।

अिस प्रकार यहाके सब दिन आनन्दसे बीत रहे है। चि० मजु और रेवती दोनो खुश है। यात्रामें अेक-दूसरेको बतानेकी, चर्चा करनेकी और विनोदकी बातें अितनी होती है कि अब हमारे बीच खुलकर बातें करनेमें किसीको कोओी सकोच नही रहा है।

जिस तरह पार्थिव-पूजाके अन्तमें मानस-पूजाकी बारी आती है और वह पार्थिव-पूजाके जितनी ही अुत्कट बन जाती है, अुसी तरह अठारह-बीस वर्ष तक साथमें सफर करनेके बाद अब तुम मेरे पत्र पढकर यात्राका मानसिक आनन्द अुत्कट रीतिसे प्राप्त कर सकोगी, अैसा मेरा विश्वास है।

तीन बजे हम टोकियोके मुख्य रेलवे स्टेशन अुअेनो (Ueno) से चले थे। अब शामको सवा पाच बजे नागाओका आ पहुचे है। यहा हमें खाना बहुत अच्छा मिला। यहा मच्छरदानीका अुपयोग करना पडा।

हमने यहा खूब आराम किया। आतिशबाजीका दिन होते हुअे भी हम अुसे देखने नही गये और न अुसका हमें कोओी अफसोस ही रहा।

१६

नागाओकाकी जलचरी

नागाओका,
३-८-'५७

निक्कोके दो दिनके मधुर लेकिन कठिन और अुत्तेजक परिश्रमके बाद डेढ़ दिनका आराम लेनेके हम पूरे-पूरे हकदार थे। अिसीलिअे टोकियोमें अधिक न रहकर हम नागाओका आ गये। यहाका होटल बड़ी अच्छी जगह पर बना हुआ है। जापानी लोग घर बनाते वक्त आसपासकी पहाड़ियोंकी शोभा, पवनकी दिशा, दूर और पासके पेड, पानीका प्रवाह और अुनके अूपरके पुल आदिका विचार करके घर कैसे बनाना, अुनका मुह किस ओर रखना, यह सब निश्चित करते हैं। फिर प्राकृतिक शोभा लानेके लिअे आगनमें जगह-जगह गोल-मटोल पत्थरोंको सजा देते हैं। कहीं अुनके अूपर तो कहीं अुनके बीचसे चलनेके लिअे पगडण्डिया भी बना देते हैं। पेडोंकी डालें भी सारी शोभामें खप सकें अिसी तरह अुगनी चाहिये। अमुक पेड़ोंको नंगा नहीं रहने देते हैं। तनों और डालियोंको घास लपेटकर अुसके अूपर तार बाध देते हैं। कितना परिश्रम केवल अिस शोभाके लिअे अुठाते है! अिस पुरुषार्थका अुनके जीवन पर भी असर होता है और जीवन अनायास ही विवेकपूर्ण बन जाता है। स्त्रियोंके रीति-रिवाजोंमें यह खास तौरसे दिखाओ देता है।

नागाओकाके जिस होटलमें हम रहते हैं वह अेक बुढ़ियाने तीस वर्ष पहले खोला था। बुड्ढी मा, जिन्हें सब ओबासान कहते हैं, अब नब्बे वर्षकी हो गअी हैं। अुनकी लडकी अब दो-तीन होटल चलाती है। जिसमें हम रहते है वह होटल तो छोटा है, लेकिन यहा हमारे खाने-पीनेकी व्यवस्था ज्यादा अच्छी तरह रखी जाती है।

डेढ दिन तक हम नहाने, खाने और सोनेके अलावा कुछ न करते तो भी काम चल जाता। लेकिन यहा भी जापानके दो महत्त्वपूर्ण अुद्योगोंके

प्रतिनिधि मिलने आये। मैंने भी वचपनसे अनेक वार वृत्त-विवेचकका — यानी अखवारके संपादकका काम किया है अिसलिअे पत्र-प्रतिनिधिके प्रति मेरे मनमें सहानुभूति रहती है। अनजाने देशमें भाषाकी दिक्कतके कारण जन-सम्पर्क साधना कठिन होता है। पत्र-प्रतिनिधियो द्वारा यह कठिनाअी वहुत-कुछ दूर हो जाती है। अिसलिअे अैसा मौका मिले तो मैं छोडता नही। ये लोग कुछ महत्त्वके सवाल पूछते हैं और जानेसे पहले फोटो लेना नही भूलते। जापानमें करीव सवके पास कैमरा होता ही है। कोअी भी आदमी, लडका अथवा लडकी विना कैमरेके शायद ही वाहर निकलते होंगे। यहां कैमरे सस्ते भी वहुत मिलते हैं। दूसरी अगस्तको पत्र-प्रतिनिधियोंके साथ हुअी वातें चाहे जितनी महत्त्वकी हों, फिर भी पत्रमें अुनका पूरा विवरण लिखनेका मन नही हो रहा है। क्योंकि अिसके वाद हम जिस जलचरी (Aquarium) को देखने गये थे, अुसका वर्णन मुझे विस्तारसे देना है।

दोपहरमें किये हुअे आरामका आलस्य हटानेके लिअे श्रीमाअी-सानने हमें समुद्रके किनारे ले जाना तय किया। वहा देखनेका क्या है, यह अुन्होंने हमें पहलेसे नही वताया था। किनारे पर पहुचनेके वाद अुन्होंने टिकटें खरीदी। मैंने सोचा कि स्टीम लांचमें वैठकर थोडी देर सैर करनी होगी। लेकिन निकला कुछ और ही और वह भी वहुत मजेदार।

यहा समुद्रके किनारे अेक खास तरहकी जलचरी (Aquarium) है। सोचा था अुससे वह कही अधिक वडी और आकर्षक निकली।

सवसे पहले अेक गहरे हौजमें विराजमान अेक वतखने हमारा स्वागत किया। स्वागत-समितिके अध्यक्षको शोभा देनेवाला अुसका रोव था। अुस हौजमें पानीके अन्दर छह वडे-वडे कछुअे थे। अपनी पीठकी ढालके अभिमानमें वे कूर्मगतिसे अिधर-अुधर घूम रहे थे। अितने वडे कछुअेकी पीठ हमारे यहा काफी अूची गुम्वद जैसी होती है। लेकिन अिन कछुओंकी पीठ कुछ सपाट मालूम हुअी। और अुतना ही अुनका रोव कम था।

अिसके आगे समुद्रके अन्दर अेक जाली अूपरसे नीचे तक लटकाकर अुसका कुछ हिस्सा तालाव जैसा वनाया हुआ है। अिसमें वहुतसी

बडी-बडी मछलियां तैर रही थीं, दौड लगा रही थीं और सिर नीचा करके पूंछसे पानी अुछाल रही थीं। अुनकी यह गति और खेल खास देखने लायक थे। व्हेल नामके मत्स्येश्वर भी विशाल समुद्रमें अिसी तरह पानीकी पिचकारियां छोडते हैं।

किनारेके पास भी पानी काफी गहरा था। अुसमें लोहेकी जालीसे बनाया हुआ अेक हौज लकडीके सहारे लटक रहा था। अिस जालीदार हौजमें छोटी-छोटी मछलियां निर्भयतासे नाच रही थीं। वे जालीसे रक्षित न होतीं तो मत्स्य-न्यायके अनुसार बडी मछलियोंने अुन्हें कभीका हडप कर लिया होता। अिस तरहके दो-तीन हौज अथवा जल-कमरोंके अन्दर रहनेवाली मछलियोंका खेल देखकर हम बाअीं ओरके अेक बडे झोपडेमें पहुंचे। मद्रासके समुद्र-तटकी और बम्बअीके मैरीन-ड्राअिवकी जलचरियोंके समान अिस जगह कांचके बडे-बडे हौजोंमें, हवा-पानी और प्रकाशकी सुविधा रखकर, तरह-तरहकी मछलियां रखी हुअी थीं। मद्रास तथा बम्बअीमें जलचरोंकी जितनी विविधता है अुतनी तो यहां नहीं होगी। लेकिन यहां हमने कितने ही नअी तरहके जलचर देखे जो हमारे यहां नहीं हैं।

पहले जैसी बात होती तो अिन सबके नाम, अिनका स्वभाव, अिनकी विशेषताअें, समुद्रकी कितनी गहराअीमें ये मिलती हैं, हाथमें पकडते समय बिजली जैसा धक्का देनेवाली कहां कहां हैं वगैरा सब बातें मैं विस्तारसे जान लेता। लेकिन अब तो अिस तरहके ज्ञानमें वृद्धि करनेकी बात सूझती नहीं। मछलियोंका रंग, आकार और अुनकी अनेक तरहकी मत्स्य-गति देखकर मेरी कलात्मा संतोष मान लेती है। और मेरी सहानुभूति अुनके जीवनमें प्रवेश करके अुनका जीवनानन्द समझने और प्राप्त करनेके लिअे अुत्सुक हो अुठती है। बौद्धिक ज्ञानानन्दसे अब अद्वैतानन्दका हार्दिक सुख भोगना ही पसन्द किया है।

अिस तरह चारों ओर घूमकर अनेक प्रकारकी मछलियां, घोंघे, समुद्री सर्प, अर्णवाश्व (Sea-horses) और भयानक 'ऑक्टोपस' देखकर हमारा मन भर गया। अिन जलचरोंको देखनेके लिअे जापानी लडके-लडकियोंके झुण्डके झुण्ड अुमड रहे थे। अुन्हें भी हमने अितने ही कुतूहलसे देखा और आगे चलकर किनारेके दक्षिणकी ओर पहुंचे। वहां बडी मछलियोंको

छोटी मछलिया खिलानेका खेल देखनेकी अिच्छा रखनेवाले लोगोके लिअे अेक भाअीने अेक दुकान खोल रखी है। हमारे मेजवानने वहासे थोडी मरी हुअी मछलिया खरीदी। अिन मछलियोको वे अेकके वाद अेक पानीमें फेंकते जाते थे और अुन्हें खानेके लिअे प्रतिस्पर्धा करनेवाली वडी मछलियोकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर रहे थे। वड़ी मछलिया छोटी मछलियोको अपने विकराल दातोमें पकडकर झटसे चट कर जाती है, यह खेल आकर्षक तो है, लेकिन हमें वह रुचिकर नही लगा।

शामके पाच वजनेवाले थे। कितने ही वच्चे, युवक व युवतिया तैरनेकी तग पोशाक पहनकर अिधर-अुधर घूम रहे थे। वहुतसे पानीमें कूद रहे थे। कुछ नाव चला रहे थे। थोड़ेसे अिस चमकते पानीमें तैर रहे थे और कुछ तो पानीमें तैरते हुअे अेक दो लकडीके पटियो पर अेक पैरसे खड़े होकर अपना तोल संभाल रहे थे। समुद्रकी लहरोके साथ डोलते हुअे पटियो पर अिस तरह सतुलन साधना (surfing) आसान नही होता, लेकिन अिसीमें अिसका आनन्द है।

ये सारे लोग तो अपने देश में, अपने गांवमें, अपने समाजमें अपनी ही भाषा वोलते हुअे जीवनका आनन्द ले रहे थे। और हम दूर देशसे आये हुअे अनजान लोग अुनके विषयमें तरह-तरहकी कल्पना करते हुअे अुन्हें निहार रहे थे।

जापानी लोगोकी शारीरिक शक्ति, प्राणशक्ति और अुनके परिश्रमी स्वभावकी ओर मेरा ध्यान गया। कद्दावर रूसी लोगोके साथ भिड़कर जो अुनको अेक वार हरा सके थे और विषम प्रसगों पर भी जो हिम्मत नही हारे थे, अैसे ये सारे लोग केवल देशनेता नही है, वल्कि स्वाभाविक जीवन जीनेवाली सामान्य प्रजा ही है — अिस विचारसे अिन लोगोके प्रति मनमें आदर अुत्पन्न हुआ।

अिन लोगोकी किंचित् छोटी आखें, रीछके जैसे मोटे व काले-काले वाल, कुछ वैठी हुअी नाक और अिस कारण अूपर अुठे हुअे गाल — यह सव मेरे निरीक्षणका विषय था। और अिन लोगोको मजु व रेवतीकी रगीन साड़िया और मेरी सफेद दाढ़ी देखकर कुतूहल होता था, अितना ही नही, मौका ढूढ़कर वे हमारे फोटो भी लेते थे।

मछलियां देखनेके लिअे हमें टिकिट खरीदनी पड़ी थी, पर लोगोंका दर्शन प्राप्त करनेके लिअे हमें कुछ नहीं देना पड़ा। लेकिन हमारे फोटो लेनेके लिअे तो अिन बेचारोंको हमारी अिजाजत लेनी ही पड़ती थी। शामके अिस अनुभवके बाद मनमें निश्चय हुआ कि कुतूहल सचमुच जीवनानन्दका अेक बड़े ही महत्त्वका और सार्वभौम पहलू है।

वापस लौटते समय हम होटलकी मालकिन ओवानानसे मिले। अिनका अेक दूसरा बड़ा होटल हमने देखा। काफी बड़ा विस्तार था। जिसमें सब तरहकी सुविधायें थीं। लेकिन अिनका सामुदायिक स्नानागार देखकर तो हम चकित ही रह गये। सचमुच ये मां-बेटी बड़ी चतुर होटल-संचालिकायें हैं।

हमने यह होटल छोड़ा तब ओवानानने हम सबको अेक-अेक नहानेका सुन्दर तौलिया भेंटमें दिया। यहांका यह रिवाज ही है। और कुछ नहीं तो अेकाध पखा ही सही, परन्तु देंगे जरूर। तौलियेके अूपर शायद होटलका नाम बुना हुआ होगा, लेकिन हमारे लिअे तो यह बुनावट सुन्दर चित्र जैसी ही है।।

जापानकी अिस यात्रामें हमें यहांके लोक-जीवनकी और राष्ट्रीय जीवनकी हर रोज नित-नअी ही झांकियां देखनेको मिली है। अिसलिअे प्रत्येक दिनका अनुभव अपना अेक अलग महत्त्व रखता है।

यहां हम अेक साथ डेढ़ दिन रहनेवाले थे, अिसलिअे अपने कपड़े धोबीको दे सके। वे अच्छी तरह धुलकर आ गये, अिसलिअे हमारी आगेकी चिंता कम हुअी। लम्बी यात्राका यात्री अिस चीजके महत्त्वको तुरन्त समझ सकता है।

यहां अेक बात और लिखने लायक है। जापानमें अितने घूमे, लेकिन किसी भी जगह चोरोंका डर नहीं दिखाअी दिया। होटलमें चीजें चाहे जहां रखें, फिर भी किसीके अुठा ले जानेका डर नहीं था।

हमारे अिस होटलमें पहुंचते ही ओमाओ-सानके द्वारा व्यवस्थापिका बहनने कहा: "आपके पास पैसे अथवा कोअी कीमती वस्तु हो तो हमारे पास रख दीजिये। हम संभालेंगे और जब आप जायेंगे तब आपको वापस दे देंगे।" यह सुनकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। सब अुन

लोगोंने बताया कि हमारे यहा भी कोओी डर तो नही है, लेकिन कुछ वर्षों पहले अेक बार किसीकी कोओी चीज हमारे यहासे खो गओी थी। हमें ताज्जुब तो जरूर हुआ, पर तबसे हमने नियम बना लिया है कि यदि कोओी विदेशी हमारे यहा आवे तो हमें अितनी सावधानी रखनी होगी। मैंने कहा. "हमारे पास जापानी सिक्के तो हैं ही नही। हमारा सारा व्यवहार ओीमाओी-सानके हाथमें है। मेरे पास जो यात्री-हुण्डिया (Traveller's Cheques) हैं, अुनका यहा कोओी अुपयोग नही कर सकता। फिर भी पोर्टफोलियो साथ लेकर फिरूं अिसकी अपेक्षा अिसे कोओी संभाले यह अच्छा ही है। अिसलिअे अिसे आपको सौंप देता हू।"

१७

जापानी सत्याग्रह

नागाओोका,
३–८–'५७

समय-समय पर जापानमें ओीमाओी-सानके साथ अथवा दूसरे लोगोंके साथ बातें करते हुअे यहांकी राजनीतिक परिस्थितिके विषयमें जो कुछ सुना है और सोचा है, अुसे यहां देना लाभदायक होगा।

आज सुबह नहा-धोकर हम नागाओोका छोड़ेंगे। आजका रात्रिवास ओीहारामें अेक झेन-पन्थी बौद्ध मंदिरमें होनेवाला है।

अमरीकाकी राजनीति तो बिलकुल नवीनतम होती है। लेकिन अुसका मानस अभी पुराना ही है।

अमरीकाने तय किया कि अपने जवानोंकी फौज जापानमें रखकर यहाके लोगोंको सदाके लिअे दबाकर रखनेमें बुद्धिमानी नही है। यह नीति अंतमें महगी भी पड़ेगी। फौज तो जापानी लोगोंकी ही रखनी चाहिये। समय आने पर जहा जरूरत होगी वहा अिन लोगोंका अुपयोग कर सकते हैं। जापान पर अपना अधिकार सैनिक हवाओी जहाजोंके द्वारा ही सुदृढ करना चाहिये और सिर्फ वही अेक विभाग अमरीकियोंके हाथमें रखना चाहिये।

अेटम बमका अुपयोग कर सकें अितने बडे हवाअी जहाज चलाने हो तो अुनके लिअे हवाअी अड्डे भी बड़े चाहिये। अितने बड़े हवाअी अड्डे बनानेके लिअे और पुराने छोटे अड्डोको बडा करनेके लिअे लोगोंकी कुछ और जमीन पर कब्जा करना होगा। फिर भले ही अिसके कारण खेतीका नाश हो या किसी लोकवस्तीको नष्ट-भ्रष्ट ही करना पडे।

अुनकी यह नअी नीति ध्यानमें आते ही जापानी प्रजाकी आत्मा अुबल अुठी। सरकारको असहाय समझकर कुछ युवक, विद्यार्थी, मजदूर और थोडे साधु अिकट्ठे हुअे और अुन्होने अपनी सरकारके खिलाफ सत्याग्रह करनेका निश्चय किया।

अमरीका भले ही भड़कानेकी कोशिश करे अथवा कानून और शाति रखनेके लिअे सरकार चाहे जितनी दमन-नीतिका अुपयोग करे या हिंसात्मक कदम अुठावे, फिर भी प्रतिहिंसा नही करेंगे, अत्याचार नही करेंगे और सारा दमन निर्भयतासे व अहिंसक वृत्तिसे सहन करेंगे अैसा अिन लोगोने निश्चय किया। और अुसके अनुसार मर्यादाका पालन भी अुन्होने किया। गत अक्तूबरमें यह सत्याग्रह शुरू हुआ था। पहले दिन कुछ लोग मारे गये और हजारसे भी अधिक सत्याग्रही युवक घायल होकर अस्पतालमें पहुचे।

पीछे रहे हुअे युवकोमें कअी साम्यवादी थे। पहले दिनके अनुभवके बाद अिन सत्याग्रहियोकी अेक समिति विचार करनेके लिअे बैठी। अिसने तय किया कि सरकार पर अहिंसाका असर नही होता। अिसलिअे यह नीति छोड़कर अब हिंसाका आश्रय लेना चाहिये।

यह बात अस्पतालमें पड़े हुअे शुद्ध सत्याग्रहियोके कानोमें पडी। अुन्होने अिस नअी नीतिका खण्डन करके सदेश भेजा कि "हिंसा तो हम भी कर सकते थे। हम लोगोने विचारपूर्वक अहिंसक प्रतिकारकी नीतिको स्वीकार किया है। अिसमें हेर-फेर नही हो सकता। अेक दिनमें ही श्रद्धा खो बैठें तो अुसका कोअी अर्थ नहीं है। पहले दिनका बलिदान व्यर्थ नही जाना चाहिये।"

अिसका अच्छा असर हुआ और लोगोने अहिंसक प्रतिकारका सत्याग्रह चालू रखा।

अेक तो सत्याग्रह और वह भी अहिंसक रीतिसे करनेवाले स्वदेशके ही बन्धु। अुनपर हथियार चलाना पुलिसको बड़ा अखरा। हुकुमका अनादर तो नहीं हो सकता और हुकुमका पालन करें तो हत्यारो जैसा वर्ताव करना होगा, अिससे बेचैन होकर अेक सिपाहीने आत्महत्या कर ली। जिसके आधार पर राज्य चलता है, अुस पुलिसका अैसा रुख देखकर सरकार भी चेती। नये प्रधानमंत्री कीशीको लगा कि अिस तरह राज्यका अधिकार अपने हाथमे टिक नहीं सकेगा। लोकमतका अैसा प्रवाह देखकर अुन्होंने प्रजाकी भावनाको मान दिया और हवाअी अड्डोके लिअे लोगोकी जमीन पर कब्जा करनेकी नीति रद कर दी।

अिस तरह सत्याग्रहकी — जापानी भूमि पर गांधी-मार्गके पहले प्रयोगकी — शानदार विजय हुअी। जिनके निमत्रणसे हम जापानमें आये थे, वे हमारे निचिरेन-पन्थी गुरुजी निचिदात्सु फूजीअी अिस सत्याग्रहमें शामिल हुअे थे। ये अेक आध्यात्मिक वीर है। तपस्या और सेवाके द्वारा ये और भी तेजस्वी बने है। ये राजनीतिसे अलिप्त रहना अुचित नही समझते है। ये किसी भी वर्तमान पक्षके साथ मिले हुअे नही है। ये स्वतंत्र रूपसे विचार करते है और श्रद्धाके आधार पर निश्चित किये हुअे विचारोका जोर-शोरसे प्रचार करते है।

पहले ये राष्ट्रवादी थे। अपने धर्म पर और अपने राष्ट्र पर अटूट श्रद्धा होनेसे ये काफी प्रमाणमें साम्राज्यवादी भी थे। हिन्दुस्तानमें आकर ये गांधीजीके आश्रममें रहे थे। गाधीजीके साथ अिन्होंने विचार-विनिमय भी किया था। फिर अिन्होने गाधीजीके सत्याग्रह-मार्गका अध्ययन व चिंतन किया। आखिरी महायुद्धके बाद अिनकी आखे खुली और गांधीजीका मार्ग अिनके गले अुतरा। बादमें ये अिस सत्याग्रहमें शामिल हुअे, अिसमें आश्चर्य ही क्या?

अिनकी शिष्य-शाखाओका काफी बडा विस्तार है। अिनके प्रमुख शिष्य अेकके बाद अेक गांधीजीके वर्धा आश्रममें रहते आये हैं। अिनके अेक शिष्य स्वामी अीमाअी-सानको मैंने श्री विनोबाके पास भेजा था। वहां अुन्हें भूमिदान व ग्रामदानका प्रत्यक्ष कार्य देखनेका अवसर मिला। भारतकी और जापानकी स्थिति अलग-अलग है। अिसे अच्छी

तरह समझकर जापानमें सर्वोदयका प्रारम्भ किस तरह करना चाहिये, अिसका वे गहराअीसे विचार कर रहे हैं। किसी अेक जिलेको चुनकर वहा आश्रमकी स्थापना करके श्रमदानकी ओर लोगोको झुकाने, स्तूप वनाकर लोगोको धर्म-जीवनके प्रति जाग्रत करने और अुनमें नव-जीवनका सचार हो अिस हेतुसे कार्यक्रमोकी योजना करनेका अुनका विचार है।

आज जापानके नेताओंमें अेकवाक्यता नही है। अेक पक्ष तो मानता है कि दुनियामें जो अनेक गुट (Blocks) हैं, अुनमें से किसी अेकके साथ साठ-गाठ किये विना छुटकारा नही है। रूस पड़ोसमें है। चीन भी पड़ोसमें है। अिन लोगोका पुराना वैर कैसे भुलाया जा सकता है? अिन लोगों पर कैसे विश्वास रखा जाय? अिसलिअे भलाअी अिसीमें है कि हम अमरीकाकी मदद लें। अमरीकाको जितने चाहिये अुतने सैनिक अड्डे दें और अमरीकाकी नीति अपनायें। यही जापानके जीनेका अेकमात्र अुपाय है। दूसरा पक्ष कहता है कि अमरीकाकी मदद जितनी मिले अुतनी लेनी चाहिये, लेकिन अमरीकाको हवाअी अड्डे नही देने चाहिये। जितना सभव हो अुतना अमरीकाका प्रभाव कम करना चाहिये। अैसा करनेसे ही जापानकी स्वतंत्रता सुरक्षित रहेगी।

अिन दो विचारोके वीच जापानका मानस झूल रहा है। अिनके सिवा भारतके असरसे कुछ प्रभावित हुआ अेक तीसरा पक्ष भी कुछ-कुछ अपना सिर अूचा कर रहा है। वह कहता है "रूस अथवा अमरीकाके गुटमें मिलनेकी कोअी जरूरत नही है। अैसा करना आत्महत्याके समान है। हमने साम्राज्यवादी नीति छोड दी है। हमें वडी सेनाकी आवश्यकता ही क्या है? देशमें शाति रहे, लोगोको पुलिसका रक्षण मिले, अिसके लिअे आवश्यकतानुसार सेना रखना ही काफी है। पड़ोसियोके प्रति हम सद्भाव रखेंगे। अेक-दूसरेकी मदद करेंगे। किसीसे भी भ्रममें आकर शत्रुता नही करेंगे। आत्म-विश्वासके साथ राष्ट्रका विकास करते रहेंगे। हम आन्तरिक शक्ति और आन्तरिक श्रद्धा वढ़ायें, यही महत्त्वका काम है।"

अिस नअी नीतिके पीछे जो श्रद्धा है, जो निर्भयता है और जो दूर-दर्शिता है, वह आध्यात्मिक तेजमें से ही प्रकट हो सकती है। अिस

नीतिके लोगोके गले अुतरनेमें कुछ समय लगेगा, लेकिन अेक वार जव यह जड़ पकड़ लेगी तव शुद्ध विचार अपने आप ही फैलेंगे। दुनियाकी परिस्थिति ही अैसी है कि यह विचार जापानके गले अपने आप ही अुतरेगा। यदि अैसा हो जाय तो भारत और जापान मिलकर दुनियाकी और खासकर अेशियाअी राष्ट्रोकी अुत्तम सेवा कर सकेंगे। और यदि चीन भी अिस नीतिको पसन्द करे, तो दुनियाकी परिस्थिति पर हम अेशियावासी काफी सात्त्विक अंकुश पा सकेंगे।

१८

सोमीअुका सागर-दर्शन

ओहारा,
३–८–'५७

नागाओकाके आरामके वाद हमारा कुतूहल हमें सुज्ञुओकाके जिले (prefecture) में घूमने ले आया। अेक टैक्सी करके हम साढ़े नौ वजे चले। यामाडाया होटलकी व्यवस्थापिका और अुस होटलकी संस्थापिका, अुसकी नव्वे वर्षकी बूढी मासे विदा लेकर हम निकले। कितनी ही सुरगें हमने पार की। अेक जगह तो अेकसे अेक सटी हुअी समानान्तर तीन सुरगें हमने देखी। दो सुरगें तो आने-जानेके लिअे अलग-अलग होगी और तीसरी सुरग शायद रेलके लिअे होगी।

हमने होक्कायडो छोड़ा तबसे हम मानो जापानके पूर्वी किनारे पर ही सफर कर रहे हैं। अिसलिअे दो सुरंगोके वीचमें प्रशान्त महासागरका दर्शन हो ही जाता है।

मैं नही मानता कि अितना वडा प्रशान्त महासागर आजके जैसा ही सदा विलकुल शान्त रहता होगा। सरोवरके जितनी लहरें भी यहा दिखाअी नही देती! अैसा मालूम होता है मानो पवन अन्यमनस्क होकर शायद कही चरने चल दिया है!

टैक्सीको काफी दौड़ाकर हम सीमीझु आये। अुद्योगके कारखानोंका यह दृश्य भीषण ही कहा जा सकता था। लेकिन स्वामी अीमाअी-साननें हमें यहां बहुत सुन्दर सागर-किनारा दिखानेका वचन दिया था। यहां शराबका कारखाना चलानेवाले अेक सज्जनकी ओरसे हमें दोपहरके खानेकी दावत थी। हम अुनके कारखानेमें गये। अिसमें शकरकंद, खजूर, मकअी वगैरा बहुतसी चीजोंसे शराब बनाअी जाती है। खजूरकी गुठलीका बटनके रूपमें ये लोग अुपयोग क्यों नहीं करते, अिसका आश्चर्य व्यक्त करके मैंने कारखानेके मालिकको सुझाया कि आप अिन गुठलियोंका तो कअी तरहसे अुपयोग कर सकते हैं। और कुछ नहीं तो अिमलीके बीजकी तरह ही खजूरकी गुठलीका चूरा करके साअिजिंगके लिअे कपड़ोंकी मिलोंमें अिसका अुपयोग हो सकता है।

गर्मियोंमें कारखाना अेक महीना बन्द रखकर सारे यंत्रोंकी सफाअी कराते हैं। आजकल अैसी ही छुट्टी होनेसे हम यह कारखाना चलता हुआ नहीं देख सके। फिर भी कारखानेमें सब जगह घूमकर शराब बनानेकी क्रिया समझ ली।

खाने बैठे तब हम अिन लोगोंके आतिथ्य-सत्कारकी गहराअी समझ सके। हमारे लिअे तो शाकाहारी भोजन था ही। लेकिन हमारा साथ देनेके लिअे कारखानेके मालिक और दूसरे कार्यकर्ताओंने भी अुस दिन शाकाहारी भोजन ही किया। भोजन हमें पूरा रुचिकर लगे अिसके लिअे मालिकने अपने रसोअियेको शाकाहारी वानगियां सीखनेके लिअे खास तौरसे टोकियो भेजा था। अुसने अुस दिन खास तौरसे समोसे बनाये थे! मैंने अुन्हें बताया कि अिन समोसोंका आकार हमने अपने यहांके तालाबोंमें होनेवाले सिंघाड़ोंसे लिया है। अुन्होंने हमें बड़े स्नेहसे विदा दी। हम अपनी टैक्सीमें बैठकर फिरसे चल पड़े।

हम जहां ठहरे थे वहां सूरतके पासके हजीराके जैसा दृश्य था। यहां समुद्रने रेत फेंक-फेंककर दस हजार वर्षकी मेहनतसे अेक टीला बनाया है। अुस पर चीड़ (Pine) के पेड़ अुगे हुअे थे। अिस किनारेकी शोभाकी यही विशेषता थी। अिन पेड़ोंके नीचे रेतीमें थोड़ा आराम करके हम समुद्रकी तरंगोंकी मुलाकातके लिअे गये। वहां चि० रेवतीकी

समुद्री आत्मा तरंगोंकी मौज लेनेके लिअे अुत्सुक हुआी। अुसने अिसके लिअे अिजाजत मागी। पानीकी गहराअीका अन्दाज लगाना मुश्किल होनेके कारण मैंने अुसे घुटने तकके पानीमें ही जानेकी अिजाजत दी। अुसीमें वह कितनी नाची-कूदी! रेशमकी साड़ी बिलकुल भीग गअी, अिस ओर अुसका ध्यान ही न गया।

समुद्रके अिस किनारे शख वगैरा कुछ नही थे। सिर्फ टेढे-मेढे और हजारो वर्षोंके घर्षणसे छोटे व चिकने बने हुअे पत्थर यहां-वहा बिखरे पड़े थे। अुनमें से अेक अर्धचन्द्राकार पत्थर अिस स्थानकी स्मृतिके रूपमें मैंने अुठा लिया।

समुद्रका पानी क्षितिज तक फैला हुआ था। हमारा मद्रासका समुद्र अपनी भव्यताके लिअे प्रख्यात है। यहां क्षितिजकी रेखा अुस्तरेकी धार जैसी पैनी नही थी। लेकिन मानो हलके कुहरेने क्षितिजकी रेखाको जान-बूझकर जरा अस्पष्ट कर दिया हो, अैसी काव्यमय दिखाअी देती थी। सारा दृश्य ही स्वप्निल था। समुद्रमें यदि थोडी भी तरंगें होती तो अिस दृश्यको मैं अुर्मिल कहता! अितना अधिक काव्य यहा लहरा रहा था। आसपासके पहाड़, रेतके विस्तारमें खड़े पेड़, अुनके बीचकी दो-तीन दुकानें और जिन पर जापानी अक्षरोमें लेख खुदे हुअे है अैसे अूचे पत्थर — सारा ही दृश्य रोमाचकारी था।

यहां लानेके लिअे अीमाअी-सानको हम धन्यवाद दे रहे थे, तभी अुन्होंने अिस स्थानके बारेमें अेक पौराणिक कथा सुनाअी।

"अिस स्थानका नाम मीहो है। प्राचीन कालमें अेक धीवर यहा मछलिया पकड़ने आया था। सुबहसे शाम तक जाल डालकर बैठा रहा, लेकिन कोअी मछली हाथ न लगी। अुसने सोचा कि खाली हाथ घर क्या जाअू। पूर्णिमाकी रात है, समुद्रके किनारे रात बिताअू तो चित्तकी खिन्नता दूर होगी। चादनीकी शोभा देखता हुआ वह रेतमें बैठ गया। अितनेमें आकाशसे अप्सराओंने झटपट कपड़े अुतारकर समुद्र-स्नानके लिअे पानीमे प्रवेश किया। मनुष्य जैसे घोडा दौड़ाता है अुसी तरह परियोने अुछलती तरगो पर अश्वारोहण किया और जी भरकर जल-विहार किया। अिसी बीच धीवरने अेक अप्सराके वस्त्र अुठाकर छिपा दिये।

"परिया कपडोंके विना आकाशमें अुड़ नही सकती। जल-विहारसे तृप्त होकर अेक-अेक अप्सराने अपनी-अपनी साड़ी सुन्दरतासे लपेटकर आकाश मार्गसे गमन किया। धीवरने जिसका वस्त्र छिपाया था वह घवडाअी। विना वस्त्रोंके आकाशमें कैसे अुड़ा जाय और पृथ्वी पर भी कैसे घूमा जाय! अकुलाकर वह वोल अुठी — 'अव मैं क्या करू? मेरे वस्त्र यहांसे कहा गये?'

"धीवरने आगे आकर कहा — 'देवी, घवराअिये नही। आपके वस्त्र मैं जरूर ला दूगा लेकिन अेक शर्त है। कहते हैं कि स्वर्गकी परियां और अप्सराअें अद्‌भुत नृत्य करना जानती हैं। वह नृत्य देखनेकी मेरी बड़ी अिच्छा है।"

"परीने कृतज्ञतासे धीवरकी ओर देखकर कहा कि हमारे वस्त्रोमें ही हमारा नृत्य शोभा देता है। धीवरने छिपाये हुअे कपडे ला दिये। परीने कलायुक्त ढगसे वे वस्त्र पहन लिये और पौ फटने तक धीवरको कअी प्रकारके स्वर्गीय नृत्य दिखाये। समुद्रमें अुषाकी लाली फैले अुससे पहले ही परीने धीवरसे विदा ली और स्वर्गका मार्ग पकडा।"

अिस स्थानके अुपयुक्त ही हमने यह पौराणिक लोकवार्ता सुनी। अितनेमें ही यहांके स्थानीय नेता श्री मोचीझुकी तीन छोटे छोटे तौलिये ले आये। ये हमारे साथ ही यहा आये थे। प्रत्येक तौलिये पर यहाका समुद्री किनारा, फूजीयामा पर्वत और आकाशमें अुडती हुअी अेक परी चित्रित थी। हम तीनोको अिस स्थानके स्मृतिचिह्नके रूपमें अुन्होंने ये तीन तौलिये भेंटमें दिये और साथमें यहाके दृश्योके रगीन फोटो भी दिये।

परीकी नजरसे सारा समुद्री किनारा नजर भरकर देखनेके वाद हम तीसरे पहर यहासे चले और शामसे पहले ओहारा पहुच गये। नौ हजार मनुष्योंकी आवादीवाला यह अेक छोटासा गाव है। यहा नारगी वहुत होती हैं। नारगीसे शरवत तैयार करनेका अेक कारखाना देखकर हम यहाके अेक-दो किसानोंके घर भी देख आये। अंदर जाकर अुनके घरकी पूरी रचना देखी। यहा गाव गावमें विजली है। हर घरमें रेडियो तो है ही। प्रत्येक किसान-कुटुम्वके पास लगभग पाच अेकड़ जमीन होगी। घर-घरमें हमने गाय भी देखी। लोग हर तरहसे सुखी दिखाअी दिये।

अुत्सवमें काम आनेवाले तरह-तरहके मुखौटे (masks) हर घरमें होते हैं। यह अेक धार्मिक रिवाज मालूम होता है।

अिन किसानोंके घर देखकर जापानके लोकजीवनके विषयमें अच्छी जानकारी मिली। प्राथमिक शिक्षा सारे जापानमें अनिवार्य है। अितना ही नही, बल्कि अुसके पीछे प्रचुर धन-व्यय करके अुसे अुत्तम-से-अुत्तम बनानेका यहाके नेताओंका विचार है। हमने देखा कि जापानके प्राथमिक स्कूलोंके मकान हमारे हाअीस्कूलके मकानोंसे हर तरहसे बढ़े-चढे हैं।

रात्रि-विश्रामके लिअे हम अेक ध्यानपन्थी झेन बौद्ध मदिरमें आ पहुंचे। दिनभरकी थकान अुतारकर हमने खाना खाया और अिस परी-पुराणको लिख कर हम निद्राधीन हुअे।

१९

अिजीनियरिंगके पुरुषार्थका प्रतीक

यूअी,
५–८–'५७

यह तो मैं कह ही चुका हू कि हमारी यात्राका क्रम काफी विचार-पूर्वक गढा हुआ है। कही बौद्ध-स्तूप बनानेकी तैयारी देखनी थी, तो कही मदिरके भक्तोंसे मिलना था और अुनके साथ आजकी जागतिक परिस्थितिके बारेमें धर्मचर्चा भी करनी थी। होक्कायडोमें सरोवरों और जगलोंसे बना हुआ 'नेशनल पार्क' देखा और नौका-विहारका आनन्द लिया। अिसीके साथ प्राचीन आयनु लोगोंके जीवन-क्रमका निरीक्षण भी किया। अुसके बादके दो दिन यहाके प्राचीन वैभव और प्राचीन कलाको आकण्ठ पान करनेमें बीते। साथ ही हम यहांकी नैसर्गिक भव्यतामें भी निमज्जन कर सके। तुरन्त ही दूसरे दिन हमने समुद्र और समुद्री प्रजाके दर्शन किये और स्नानानन्द मनाते हुअे लोगोंका कुतूहल देखा। अिसी बीच अेकाध दिन गावके लोगोंकी खेती व अुनका ग्राम-जीवन देखा, तो किसी दिन गावके छोटे-मोटे अुद्योग भी देखे। और

जिस सिलसिलेमें हमने अेक ओर कअी दिन तक लगातार जापानी होटलोंमें वास किया, तो दूसरी ओर बीच-बीचमें व्यक्तिगत घरों व मंदिरोंका आतिथ्य-सत्कार भी स्वीकार किया।

आज हम जिन सब चीजोंसे भिन्न आधुनिक जापानके वैज्ञानिक अिंजीनियरिंगके पुरुषार्थका प्रतीक साकुमा बांध देखने गये थे। अुसका वर्णन करना है। लेकिन अुससे पहले ओीहाराके मंदिरके विषयमें थोड़ा-सा कह दूं।

जिस कलायुक्त और प्रशस्त मंदिरमें हमने तीसरी तारीखकी रात बिताअी थी, अुस मंदिरका अेक पुजारी साधु अुसी मंदिरमें रहता है और ओीहारामें आनेवाले अतिथि-अभ्यागतोंका आदर-सत्कार भी करता है। जिस तरह यह मंदिर ध्यान-पूजाकी जगह होनेके साथ साथ अतिथिशाला भी है। मंदिरका और पुजारीका खर्च गांवके लोग खुद ही चलाते हैं। अतिथि खुदके खाने-रहनेका खर्च देनेके लिअे बंधे हुअे नहीं हैं। अपने आप समझकर वे जो दे दें सो सही।

चौथी तारीखको हम सुबह अुठकर तैयार हुअे अुस बीच मंदिरके आंगनमें गांवके लड़के-लड़कियां कवायद और कसरतके लिअे शिक्षकोंके साथ अेकत्र हो गये थे। छहके घंटे बजते ही पुजारीने रेडियो चालू कर दिया। रेडियोमें से सुन्दर मीठे संगीतके साथ साथ कवायदके हुक्म भी तेज आवाजमें निकल रहे थे। अुन हुक्मोंके अनुसार बच्चे अुत्साह और स्फूर्तिके साथ कवायद कर रहे थे। कवायदकी अैसी व्यवस्था यहां सभी जगह है। जिससे सारे प्रदेशमें अेक ही समय कवायद-शिक्षकके बिना भी बच्चे शारीरिक व्यायाम कर सकते हैं।

जिस गांवके मुखियाके साथ बातें करनेसे यहांके बारेमें नीचे लिखी जानकारी मिली।

गांवमें कुल तेरह सौ साठ घर हैं। अुनमें किसानोंके घर अेक हजार हैं। खेती और चायके अलावा दूसरी आमदनी नारंगीके बगीचोंसे होती है। मनुष्यकी औसत अुम्र चौंसठ वर्षकी है। अधिकसे अधिक आयु छियानवे तककी है। मुझे नहीं लगता कि हमारे देशमें जितने बढ़िया आंकड़े कहीं भी मिल सकते हैं। हमारे यहांकी औसत आयु तो पैंतीसके

आसपास होगी। प्राथमिक पाठशालामें तेरह सौ विद्यार्थी पढते हैं, यानी हर घरसे अेक बच्चा तो स्कूल जाता ही है। लेकिन मुझे अधिक खुशी तो यह जानकर हुअी कि मिडिल स्कूलमें सात सौ लड़के पढते हैं! गावके नेताओको अिस तरह आकडोमें बाते करते देखकर मैंने अुनसे पूछा कि आपके यहा पुरुष और स्त्रियोकी सख्या किस अनुपातमें है। सामान्य तौरसे यह बराबर होनी चाहिये। लेकिन यहा पैंतालीस फी सदी पुरुष और पचपन फी सदी स्त्रिया हैं। अिस सवालकी गहराअीमें जानेका समय नही था। मेरे खयालसे पुरुष काफी संख्यामें शहरोंमें रहने चले जाते होंगे।

* * *

हमारे यहा जैसे भाटगर, हीराकुड और भाखरा-नागलके बाध हैं, वैसे ही यहा छोटे पैमाने पर लेकिन जापानके लिअे बडे-से-बडा अेक साकुमा (Sakuma) बांध तेन्र्यु नदी पर बना हुआ है। अिसे देखनेके लिअे हम सुबह सवा सात बजे औहारासे चले। ट्रेनमें करीब दो घटे बिताकर हम हमामात्सु स्टेशन पहुंचे। वहां हमारे पूर्वपरिचित भाअी मोचीझुकी मिले। हमारी परिचित टैक्सीके साथ वे तैयार खडे थे। अुस टैक्सीमे बैठकर हमने पूरे दो घटे पहाड़ोके बीचकी घाटियोको पार करते करते तेन्र्यु नदीके साथ-साथ मोटरका सफर किया। भारतमें साथ की हुअी अपनी किसी अुत्तम-से-अुत्तम यात्राके मुकाबलेका यह दृश्य था। मेरी और तुम्हारी दोनोकी आखोसे यह दृश्य देखने पर भी तबीयत भरी नहीं। चारो ओर हरियाली ही हरियाली दिखाअी दे रही थी। अधिकतर चीड़के अूचे-अूचे पेड कतारबन्द खड़े थे, अिन्होंने पहाड चढ़नेकी होड लगा रखी थी। यहाकी नदी तो मानो नागिनी तिस्ताका ही अवतार थी। हिमालयकी किसी भी नदीकी सहेलीके रूपमें यह शोभा दे सकती थी। अिसके घुमावोको देखकर अिसे नागिनी या सर्पिणी चाहे जो नाम दिये जा सकते हैं। यह नदी पहाडोंके बीचसे मार्ग निकालती हुअी आगे बढ़ती है। फिर भी यह शैलजा नही बल्कि सरोजा है। सुवा अथवा मुवातो नामके अेक सरोवरमे से निकलकर यह दक्षिण-पूर्वकी ओर बहती है। रास्तेमे और पाच-सात नदियोका पानी अपनेमें समेटकर अन्तमें

यह पूर्वी प्रशान्त महासागरमें जा मिलती है। यह नदी जापानकी भाग्य-लक्ष्मी सिद्ध होनेवाली है। अिस नदी पर अेक सौ पचास मीटर अूचा, अूपर दो सौ चौरानवे मीटर चौडा और पांच खिडकियोवाला अेक विशाल बाध बाधा गया है। जापानमें जो बडे बड़े बाध बाधे गये है, अुनमें अिसका भी स्थान है। शायद यही सबसे बडा बाध हो।

अिसकी अेक-अेक खिड़कीका अूपर-नीचे होनेवाला दरवाजा बारह मीटर चौडा, चौदह मीटर अूचा और वजनमें अेक टनका है। बाधका रोका हुआ पानी जब काबूसे बाहर हो जाता है, तब ये पाच अथवा अुनमें से कुछ दरवाजे थोड़े थोड़े अूचे खीच दिये जाते है। अिस तरह नदीके प्रवाहको चाहे जब काबूमें लाया जा सकता है।

बाधसे रोके हुअे पानीका जब चारो ओर अुपयोग होगा तब आजसे बीस हजार अेकड अधिक जमीन सीची जा सकेगी और अुपजाअू बन जायगी। आजकल तो अिस बाधका अुपयोग बिजली पैदा करनेके लिअे ही होता है।

अिसकी पूरी कल्पना अिस प्रकार है तेनृयु नदी अेक जगह अेक बडे पहाडकी आधी प्रदक्षिणा करके आगे दौडती है। अिसलिअे अूपर बाध बाधकर पानीके स्तरको खूब अूचा अुठा दिया गया है। फिर, अुस पहाडमें से दो बडी बड़ी अेक सौ सैंतालीस मीटर लम्बी सुरगें खोदकर अुसके द्वारा पानीको अेकदम नीचे ले गये हैं। पानीको नीचे नदीके प्रवाहमें छोडनेसे पहले बडी बडी टर्बाअिनें रखकर अिस पानीमें चक्राकार गति पैदा की गयी है। अुस गतिसे बिजली पैदा करके अेक ओर अुत्तरमें टोकियो तक और दूसरी ओर दक्षिणमें नागोया तक पहुचा दी गअी है। अिन केन्द्रोंके द्वारा यत्र चलानेके लिअे जगह जगह यह बिजली वितरित की गअी है। साकुमा बिजली-घरमें कुल साढे तीन लाख किलोवाट बिजली तैयार होती है। यानी हर साल अेक सौ चौंतीस करोड किलोवाट बिजली वह पैदा कर सकता है। अिस पावर-हाअुस तक जाते हुअे रास्तेमें यत्रोंके द्वारा पहाड़ोमें जो विशाल और अद्भुत काम किये गये हैं, अुन्हें देखकर मनुष्यने प्रकृति पर कितना प्रभुत्व प्राप्त किया है, अिसका पूरा खयाल आता है।

मोटरसे जाते हुअे अेक जगह हमें ठीक रास्ता नही मिला अिसलिअे हम नदीके अेक ओरकी सुरग लाघकर सामने पहुचे। फिर हमें भूल सुधारनेके लिअे नदीके पाटकी ओर अुतरकर अुस पार चढ़ना पडा। अिसमें मोटर चलानेवालेकी अथवा अपनी भाषामें कहू तो तैलवाहनके सारथीकी पूरी परीक्षा हुअी। वीचमें अेक-दो जगह हमें पैदल भी चलना पड़ा। अिस तरह अिस घाटीमें कही-कही पैदल चलकर हमें जो ज्यादा समय विताना पड़ा वह वडा लाभप्रद सावित हुआ। अिससे हम घाटीकी और प्रवाहकी शोभा तो अच्छी तरह देख ही सके; वड़े-वडे यत्र मनुष्यके अिशारेसे कैसे मिट्टी खोदते है, वड़े-वडे राक्षसी हाथोसे मिट्टीके ढेरको अुठाकर मालगाड़ीके डिव्वोमें कैसे भरते है और अुसे ले जाकर कैसे विछा देते है, आदि सारी लीला भी हम वारीकीसे देख सके।

आखिरमे हम अिस सारे प्रोजेक्टके दफ्तरमें पहुचे। वहा हमने थोडा आराम किया और जिला-समिति द्वारा आयोजित सरकारी भोज स्वीकार किया। यहा हमारे साथ खाना खानेके लिअे निमन्त्रित किये हुअे अनेक अधिकारियो और पत्र-प्रतिनिधियोंके साथ वातें हुअी। 'आसाही' अखवारके प्रतिनिधि भाअी यामामुराने सवाल पूछा कि "पिछले महायुद्धके विपयमें आपका क्या अभिप्राय है?" (पिछले महायुद्धमें भारत परावीन होनेके कारण अिग्लैंडके पक्षमे था। जापानका पराभव हुआ और अिसलिअे युद्धके अन्तमें अुसे जो दण्ड देना पड़ा था अुसका अमुक भाग भारतके हिस्सेमें भी आया था। लेकिन अुस काफी वड़ी रकमको भारतने छोड़ दिया। अिस तरह भारतने जापानके साथ दोस्ती कायम की और अुसे दृढ किया) मैंने अुनसे कहा — "मेरी दृष्टिसे पिछले महायुद्धमें किसीकी भी जीत नही हुअी। दोनो ही पक्षोने भारी हार खाअी है। यदि अैसा न होता तो आज विजयी राष्ट्र अितने भयभीत क्यो नजर आते?" अिसके वाद मैंने अुन्हे वम्वअीके अपने अेक व्याख्यानमें काममें ली गअी अुपमा थोडेमें सुनाअी — "दो जवरदस्त सांप वड़े जोर-शोरसे आपसमें लड़े। दोनोने जोर-जोरसे सिर पछाडे। और अिस घातक युद्धके अन्तमें दोनो ही मर गये। फर्क केवल अितना ही था कि अेक सापसे दूसरा साप

आधा घंटा बाद मरा और अिससे वह लड़ाओमें विजयी माना गया। पर विजयका लाभ तो अुसे कुछ मिला ही नही।!"

आमन्त्रित व्यक्तियोमें से अेक प्रख्यात सोशलिस्ट लेखिका अिस वार्तालापमें अुपस्थित थी। अुन्हे यह किस्सा बड़ा अच्छा लगा।

खानेके बाद सारे प्रोजेक्टके चीफ अिलैक्ट्रिकल अिजीनियर केअीझो ओकुनो (Keizo Okuno) हमें वहाका सारा पुरुषार्थ दिखाने ले गये। ये जितने चतुर थे अुतने ही सज्जन भी थे। सारी चीजें विस्तारसे समझानेके लिअे काफी अुत्सुक थे, लेकिन अंग्रेजी भाषा पर अुनका काबू नहीके बराबर था। हा, हमारी बातें वे काफी समझ लेते थे। जापानी लोग हमारे लोगोकी तरह विदेशी भाषा पर काबू पानेके लिअे अपना जीवन बरबाद नही करते। अुन्हे किसी विदेशी सरकारकी सेवा तो करनी नही थी और न विदेशी प्रजासे शाबाशी ही प्राप्त करनी थी!

हमारा रास्ता अेक सुरगमें से होकर जाता था। अुस सुरगकी अेक शाखा टेकरीके अेक ओर ले जाती थी, जहासे सारे बाधका दूरसे पूरा दर्शन हो जाता था। फिर अिजीनियर साहब हमें अुस प्रसिद्ध बाधके अूपर ले गये और अुन्नीस सौ तिरपनसे आज तक कामकी प्रगति कैसे होती गअी, यह अुन्होने हमें समझाया। बाधके ठीक मध्यमें ले जाकर अुन्होंने हमारे फोटो लिवाये। बाधके फलस्वरूप बने हुअे गहरे तालावका पानी पहाड़को बेधकर दो सुरगो द्वारा अुस पार कैसे जाता है यह अुन्होने समझाया। फिर लौटते हुअे पावर हाअुसके यत्रोका रहस्य भी बताया। वे हमें पावर हाअुसके तलघरमें भी ले गये। यहाकी लिफ्ट पाच मजिल अूपर और पाच मजिल जमीनके पेटमें भी ले जा सकती है। अेक घंटे तक हमने यह सब ध्यानपूर्वक देखा। अुसके बाद वे हमें कारखानेके सुन्दर बगीचेमें ले गये। वहा सारी योजनाका काफी बडा नमूना (model) रखा हुआ था, वह बताया। मॉडेलकी मददसे मैंने यह सब रेवती और मजुको विस्तारसे समझा दिया। अिसी बीच हमारे अीमाअी-सान यंत्रोंके मध्य कही खो गये। अुन्हे ढूढा और भाअी ओकुनोको अनेकानेक हार्दिक धन्यवाद दिये। अुन्हे भारत आनेका निमंत्रण देकर हमने अुनसे विदा ली। भाअी ओकुनो अपने लोगोंके साथ जिस प्रेमसे

वाते करते थे और अुन लोगोकी आखोमें जो प्रेमादर दिखाअी देता था, अुससे हमें विश्वास हो गया कि यह सारी सस्था सुन्दर ढगसे चल रही है। मैंने अुनसे पूछा कि सब मिलकर कितने लोग अुनके मातहत काम करते है? पहले तो वे मेरा सवाल ही नही समझ पाये। लेकिन जब अुनसे वह सख्या मालूम हुअी तब अुन्होने विभागानुसार अितनी अधिक जानकारी दी कि अुन सबका जोड़ तो मैं भूल ही गया।

अिस तरह अेक प्रचण्ड पराक्रमको अच्छी तरह देखनेका सतोष जीमें होनेसे वापिस लौटते हुअे हम प्रकृतिकी शोभा और भी रुचिसे देख सके।

यहाके पहाड़ोमें अेक ही प्रदेशमें पेड़ोकी विविधता नही होती। जहा जो पेड़ अुगते है वहां सब जगह बस वे ही दिखाअी देते है। अेक जगह तो सारे चीड़ ही चीडके पेड़ थे। कही-कही अिन चीडके पेडोके पैर खुले दिखाअी देते हैं। चि० रेवतीको सूझा कि जैसे अेक तरहके फ्रॉक पहनकर कतारबन्द खड़ी हुअी बालाओके खुले पैर शोभा देते है, वैसे ही अिन बाल-वृक्षोके पतले तने भी शोभा दे रहे हैं।

बीच-बीचमें मनुष्योने पेड़ोको काटकर पहाडी खेती की है। यह खेती स्वयं तो सुन्दर होती ही है, लेकिन अिससे आसपासकी भव्यताको कही भी आंच नही आती।

तेन्र्यु नदी हमारी तिस्ताकी ही तरह पहाडोमें फसी हुअी है, अिस-लिअे अुसमें से नहरे निकालना और अुसके किनारे खेती करना लगभग असम्भव है। आसपासके पहाड़ोमें से चली आनेवाली छोटी-छोटी अनेक नदियोका पानी खीचना तो अिसे आता है, लेकिन देनेका नाम नही लेती! अिसीलिअे तो अिसे साकुमा बाधसे बध जाना पड़ा!!

मनुष्यका अितना जबरदस्त पुरुषार्थ देखकर और अुसके विषयमें कदरके साथ गहरा चिंतन करने पर भी जब सारे दिनके अनुभवोको जोडने बैठे, तब लगा कि जिस प्रकृतिके बीच मनुष्यने अितना पराक्रम किया है अुस प्रकृतिकी समृद्ध शोभा और भव्यताको ही मुख्य स्थान देना होगा।

सुबहसे शाम तक अधिकाश समय पहाड़ोंके बीच ही बितानेसे मेरे पैर गिर्यारोहणके लिअे छटपटाने लगे। यदि जवानीके दिन होते तो मैं

मोटरको लात मारकर कूद पडता और अेकके वाद अेक पहाड़ चढकर शिखरोको जीतनेका आनन्द प्राप्त करता। लेकिन वृद्ध मनुष्यकी अैसी अभिलापा दरिद्रके मनोरथकी भाति ही विफल हो जाती है। फर्क अितना ही है कि मैं अपने जमानेमें जिन-जिन पहाडोके शिखरो पर पहुंचा था और 'पादस्पर्शम् क्षमस्व मे' अैसी जिनकी प्रार्थना की थी, अुन सवको याद करके अुनका स्मरणानन्द जरूर ले सकता था।

'दोपहरको मैंने हमें खाना खिलानेवाले लोगोसे कहा भी कि मै तो सह्याद्रिका वालक हू। वचपनसे ही पहाडोंके वीच पला हूं। हिमालय जैसे मेरी तपोभूमि है वैसे ही क्रीडाभूमि भी है। यहां चारो ओर आपके ये सव पहाड देखकर मेरी पार्वतीय आत्मा अैसा ही आनन्द अनुभव कर रही है जैसे वह स्वदेशमें हो।

हमारे लोगोको जापानके पहाड़ोका खास अध्ययन करना चाहिये। यहा कितने ही जीवित ज्वालामुखी हैं। ये धूम्रपानके रसिककी तरह अखण्ड धुआ अुगलते ही रहते है। अिसके अलावा यहाके भूकम्प, जहा-तहा वहनेवाले गरम पानीके चश्मे और अुनका अच्छे-से-अच्छा होनेवाला अुपयोग यह सव गहरे अध्ययनका विषय है। हमारे युवकोको यहा आकर भूगर्भशास्त्र, भूकम्प-विज्ञान और खनिज-विद्या अच्छी तरह सीख लेनी चाहिये। अिन लोगोने यहाकी नदियोका पूरा अुपयोग किया है, अैसा तो नही कह सकते। लेकिन यह देश छोटा और तग है। दोनो ओर महासागर है और जगह-जगह पहाड़ है। अिसलिअे यहा नदियोका माहात्म्य कम है। सरोवरोका अुपयोग ये लोग करते ही है। अुसमें खास वात यह है कि अुनके किनारे वसकर ये जीवनका आनन्द भी प्राप्त करते है।

यहाकी प्रजा नाटे कदकी है। अिसीलिअे शायद अिन्होने सौ-दो सौ फुट अूचे वढ़नेवाले महावृक्षोको भी ठिगना वनानेकी कलाका विकास किया है। सैकड़ो घरोमें अैसे वालखिल्य वृक्ष सभालकर लगाये जाते है। अिन ठिगने वृक्षोकी अुमर पूछे तो कअी पचास वर्षके होते है और वहुतसे तो दो सौ-तीन सौ वर्ष पुराने होते हैं। लेकिन अिनकी अूचाअी दो-तीन फुटकी ही होती है। अेक छोटेसे वर्तनमें ही ये अपनी जिन्दगी विताते हैं। वृक्षोको अिस तरह छोटे करनेमें अिन लोगोको क्या आनन्द

मिलता हैं, यह तो वे ही जानें! हम तो अुनकी लगन और अुनका ज्ञान देखकर केवल आश्चर्य ही कर सकते है। अुनकी यह कला हमारे देशमें दाखिल करनेकी अिच्छा मुझे तो नही होती।

अिन पेड़ोको अैसे वामनावतारसे सन्तोष होता है या बेचैनी, यह पूछनेके लिअे किस पत्र-प्रतिनिधिको अुनके पास भेजें? हमारे पुराणोमें अगूठे जितने अूचे साठ हजार वालखिल्य ॠषियोंका वर्णन आता है। वे सब तेजस्वी सूर्योपासक थे। अिन ठिगने पेड़ोका जीवन वे शायद समझ सकें!

वापस लौटनेमें थोड़ी देर हो गअी। हमें हामामात्सु स्टेशन जाकर शामको ५-१०की ट्रेन पकड़नी थी। हमें डर था कि शायद हम अिस ट्रेनको वहां न पकड़ सकेंगे। अिसलिअे हमने हामामात्सुका रास्ता छोड़कर वहासे दो स्टेशन आगे ओवाती जाना तय किया। वहा ट्रेन ५-२० पर पहुचती थी। अिस युक्तिसे हम गाड़ी आनेसे पन्द्रह मिनट पहले ही वहा पहुच गये। यह समय हमने स्टेशनके पासकी चायकी दुकान पर बिताया। वहा हमने कुछ खाया और लोगोके रीति-रिवाजका निरीक्षण भी किया।

२०

भाअी मोचीझुकीका यूअी

शामको ७-१० पर हम यूअी पहुंचे। वहा हम गुरुजीके भक्त श्री मोचीझुकीके यहा ठहरे। मैंने सुबह स्नान नही किया था अिसलिअे यहा नहानेकी अिच्छा प्रकट की। नहानेके लिअे सड़क लाघकर भाअी मोचीझुकीके ही अेक दूसरे घरमें जाना पडा। अंधेरेमें करदीप (टॉर्च) लेकर आते-जाते मनमें विचार आया कि मैंने बिना सोचे-समझे गृहपतिको व्यर्थ ही परेशान किया। श्री मोचीझुकीके यहा जापानी रहन-सहन, जापानी चित्रकला और मूर्तिकला तथा जापानी रीति-रिवाज वगैरा अच्छी तरह देखनेको मिले। तकलीफ केवल अितनी ही थी कि खानेके लिअे अुन्होंने बेहिसाब वानगिया तैयार कर रखी थी। अैसा विचार आता था कि कही ये लोग हमें बकासुर तो नही समझ बैठे हैं!

अेक अच्छा-सा मजाक यहा लिखने लायक है। खानेके समय अिन लोगोने जान-बूझकर हसीके लिअे कद्दूके अेक टुकड़ेको मछलीके जैसा काटकर अुस पर आखें, दुम वगैरा यथारीति बनाकर हमारे सामने रखा। घरकी स्त्रियोका अिशारा पाकर ओीमाओी-साननें कहा: "काका-साहेब, आज तो आपको यह मछली खानी ही पडेगी।" मैंने टुकडा हाथमें लिया और कहा — "कबूल है, खाअूगा।" चि० रेवतीने अुस मछलीकी पूछका अेक टुकडा तोड़ा और चखकर कहा — "कद्दू है तो मीठा लेकिन ठीकसे पका नही है।" अिस कारण अिस निरामिष निर्दोष मत्स्याहारसे भी मैं बच ही गया!!

दूसरे दिन सुबह हम यूओीकी स्थानीय पाठशाला देखने गये। थोडी थोडी बारिश हो रही थी। छुट्टिया होनेसे बहुतसे विद्यार्थी बाहर गये हुअे थे। फिर भी चूकि भाओी मोचीझुकी स्थानीय नगरपालिकाके शिक्षा-विभागके अध्यक्ष थे, अिसलिअे अुन्होने काफी संख्यामें लड़के-लड़कियोको अिकट्ठा कर लिया था। शिक्षक तो सब थे ही। मुझे वहा छोटासा भाषण भी देना था। ओीमाओी-साननें कार्यक्रम अिस प्रकार रखा था कि प्रारम्भमें वे हमारे विषयमें, गाधीजीके विषयमें और दूसरी कुछ आवश्यक बातोंके विषयमें जापानीमें विस्तारसे बोलें। फिर मैं हिन्दीमें बोलू और वे अुसका अक्षरश टीका-सहित अनुवाद करें और आखिरमें स्वय अुपसहार करे।

मुझे आज सर्वोदयके विषयमें बोलना था, क्योकि ये विद्यार्थी प्राथमिक पाठशालाके नही, मिडिल स्कूलके थे। मैंने देखा कि लडके सब आगे बैठे थे और लडकिया पीछे। 'पिछडी हुअी जातिको आगे आने देना' — सर्वोदयके अिस बुनियादी सिद्धान्तको समझानेके लिअे मुझे अेक अुदाहरण सूझा। मैंने कहा — "भारतमें भी पुरुष आगे बैठें और स्त्रिया पीछे बैठें अैसा ही पहले रिवाज था। लेकिन अब हम अिसे बदलते जा रहे हैं। सभाकी व्यवस्थाको बिना बिगाडे यदि आप पीछे जा सकें और लडकियोंको आगे बैठने दें तो मुझे खुशी होगी। शर्त अितनी ही है कि यह फेरफार तीन मिनटके भीतर हो जाना चाहिये।" मेरी अिस आखिरी शर्तसे लडकोंको जोश चढा। वे फौरन अुठे और देखते ही देखते ठीक

डेढ़ मिनटमें अुन्होने मेरी सुझाअी हुअी व्यवस्था कर दिखाअी। जरा भी गडवड नही हुअी। मैंने अुनको शावाशी दी और फिर सर्वोदय व अन्त्योदयकी वात समझाअी। अुसके वाद मैंने कहा कि "अेशिया खण्डमें नये युगका प्रारंभ हुआ है। अव हम अेक-दूसरेको यूरोपीय लोगोंके द्वारा नही वल्कि सीधे ही पहचानना चाहते है। जिस तरह आपके देशका नाम जापान नही वल्कि निप्पोन अथवा निहोन है, अुसी तरह हमारे देशका नाम अिंडिया नही वल्कि भारत है। हम अिन्ही नामोंका अुपयोग क्यो न करे? हम अेशियावासियोको — खासकर निप्पोन और भारतके लोगोंको दुनियासे युद्धको विलकुल खतम कर देना है।" मेरी वातें शिक्षकोंने वड़े अुत्साहसे सुनी। वच्चोको अुन्होंने नक्शेकी सहायतासे वे सव समझा दी।

वापस घर आकर खाना खाकर हम कोफू जानेके लिअे निकले। वीचमे कुछ घंटे निकालकर हमें मिनोवू भी जाना था। घरसे चलते समय हमारे मेजवानोंने हमें सुन्दर रूमाल भेंटमें दिये और अपने साथ फोटो भी खिचवाये।

जापानका लोक-जीवन वारीकीसे देखने पर विश्वास हो जाता है कि यहांकी भाषा, पहनावा और रिवाज चाहे जितने भिन्न हों, लेकिन मनुष्यका हृदय, अुसकी अभिलाषाअें और अुसके आनन्दके विषय सव जगह अेकसे ही होते हैं। भेदके तत्त्व काफी छिछले और अस्थायी होते हैं; जव कि अेकताके तत्त्व जीवन-व्यापी, गहरे और स्थायी होते हैं।

कल कोफूमें मेरे हाथसे अेक स्तूपकी आधार-शिला रखी जानेवाली है। कल ही गुरुजीका जन्म-दिन भी है। अिसलिअे हमारी जापान-यात्रामें यह दिन हमारे लिअे और यहांके लोगोंके लिअे वड़े महत्त्वका है।

२१

जापानी प्रजाकी विशेषता

हमारा देश जापानसे कओी गुना बड़ा है। हमारी जनसंख्या अितनी विशाल है कि कअी तो अुसके आकड़े सुनकर ही आतंकित हो जायें। हमारे यहा जिस परिमाणमें बिजली पैदा हो सकती है और जितनी आगे चलकर अुपयोगमें आयेगी, अुसके मुकाबलेमें छोटेसे जापानकी प्रवृत्तियां और अुसके आकड़े अधिक नही कहे जा सकते। लेकिन अिस छोटेसे देशने स्वतंत्र होनेके कारण पिछले सौ वर्षोंमें जो अुन्नति की है, वहां तक पहुंचनेमें हमें कुछ समय लगेगा।

हमें स्वतंत्र हुअे दस वर्ष हो चले हैं। हमारे देशकी प्राकृतिक समृद्धि कम नही है। अकेले लोहेका ही हिसाब लगावें तो आजकी यान्त्रिक संस्कृतिके आधाररूप अिस खनिज पदार्थकी कुल मात्रा और अुसकी गुण-वत्ता (quality) दुनियाके किसी भी देशसे कम नही है। हमारे यहाका लोहा अुत्तम प्रकारका है और काफी परिमाणमें भी है। औद्योगिक प्रगतिके लिअे जापानको जितने वर्ष लगे अुतने हमें नही लगेंगे। यदि हम निश्चय कर लें तो कुछ ही समयमें हम अद्‌भुत प्रगति करके दुनियाकी अगली पंक्तिमें आ सकते हैं। हमारी जनता समझदार और सस्कारी है। हमारा सामाजिक सगठन, जिसके असख्य दोषोंसे हम चाहे जितने परेशान होते हो, दुनियाके दूसरे देशोंसे किसी भी तरह घटिया अथवा निराशाजनक नही है।

हमें तो केवल अपने लोगोंकी मानसिक तैयारी करनेमें ही देर लगेगी। "जैसा मानस वैसा मनुष्य" अिसे हम भुला नहीं सकते। दूसरी अेक महत्वकी बात यह है कि जापानी लोग जितना काम कर सकते हैं अुतना हमारे लोग नही कर सकते। ये लोग जब काममें जुट जाते हैं तब राक्षसकी तरह काम करते हैं। अपने शरीर पर ये दया नही दिखाते। अुनके मुकाबलेमें हमारे यहांके लोग आरामतलब हैं। सम्भव हो

तो हम मेहनतसे वचना पसन्द करते है। अव हमें यह स्वभाव वदलना चाहिये। सवसे अधिक पिछडे हुअे माने जानेवाले अफ्रीकावासी भी जवरदस्त काम करनेवाले हैं। अिस तरहकी परिश्रमी दुनिया हमारे आसपास फैली हुअी है, अिसीलिअे हमारा क्षीणवीर्य रहना या होना चल नही सकता। जापानी लोगोकी कार्यशक्ति और सहन-शक्ति ये दोनो ही अिनकी वडीसे वड़ी पूजी है। चाहे जैसे सकट आयें, कष्ट अुठाने पडें और दु खमें दिन विताने पड़े, फिर भी ये लोग हिम्मत नही हारते। अितना ही नही, किन्तु वे मुख पर दु.खकी रेखायें भी प्रगट नही होने देते। और अिनका यह स्वभाव ठेठ वचपनसे ही वन जाता है। जापानके वच्चे अपनी माकी पीठ पर वंधे-वधे घूमते है तभीसे धीरजका पाठ सीखते रहते है। मां काम करती जाती है और पीठ परका वच्चा अपना भारी सिर हिलाता हुआ सारी दुनियाका निरीक्षण करता रहता है। वह मानता है कि जिन्दगी तो अैसी ही होती है।

अिस प्रजाकी अेक दूसरी महत्त्वकी विशेषता यह है कि वे वड़े हंसमुख हैं। वे हमेशा खुश रहते है और आसपासके लोगोको खुश रखते हैं। अुनके दात तो मानो हसनेके लिअे ही वने है। लेकिन अेक दोष अिन लोगोमें आ गया है। ये लोग अपने दांतोंको अच्छी तरह नही रख सकते। अिसलिअे दन्त-चिकित्सकोका काम यहां दिन-प्रतिदिन वढता जा रहा है। दांत घिस जायें अथवा सड़ जायें तो वे तुरंत अुन पर सोनेका पतरा चढ़वा लेते हैं। अपने सुवर्ण दातोसे यहाके स्त्री-पुरुष जव हसते हैं तव अुनका चेहरा प्रसन्न होने पर भी हमें प्रसन्न नही कर सकता। अितने अधिक कमजोर दातोसे अिस प्रजाका काम कैसे चलेगा, अैसी चिंता मनमें पैदा होने लगती है। यूरोपकी तथा जापानकी प्रजाके मुकावलेमे हमारे दांत काफी अच्छे है। हमें अुनको संभालना भी आता है। अपनी यह विशेषता हमें वडी हिफाजतसे टिकानी चाहिये। किसी भी प्रजाके लक्षणोकी पहिचान वहाके गावोकी प्रजासे ही हो सकती है। अिस छोटेसे देशमें जमीन थोड़ी है। खेतीके लायक जमीन तो और भी कम है। लेकिन जनसंख्या वढती ही जा रही है। अिसलिये यह देश कृषिप्रधान अथवा गावोका देश नही कहा जा सकता। शहर वढ़ते जा रहे है।

साथ ही साथ शिक्षा और विज्ञान भी बढता जा रहा है। यहा खेतीकी मानी जानेवाली पैदावार सचमुच केवल खेतीकी ही नही होती। अिस अुद्योग-प्रधान प्रजाकी महत्त्वाकाक्षा पिछले महायुद्धमें कुचल भले ही गअी हो, लेकिन अब फिरसे वह जाग्रत हुअी है। बढते हुअे अुद्योग-धन्धोका अपना माल बेचनेके लिअे अिन्हे नये-नये बाजार तैयार करने होगे। मालको सस्ता कैसे बनाना और अुसे आकर्षक रीतिसे कैसे बेचना अिस कलामें ये लोग यूरोप व अमरीकासे कही आगे बढे हुअे हैं।

अैसी प्रजासे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। हमारे युवक यहा आकर अिनके बीच रहे और अिनके जितना काम करें तभी वे योग्य बन सकेंगे। कुछ चतुर व मेहनती जापानी युवकोको अपनी सस्थाओंमें हमें रखना चाहिये। अिस तरह स्वभाव व आदतोका विवेकपूर्वक आदान-प्रदान हो सकता है। अिसमें काफी विवेकसे काम लेना होगा। अिसीमें हमारे चरित्रकी कसौटी है और तभी हम जापानके जितने आगे बढ सकेंगे।

अुद्योगिता और सर्वसहिष्णु प्रसन्नताके साथ अिनकी तीसरी अेक विशेषता अनुशासन अथवा तन्त्रनिष्ठा है। किसीको काम सौंपा तो वह ठीकसे करेगा ही अिसका विश्वास रखा जा सकता है। अिसलिअे सामान्यतया अिन लोगोको किसी भी काममें अपना दिमाग लगानेकी आदत कम होती है, लेकिन यह कमी ढक जाती है। सूचना देनेमें यदि आपने भूल की हो तो आपका काम आप जानें। दी हुअी सूचनाके मुताबिक ये काम बराबर कर देंगे। अिसलिअे अिन्हे विश्वासपूर्वक काम सौंपा जा सकता है।

हर जगह मधुर स्वागत स्वीकार करनेके बाद विदाअी लेनेके लिअे यात्रीके पैर तुरत आगे नही बढते। लेकिन अिसका क्या अिलाज? यूअी छोडते हुअे हमें भी दुःख हुआ। गृहपतिकी मा और पत्नी दोनो ही लोक-सस्कृतिकी अुत्तम प्रतिनिधि थी। घरका बहुतसा काम ये अपने आप ही करती थी। दक्षताके साथ वे सारी जगह स्वच्छ और व्यवस्थित रखती थी। बच्चोका ठीक पालन करती और पतिको प्रसन्न रखती थी। ये अिस बातका पूरा ध्यान रखती हैं कि मेहमानोको जरा भी

अैसा न लगे कि अुनकी वजहसे घरके लोगोंको किसी भी तरहकी विशेष मेहनत करनी पडती है। अिसीका नाम संस्कृति है। सब जगह सुव्य-वस्था रखना, प्रसन्नता फैलाना और अुसके लिअे जो कष्ट अुठाने पड़ें अुनमे जीवनका आनन्द मानना यह कोअी छोटी-मोटी साधना नही है।

किसी भी देशकी सस्कृति अुसके शानदार शहरोमें नही मिलती। वह छोटे-वडे गावोमें और कस्बोमें संतोपसे चलनेवाले गृहस्थ-आश्रममें ही दिखाअी देती है। अिसलिअे अैसी मेहमानदारीसे दूर होते समय थोड़ा-वहुत दु ख होता ही है।

सुवहसे आकाश अनमना-सा दिखाअी दे रहा था। जिसके लिअे मै छटपटा रहा था वह फूजियामाका शिखर आखिर चौथी तारीखकी शामको दिखाअी तो दिया, लेकिन अुसके सिर पर वर्फ़का मुकुट नही था। तीन साल पहले भी हमें फूजियामाके दर्शन नही हुअे थे। अिस वार भी हवा अच्छी न होनेसे अिस पर्वतोत्तमके दर्शन दुर्लभ हो रहे थे और जव हुअे भी तो विना मुकुटके! वड़ी भारी निराशा हुअी। मेरे साथ सहानुभूति दिखानेके लिअे ही यदि आकाश आसू गिरा रहा हो तो अिसमे कोअी आश्चर्य नही!

अिस प्रदेशमें वर्षाकी कोअी अलग ॠतु नही होती। जव जीमें आये वर्षा होने लगती है। आजकी वारिश आसपासकी खेतीके लिअे लाभदायक है, अिसलिअे किसान खुश है।

२२

तपोभूमिका वैभव

कोफू,
७–८–'५७

यूओीसे कोफू जाते हुअे रास्तेमें मिनोवू आता है। यदि हम यह स्थान न देखते तो बड़े ही घाटेमें रहते। दो ट्रेनोंके बीच अुपलब्ध डेढ़ दो घंटेमें हमने अेक अुत्तमसे अुत्तम सत्कार-यात्रा पूरी की। अितने समयमें ही सब देखना था, अिसलिअे पहलेसे ही सब व्यवस्था विचार-पूर्वक कर रखी थी; वरना यह संभव नही था।

निचिरेन-पंथके मूल संस्थापक महात्मा निचिरेनको अब सब बोधि-सत्त्व कहते हैं। अुनकी साधना और अुनका प्रचार दोनो ही बडे अुग्र थे। अनेक तरहकी जोखिम अुठाकर, राजकर्ताओंको नाराज करके और विरोधियोंको अपने सख्त प्रचारसे व्याकुल करके अुन्होंने धर्मशुद्धिका काम किया और जापानकी राष्ट्रीय संस्कृतिको बौद्ध धर्मके शुद्धसे शुद्ध संस्कार दिये। साढे सात सौ वर्ष पहले अुन्होंने जो किया अुसका असर जापानमें आज भी सब जगह दिखाओी देता है। अिन निचिरेन बोधिसत्त्वको संकटके समय मिनोवूके जंगलोंमें अज्ञातवासमें रहना पड़ा था। अिस स्थानसे अुन्होंने नौ वर्ष तक अपने शिष्योंके द्वारा धर्म-प्रचारका कार्य चलाया। अिसलिअे अिसमें जरा भी आश्चर्यकी बात नहीं है कि निचिरेन-पंथके लोग अिस स्थानको अपना मदीना समझें। आज यह स्थान धार्मिक कला व धार्मिक वैभवका अेक बहुत बडा केन्द्र बन गया है। निचिरेन-पंथके बड़े-बड़े मुखिया यहां रहते हैं और सब केन्द्रोंकी व्यवस्था संभालते हैं।

गुरुजी निचिदात्सु फूजीओी भी अिसी पंथके अेक धार्मिक मुखिया हैं। लेकिन अुनका वैभवमें विश्वास नहीं है। धर्मके चैतन्यको जाग्रत व प्रज्ज्वलित रखना, लोगोंमें जागृति पैदा करना, सादगीसे रहना, हमेशा

घूमते रहना और वैभव व आरामसे दूर रहना यही अुनका स्वभाव दिखाअी देता है। जव अुन्होने धर्मकार्यके लिअे अपना जीवन अर्पण करनेका सकल्प किया, तव अुस सकल्पको दृढ करनेके लिअे अुन्होने अपने दोनो हाथोके वाहुओको जलती हुअी मोमवत्तीसे दागा था। आज भी अिन वाहुओकी चमड़ी पर अुसके निशान दिखाअी देते है। अुनके शिष्य भी जव धर्मकार्यके लिअे अपना जीवन अर्पण करते है तव अिसी तरह अग्निदीक्षा लेना पसद करते हैं। दीक्षा-पद्धतिका यह आवश्यक अग नही है। सव भिक्षु शिष्य अैसा करते ही हो, सो भी नही। लेकिन अीमाअी-सान, मारुयामा, सातोसान वगैराकी वाहुओ पर तो अैसे निशान है। धीरे-धीरे गुरुजी और अुनके शिष्योका कार्य निचिरेन-पथके अदर भी अलग-सा पड़ रहा है।

धर्म-जागृति और विश्वशातिके लिअे गुरुजीको अिस तरह अुत्कट कार्य करते देखकर निचिरेन-पंथके मुखियाओको भान हुआ कि अुन्हे भी कुछ करना चाहिये। समय-समय पर अपीलके पत्रक वाहर निकालना और अपना अभिप्राय जाहिर करते रहना वगैरा कुछ काम अुन्होने हाथमें लिये है। अुनके पास काफी साधन-सम्पत्ति व सव तरहकी सुविधायें है, अिसलिअे वे वहुत काम कर सकते है। लेकिन अुसमें प्राणोका सचार करना आसान नही है।

मिनोवू मंदिरके साधुओको गुरुजीने खुद खवर दी थी, अिसलिअे यहा हमारा आतिथ्य-सत्कार अच्छी तरहसे हुआ। हमारी पूरी व्यवस्था अेक अल्प वयकी साध्वी स्त्रीने की थी। वौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियां दोनो ही पूरा सिर घुटा लेते है और अेक ही तरहकी पोशाक पहनते है। अिसलिअे अमुक व्यक्ति पुरुष है या स्त्री यह पहचाननेमे कअी वार कठिनाअी होती है और कभी-कभी तो भूल भी हो जाती है।

स्टेशनसे हमने मोटर ली और मिनोवू शहर पार करके पहाड़ी प्रदेशके जंगलमें प्रवेश किया। वहा पहाडीके अूपर मदिर, मठ, वगीचे और दूसरी कअी छोटी-वड़ी अिमारतें मिलकर अेक वडा शाही किला ही दिखाअी देता है। यहा हमारे लिअे भोजनकी पूरी तैयारी की गअी थी। लेकिन हमारे पास अितना समय नही था, अिस कारण धन्यवादपूर्वक

अिनकार करना पड़ा। मोटरसे जितना चढ सकते थे अुतना चढनेके बाद बाकी सब जगह हमें पैदल ही घूमना था।

अिस मठमें बडे-बडे दीवानखानोंसे भी बडे कमरे हैं। दीवालों और पर्दोंकी कारीगरी अप्रतिम है। लकड़ीको खोदकर दीवारके अूपरका भाग सजाया जाता है। अितना ज्यादा घूमे और अितना ज्यादा देखा कि आखें भी थक गअी। मुख्य मंदिरोका वैभव तो बादशाही दरबारोंको भी फीका करनेवाला था। मूर्तिया, चमकते हुअे झूमर और जरीके कपड़ोकी कलगियां यानी मनुष्यकी श्रद्धाभक्ति व दानवृत्ति जो भी कुछ ले आवे और चढावे वह सब यहा सुन्दर तरीकेसे सजाया हुआ था। हमारे यहां तो मंदिरोंमें बहुतसी चीजे चाहे जैसी पड़ी रहती हैं।

अिस वैभवके बीच छोटे-बड़े साधु बडे टीमटामके साथ प्रसन्नता व गम्भीरतासे रहते थे और विचरते थे। अेक जगह जरा अूचाअी पर अेक मंदिर था। निचिरेन बोधिसत्त्वकी अस्थिया वहा रखी हुअी थी। ये लोग अस्थिको 'शरीर' अथवा 'शारीर' कहते हैं। यहाके आसपासके पहाड भी सुगठ दिखाअी देते हैं। सब जगह घूमनेके लिअे रास्ते बनाये हुअे हैं। केवल काव्यमय जीवन बिताना हो और 'धार्मिक' वातावरणका लाभ अुठाना हो, तो अिससे अधिक सुन्दर स्थान मिलना कठिन है। धार्मिक-कला और कला-धर्म अैसी जगह ही पनप सकते हैं।

यह सब देखकर और पथके अनुयायियोकी श्रद्धाकी कदर करके हम कोफू देखनेके लिअे आगे चले।

२३

कोफूका स्तूपोत्सव

कोफूका स्टेशन काफी बडा है। जैसे ही हम अेक प्लेटफार्म पर अुतरे वैसे ही दूसरे प्लेटफार्म पर गुरुजीकी गाड़ी आयी। वे स्वयं तीसरे दर्जेमें बैठे थे। जो लोग हमारे स्वागतमें चमडेके पखे बजाते हुअे 'नम् म्यो हो रेंगे क्यो' का घोष कर रहे थे, वे सब गुरुजीके स्वागतके लिअे दूसरे प्लेटफार्मकी ओर दौड़े।

अिसके बाद हमारा अेक बडा जुलूस निकाला गया। लोगोंने शहरमें छोटे-बडे सभी मार्गोंको सजाया था। जैसे हमारे यहां जहा-तहा आम या अशोक वृक्षकी डालिया सजाते है, वैसे यहा जगलसे बासकी कोमल-कोमल डालिया लाकर रास्तो पर सजा दी गअी थी। अिन डालियोकी सजावट बहुत सुन्दर थी।

हम कोफूके सबसे बडे होटल 'तोकीवा' में ठहराये गये थे। अिस होटलमें हर कमरेका अलग-अलग नाम है और हर कमरेमें अलग-अलग टेलीफोन भी है। हमारे कमरेका नाम 'मिकुअी' था। ओमाअी-साननें बताया कि जापानके बादशाह जब अेक बार कोफू आये थे तब वे अिसी होटलमें और अिसी 'मिकुअी' में ठहरे थे। यह मालूम होनेके बाद हमें अपना महत्व अधिक अच्छी तरह समझमें आया! गुरुजी अिस होटलमें थोड़ासा ठहर कर दूसरी जगह रहने चले गये। अुस रात्रिको अिसी होटलमें गुरुजी और हमारे स्वागतके लिअे अेक बड़े भोजका आयोजन किया गया था। लेकिन लोगोंने अुसे रद्द करके दूसरे दिन अंगूरके अेक बड़े बगीचेमें अेक क्लबकी अिमारतमें और भी बडे पैमाने पर अुसका आयोजन किया। अुस दिन रातको होटलमें केवल शहरके ही बीस-तीस चुने हुअे लोगोंके साथ खानेकी व्यवस्था रखी गयी। कोफू शहर और यामानाची जिला (Prefecture) की ओरसे हमारा यह संयुक्त स्वागत था।

सोनेसे पहले मैंने श्रीमती रामेश्वरीजीके लिअे टोकियो ट्रंक-काल किया, लेकिन वे अभी वहा नही पहुंची थीं। कलकत्तेसे तो वे समयसे निकली थीं, लेकिन हवा अच्छी न होनेके कारण अुनका विमान रास्तेमें कही अटक गया होगा। अब वे दूसरे दिन दो बजे टोकियो पहुंचनेवाली थी।

यह तो लिखना भूल ही गया कि कोफू पहुंचते ही तुम्हारे चार पत्र मिले — अेक २६का, दो २९के और अेक ३०का। अितने पत्र पढने पर मानो थोड़े समयके लिअे अुडकर स्वदेश पहुंच गये हों अैसा ही लगता था।

ट्रंक-काल करनेके बावजूद जब चीनकी यात्राका निश्चय न हो सका, तो अीमाअी-साननें सुझाया कि आप जापानको ही अधिक समय दीजिये; और ज्यादा भागदौड न करके निश्चिततासे अेक जगह बैठकर सब लोगोंसे मिलिये और जो भी कुछ अध्ययन-चिंतन करना हो वह करिये।

यहा जो लोग कोबेसे आये थे अुनका आग्रह देखकर हमने तय किया कि नागासाकीके दो दिनोंमें से अेक दिन कोबेको दें। लेकिन फिरसे सोचने पर यह तय हुआ कि नागासाकीका अेक दिन कम करनेकी बजाय कोबेसे टोकियो हवाअी जहाजमें जाकर समय बचा लिया जाय।

दूसरे दिन छह अगस्तको गुरुजीका जन्म-दिवस था। अिस अवसरका लाभ अुठाकर कोफूके भक्तोंने अुसी दिन अेक अूची पहाडी पर विश्व-शांतिके लिअे आयोजित स्तूपकी आधार-शिला मेरे हाथसे रखनेका आयोजन किया था। पहाडी पर पहुचनेके लिअे कअी रास्ते थे। हर रास्तेसे लोगोंके झुण्डके झुण्ड अूपर जाते दिखाअी दे रहे थे। मोटर अिस पहाडी पर नही चढ सकती थी और मेरे लिअे भी अिस पर पैदल चढना मुश्किल था। अिसलिअे वे लोग मुझे अूपर ले जानेके लिअे बांसकी बनाअी हुअी अेक डोली ले आये। कितने ही शिष्यो और भक्तोंने बारी-बारीसे डोली अुठाअी। अिस तरह भारतसे आये हुअे काका-साहेब पहाड़के शिखर पर पहुचे! अिसमें अभिमानके शिखर पर पहुचनेके लिअे तो जरा भी गुंजाअिश नही है। अुलटे, मैं तो अपंगताकी लाचारीकी शर्मसे पानी पानी हो गया!

पहाड़ीका प्रसंग पवित्र और गम्भीर था। स्थान पूजाके लिअे सजाया हुआ था। आये हुअे मेहमानोके लिअे शामियाने लगे हुअे थे। पहाडीका शिखर होनेसे यह जगह सकरी और अूची-नीची थी। आये हुअे मेहमानोमे अेक ब्रह्मी-जर्मन मिश्र वशके अूचे कदवाले बौद्ध साधु भी थे। अुनकी अूचाअी और भड़कदार रंगके चीवरमे वे सबसे अलग दिखाअी दे रहे थे। भक्तोमें स्त्रियोकी संख्या पुरुषोसे कम नही थी। बच्चोके अुत्साहका तो कहना ही क्या?

यहा गुरुजी और दूसरे कअी लोगोके भाषण हुअे। हम भाषा नही समझते थे, फिर भी गुरुजीका वक्तृत्व जोरदार और प्रभावशाली था अितना जरूर देख सके। आधार-शिला रखनेसे पहले मेरा मुख्य भाषण हुआ, जिसका जापानी अनुवाद लोगोने बडे हर्षसे सुना। मैंने कहा "भारतमें छोटे-बड़े कअी स्तूप है, लेकिन आज वे लगभग खंडहर हो गये है। स्तूपोके प्रति जीवित श्रद्धा मैंने ब्रह्मदेशमें और यहां निप्पोनमें देखी। गुरुजीकी और जापानके असंख्य भक्तोकी अैसी अटूट श्रद्धा देखकर मैं अिन स्तूपोका महत्त्व समझ सका हू।

"मैं यह भी देख सका हूं कि भारतमें या ब्रह्मदेशमें जैसे भगवान बुद्धकी अस्थि (शरीर धातु) स्तूपोमें होती है, वैसे यहाके स्तूपोमें न होनेसे अितनी कमी मानी जाती थी। लेकिन तीन वर्ष पहले कुमामोतोमें जिस स्तूपकी स्थापना हुअी अुसमें रखनेके लिअे भारत-सरकारकी ओरसे भगवान बुद्धके अवशेष प्राप्त होनेसे यह कमी दूर हो गअी है। मानो अब यह सारा देश सनाथ हो गया। अब तो भारतके लोग भी यहा यात्राके लिअे आने लगेंगे। जिस भूमिमें शाक्यमुनि भगवान बुद्धके अवशेष है वह हमारे लिअे पुण्य-भूमि है। अब हम अिस भूमिको स्वदेश-जैसी ही मानेंगे।

"असंख्य लोगोकी भक्ति केन्द्रित करनेकी शक्ति अिन स्तूपोमें होती है। ये स्तूप लोगोकी देशभक्ति और धर्मनिष्ठा दोनोको अेकत्र करनेका काम करते हैं। धार्मिक श्रद्धासे यदि अैसे स्तूपोकी रक्षा करे, तो देशकी रक्षा अपने आप हो सकती है।

"जैसे हम पुण्य-पुरुषोंके फूल अैसी जगह आदरपूर्वक संग्रह करके रखते है, वैसे ही भगवान बुद्धकी पवित्र वाणीका सग्रह भी अैसी जगह हो सकता है। धर्मग्रथ हमारी आध्यात्मिक पूजी है। अुनकी रक्षा भी अैसी ही जगह होनी चाहिये।

"यह स्थान निप्पोन देशके लगभग मध्यमें है। यहासे धर्मके संस्कार दीर्घकाल तक चारो ओर फैलें और विश्वशाति तथा विश्व-बन्धुत्वके गुरुजीके अुपदेश सफल हो। आजके जमानेमें भगवान बुद्धका विश्वकार्य महात्मा गाधीने भारतमें चलाया। अुनके द्वारा भारतमें धर्म-श्रद्धा जाग्रत हुअी और अुसने अपना चमत्कार सारी दुनियाको दिखाया। युद्ध बंद हो, राष्ट्रोंके बीच व जातियोंके बीच विग्रह टलें और न्याय, स्वतत्रता, समता व बन्धुताकी स्थापना शातिके ही मार्गसे हो, अिसके लिअे गाधीजीने भारतको तैयार किया।

न हि वेरेण वेराणि सम्मन्तीध कुदाचन।
अवेरेण च सम्मन्ति अेस धम्मो सनन्तनो॥

यह बुद्ध-वाणी भारतमें फिरसे जाग्रत हुअी।

"गुरुजी गांधीजीसे मिले थे। दोनोकी श्रद्धा अेक ही तरहकी है। आजके पुण्य-प्रसग पर मेहमानके नाते भगवान बुद्धकी जन्मभूमिका कोअी व्यक्ति मिले तो अच्छा, अैसा समझकर आपने मुझे यहा आमत्रित किया है। मै गांधीजीका अेक तुच्छ सेवक हूं, अिसलिअे भी आपका मन मुझे बुलानेका हुआ यह मै जानता हू। गुरुजीके कितने ही शिष्य गाधीजीके आश्रममें रह चुके है। अिसलिअे अुनका और मेरा आत्मीय सम्बन्ध भी बना है। वे भारतमें जो काम करते है वह मेरा ही काम है अैसा मुझे लगता है। भारतके यात्री जब अिस देशमें आयेंगे और अिस स्तूपकी आधार-शिला पर नागरी लिपि व हिन्दी भाषामें लिखा हुआ लेख पढ़ेंगे, तब यह देख सकेंगे कि निप्पोन और भारतके बीच हृदयका कितना अधिक अैक्य सधता जा रहा है। अेशिया अब फिरसे जाग्रत हुआ है। अिस जागृतिमें निप्पोनने कोअी कम हाथ नही बटाया है। अब हमें अेक-दूसरेकी मददसे और भगवान बुद्धके आशीर्वादसे सारे विश्वमें शातिकी स्थापना करनी है, जीवमात्रका दुःख दूर करना है और सबके सुखसे

सुखी होना है। अेक वडे युगकार्यंका हम प्रारम्भ कर रहे है। तथागत भगवान वुद्धके आशीर्वाद हम सवको प्रेरणा दें, यही आज हमारी प्रार्थंना है।"

भाषणके वाद हम सवने कअी वार प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करते-करते गुरुजी कागजकी रग-विरंगी पंखुड़ियां वीच-वीचमें अुड़ा रहे थे। अुन्हे लेनेके लिअे वच्चे होड लगा रहे थे। कअी वृद्धाअें पैरोमें ताकत हो या नही फिर भी आग्रहपूर्वक प्रदक्षिणा कर रही थी। अुनकी यह श्रद्धा देखकर अुनके प्रति मनमें सम्मान पैदा होता था।

पहाड़ी परसे जुडवां दूरवीनके द्वारा आसपासका प्रदेश देखे विना तो कैसे रहा जाता? लेकिन अव नीचे अुतरकर घरका रास्ता लेनेका सवाल था। भक्त स्वयंसेवक सुवहकी डोली मेरे पास ले आये। लेकिन मैंने वैठनेसे साफ अिनकार कर दिया। जिन सुन्दर अंगूरके वगीचोसे होकर हम अूपर आये थे, अुनकी मुलाकात लेता-लेता मैं नीचे अुतरा। अगूरकी वेलें, अुनके कगूरेवाले पत्ते और जहां-तहां लटकते हुअे अंगूरके गुच्छे — यह सव अितना काव्यमय लगता था कि रेवती सीधी अुतरती ही नही थी। वह तो अिन वगीचोमें घुसकर छोटे-छोटे गुच्छोकी शोभा नजदीकसे निहारती थी। मैं ओीमाओी-सानके कंधेका सहारा लेकर अुतर रहा था। अेक तो पगडडी पहले ही तग थी, अुस पर वारिशके कारण फिसलनी भी हो गअी थी। कअी जगह तो दो आदमी अेक साथ चल भी नही सकते थे। वीच-वीचमे जल्दी जानेवालोके लिअे रास्ता भी छोड़ना पडता था। अिस तरह कअी दिक्कतें थी। लेकिन अिसीमें मजा भी था। पहाड़ीके नीचे हम रेलवे लाअिन तक पहुचे तव ओीमाओी-सानका अेक युवक भतीजा सामनेसे आया। अपने काकाको देखकर अुसने प्रसन्न स्मित किया। थे तो काका ही, लेकिन साधु वने हुअे! आत्मीय होते हुअे भी पराये! नजदीक होते हुअे भी दूर! प्रेमका ही रूपान्तर आदरमें हो गया था। अुसकी आंखोमें ये सव भावनाअें स्पष्ट दिखाअी देती थी। अुसकी ओर मेरा ध्यान गया देखकर ओीमाओी-सानने मुझसे कहा: "यह मेरा भतीजा है। थोड़ी देरके लिअे मेरे घर चलेंगे क्या, अैसा मुझसे पूछ रहा है।"

हम रेलवे लाअिन लाघकर हमारे अिन्तजारमें खडी मोटरमें वैठे और सब प्रलोभनोको छोडकर सीधे होटल गये। अिसका मुख्य कारण यह था कि पहाडी अुतरते अुतरते मेरे घुटनोंकी पूरी कसौटी हुअी थी। लोग कहते हैं कि चढ़ना मुश्किल होता है, लेकिन मेरा अनुभव है कि चढ़ना आसान है। कड़ी अुतराअी तो हड्डी-हड्डीको ढीला कर देती है।

होटल पहुचते ही तुम्हारा तारीख २७की रातका लिखा हुआ पत्र मिला। यहाके अखवारोमें यह समाचार भी पढा कि पं० जवाहरलालजी पार्लमेंटके द्वारा विल पास कराकर डाकखानेकी हड़ताल गैरकानूनी ठहराने-वाले है। अिस कदमके विषयमें और अुसके हमारे कर्मचारियो पर होनेवाले असरके विषयमें विचार करनेका मेरा काम नही था। मेरे लिअे तो तुम्हारे पत्र अब समय पर मिलेंगे अितना भरोसा ही कामका था और संतोष देनेवाला था।

खाया-पीया और घुटने-सहित सारे शरीरको दोपहरका जरूरी आराम दिया। शरीर तो झट मान गया, लेकिन घुटने तो चि० रेवती और मजु दोनोंसे काफी खुशामद करवानेके वाद ही राजी हुअे। ये घुटने यदि हडताल कर देते और शरीरको खडा ही न होने देते, तो मैं क्या कर सकता था?

शामको शहरके वाहर अेक विशाल द्राक्ष-मण्डपके नीचेसे हम गुजरे। वहां अेक वहुत वड़ा क्लव था। यही शहर और जिलेकी ओरसे अेक वड़ा स्वागत-समारम्भ रखा गया था। दोपहरको पहाड पर स्तूपके विषयमें वोला था। शामको निहोनके आतिथ्यके विषयमें और गुरुजी फूजीअीके विषयमें वोला। यही अुचित भी था। मारुयामा-सान तो खुश हो गये। भाषणके वाद मैंने गुरुजीको भारत-सरकार द्वारा छपवाअी गअी 'Way of Buddha' नामक कीमती पुस्तक भेंटमें दी और गुरुजीके नाम लिखा हुआ तुम्हारा पत्र भी दिया। तुम्हे स्वप्नमें भी खयाल न होगा कि तुम्हारे पत्रको यहाके भक्तोंने कितनी कद्र की! ओमाअी-सानने तुम्हारा पत्र सारे जन-समुदायके सामने प्रथम मूल हिन्दीमें पढकर सुनाया और फिर अुसका जापानीमें अनुवाद भी किया। अब सब लोग मेरे पीछे वैठी हुअी रेवती व मजुकी ओर देखने लगे। अिसलिअे अुनका परिचय

देते हुअे मैंने कहा कि चि० सरोजकी गैर-हाजिरीमें ये दो वहनें अुसका काम करती है। हिन्दीसे जापानीमें अनुवाद करनेका ओीमाओी-सानको काफी मुहावरा हो गया है। मारुयामाजी तो हिन्दी भूल-से गये है। अुनकी अपेक्षा तो कलवाला युवक तास्से-सान ज्यादा अच्छी हिन्दी वोलता है।

गुरुजीके विषयमें यहा मैं जो वोला अुसका अुल्लेख मेरे पत्रोमें वीच-वीचमें आता ही है। मैंने यहा खास वात यह कही कि गुरुजी राजनीतिक महत्त्वाकाक्षा रखनेवाले व्यक्ति नही है। वे तो धर्म-पुरुष हैं। जो मनुष्य धर्मका रहस्य जानता है, अुसमें यदि धर्मतेज हो तो वह राजनीतिक परिस्थितिसे अलग नही रह सकता। गुरुजी निप्पोनके किसी भी राजनीतिक दलमें शामिल नही हैं। अुन्हे जो वात लोकहितकी और मानव-हितकी दिखाओी देती है अुसीका वे प्रचार करते हैं। अभी तक अुन्होंने देशकी और धर्मकी काफी सेवा की है। लेकिन अिसके वाद अुनके द्वारा और भी अधिक सेवा होनेवाली है। अुनके रास्ते पर चलनेसे ही अिस देशका भला होनेवाला है, अिस विषयमें मुझे जरा भी शक नही है।

स्वागत-समारोह पूरा करके हम वापस आये। अेक वार फिर टोकियो ट्रक-काल किया और वहांकी सारी खवरे जान ली।

सुवह जल्दी अुठकर तुम्हे यह पत्र लिखा रहा हूं। जहा वैठा हू वहासे दाहिनी ओर दूर-दूर तक पहाड़िया दिखाओी दे रही हैं। वाओी ओर अेक वड़ा मकान अपने खम्भेकी ओर हमारा ध्यान खींच रहा है। हमारी खिड़कीके नीचेके तालावमें लाल मछलियोकी लीला निहारता हुआ यह पत्र लिखा रहा हूं। अुसी तालावके किनारे पत्थरका हूवहू वनाया हुआ अेक वडा मेंढकराज मेरी ओर ताक रहा है और मानो मेरी वातें ध्यानपूर्वक सुन रहा है।

तुम्हारे पत्र फिरसे ध्यानपूर्वक पढे। तुम्हारा रक्त सुधर रहा है यह जानकर सतोष हुआ। वजन वढ़ नही रहा है अितना काफी है। घटानेकी जरूरत नही है। डॉक्टर जसावालाको चिकित्सा पूरी करनेके वाद जरूरत हो तो दूसरी दवा की जा सकती है।

तुम्हे करेलेका रस पीना पड़ता है, यह पढ़कर प्रथम तो मुझे वड़ा मजा आया। कैसा मुह करके पीती होगी, यह देखनेको मै वहा नही हूं अिसका वुरा भी लगा। पर अव तुम्हारे प्रति सहानुभूति महसूस हो रही है। तुम्हारे ३० तारीखके पत्रसे लगता है कि अव तुम्हें कच्चे करेलोका रस धीरे-धीरे भाने लगेगा। यदि वे तुम्हे मेरे जैसे ही भाने लगे तव तो मुझे करेले छोडने ही पड़ेंगे। दुनियाका वैलेंस भी तो टिकना चाहिये न?

चि० अवनिके पत्र आते है, किन्तु वे सक्षिप्त होते हैं। अवनिका पत्र न आवे तो मजु अुस वेचारेकी खवर ले लेती है। अिवर वालका पत्र न आये तो रेवती तुरन्त अुदास हो जाती है। तव मुझे वालका वचाव करना पड़ता है।

गरीव मुसलमानोंमें शादीके वक्त पतिको पत्नीके सम्मुख वचन देना पड़ता है: "पानीका मटका कवूल। लकडीका गट्ठा कवूल।" पर्दा-नशीन पत्नी घरका सव काम तो कर सकती है, लेकिन वाहर जाकर न लकड़ी वीन सकती है और न पानी ला सकती है। अपनी पत्नियोंको यात्रा पर भेजते समय आजके पतियोंको तो 'रोजका अेक पत्र कवूल' अैसा वचन देना चाहिये!

अेक वात तो लिखनी रही जा रही थी। कोफू शहरके वाहर जहा स्वागत-समारोह होनेवाला था वहां हम काफी पहले पहुंच गये अिससे वागमें जरा घूमे। वहा हमने तरह तरहके वुत (पुतले) देखे और अेक जगह ग्रामोफोनका संगीत सुननेको ठहर गये। वहीं पासमें अेक वडा सार्वजनिक स्नानागार था। अुसके दोनो ओर दो दरवाजे थे। अेकसे स्त्रिया अन्दर जाती थीं और दूसरेसे पुरुष। अेक वडे, चौड़े परन्तु छिछले हौजमें गरम पानी वह रहा था। अुसके अेक किनारे पुरुष नहा रहे थे और दूसरे किनारे स्त्रियां। भीतर जाकर ये लोग सारे कपडे अुतारकर नहाने अुतरते हैं। केवल पुरुष या केवल स्त्रिया ही अिस तरह नहायें तो वह भी हमारी दृष्टिसे विचित्र है। लेकिन पुरुष व स्त्रिया दोनो ही हौजमें आमने-सामने अिस तरह नहायें, यह तो हमारी कल्पनामें भी नहीं आ सकता! यहाके लोगोंको अिसका जरा भी क्षोभ नहीं होता।

सार्वजनिक स्नानागारकी वाहरी दीवार पर भीतरके हौजका चित्र था, जिससे भीतरकी व्यवस्थाका पूरा-पूरा खयाल आ सके।

आज दोपहरको हम कोफूसे नागासाकी जानेके लिअे निकलेंगे। सफर लम्वा है। कल पहुचेंगे। वहाका वाढ़-संकट अव दूर हो गया है। पिछली वार हमने शहीद-शहर हिरोशिमा देखा था। अिस वार नागासाकी देखना है।

२४

नागासाकीका श्राद्ध

नागासाकी,
९–८–'५७

कोफूसे नागासाकीका रास्ता पूरे अट्ठाअीस घंटेका है। कोफूमें जिस प्रकार ६ तारीखका महत्त्व था अुसी तरह यहा ८ सितम्वरको अिस शहर पर पड़े हुअे अेटम-वमका द्वादश वार्षिक श्राद्ध था। अिसके अुपलक्ष्यमें होनेवाली कान्फरेसमें हमे हाजिर रहना था। अिसीलिअे हमने यह लम्वा सफर वीचमें कही रुके विना ही पूरा कर लिया। शुरूमें फूजी स्टेशन तक हमें तीसरे दर्जेमें जाना पडा। सच्ची यात्रा तो यही होती है, क्योंकि तीसरे दर्जेमें ही सामान्य जनताके दर्शन होते है। लोगोके रीति-रिवाज व वोल-चालका कुछ खयाल आता है। वच्चोकी लीला देखनेको मिलती है और मानवताकी सार्वभौम अेकताका अनुभव होता है। लेकिन विलकुल थका हुआ शरीर जव लम्वा होकर नीदके लिअे तरसता हो और नीद मिलनेकी कोअी सुविधा या आशा न हो, तव मानवताके आकर्षणको मुलतवी रखना पडता है। फूजी स्टेशन अव आता ही होगा अिसी अुम्मीदमें किसी तरह समय विताया। फूजी पर हमें गाड़ी वदलनी थी। स्टेशन पहुंचने पर मालूम हुआ कि दूसरी गाड़ीमें अभी अेक घटेकी देर है।

अिस प्रदेशमें स्टेशन-मास्टरका कमरा ही अूची श्रेणीके यात्रियोका प्रतीक्षालय होता है। अेक तरहसे यह अच्छा ही है। स्टेशन-मास्टर खुद मेहमानोकी ओर ध्यान दे सकता है और मन हो तो चायके लिअे भी निमंत्रित कर सकता है। अितनी तपस्याके बाद जब प्रथम श्रेणीका वातानुकूलित (अेयर कन्डीशन्ड) डिब्बा मिला तब शरीर और मन दोनों प्रसन्न हो गये। फिर मैंने तो सौदर्य-सृष्टिमें विहार करनेके बदले स्वप्नसृष्टिमें डूब जाना ही पसन्द किया!

होन्शुसे द्वीपान्तर करके क्यूशु द्वीपमें प्रवेश करनेके लिअे भी गाड़ी नही बदलनी पडती। स्टीमरमें बैठनेका या पुल लांघनेका सवाल भी नही था। तीन साल पहले कुमामोतो और आसो पहुंचनेके लिअे हम अिसी रास्ते गये थे। मैंने मंजु और रेवतीको समझाया कि अिस द्वीपसे अुस द्वीप तकका रेलका रास्ता समुद्रकी तलहटीमें अेक सुरंग खोदकर जोड़ा हुआ है। लेकिन यह द्वीपान्तर-यात्रा रातको होनेके कारण अुसमें किसी तरहका कुतूहल अनुभव नही होता।

अिस क्यूशु द्वीपमें थोड़े ही दिनों पहले प्रचण्ड झझावात आया था, जिससे अिस प्रदेशको बाढ-संकट भुगतना पड़ा था। अुसके दृश्य अब सामने आने लगे थे। कही-कही बरसातके कारण पहाडिया धस गअी थी व अुनके पत्थर बड़ी दूर-दूर तक फैल गये थे। पानीके बहावके साथ जो घास बह आयी थी वह बीच-बीचमें तारोके खम्भोके चारो ओर अटकी पडी थी। तारके खम्भे गिर न पड़ें अिसलिअे अुनको थामनेके लिअे अुनके सिरसे नीचे जमीन तक जो टेढे तार तने रहते है, अुनके आस-पास भी घास-फूस अिकट्ठा हो गया था। मानो छोटीसी झोपडी अथवा पिरामिड हो। बाढका पानी कहा तक चढ गया था, जिसका अंदाज लगानेके लिअे यह घास-फूस अुपयोगी था। किसी नदीका पात्र कुछ नरम होगा अिसलिअे अुसकी मिट्टी धुलकर बह गअी थी और प्रवाहमें अेक नया ही प्रपात पैदा हो गया था! मिट्टीके धुलकर बह जानेसे कअी जगह तारोको खम्भोका आधार ही नही रह गया था। बिजलीके तारोको सहारा देनेके बदले फासी पर चढे हुअे मनुष्यकी तरह तारका ही आधार लेकर लटके हुअे अिन खम्भोको

देखकर और कही-कही तो तारको ही नीचे खीचकर खम्भोको जमीन पर सोता हुआ देखकर दया ही आती थी। मीलों तक अैसा दृश्य देखकर बड़ा दुःख हुआ। फिर भी अिसमें आनंद अिस वातका था कि लोग विना घवड़ाये तेजीसे काममें लगकर अिस परिस्थितिको सुधार रहे थे। धानके खेतोमे पानीके साथ-साथ रेती और मिट्टी विछ गअी थी। अिससे जो नुकसान हुआ अुसका तो कोअी अिलाज ही नही था।

हम चार वजे नागासाकी पहुचें। जापानके दूसरे शहर समतल भूमि पर वसे हुअे है। लेकिन यह नागासाकी तो कअी पहाड़ियो पर अूचा-नीचा वसा हुआ है। वड़े-वडे रास्तोको भी चढते-अुतरते देखकर मुझे पुर्तगालकी राजधानी लिसवन शहर याद आया।

स्टेशन पर जो भिक्षु लेने आये थे वे हमें श्री हासेगावा (डाअि-रेक्टर, सिविल अिंजीनियरिंग)के यहा ले गये। गृहपति घर पर नही थे। वाढ-सकटके निवारणके लिअे सरकारकी ओरसे जो काम चल रहा था अुसीकी देखरेखके लिअे वे गये हुअे थे। अुनकी प्रेमालु पत्नीने हमारा स्वागत किया। नहा-धोकर हमने अुनके यहा खाना खाया। । श्रीमती हासेगावाने रेवती और मजुको अपने घरकी व्यवस्थाकी पूरी जानकारी दी। कुटुम्वियोके फोटो दिखाये, कपडे व काचके वर्तन दिखाये और कअी चीजें भेंटमें भी दी। दो घटेमें अिस वहनने हमारी दोनो वहनोका दिल जीत लिया, और यह सव भाषाका सहारा लिये विना ही! आखोकी भाषा सार्वभौम होती है। अिस घरमें हमारा मुकाम थोडी देरके लिअे ही था। दूसरी अेक जगह गुरुजीके अेक भक्तके यहा हमारे रहनेकी व्यवस्था की गअी थी।

श्रीमती हासेगावासे विदा लेकर हम अेन्टी-अेटमवम-कान्फरेन्समें गये। यह सम्मेलन अिन्टरनेशनल कल्चरल हालमें रखा गया था। वहां हजार डेढ़ हजार लोगोके सामने जिलेके गवर्नर और नागासाकी शहरके प्रतिष्ठित सेठ वगैरा वड़े-वड़े लोगोके भाषण हुअे। मै भारतसे अितनी दूर आया हुआ मेहमान, खास तौर पर अिस सम्मेलनके लिअे और दूसरे दिनके श्राद्धके लिअे, नागासाकी आया था। अिसलिअे लोगोका मेरे भाषणके प्रति विशेष आकर्षण होना स्वाभाविक था। मैंने भारतकी जनताकी

सहानुभूति प्रकट की और भारत-सरकारकी अन्तर्राष्ट्रीय नीति स्पष्ट की। लोगोको मेरा भाषण वहुत पसन्द आया। अुस दिन और दूसरे दिन भी कअी लोगोने अिस भाषणके लिअे मेरा अभिनन्दन किया। मेरे भाषणमें मुख्य वात यह थी "हिरोशिमा और नागासाकी पर जो घातक वम गिरे, वे सचमुच अेशियाके हृदय पर ही पड़े हैं। अुस समय हम सवने अनुभव किया कि पश्चिमकी घातक नीतिसे कोअी सुरक्षित नहीं है। अुन दो वमोंके धडाके सचमुच ही अेशियाअी सगठनके लिअे अुत्तमसे अुत्तम व्याख्यान थे। मैंने देखा है कि अिन तहस-नहस हुअे शहरोको जापानने देखते ही देखते फिरसे खड़ा कर दिया है। लेकिन अमरीकाकी जो साख टूटी सो अभी भी जुडी नही है। अमरीकाके ये दो प्रयोग अुसे बड़े महंगे पड़े हैं। जैसे अीसामसीह क्रूस पर चढ कर दुनियाके तारणहार बने, वैसे ही हिरोशिमा और नागासाकी वमकी वलि चढ़कर अेशियाके जगावनहार बने है। अिसलिअे स्वतंत्र होते ही भारतने अेशियाके तमाम राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोको अिकट्ठा करके अुनके सामने अेक नवीन नीति प्रस्तुत की है कि लडाअीखोर राष्ट्रोके किसी भी गुटमें हम शामिल नही होगे। हम सवके साथ मित्रता रखेंगे, लेकिन किसी भी युद्धमें सम्मिलित नही होगे। अेटम-वमके केवल प्रयोगोंसे ही कैसा नुकसान होता है यह हमने विकिनीमें देखा है। अिसलिअे अिस खतरेसे सारी दुनियाको आगाह करनेके लिअे और अैसे सर्वविनाशकारी प्रयोगोंको वन्द करानेके लिअे हम सव प्रयत्नशील हैं। भारत-सरकार, भारतकी सारी जनता और हमारे सव राजनीतिक दल अिस नीतिके वारेमें अेकमत है। जापानने जो कष्ट सहन किया वह अव किसीको भी न सहना पड़े, अैसी सुरक्षित स्थिति सारी दुनियाके लिअे पैदा करनी है।"

अिन्टरनेशनल कल्चरल हालमें प्रवेश करते ही सम्मेलनके प्रतिनिधिके नाते हमें रेशमसे वने हुअे सुन्दर पीले फूल लगानेको दिये गये थे। जव हम सम्मेलनसे वाहर निकले तव ये फूल हमसे वापस ले लिये गये! तुम्हे तो मालूम ही है कि अैसी चीजें वच्चोको खूव अच्छी लगती हैं, अिसलिअे मैं अुनके लिअे अिन्हे सभाल कर रखता हू। फूल जव वापस मागे गये तव मुझे जरा विचित्र लगा। लेकिन वादमें

यही रिवाज ठीक लगा। सार्वजनिक पैसे बेकार क्यो खोये जायें? ये फूल या तो दूसरी सभामे काम आ सकेंगे अथवा किराये पर लाये गये हो तो वापस देकर थोड़े खर्चेमें अेक सभा सम्पन्न करनेका सतोष मिल सकेगा।

नागासाकी शहर अिन बारह वर्षोमें बहुत विकसित हो गया है। अिसलिअे अिसमें देखने योग्य चीजें काफी बढती जा रही है। यहा पाच-सात मजिलवाले अेक बड़े मकानमें आयोजित सग्राम-सग्रहालय और अुसके आसपासका बगीचा ये दोनो खास तौर पर देखने लायक है। वक्तके अनुसार जितना देखा जा सकता था अुतना देखकर हम गुरुजीके भक्तके यहां गये। भक्तका नाम था सोजाबुरो त्सूजी (Sozaburo Tsuji)। यह घर अेक पहाडी पर कल्पनासे कही अधिक अूचाअी पर निकला। लगातार दो-तीन दिनकी थकान चढ़ी होनेसे मुझे यह चढ़ाअी कड़ी लगी। फिर भी वहा पहुचने पर घरके सब लोगोका मीठा स्वभाव देखकर मैं अपनी थकान भूल गया। अुन लोगोने हमें घरकी अूपरकी मजिलमें ठहरानेकी व्यवस्था की थी। मेरी थकानकी बात सुनकर अुन्होने तुरन्त कहा कि आप कहें तो आपकी रहनेकी सुविधा नीचे कर दें और हम अूपर चले जायें। लेकिन मैंने तुरन्त मना कर दिया (यद्यपि स्नान, शौच आदिकी सब व्यवस्था नीचे होनेसे नीचे रहनेमें ही सुविधा थी)। अेन मौके पर व्यवस्था बदलनेसे सभीको दिक्कत होती है, अिसका मुझे अच्छी तरह अनुभव है।

अितनी अूची जगह रात बिताअी अिसका हमें अवश्य लाभ मिला। रातको शहरके दीयोकी सुन्दरता बड़े विस्तारमे दिखाअी पडती थी। अिस तरहका दृश्य मेरे लिअे नया नही था। हवाअी जहाजसे बम्बअी, काहिरा, बर्लिन, टोकियो जैसे शहर जिन्होने रातको देखे हो अुनको शहरी निशा-प्रदीपोका नशा कैसा होता है यह कहनेकी जरूरत नहीं। फिर भी वह तो अुड़ता हुआ दृश्य ठहरा — विशाल, लेकिन अस्थायी। किसी अेक दृश्यको देखो कि अितनेमें वह कुछ और ही रूप धारण कर लेता है; और वह अपनी कला प्रकट कर सके अिससे पहले वहा कोअी तीसरा ही दृश्य सामने आ जाता है। स्थायी रूपसे ध्यान

करनेकी गुजाअिश अुसमें नही होती। लेकिन सिंहगढ़से चौदह-पन्द्रह मील दूर पूनाके निशा-रत्न जिन्होंने देखे हैं — आखोंसे देखे हो या दूरबीनसे — अुन्हें आकाशके तारे झलमल-झलमल टिमटिमाते क्यो हैं यह समझाना नही पड़ेगा।

आजकलकी खगोल-शास्त्रकी यानी ज्योतिषकी किताबोंमें तारा-नगरों (star-cities) का वर्णन आता है। अैसे तारा-नगर हमारे विश्वमें अेक-दूसरेसे काफी दूर-दूर बसते हैं। विराट दूरबीनकी आखोसे अब तक दो सौ तारा-नगर देखे जा सके है। यह हमारी आजकी मर्यादा है। अैसे तारा-नगरोंके साथ हमारे बड़े-बड़े शहरोके विद्युत्-दीपोकी तुलना करें, तो सारी पृथ्वी पर हजारेक बड़े तारा-नगर गिनाये जा सकते है।

विश्वपतिके तारा-नगर चाहे जितने कल्पनातीत बड़े हो, फिर भी अुन सबमें अेक सफेद रगकी ही चमक है। लाल या नीले रगका शक कही-कही जरूर पैदा होता है, लेकिन अुनमें अुस रगकी छटा है यह कहना मुश्किल होता है। मनुष्यने आजकल अपनी तारा-नगरियोमें कअी तरहके चमकते हुअे रग पैदा किये है। अुनकी अनेक आकृतिया बनाअी हैं और अुनके फव्वारे भी अुडाये है। अितने विशाल विश्वमें अीश्वरको रगकी विविधता प्रकट करनेकी क्यो नही सूझी, यह अेक आश्चर्य ही है।

नागासाकी कोअी खास बड़ा शहर नही है। यहाके दीये रग-बिरगे और अुज्ज्वल होने पर भी भडकीले दिखाअी नही दिये।

चामुण्डा पहाड़ीसे मैसूरकी शोभा अनोखी दिखाअी देती है। मैं तो अुसे अप्रतिम ही कहूगा। लेकिन वह अेक समतल मैदान पर फैली हुअी शोभा है। नागासाकीकी विशेषता यह है कि शहर अूची-नीची पहाडियो पर बना हुआ होनेके कारण अुसके रातके दीये टेढे पर्देकी तरह फैले हुअे दिखाअी देते है। कुछ पास तो कुछ दूर। अुनमें रगोकी मोहक पुष्प-छटा तो है ही।

अिन सारे दृश्यसे कुछ अूचे और कुछ अलग दीयोका अेक गुच्छा खिला हुआ था। पूछनेसे मालूम हुआ कि वहा मिजाजी लोगोका अेक जलपान-गृह है। अपनी प्रतिष्ठा और वैभव भोगनेको तो अुन्हें कोअी

मना नही करता। लेकिन सबसे अलग हो कर जनसाधारणसे घृणा करनेकी अैसी वृत्ति किसे अच्छी लग सकती है?

रातको दीयोको जलाते हुअे देर तक जगनेकी होड़में शहरी लोगोंके सामने हम कहा तक टिक सकते थे? हमने अुन नगर-तारोको जी भर कर देखा और अपने समय पर आरामसे सो गये। सुबहके फीके अंधेरेमें वही दृश्य मैंने फिरसे देखा। रातके वैभवके मरसिया गाते हुअे कुछ दीये वहा दिखाअी दिये। अुनके साथ अब किसकी सहानुभूति हो सकती थी!

सुबह हुअी। आकाशमें सुन्दर आकृतियोमें बिखरे हुअे बादल बोल अुठे. 'अरे जरा अूपर तो देखो!' सचमुच वह दृश्य देखने लायक था। पूर्वगिरिके शिखर पर चदोवेके समान फैले हुअे वे बादल कुछ अैसी अुधेड़-बुनमें पड़े थे कि अिस चमकते हुअे लाल रगका नारगी रंग कैसे बनाया जाय? आखिर लाल रगको नारंगी होनेमें बहुत देर न लगी। किन्तु बीचमें अुसने कुछ क्षणके लिअे सिंदूरी रग भी धारण किया। फिर अुस नारगीका गिनी गोल्ड यानी पाअुडका सोना बना। अुसीका देखते ही देखते शुद्ध सोना बन गया। लेकिन वह अधिक नही टिका। यह सोना रगमें फीका होने पर भी चमकमें ज्यादा अुज्ज्वल था और अिसलिअे और भी अधिक ध्यान खीचता था। हम रग-परिवर्तनकी ये खूबियां देख रहे थे, अितनेमें अुषाने ललकारा. 'रहने दो यह सब खेल। दिनकर महाराज स्वय पधार रहे है।' आकाशके बादल भी आखिर दरबारके अनुभवी मुत्सद्दी ठहरे! गम्भीर मुह रखकर चाहे जैसा रंग धारण करने अथवा छोड़नेमें अुन्हे कोअी कठिनाअी नही होती। जमते हुअे कुहरेमें से भी सूर्यनारायणकी काति खिल अुठे अिसलिअे वे चमकते हुअे बादल तुरन्त श्याम वर्णके बन गये और पहाड़की गहरी हरियालीके साथ होड़ करने लगे। दिनके अुगते ही कल्पनाकी सृष्टि अस्त हो जाती है और व्यवहारकी सृष्टि सामने आ खडी होती है। हम अुठे और नया दिन शुरू किया।

आजका मुख्य कार्यक्रम शहरमें अनेक जगह मनाये जानेवाले श्राद्ध-दिनके अुत्सवमें से अेक दो जगह हाजिर रहनेका था।

अुसी बीच नागासाकी छोड़नेसे पहले कुछ समय निकालकर शहरके प्रेक्षणीय स्थान भी देखने थे। अिसमें मेरी अेक कठिनाअीका ध्यान भी रखना था। सुबह नहा-धोकर नाश्ता करके अेक बार नीचे अुतरनेके बाद दोपहरको फिर अूपर चढ़ना मेरे लिअे मुश्किल था। अिसलिअे कुछ कार्यक्रम छोड़कर जरा जल्दी खाना खाकर मैं नीचे अुतरना चाहता था। अिसी सोच-विचारमें थे कि अितनेमें यह समस्या कुछ और ही ढंगसे सुलझ गअी। सरकारकी जिला-समितिने हमें अेक सुन्दर होटलमें दोपहरको खानेके लिअे आमंत्रित किया। अिसलिअे करीब दस बजे हम अपना सामान लेकर और मेजबानोंकी विदा लेकर नीचे अुतरे। हमारे सिर पर छाता लगाकर हमारे मेजबान ठेठ नीचे मोटर तक हमें छोडने आये। यदि हमारे बीच कोअी सामान्य भाषा होती तो हम अेक-दूसरेके साथ बहुतसी बातें कर सकते। अुसके अभावमें स्नेही आंखोंसे देखना, थोड़ासा हसना और बार-बार नमस्कार करना बस यही हो सकता था। सुबह या शामको जब घरके सब लोग पूजाके लिअे अिकट्ठे होते थे तब हम भी अुनके साथ आग्रहपूर्वक शामिल होते थे। यह भी हमारे बीच स्नेह-बन्धनका अेक साधन बनता।

सरकारी अफसर और नगर-पिता जहां शहीदोंको पुष्प-गुच्छ अर्पण करनेवाले थे, अुस महत्त्वकी श्राद्धविधिमें भाग लेनेका हमें निमंत्रण था। कार्यक्रम यह था कि दोपहरको ठीक ग्यारह बजकर दो मिनट पर (जिस क्षण बारह वर्ष पहले नागासाकीके अूपर बम पड़ा था अुसी क्षण) शहीदोंको पुष्पहार अर्पण करके शांतिके कबूतर अुडाये जायें। कअी शामियाने लगे हुअे थे। लगभग सारा गांव ही अुलट पड़ा था। पहले लड़कियोंने वृन्द-वादनके साथ शांति-सूक्त गाये। नेताओंके भाषण हुअे। फिर गवर्नरने सबसे पहले पुष्प-गुच्छ अर्पण किया। अर्पण किये जानेवाले गुच्छ चाहे जैसे नहीं रखे जाते थे। अेक आड़े लम्बे टेबिलमें अेक सीधमें बड़े-बड़े छेद किये हुअे थे। जो जाता वह अपना गुच्छा क्रमके अनुसार टेबिलके छेदमें खोस देता। भारतके प्रतिनिधि होनेके नाते मुझे शहीदोंको पुष्प-गुच्छ अर्पण करनेके लिअे कहा गया था। मैंने भी अपना पुष्प-गुच्छ अर्पण किया। पक्षपाती फोटोग्राफर

वहा काफी वडी सख्यामे अुपस्थित थे और अुन्होने अुस वक्तका मेरा फोटो भी लिया। यह सारी विधि पूरी करनेके वाद खानेके लिअे हम अेक सुन्दर होटलमें गये। वहां नगरके कअी प्रसिद्ध व सम्मानित लोग आये थे।

लिखना भूल गया कि नगरके जिस अुपवनमे श्राद्ध-विधि हुअी थी, वहां नागासाकीके अेक प्रतिभाशाली मूर्तिकारने मानवताकी अेक प्रचण्ड मूर्ति खड़ी की है। अेक हाथ अूपर करके घातक कर्म वन्द करनेका मानो आदेश दे रहा हो अैसा वह पापाणका पुतला है। अिस पुतलेके विपयमें और अिसके मूर्तिकारके विषयमें जानकारी प्राप्त करनेका मैंने काफी प्रयत्न किया, लेकिन अुसमें मैं सफल नही हुआ।

फुकुओका हाकाटा

खाना खाकर हम स्टेशन गये। वहासे अेक वजेकी ट्रेन पकड़कर छह वजे हम फुकुओका पहुचे। जापानी होटलमें जगह नही मिली थी अिसलिअे हम अेक पाश्चात्य ढंगकी अिम्पीरियल होटलकी सातवी मजिल पर ठहरे। यहा भी सव सुविधाये जैसी चाहिये वैसी थी। केवल लड़कियोका कमरा मेरे कमरेसे काफी दूर था। टवमें गरम पानी भरकर खूव अच्छी तरह नहाये। जापानके विषयमें कुछ अच्छी कितावें देखनेके लिअे मैं वहांके कार्यालयमें गया। पर जाना व्यर्थ हुआ। आज अीमाअी-सानके सिरका अेक वोझा कम था। अिस होटलके सव नौकर अंग्रेजी समझते थे। अिसलिअे जो चाहिये वह हम माग सकते थे और समझा सकते थे। यह सुविधा देखकर वे निश्चिन्त होकर शहरमें गये और अपना काफी काम निपटा आये।

१०–८–'५७

यहां वड़े आरामसे रात विताकर दूसरे दिन हम शहर देखने निकले। तुम्हें याद होगा कि तीन वर्ष पहले यही शहर हमने आव-पौन घटेमें देखा था। अुस समय निचिरेन वोधिसत्त्वकी विशाल मूर्ति देखकर हम विशेप प्रभावित हुअे थे। वही मूर्ति मुझे फिरसे ध्यान-पूर्वक देखनी थी और रेवती तथा मजुको दिखानी थी।

हाकाटा और फुकुओका ये अेक ही शहरके दो नाम हैं। विस्तारसे जानना हो तो शहरके अेक विभागको हाकाटा और दूसरेको फुकुओका

कहते हैं। पिछले महायुद्धमें यह सारा शहर मटियामेट हो गया था। अुसके बाद यहां शहरके प्रमुख भागमें अमरीकन ढंगके मकान बनाये गये हैं।

निचिरेन बोधिसत्त्वकी मूर्ति बहुत ही बड़ी और भव्य है। जिस अूंचे चबूतरे पर यह मूर्ति रखी गअी है अुसकी दीवार पर निचिरेनके जीवनके महत्त्वपूर्ण प्रसंगोंके चित्रोंकी पत्थरके खुदाअी-कामकी तख्तियां लगाअी हुअी हैं। वे सब हमने बड़े ध्यानसे देखीं। फिर हमने मूर्तिकी प्रदक्षिणा की, बगीचोंके पेड़ देखे, प्रार्थना करते हुअे भक्तोंको देखा। साढ़े सात सौ वर्ष पहले चीन और जापानका सम्बन्ध कैसा था, जापानके राजनीतिक नेता कैसे थे और बौद्ध धर्मका असर किस तरह फैल रहा था, यह सब जाननेके बाद ही भगवान निचिरेनके कार्यका अन्दाज आ सकता है। अिस विषयमें विस्तारसे ही लिखना होगा। सब जगह घूम-फिरकर युनिवर्सिटीके मकान देखते हुअे हम होटल वापस आये।

२५

घातकताके सामने आस्तिकता

नागासाकी,
९–८–'५७

नागासाकीका नाम पुराने रूसी-जापानी युद्धके समय पहले-पहल सुना था। अिसी बन्दरगाहमें जापानके अेडमिरल टोगोने अपनी नौसेनाको गुप्त रीतिसे सुरक्षित रखकर रूसी नौसेनाको हैरतमें डाला था और अन्तमें पासकी ही सुशीमा खाड़ीमें अेक ही समुद्री लडाअीमें सारी रूसी नौसेनाको डुबा दिया था! अितना ही नहीं, अुनके घायल समुद्री नारग (अेडमिरल) को पकडकर और अच्छा करके रूसको वापस सौंप दिया था।

नागासाकी अर्थात् जापानकी नाक। सारे राष्ट्रके अभिमानका स्थान। बारह वर्ष पहले अिसी बन्दरगाह पर अमरीकाने ९ अगस्तको अेटम-बम फेंका था और करीब-करीब सारे शहरको ही नष्ट कर दिया था।

अिसी तरह अमरीकाने हिरोशिमा पर भी अेटम-वम फेंका था। हिरोशिमामें तो वमके अेक ही धडाकेसे ढाअी लाख लोग मारे गये थे। नागासाकी शहर पहाड़के दोनो ओर वसा हुआ होनेके कारण अुसका अेक तरफका हिस्सा वच गया। पहाडके जिस ओर वम पड़ा था वहा पचास या पचहत्तर हजार लोग मारे गये थे। जिस विज्ञानकी मददसे जापान अितना आगे वढ़ा था अुसी विज्ञानने अेक क्षणमें जापानका पराभव किया। अुस समयके अेक जापानी नेताने कहा था कि वहादुरी अथवा युद्ध-कौशलमे हम नही हारे है। विज्ञानकी प्रगतिमें हम कुछ कच्चे थे, अिसीलिये विज्ञानके हाथों हमारा पराभव हुआ।

मेरे वचपनमे जव चीन और जापानका युद्ध हुआ था तव लड़ाअी शुरू होनेसे पहले ही जापानके अेडमिरल टोगोने चीनका अेक वड़ा जहाज डुवा दिया था। अिसी तरह अिस युद्धमें भी जापानने पर्लहार्वरमें अमरीकाकी नौसेना पर अचानक हमला करके अमरीकाको जवरदस्त नुकसान पहुचाया था। अमरीका अिस घातकी हमलेको कैसे भूल सकता था? अिसलिये लगभग युद्धके अन्तमें जव जापानकी हार स्वीकार करके शरण जानेकी तैयारी थी तभी अमरीकाने जापानके अूपर ये दो वम गिराये थे। अिस तरह धोखेका वदला अिस घातकी कृत्यसे चुकाया गया।

हिरोशिमा और नागासाकी शहरोकी सामान्य जनताका यह अमानुषिक सहार देखकर सारी दुनिया स्तम्भित रह गअी। पुराने समय में तो नियम था कि सेनायें लड़े, आमने-सामने संहार करें, लेकिन साधारण नागरिक जनता (civil population) का नाश नही किया जा सकता। पर आजके युद्ध धर्म-युद्ध नही रहे। शत्रु यानी शत्रु, अुसमें सामान्य नागरिक, स्त्री-वच्चे सभी आ गये। फिर भी अिस तरह वम फेंककर शहरके तमाम लोगोको मौतके घाट अुतार देना यह अेकदम नया और अकल्पित अमानुषिक कृत्य था।

अमरीकाके अिस कृत्यसे अेशियाके लोगोकी आस्था जड़से हिल गअी। जापानकी शक्ति खतम हो रही थी। जापान पराभव स्वीकार करके युद्धमे से निकल जाना चाहता था, वह किस शर्त पर युद्धसे हटे अिसकी वातचीत चल रही थी। अिसी वीच केवल अपनी शक्ति आजमाने

और जापानी प्रजाको भयभीत करनेके लिअे अमरीकाने यह राक्षसी कदम अुठाया था!

अेशियाके लोगोंको लगा कि जिस प्रकार किसी नअी दवाका असर जांचनेके लिअे मनुष्य अुस दवाको पहले किसी जानवरको देकर देखता है, जिस तरह गिनि पिग्ज पर नये-नये रसायन आजमाये जाते हैं, बिलकुल अुसी तरह अमरीकाने अपने अणु-बम अेशियाअी राष्ट्रों पर आजमाये हैं। जर्मनी गोरे लोगोंका राष्ट्र था, अिसीलिअे अुस पर ये घातकी बम नहीं आजमाये गये। अिन दो शहरोंको ध्वस्त करनेवाले अिन बमोंने अेशियाके संगठनमें जितनी मदद की है अुतनी और किसी भी घटनाने नहीं की। गोरे लोग दूसरे गोरे दुश्मनोंको तो मनुष्य-जातिके ही मानते हैं, किन्तु अुनके लिअे अफ्रीका अथवा अेशिया आदि देशोंके लोग बिलकुल निम्न कोटिके मनुष्य होते हैं। अिसीलिअे बिना किसी संकोचके अुनको अितनी बड़ी सख्यामें मार डाला गया — ठीक वैसे ही जैसे कि आजकल डी० डी० टी० से मच्छरोंको मारा जाता है!!

पौराणिक कथा याद करनी हो तो जनमेजय राजाने नाग लोगोंका निकन्दन करनेके लिअे अेक सर्पसत्र चलाया था। अुस सत्रमें शत्रुको केवल हरानेका अुद्देश्य नहीं था, बल्कि अुन्हें बिलकुल खतम कर देनेकी नीति थी। अपने राजाका अैसा युद्ध-ज्वर देखकर और यह अमानुषिक संकल्प सुनकर मनुष्य-जाति पर विश्वास रखनेवाला अेक आस्तिक ऋषि वहां पहुंचा और अुसने अुस सर्वसंहारकारी युद्धको अेकदम बन्द करवाया।

आज अिसी तरहके अेक आस्तिक ऋषिका कार्य करनेके लिअे अनेक राष्ट्रोंके प्रतिनिधि हम सब यहां अिकट्ठे हुअे हैं। सर्व संहारकारी शस्त्रोंका हमेशाके लिअे बहिष्कार हो यह हम सुझाना चाहते हैं। पर अैसे सुझावके पीछे अुन आस्तिक ऋषिका तपस्तेज हमारे पास कहां है?

तीन वर्ष पहले जब मैं अिस देशमें आया था तब मैंने हिरोशिमा जाकर अुन निर्दोष मृतक लोगोंको श्रद्धांजलि अर्पण की थी। अबकी बार आठ-नौ अगस्तको नागासाकीके बलिदानका द्वादश वार्षिक श्राद्ध करनेके लिअे अुपस्थित रहा हूं।

२६

धर्म-धानी कोबे

हाकाटा,
१०-८-५७

गुरुजी निचिदात्सु फूजीअीके सम्पर्कमें आये मुझे काफी वर्ष हों गये। अुनके शिष्योके साथ भी मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध वढ़ता ही जा रहा है। मानो मैं अुनका अेक वड़ा भाअी होअू अिस तरह वे मेरे प्रति आत्मीयता रखते है। फिर भी मैं अिन लोगोके परात्पर गुरु निचिरेनके विपयमें अभी तक पूरी जानकारी प्राप्त नही कर पाया हूं। अिस विपयमें थोड़ा-वहुत जो पढा है वह भी अंग्रेजोंने जापानके वौद्ध पंथोका वर्णन करते हुअे जो कुछ गलत-सलत लिखा है वस अुतना ही पढ़ा है। गुरुजी खुद हिन्दी या अग्रेजी दोनो ही नही वोल सकते हैं। अुनके शिष्य भी हिन्दीमें तो पूरे वाचा-सयमी ही है!

अितने लोग भक्तिके साथ जिसका नाम साढ़े सात सौ वर्पोसे लेते आये है अुसकी विभूति विशेप तो होनी ही चाहिये। विदेशियोंने भी जिसका वर्णन असहिष्णु और अुत्पातीके नामसे किया है, अुसमें कुछ-न-कुछ तेज तो जरूर होगा ही। भगवान श्रीकृष्ण, श्री शंकराचार्य, मार्टिन लूथर, अिगनेशियस लोयला, मुहम्मद पैगम्वर आदि सभी अिस तरहके अुत्पाती थे। ये लोग अपने समयमें न खुद चैनसे वैठे और न दूसरे किसीको अुन्होने सुखसे सोने दिया। गांधीजीको भी अुनकी अहिंसक मिठासके वावजूद अुत्पातियोकी पंक्तिमें ही विठाना चाहिये। वैठाना कैसा? खडा करना चाहिये, जो वैठे वह अुत्पाती कसे हुआ?

साढे सात सौ वर्प पहले हुअे निचिरेनको जापानके लोग आज वोधिसत्त्वकी तरह पूजते हैं। (वोधिसत्त्व यानी वुद्ध वननेकी योग्यता और आकांक्षा रखनेवाले साधनावीर जीव) निचिरेनका कहना था कि वौद्धोमें स्थविरवादी और महायानी—ये जो भेद पड़े है वे योग्य

नहीं हैं। सद्धर्म-पुण्डरीक स्तोत्रमें जिस धर्मका अुपदेश हुआ है वही अेकमात्र मार्ग है। लोग बुद्धको छोडकर अमिताभके दर्शनके लिअे बोधिसत्त्वोंकी पूजा करते हैं यह गलत है। केवल शाक्य मुनिकी ही पूजा करनी चाहिये। वे शाक्य मुनि भी अमुक हजार वर्ष पहले भारतमें जन्मे हुअे अैतिहासिक सिद्धार्थ गौतम नहीं, किंतु सनातन कालसे सद्धर्मका अुपदेश करनेवाले शाक्य मुनि।

जिन्दगीमें सत्य और धर्मके रास्ते पर चलना ही कल्याणका मार्ग है। अुस धर्मकी शरण जाना यही सच्चा पथ है। अिसीलिअे ये लोग सर्वकालके तमाम बुद्धोंको नमस्कार करते हैं और फिर सद्धर्म-पुण्डरीक सूत्रमें दिये हुअे सच्चे धर्मको नमस्कार करनेके लिअे व अुसकी शरण जानेके लिअे 'नम् म्यो हो रेंगे क्यो' मंत्र बोलते हैं।

निचिरेन जिस तरह साधु थे अुसी तरह राजनीतिक परिस्थिति जाननेवाले अेक राष्ट्र-पुरुष भी थे। अुनकी बडी अिच्छा थी कि जापानकी सरकार यहांके मत-मतान्तरों और पंथोंको तोड़कर सारे देशको धर्मके आधार पर अेक कर दे। जापानमें बौद्ध धर्म चीनसे आया है। अिसलिअे वहांके साधु यहां आते थे और यहांके साधु सच्चा धर्म अुसके सच्चे स्वरूपमें समझनेके लिअे चीन जाते थे। बलवान और संस्कृति-सम्पन्न चीन देशके सामने सूर्योदयका निप्पोन देश किसी भी गिनतीमें नहीं था। फिर भी जापानी लोगोंने चीन और कोरियासे बौद्ध धर्म लाकर अुसे अपनी विशेषता प्रगट करनेवाला अेक नया रूप दिया।

निचिरेनकी प्रखर प्रवृत्तिसे अुस वक्तकी जापानकी सरकार और भिन्न-भिन्न पंथोंके लोग बड़े परेशान थे। अेक बार तो निचिरेनका सिर अुडा देनेकी सजा भी दी गअी थी, लेकिन अुसमें से वे बच गये। अुन्होंने अेक बार चेतावनी दी थी कि जापानकी धर्मश्रद्धा ढीली हो गअी है और लोगोंमें पक्ष बन गये हैं, अिस कारण विदेशी सेना आकर जापान पर आक्रमण करेगी। अुनकी यह भविष्यवाणी बीस वर्षके अन्दर सच्ची साबित हुअी और जापान बड़ी मुश्किलसे बचा।

कल हम फुकुओका अथवा हाकाटामें आ गये हैं। अभी यहांके सार्वजनिक अुद्यानमें निचिरेन बोधिसत्त्वकी खड़ी भव्य मूर्ति देख आये।

बाकी जो समय मिला अुसमें भगवान निचिरेनके विषयमें थोडा लिखकर यह पत्र तुम्हें भेज रहा हू।

कोबे,
११-८-'५७

कल यह पत्र हाकाटासे नही भेज सका। हमने दोपहरको बारह बजे हाकाटा छोडा और विमान-मार्गसे ढाअी बजे अिटामी पहुचे। विमानमें सेण्डविचका अेक-अेक डिब्बा हमें दिया गया। अुसमें कअी तरहके सेण्डविच थे। स्ट्राबेरी जेमके, आडूके, ककड़ीके, टमाटरके और गाजरके। मुह पोंछनेके लिअे डिब्बेमें कागजका अेक छोटा व कुछ गीला तौलिया भी रखा हुआ था। चीज अच्छी थी। अिस्तेमाल करनेके बाद भी यह कागज फटा नही। कोबे व ओसाका अिन दो शहरोके बीचमें अिटामी बसा हुआ है। वहासे हम श्री टाकुडो फूजी (Takudo Fuji) नामक भक्तके यहा आये हैं। तुम्हें याद होगा कि तीन वर्ष पहले जब हम कोबे आये थे तब हम अेक गुजराती भाअी धर्मदास थानावालाके यहा ठहरे थे। कोबेमें रहनेवाले करीब चालीस पैंतालीस भारतीय अुनके यहां अिकट्ठे हुअे थे। विदेशमें आकर अपने देशवासियोके घरोमें रहना मेरी नीतिके विरुद्ध है। जहा जावें वहा अपने देशके लोगोसे मिलना और अुनके अनुभव जानना यह दूसरी बात है — जरूरी भी है। लेकिन जिस देशमें जायें वहा अुन्हीके घरोंमें रहें तभी वहाकी सस्कृतिके साथ परिचय होता है, आत्मीयता बनती है और आगे चलकर अिसमें से महत्त्वके और बड़े सुन्दर परिणाम निकल सकते हैं।

अिस बार गुरुजीके भक्त और कोबेके प्रतिष्ठित नागरिक श्री टाकुडो फूजीके निमंत्रणसे हम यहा आये है, अिसलिअे अुन्हीके घर पर रहनेकी व्यवस्था है। भाअी फूजीका घर विशाल, सुघड और सुन्दर है। आसपासका छोटा-सा बगीचा भी जापानी कलाका अुत्तम नमूना है। जापानकी अमीराना सादगी हमें यहा देखनेको मिली। भाषाके अभावमें घरके लोगोके साथ बातचीत करना मुश्किल था, फिर भी हमारे बीच कोअी संकोच नही था।

कोबेमें जापानका सबसे बड़ा स्तूप बननेवाला है। भाओी फूजी अिस स्तूप-समितिके अध्यक्ष हैं। अिस समितिकी ओरसे अेक बड़े वस्तु-भण्डार (stores) में हमारे सम्मानमें अेक बड़ी दावत दी गअी थी। साठ सत्तर लोगोंको बुलाया गया था। कोबेमें रहनेवाले बहुत-से भारतीय भाअियोंको भी अिसमें निमंत्रण था। हमारे काअुन्सल श्री सुब्रह्मण्यम्, भाअी थापर और भारतीय मण्डलके अध्यक्ष वगैरा कअी लोग थे। साहित्यिक भाअी वशी तो थे ही। श्री दुर्लभजी खेताणीने मेरे विषयमें अुनको पत्र लिखा था। भोजन-समारम्भमें जो जापानी आये थे अुनमें से दोके ही नाम याद हैं। कोबे विश्वविद्यालयके प्रेसिडेन्ट डॉ० योशीमोटो कोबायाशी और दूसरे कोबे विश्वविद्यालयके विदेशी-विद्या (फॉरेन स्टडीज़) के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रो० किन्जी कानेडा थे। ये नाम अिस-लिअे याद रहे कि वे दोनों बहुत अच्छा बोले थे। श्री कोबायाशीने मेरे भाषणकी और मेरे मिशनकी कदर की थी। प्रोफेसर कानेडा सुन्दर अंग्रेजी बोलते थे अिसलिअे अुनके साथ तो सीधी बहुतसी बातें हो सकी। कोबायाशीने अपने भाषणके अन्तमें जापानी कविताकी अेक दो पंक्तियां गाअीं। अुसका परिणाम यह हुआ कि अेक दूसरे सज्जनको भी कविता गाकर सुनानेका जोश चढ़ा। अुन्होंने अपनी नाकको फुला-फुलाकर गीत सुनाये।

खानेसे पहले और बादमें अनगिनत फोटो भी लिये गये।

भाअी फूजीकी अेक लड़की अिस मंगल प्रसंगके अुपलक्ष्यमें जापानकी राष्ट्रीय ढंगकी पोशाक पहनकर आअी थी। चि० मंजु कहती है कि 'घरके कअी लोगोंकी कअी घंटोंकी मेहनतसे ये बहनजी सज पाअी थीं।'

मेरे भाषणमें धर्म-जागृतिके लिअे गुरुजीने स्तूप बनानेका जो कार्य शुरू किया है अुसका अुल्लेख आना तो स्वाभाविक ही था। पहाड़ीके अूपरवाले स्तूपके स्थान तक मैं जा सकूंगा अैसी अुम्मीद अिन लोगोंको नहीं थी। लेकिन मैंने कहा कि मुझे तो वह स्थान देखना ही है। पहाड़ी पर चढ़ना कठिन होगा तो धीरे-धीरे चढ़ लूंगा। मेरा अितना अुत्साह देखकर भाअी फूजीने चढाअीकी सारी व्यवस्था करनेका जिम्मा लिया। भारतीय भाअियोंने भी अिच्छा प्रकट की कि

हम भी अपने-अपने वाहन लेकर आयेंगे। पर दिक्कत यह थी कि कोअी भी मोटर अिस कड़ी चढ़ाअी पर चढ नही सकती थी। श्री फूजी अूनी धागेकी अेक बडी कम्पनीके डायरेक्टर थे। अत· अनुकूल व्यवस्था करनेकी शक्ति अुनमें थी। अंतमे यह तय हुआ कि अेक जीप पहले हमें अूपर ले जायेगी और फिर वही वापस आकर औरोको भी ले जायगी।

खानेके विषयमें वताना तो रह ही गया। जापानमें चीनी रसोअी स्वादके लिअे प्रख्यात है, अिसलिअे अिस बड़ी दावतमें खास चीनी रसोअियोको वुलाकर अुनके ढगकी वानगियां वनवाअी गअी थीं। हम शाकाहारियोके लिअे विशेष मेहनत की गअी थी। अेकके वाद अेक स्वादिष्ट वानगिया आती ही जाती थी। थोड़ा-थोड़ा करके भी हर आदमीने अितना खाया कि वेचैनी होने लगी, फिर भी वानगिया तो खतम ही नही हुअी। तरह-तरहके मशरूम, कितने ही प्रकारके चावल, स्वादिष्ठ सी-वीड्स यानी समुद्रमें मिलनेवाले सब्जीके प्रकार, सिघाड़े और सोयावीन थे। अेक सोयावीनसे ही कअी तरहकी चीजें वनायी गअी थीं। समुद्र-स्नानमें अेकके वाद अेक आनेवाली लहरोंसे जिस तरह तवीयत घवडाने लगती है वैसी ही हमारी स्थिति हुअी। भूरे कद्दुओको, जिनसे पेठेकी मिठाअी वनती है, पेटमें अनेक मसाले भरकर पकाते हैं; फिर सारा भीतरी भाग खरोंच-खरोंचकर खाया जाता है। वह भी यहा मौजूद था। आठ वजे खानेको पहुचे थे सो वह साढे दस तक चला और घर आते-आते तो ग्यारह वज गये।

आज सुवह नौ वजे हम मोटरमें वैठकर पहाड़की तलहटी तक पहुचे। वहासे जीपमें वैठकर अूपर गये। चढाअी काफी कड़ी थी। वीच-वीचमें रास्ता पिछली रातको और सुवह ही ठीक किया गया हो अैसा स्पष्ट दिखाअी दे रहा था। हमारे साथ भाअी वशी, अुनकी पत्नी कान्तावहन तथा अुनकी लड़की कुजवाला थी। तीनोको वढ़िया जापानी वोलना आता था। अिस कारण वड़ी सुविधा रही। अूपर पहुचकर देखा कि वहा पहाडीको खोदकर आवश्यकतानुसार अेक मैदान तैयार किया जा रहा था। पास ही अेक जगह पहाड़ीका शिखर

शिव-लिंगकी तरह रखकर अुसके आसपास रास्ता बना दिया गया था। अेक तरफ कोबे और दूसरी तरफ ओसाका अिन दोनो शहरोकी यहासे खासी अच्छी झाकी मिलती थी और सामने, दूर, विशाल समुद्र फैला हुआ था।

अिस स्थानसे प्रभावित होनेके कारण अुसके प्रति मेरी श्रद्धा बढी और वहा बोलते हुअे मैंने कहा "मैं देख रहा हूं कि यह स्थान जापानकी भावी धर्म-प्रेरणाका केन्द्र बनेगा। समुद्रके जहाज दूरसे ही अिस स्तूपको देख सकेंगे और अंगुली बताकर अेक-दूसरेका ध्यान अिस ओर खीचेंगे। हो सके तो अिस पहाड़ी पर अेक दीप-स्तम्भ बनाना चाहिये, जिससे दूर-दूरके जहाजोको मालूम हो सके कि वे कोबेके स्तूपके आस-पास ही कही है। भले ही टोकियो जापानकी राजधानी हो, नारा भले ही जापानका साहित्यिक और सास्कृतिक केन्द्र हो, लेकिन कोबे तो जापानकी धर्म-धानी बननेवाला है।"

यहां अेकान्त तो कहासे मिलता? फिर भी जरा अेक ओर जाकर बैठा। सृष्टिके अिस सौंदर्यको कुछ देर निहारा और फिर अन्तर्मुख होकर मनमें प्रार्थना की कि अितने सब सज्जनोंके शुभ सकल्प यथा-समय सिद्ध हो।

स्तूपकी जगह देखकर हम नीचे अुतरे और भाअी बशीके यहा खाना खाने गये। वहा आये हुअे लोगोंके साथ काफी बातें हुअी।

वहासे श्री फूजीके यहा होते हुअे हम हवाअी अड्डेके लिअे निकले। श्री फूजीने हम तीनोको अेक-अेक कीमोनो भेंटमें दिया। शामको करीब चार बजे तक हम टोकियो पहुच गये।

कोबेसे टोकियो आते हुअे रास्तेमें बहुत कुछ देखनेको मिला। बाअी ओर जापानकी पहाड़ी भूमि व अुसके बीचके छोटे-मोटे शहर और दाहिनी ओर बडी दूर तक प्रशान्त महासागर। सभी कुछ बडा भव्य और काव्यमय था। लेकिन स्मृतिमें अकित किया हुआ तो बस अेक ही चित्र है और वह है जापानके पितामह फूजीयामा पहाडके शिखरका दृश्य। क्या ही अद्‌भुत है अुसकी गौरवोन्नत शोभा! मैंने अकसर देखा है कि प्रकृतिको जिस शिखरकी प्रतिष्ठा बढानी होती है अुसे जरा

नीचे जाकर चारों ओरसे बादल आ घेरते है, जिससे हमें यही भास हो कि यह शिखर पृथ्वीके आधार पर यहां नही खडा हुआ है, यह तो अेक स्वर्गीय विमान ही है। पृथ्वी पर अनुग्रह करनेके लिअे ही यह अुसके अितने पास आ गया है। अिस शिखरके दर्शनका वर्णन अुसकी प्रतिष्ठा रखनेके खातिर भी अेक अलग पत्रमें ही लिखना होगा। अिसके बादका पत्र अिसे ही अर्पित होगा।

मेरा अिस पहाड़के प्रति प्रेम और पक्षपात तुम जानती ही हो। तीन वर्ष पहले फूजीयामाके दर्शनके लिअे हमने कितनी परेशानी अुठाअी थी यह भी तुम्हें याद होगा। अिसलिअे फूजीयामाके शिखरके दर्शनसे हमें कितना आनन्द हुआ, यह तुम समझ सकोगी।

२७

फूजीयामाके दर्शन

टोकियो,
१३-८-'५७

सारे ही पहाड़ अुन्नतिके प्रतीक होते हैं। ये स्वयं तो अूपर अुठे हुअे होते ही है, साथ ही देखनेवालेको भी अूपर चढनेका निमंत्रण देते रहते है। अृषि कहेंगे कि पहाड़ निमत्रण नही, दीक्षा देते है। पुराणकार कहते हैं कि प्राचीन कालमें पहाड़ोके पख होते थे और वे आकाशमें अुड़कर चाहे जहां जा बैठते थे।

आकाशसे गिरा हुआ अेक ककर भी बढ़कर अेक पर्वत बन जाता था। कहा जाता है कि श्रीनगर (काश्मीर) का हरि पर्वत और शकराचार्यकी पहाड़ी अिसी तरह कंकरसे बढ़कर बड़े पहाड़ बन गये हैं। पैदल या किसी भी वाहनमें बैठकर जब हम सफर करते है तब लगता है कि मानो पर्वत भी हमारे साथ ही साथ धीरे-धीरे आगे चल रहे हैं। नदी दौड़ती है, पहाड़ स्थिर रहता है। फिर भी मनुष्यको अिन दोनोका साथ तो मिलता ही रहता है।

ये पहाड कभी तो दो प्रदेशोंके बीचमें सीमा बना देते हैं और कभी तम्बूके खम्भेकी तरह सारे प्रदेशको अेक अुन्नत-अुत्तुंग केन्द्र प्रदान करते हैं। स्पेन, पुर्तगाल और फ्रान्सके बीचमें यदि पिरिनीज़ पर्वत न होता तो वह अेक ही देश माना जाता। अिग्लैंड व स्काटलैंडके बीच भी विभाग करनेवाला अेक पहाड़ है ही। स्वीडन व नार्वेके बीचमें भी अैसा ही है। हमारा हिमालय तो भारत और चीनके बीचकी अेक सनातन और भव्य सीमा है। लेकिन आबू और अरावली पर्वत पूरी सीमाअें नहीं बनाते। कच्छका ननामा, सौराष्ट्रका गिरनार तथा चोटीला और बडोदाके पासका पावागढ आदि कअी पहाड तो गोपुरकी तरह अूंचाअी धारण करके अपने आशीर्वादसे आसपासके प्रदेशका रक्षण करते हैं।

सभी पहाडोंका समान आकर्षण होते हुअे भी कुछ पहाड तो मेरे मन पर चिरस्वप्नकी तरह छाये रहते हैं। हिमालयके अुस पारका कैलास हम भारतीयोंके लिअे अेक चिरस्वप्न ही है। अुसे तो चिरस्वप्न न कहते हुअे सनातन स्थिर स्वप्न ही कहना चाहिये। अिस पहाड़के दर्शनकी हमारी आकांक्षा अुतनी ही पुरानी है जितनी हमारी संस्कृति। नन्दा देवी, नन्दा कोटा व त्रिशूल वगैरा हिमालयके शिखर मनको अिसी तरह पागल कर देते हैं। फिर, अुनके दर्शन न हो तब तक शांति नहीं मिलती। कांचनजंगा भी अैसा ही अेक पहाड है। सिक्किमकी राजधानी गंगटाक जाकर काफी दिनों तक रोज सुबह अुसका दर्शन किया तब कहीं दिलका वह नशा अुतरा।

अैसा ही अेक और पहाड, जिसकी मुझे धुन लग गअी थी, था पूर्व अफ्रीकाका किलिमान्जारो। बचपनमें पहाडोंके नाम रटते हुअे अुसका नाम बड़ा मजेदार लगता था। बादमें अफ्रीका जाकर आये हुअे लोगोंसे अुसके विषयमें सुना भी। फिर तो किलिमान्जारोके साथ-साथ मनमें मेरु और रुअेनझोरीका आकर्षण भी जुड़ गया। आखिर अेक दिन नैरोबीसे काफी दूरसे ही अुसके अस्पष्ट गुलाबी दर्शन हुअे। पर अिससे तो अुसकी भूख और भी अधिक बढ गयी। जब अुसके पास जाकर अुसके दर्शन किये तब मैं अेक मद्यमत्त मनुष्यकी तरह ही काव्य-मत्त बन गया था। मैंने अुसकी प्रदक्षिणा भी की। अुसके विषयमें

जो कुछ अुपलब्ध था वह सब पढ डाला। अपनी पुस्तकमे अुसके विषयमें लिखा। तब कही अुसका भूत मेरे मनसे अुतरा।

जापान तो पहाडी मुल्क ही ठहरा। यहा भला पहाडोकी क्या कमी! अेकसे अेक सुन्दर पहाड़ोकी शरणमें जो समतल भूमि अिधर-अुधर फैली हुअी है, अुसी पर यहाकी प्रजा अपना गुजर चलाती आअी है।

अैसे अिस पहाडी प्रदेशमे भी अेक पहाड़ अपनी गर्वोन्नतिके कारण सबसे बिलकुल अलग खड़ा है। अिसीका नाम फूजीयामा है। फूजी यानी अेकाकी, अद्वितीय और यदि यह फूजी नाम यहाके आदिवासी आयनु लोगोका रखा हुआ हो तो अुसका अर्थ होता है, अग्निदेवी। जैसे हमारा ध्यानमूर्ति पहाड़ कैलास है, वैसे ही जापानियोका फूजीयामा। यह पहाड सब तरहसे बडा व्यवस्थित है। चारो ओर अेक समान फैला हुआ है और अिसका अूचा मस्तक तो बडा ही मनोहर है। कैलास और किलिमाजारोकी तरह अिसके मस्तक पर भी श्वेत हिम-मुकुट है। जापानमे जहा देखो वही अिस पहाड़के चित्र और प्रतीक दिखाअी देते हैं। पर्दो पर और बर्तनो पर, पखो पर और कागजोके दीपो पर फूजीयामाके चित्र तो होते ही हैं।

जापानकी यात्रा करें और फूजीयामाके दर्शन न करें यह तो अेक असभव-सी बात है। फिर भी जब मैं सन् १९५४में जापान आया था, तब अनेक प्रयत्न करने पर भी हमें फूजीयामाके दर्शन न हो सके थे। अुस समय हवा अितनी धुवली थी कि आंखें व कल्पना दोनोने अुसे देखनेके प्रयत्नकी पराकाष्ठा कर डाली, तो भी विश्वाकाशमें अथवा हृदयाकाशमें फूजीयामाकी आकृति दिखाअी नही दी। हमने ठेठ दक्षिणमें कुमामोतोसे आसो जाकर वहाका अद्भुत ज्वालामुखी पर्वत देखा, नारा व क्योटोकी सस्कृति देखी और हिरोशिमाका सर्वनाशी कुरुक्षेत्र भी देखा। लेकिन जापान आया था यह कहनेसे पहले मेरा मन ही मुझे पूछ बैठता कि तुमने फूजीयामा कहा देखा है?

अिस बार जब निप्पोनकी यात्रा तय हुअी तब मैंने श्री ओमाअी-सानको लिखा कि अबकी ये दो चीजें तो टाली ही नही जा सकतीं:

अेक तो फूजीयामाके दर्शन करना और दूसरी नागासाकीके सर्वनाश और पुनर्जीवनको निहारना। मैंने यह भी लिख दिया था कि पिछली बार हमने टोकियोसे दक्षिणमें जाकर आधा निप्पोन देखा था। अिस बार अुत्तरका होक्कायडो द्वीप जरूर देखना है ।

अिस संकल्पके अनुसार टोकियो आते ही प्रथम हम अुत्तरमें गये। होक्कायडोके पहाड़, नदी और सरोवर देखे। नये स्तूपोंके सकल्पित स्थान देखे और तब फिर हम धीरे-धीरे दक्षिणकी ओर अुतरे। फूजीयामाके दर्शनकी अुत्कण्ठा तो बढती ही गअी। लेकिन अिस बार भी अुसके दर्शन दुर्लभ ही रहे। भाग्यके साथ हवा भी प्रतिकूल हो तब और क्या हो सकता था? लेकिन अेक दिन अगस्तकी तीन या चार तारीखके करीब श्री ओमाओी-सानने ट्रेनमें से ही फूजीयामाके दर्शन कराये। हवा बिलकुल स्वच्छ थी। फूजीयामाकी आकृति आकाशमें से बिलकुल कोर-कर गढी गयी हो अैसी दिखाओी दे रही थी। रंग गहरा हरा था। लेकिन अुसके सिर पर बरफका नामोनिशान भी नही था। अेक ही क्षणमें धन्यता और निराशा दोनोंका अेक ही साथ अनुभव हुआ। वर्षोंसे जिसके दर्शनकी रटन लगी हुअी थी वह फूजीयामा दिखाओी तो दिया। लेकिन अैसा? बिलकुल कोरा, हिम-शून्य। तुरन्त ही किलि-माजारोके पासका मेरु पहाड याद आया । अपने मनको काफी सम-झाया कि बरफ न हो तो न सही, पर फूजीयामा तो आखिर फूजीयामा ही है। वह देखो कितना अूचा, गठीला और बिलकुल वरदानके समान दिखाओी दे रहा है! आखोंने तो अुसके शिखरकी छविको अपने भीतर अुतार लिया। पर यह बावला मन कहने लगा: "सब ठीक है, पर बरफ कहा है? फूजीयामा भी कही बिना बरफके हो सकता है? खैर। चाहे जो हो, लेकिन वह तो दृष्टिके सामने स्पष्ट ही खड़ा था। ओमाओी-सानने बताया कि अभी आगे दो-तीन बार और फूजी-यामाके दर्शन होंगे। मैंने अुनसे पूछा कि क्या दो-तीन दिनमें अुसके सिर पर बरफ दिखाओी देनेकी कोओी सम्भावना है? अुन्होंने कहा, "अुनके मस्तकके द्रोणमें तो बरफ होगा ही, लेकिन वह नीचे से दिखाओी नही दे सकता।"

तुरन्त ही मुझे कालिदासका अेक वचन याद आया, जिसमें अुन्होंने पहाड़के शिखर पर वरफका होना अेक दोष ही वताया है और आश्वासन देते हुअे कहा है कि अिस दुनियामें नितात सुन्दर वस्तु हो ही कैसे सकती है? कही तो कमी रहेगी ही। मनमें आया कि यदि आज कालिदास यहा होते तो वे कहते कि धन्य है आजका दिन कि जव मैंने विना वरफका फूजीयामा देखा! लेकिन मै तो कालिदास नही हू। मुझे तो काका ही रहना है। विना वरफका फूजीयामा मेरे ध्यानका फूजीयामा नही है। अिसलिअे मैं तो अधन्य ही हू।

अितनी अुधेड़-वुनके वाद मैंने अपने मनको समझाया कि जो नही है अुसका अफसोस करनेके वदले जो है अुसका आनन्द लूटनेका अवसर क्यो खोता है? आखिर मेरे मनकी खिन्नता दूर हुअी और तव कही वह फूजीयामाकी वीत-हिम शोभा निहारने और अुसकी कदर करनेके लिअे तैयार हुआ।

हमने चलती ट्रेनसे जितनी वार दर्शन हो सके अुतनी वार फूजीयामाके दर्शन किये और संतोष माना। अुसके वाद फिर फूजीयामाके दर्शन हुअे ही नही। मेरे जैसे कृतघ्नको दर्शन दे भी कौन? फूजीयामाको जरूर कुछ अैसा ही लगा होगा। अेक वार तो हम फूजी नामके अेक जंक्शन पर भी अुतरे। कोवेमें फूजी नामके अेक भाअीके घर पर भी रहे, लेकिन फिर भी फूजी-दर्शनकी पूरी तृप्ति नही हुअी सो नही ही हुअी। आखिर मेरी फूजी-भक्ति कुछ परिपक्व हुअी और केवल हिम-वेष्टित शिखर देखनेकी धुन दूर हुअी। और तव कोवेसे टोकियो आते हुअे विमानसे फूजीयामाके शिखरके अद्‌भुत दर्शन हुअे! विमानके यात्री अुत्कण्ठासे कुछ देखने लगे। अिसलिअे हमने भी अुधर देखा। समुद्र परके पहाडोंको वेधकर खुले आकाशमे फूजीयामाका मस्तक विराजमान था। जमीनसे देखने पर फूजीयामाके द्रोणकी कोर दिखाअी नही देती। विमानमें अितनी अूचाअी पर आनेके वाद अिस द्रोणकी खुरदरी कोर कुछ स्पष्ट हुअी। विना कहे ही आंखोका भाव वोल अुठा: "आज सचमुच कुछ अद्‌भुत देखा!"

हवाअी जहाजकी खिड़कीसे नीचे चमकता हुआ समुद्र दिखाअी दे रहा था। अुससे जरा आगे कुहरे और वादलोका अेक पर्दा-सा वना

हुआ था। अुस पर्देके अूपर खुले स्वच्छ आकाशमें फूजीयामाका शिखर अिस प्रकार शोभा दे रहा था, मानो वह सीधा आकाशसे ही अुतरा हो और अुसका पृथ्वीके साथ कोअी सम्बन्ध ही न हो। अितनेमें मात्स्यामा दौड़े-दौड़े आये और हमें बताने लगे कि वह देखो अुधर फूजीयामा दिखाअी दे रहा है। मैंने कहा "मैं तो कभीका अुसे ही देख रहा हू। अितनी अूचाअीसे फूजीयामाका शिखर देखनेको मिले यह कोअी सामान्य आनन्दका प्रसग नही है।"

सचमुच फूजीयामा निप्पोन देशके गौरवका अेक प्रतीक है। निप्पोनके अभिमानका यह आश्रय-स्थान है। यह केवल पत्थरसे बना हुआ और बरफसे ढका हुआ पार्थिव शिखर ही नही है, अपितु निप्पोनके सास्कृतिक हृदयका अभिमानी देवता है। जब तक यह शिखर है तब तक अिस जातिको अपने भाग्यके विपयमें निराश होनेका कोअी कारण नही है। जापानकी संस्कृतिमें जो कुछ अुच्च, अुदात्त, भव्य और स्थायी है, अुसकी दीक्षा देनेके लिअे यह शिखर सब तरहसे समर्थ है।

२८

विराट सम्मेलन

टोकियो,
१२–८–'५७

कल शामको हम हानेडा—टोकियो पहुचे। वहासे हम सीधे किनोकुनियावाले अपने पुराने गृहपति मासुअी बन्धुओंके यहा रहने गये। यहासे तुरन्त ही टोकियो स्टेडियममें जाकर शाति-परिषद्में भाग लेना था। वहा पहुंचते ही मालूम हुआ कि भारतीय प्रतिनिधि-मण्डलकी अग्रणी श्रीमती रामेश्वरीजी परिषद्में नही आनेवाली हैं। सारे दिन कअी जगह जाना पडा अिससे वे थक गअी थी। अिसलिअे भारतकी ओरसे बोलनेका काम मेरे जिम्मे आ पडा। अुसके बारेमें कहनेसे पहले कुछ प्राथमिक बातें बता दू।

तारीख २३ व २४ जुलाअीको जब मैं अिन्टरनेशनल प्रीपेरेटरी कमेटीमें गया तब अुन लोगोंकी अपेक्षा थी कि अुसी समयसे मैं परिषद्के

कार्यमें भारतकी ओरसे रस लूंगा। अिसी आशासे अुन लोगोंने मुझे अपनी समितिका अुपाध्यक्ष चुना था। अध्यक्ष प्रो० काओरु यामुअी थे। ये निप्पोन विश्वविद्यालयमें राजनीति विभागके अध्यक्ष हैं। ये अुत्साही, गम्भीर तथा अपने कार्यमें चतुर हैं। आस्ट्रेलियाके श्री विलियम मॉरो जनरल सेक्रेटरी थे। ये भी मजे हुअे कार्यकर्ता हैं। चीन, रूस आदिके प्रतिनिधि अुत्साहसे काम कर रहे थे। अुसी वक्त मैंने अुनसे कहा था कि जागतिक परिषद् शुरू होगी तभी मैं अुसमें भाग ले सकूंगा। मुझे निप्पोनमें सर्वत्र घूमकर जन-सम्पर्क बढ़ाना है; परिषद्के कार्यसे जन-सम्पर्कका कार्य मुझे अपने लिअे अधिक महत्त्वका लगता है। और जिनका मेहमान बनकर मैं आया हूं वे भी यही चाहते हैं कि निप्पोनमें सब जगह घूमकर मैं अुनकी प्रवृत्तियोंका निरीक्षण करूं और भारतकी ओरसे अुन्हें प्रोत्साहन दूं। मैंने यह भी बता दिया कि भारतके प्रतिनिधि मेरी अिस भूमिकाको जानते हैं और अिसीसे अुन्होंने प० सुन्दरलालजीको भेजनेका विचार किया है। वे आते ही पूरे समय आपके साथ रहेंगे।

यह सफाअी सुननेके बाद समितिके सदस्योंने मुझे मुक्त कर दिया। प० सुन्दरलालजी आते ही प्राथमिक तैयारीकी समितिमें और व्यवस्था-समिति (Steering committee) में कार्य करने लगे।

८ अगस्तको नागासाकीकी शाखा-परिषद्में भाग लेनेके बाद कोबे होकर मैं ११ की शामको टोकियो पहुंचा। तब तक भारतके सब प्रतिनिधि आ पहुंचे थे। बारहको मुख्य परिषद् शुरू होनेवाली थी। मैं अंतरंगका सदस्य मिटकर मानो बाहरका सदस्य बन गया था। यदि मैं अन्दर घुसनेका जरा भी प्रयत्न करता तो वह मेरे लिअे आसान था, लेकिन मेरे कानकी दिक्कतका मुझे खयाल था। जापानी सदस्योंके साथ भाषाकी कठिनाअी, चीनी और रूसी प्रतिनिधियोंके साथ मिलने-जुलनेमें भी यही दिक्कत और कानसे सुनता हूं कम। अिन असुविधाओंके कारण बड़ी-बड़ी समितियोंमें काम करना अेक परेशानी ही हो जाती। मुख्य नीतिके विषयमें मेरा मतभेद था ही नहीं। कअी सदस्योंके साथ बातचीत करते हुअे मैं समझ गया था कि परिषद्में जागतिक लोकमत

अुग्रतासे व्यक्त करना और यू० अेन० ओ० (U.N O) के अूपर दबाव डालकर अुसके द्वारा कार्य कराना अितना ही अिस परिषद्का अुद्देश्य है।

जून मासके दूसरे सप्ताहमें कोलम्बोमें जो जागतिक शांति परिषद् हुअी थी, अुसमें अनेक देशोंके प्रतिनिधियोंके साथ चर्चा करके शांतिवादियोंका रुख मैंने जान लिया था। मैं मानता था कि जब यू० अेन० ओ० की शक्ति दूसरी तरह खर्च हो रही है और अुसमें अमेरिका, रूस, ब्रिटेन आदिकी सरकारोंकी शक्ति और नीति ही प्रमुखतासे कार्य कर रही है, तब अुसके सदस्यों पर असर डालनेका प्रयत्न विशेष सहायक नहीं होगा। दुनियाकी छोटी-बड़ी सरकारोंकी मर्यादाअें समझ कर यदि हम जागतिक जनताकी शक्ति जाग्रत करें और अुस प्रयत्नमें स्वेच्छासे त्यागपूर्वक कष्ट अुठायें, तभी अेक नअी नैतिक शक्ति अुत्पन्न होगी। अुसके बलसे हम भिन्न-भिन्न सरकारों पर प्रभाव डाल सकेंगे, यह मेरी भूमिका थी। दुनियाके लोग शांति चाहते हैं, अेटम-बमसे व्याकुल हैं, वगैरा लोकमत तो हमने कअी बार प्रकट किया है। अुसमें कोअी नवीनता नहीं है। अलग-अलग देशोंमें अेकत्र होकर अुन्हीं प्रस्तावोंको पास करें तो हम स्थानीय लोक जागृतिमें मददगार हो सकते हैं, लेकिन अुससे प्रगति होनेवाली नहीं है। अुलटे अैसी छाप पड़ेगी कि जगतकी जनताका अभिप्राय निर्वीर्य है, और अुसके पीछे कार्यकारी बल नहीं है। अिसलिअे हमें जनताकी ओरसे कोअी कार्यक्रम बनाना चाहिये और अुसे हर देशमें बारहों महीने चलाना चाहिये। अिस तरहकी भूमिका व नीति कोलम्बोमें प्रतिनिधियोंके सामने मैंने रखी थी।

मैंने देखा कि रूस और चीनके प्रतिनिधि असलमें अपनी-अपनी सरकारके ही प्रतिनिधि थे। भारतकी नीति सब तरहसे अनुकूल और स्पष्ट थी, अिसलिअे भारत-सरकार पर दबाव डालनेका सवाल ही नहीं था। भारत-सरकार सत्याग्रहका रास्ता स्वीकार करे और अमरीकाकी मदद लेनेसे अिनकार कर दे, अिस तरहका कुछ सुझाव राजाजीने दिया था। भारत-सरकारको यह मान्य नहीं था। कोलम्बोमें दिया हुआ मेरा सुझाव कुछ अधिक व्यापक था और अमलमें लानेके लिअे अधिक सुविधाजनक था।

भारत जैसा अेक देश अमरीकाकी मदद लेनेसे अिनकार करे तो अुससे जागतिक परिस्थिति पर जो असर होगा अुसके वजाय वहुतसे शातिवादी राष्ट्र अेकमत होकर अमरीका, रूस व ब्रिटेन अिन तीनो अेटम-शस्त्रोका प्रयोग करनेवाले राष्ट्रोसे मदद लेना वन्द करें, तो अेक वडी प्रभावशाली परिस्थिति निर्माण हो सकती है। अैसा हो तो फिर जागतिक जनताके अभिप्रायकी अुपेक्षा नही हो सकेगी। यह मेरे सुझावका सार था।

लेकिन भारतके प्रतिनिधि ही अिस भूमिकाको स्वीकार करनेके लिअे तैयार नही थे। गांधीजीका नाम लेना, अुनके अहिंसक प्रतिकारके सिद्धान्तोका वखान करना और साथ ही रूसकी नीतिको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहारा देना, वस अितना ही भारतके प्रतिनिधियोको सूझता था।

कोलम्वोके अनुभवोके वाद टोकियोमे मेरा अुत्साह काफी ढीला पड गया था। जापानके प्रतिनिधि मेरी भूमिका समझें या अुसे स्वीकार करें अैसा सम्भव नही था, अिसलिअे जापानने वारह वर्षोंमें जो कष्ट झेले अुनके लिअे अुसके प्रति सहानुभूति दिखाना और अेटम-वमके विरुद्ध व जागतिक युद्धोके विरुद्ध लोकमत व्यक्त करना अितना ही काम वाकी रह जाता था। वस, अिस हद तक परिषद्में भाग लेकर संतोष मानना अैसा मैंने अपने मनमें तय कर लिया था। और अिसी भूमिकाके अनुसार परिषद्में मै दो-तीन वार वोला। यहां हरअेक भाषणका भाषांतर सारी श्रोता-मडलीके लिअे जापानीमें होता था और वाकी लोगोके लिअे अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, चीनी वगैरा भाषाओमें अनुवाद होते थे। ये अनुवाद जिस भाषामें सुनना हो अुसी भाषाकी कर्णिका (Hearing aid) पहननेसे लोगोको सुनाअी देते थे। जो अपना भाषण पहलेसे लिखकर छपा लेता अुसका प्रचार अधिक होता था। संचालक लोग जिस वस्तुको महत्त्व दें अुतना भाग रिपोर्टमें दाखिल हो जाता है। अिस प्रकार अिन परिषदोंकी रचना होती है। अनेक देशोके विभिन्न भाषा-भाषी प्रतिनिधि अिकट्ठे होते है, तव कोअी भी प्रतिनिधि विशेष कुछ कर ही नही सकते। समितियोमें जरूर थोडी-वहुत चर्चा हो जाती है। सामान्यतया जागतिक विचारके अमुक नेता जो दृष्टि प्रदान करते है अुसके अनुकूल प्रस्ताव

ही अैसी परिषदोंमें पास होते हैं। आग्रही सदस्य प्रस्तावोंकी भाषामें थोड़ासा हेर-फेर करा सकते हैं। कओी प्रस्ताव महत्त्वके भी होते हैं। जिन्हें पूरे वर्ष प्रचार करना होता है अुनके लिअे ये प्रस्ताव और अुनकी शब्द-रचना सबसे अधिक महत्त्वकी होती है।

ग्यारहकी शामको भिन्न-भिन्न देशोंके प्रतिनिधियोंका स्वागत और अुनके परिचयका ही काम था। अुसके बाद नृत्य, नाटच आदि रंजनात्मक कार्यक्रम रखा गया था। वह बहुत ही आकर्षक था।

शामकी परिषद्में मैं अकेला ही गया था। मंजु और रेवती घर पर ही रह गयी थीं। रंजनात्मक कार्यक्रमके लिअे मैंने अुन्हें टेलीफोन द्वारा बुलानेका प्रयत्न किया, लेकिन वह सफल नहीं हुआ। टोकियो यानी स्थानोंके बीच बहुत बड़े अन्तरवाला नगर। अेक जगहसे दूसरी जगह जानेमें काफी वक्त लगता है। अकेले बैठकर रंजनात्मक कार्यक्रमका आनन्द लेनेकी अिच्छा नहीं हुआी, अिसलिअे यह सब छोड़कर मैं मुकाम पर गया। विदेशमें मनोरंजनके लिअे रातको जागना और फिर दूसरे दिनके कार्यक्रमके लिअे तैयार रहना यह मुझे पुसा नहीं सकता था।

अिसके बाद मुख्य परिषद् शुरू होनेवाली थी।

जागतिक परिषद्का कार्य वैसे तो ६ तारीखसे शुरू हुआ, लेकिन परिषद्का विधिवत् प्रारम्भ आज १२ को हो रहा है। अिसके लिअे जो स्थान पसन्द किया गया है वह टोकियो जैसे दुनियाके प्रथम पंक्तिके शहरके लिअे भी बड़ा भव्य कहा जा सकता है। यह स्थान टोकियो जिमनेशियम (Tokyo Gymnasium) नामसे प्रख्यात है। हजारों लोगोंका अिसमें आसानीसे समावेश हो जाता है। सभा-मंच लम्बाओी व चौड़ाओीमें अितना बड़ा है कि परिषद्की सुविधाके लिअे पीछे अेक खास पर्दा लगाया गया है। युद्धमें विश्वास रखनेवाले और जागतिक युद्धोंकी नीति घड़नेवाले लोग अिस परिषद्में आते, तो अुनको विश्वास हो जाता कि दुनियाके लोग युद्धसे सचमुच कितने परेशान हैं और शांतिकी कितनी तीव्र आकांक्षा रखते हैं।

केवल प्रतिनिधियोकी ही गणना करें तो निप्पोनके ही प्रतिनिधि करीव चार हजार थे। वाहरसे आये हुअे प्रतिनिधियोमें छब्बीस देश और दस आन्तर-राष्ट्रीय सस्थाअें शामिल हुअी थी। भारत, चीन व निप्पोनके दक्षिणमें आये हुअे आस्ट्रेलियाके प्रतिनिधि सवसे अधिक सख्यामें थे। अिन तीनो देशोमें से प्रत्येक देशके प्रतिनिधि अेक दर्जनसे अधिक थे, जव कि रूसके व अमरीकाके मिलकर अेक दर्जन होते थे। कोरिया व मगोलियासे पाच-पाच आवें अिसमें आश्चर्य नही। लेकिन मिस्रसे छह प्रतिनिधि आये थे, यह विशेप ध्यान आकृष्ट करनेवाली वात थी। अिग्लैण्ड व फ्रान्ससे चार-चार आये; ये अपेक्षासे कम नही थे। लकाने तीन भेजे थे, यह अुसके लिअे शोभाकी वात थी।

दूसरे ढगसे जाचें तो अिन करीव सौ गैर-जापानी प्रतिनिधियोमे से सोलह तो अलग-अलग धर्मोके प्रतिनिधि थे। चौदह थे लेखक व पत्र-कार, दस थे समाज-सेवक। शातिकार्यको ही जिन्होने अपना जीवन अर्पण किया है अैसे आठ प्रतिनिधि थे। खास ध्यान खीचनेवाली आठकी सख्या थी — विज्ञान-शास्त्रियोकी। मजदूर-दलके नौ थे, जव कि व्यापारियोके प्रतिनिधि कुल तीन थे। डॉक्टरोमें से सात थे, तो वकीलोमें से दो। थोडे-वहुत कुछ और भी थे। विदेशोसे आनेवालोमें स्त्रियोकी पद्रहकी सख्या नगण्य नही कही जा सकती।

सम्मेलनका सवसे पहला खुला अधिवेशन (Plenary session) आज १२ अगस्तको सवेरे साढ़े नौ वजे शुरू हुआ। समय-समय पर अध्यक्षका काम करनेके लिअे अिकहत्तर सदस्योको चुना गया था। अुनमें छत्तीस जापानी थे और पैंतीस वाहरके थे।

आज तो सदेश-वाचन और प्रास्ताविक भापण — यही दो मुख्य काम थे। अुसके वाद सारी परिषद्के पाच विभाग किये गये। आये हुअे लोगोंको नीचेके दलोमें वाटा गया . स्त्रियोंका मण्डल, धार्मिकोका मण्डल, विद्यार्थियोका मंडल, युवकोका मण्डल, अेटम-वमसे पीड़ित लोगोंका मंडल, नगरपालिकाओका मंडल, व्यापारियोंका व कारखानेवालोका मडल और मजदूरोका मंडल।

आज सुबह दस बजे कार्य शुरू हुआ। हम विदेशसे आये हुअे प्रतिनिधि अपने-अपने देशके अनुसार नियत किये गये स्थान पर बैठे। प्रत्येक भाषणका अंग्रेजी अनुवाद कान पर चढाअी हुअी बिजलीकी कर्णिकाके द्वारा बराबर सुनाअी देता था। लेकिन अगर कोअी प्रतिनिधि मूलत अंग्रेजीमें बोलने लगता तो अुसका भाषण हमारी कर्णिकामे सुनाअी नही देता था!

लोगोंके चेहरे मुझे याद नहीं रहते। यह कठिनाअी भारतमें जितना तग करती है अुसकी अपेक्षा विदेशमें और भी अधिक तग करती है। अमुक चेहरा जापानी नही है, यूरोपीय है अितना ही पहचाना जाता था। यूरोपीय और अमरीकीके बीच तो भेद होता ही नही। जिनके साथ दस दिन पहले विस्तारसे खूब चर्चा की हो और अुनके दृष्टिकोणकी कदर भी की हो, वही सज्जन फिरसे मिलें और अुन्हें मैं पहचान न सकू तब बडी ही परेशानी महसूस होती है। और फिर लज्जाके कारण किसीसे मिलनेका अुत्साह भी नही रहता। स्वदेशमें तुम साथ रहती हो और बताती रहती हो कि अमुक सज्जन अमुक समय पर मिले थे तब तो सब ठीक चलता है। अेक बार नाम जानने पर तो पुरानी चर्चा आदि सभी बातें याद आ जाती हैं। बातोकी या प्रसगोकी स्मरणशक्ति जरा भी कम नही हुअी है। केवल चेहरे भर याद नही रहते। अिसलिअे सामनेवाला आदमी भी परेशान होता है। अपनी यह स्थिति मैं अब लोगोको पहलेसे ही समझा देता हू, जिससे गलतफहमी न हो। अिस तरह गलतफहमी तो नही होती, लेकिन पूर्व-परिचयकी प्रतीतिके कारण जो सहानुभूति होती है अुसके अभावमें बातचीत जमती नही। अिसलिअे मैंने अब तय किया है कि किसी भी सभा या समितिमें जानेका मोह नही रखना चाहिये। चीनमें जानेका निश्चय हुआ है सो वहा हो आअूगा। फिर तो घर बैठे कोअी मिलने आये अथवा हम किसीसे मिलने जायें, अितनेसे ही सतोष मानना होगा।

अिस तरह अेक दो अिन्द्रिया हमेशाके लिअे छुट्टी पर जाना चाहती है। जब आन्तर-राष्ट्रीय वृत्ति पूरे जोरसे खिल रही है, अुसी वक्त लोक-समुदायसे मिलने-जुलनेकी शक्ति कम हो रही है, अिसका बडा भारी दु ख

होना चाहिये। लेकिन मुझे वैसा नही होता। भगवान जिस परिस्थितिमें रखे वह स्थिति केवल लाचारीसे स्वीकार करू — अैसा 'अरसिक' भी मै नही हूं। भगवानके लीला-नाटकका यह भी अेक अुतना ही रसपूर्ण अंक है यह मै जानता हू। अिसलिअे अिस नअी अुत्पन्न हुअी अलिप्तताका स्वागत करनेके लिअे मन तैयार हो गया है। दूसरा अेक और भी कारण है। चिंतन द्वारा हो या अुत्कट सहानुभूति द्वारा हो, पर अमुक वातावरणमें पहुंचनेके बाद वहांका मुख्य मानस मै बिलकुल सही पकड़ सकता हू। अिसलिअे हवासे ही मुझे जो चाहिये वह सब मिल जाता है। अिस कारण भी मन भरा-भरा और सन्तुष्ट रहता है।

परिषद्‌के जो पाच विभाग अथवा कमीशन तय हुअे है अुसमें से मैने धार्मिक कमीशनमे जाना पसन्द किया है। मुझसे कहा गया है कि वहा मुझे अध्यक्षके नाते पाच-दस मिनट बोलना पडेगा। हम अंग्रेजीमें बोलें तो अुसका जापानी अनुवाद करनेवाले भाअी या बहन जो पास हो वे बराबर समझ सकें अितनी धीमी गतिसे बोलना होता है। अेक वाक्यका अनुवाद पूरा हो जाने पर दूसरा बोला जाता है। अिसमे लाभ यह है कि हमें विचार करनेका समय मिल जाता है। भाषा मनमें व्यवस्थित बैठ सकती है और सुननेवालेको भी सुनी हुअी बात समझकर अुस पर चिंतन करनेका मौका मिलता है। अेक-अेक वाक्य यानी अेक-अेक मुद्दा। बेकारका विस्तार करनेके लिअे अवकाश नही रहता। चिल्ला-चिल्लाकर लम्बी वक्तृता झाडनेवाले लोगोको अनुभव होता है कि अुसका यहां बिलकुल भी अुपयोग नही है।

डॉ० जैक्स (Dr. Jacks), सुन्दरलालजी वगैरा अिसी विभागमें थे। ये विभाग चर्चाके लिअे टोकियोमें अलग-अलग जगह भिन्न-भिन्न मकानोमें अिकट्ठे होते थे। अिस तरह तीन दिन अलग-अलग बैठकर आखिरी दो दिन फिरसे टोकियो जिमनेशियममें अेकत्र होनेका कार्यक्रम है।

विराट सम्मेलनके प्रारम्भमें अेक अिटेलियन बहन अध्यक्षके पद पर थी। अुसके बाद श्रीमती रामेश्वरीजीने यह स्थान लिया। अुन्हे जब कही और जाना पड़ा तब अेक भाअी अध्यक्ष हुअे।

दोपहरको रामेश्वरीजीने सब भारतीय प्रतिनिधियोंको विचार-विनिमय करनेके लिअे अपने होटलमें बुलाया था। खाते-खाते सब बातें हुअीं। शाकाहारी लोगोंको खिलानेकी व्यवस्था अच्छी नही थी। फिर भी मुझे प्रतिव्यक्ति चार सौ येन खर्च करने पडे!

दोपहरके कार्यक्रममें विशेष रस नही आया। शामको सवा सात बजे टोकियोके गवर्नर श्री सेअी अीचीरो यासुअीकी ओरसे फुकागावा महलमें विदेशके सब प्रतिनिधियोंको खानेका निमंत्रण था। भोजनके बाद जापानी नृत्य व संगीतका सुन्दर कार्यक्रम था। सब सदस्योंको परिषद्के स्थानसे फुकागावा तक अनेक बसोंमें बिठाकर ले गये। अन्तर अितना अधिक था कि बसके सफरमें भी करीब अेक घंटा लगा। अिस तरह हम टोकियोका बाकी बडा भाग और अुसके रंग-बिरंगे दीये अच्छी तरह देख सके। सभी कुछ देखनेमें आनन्द आता था, अिसलिअे अूबनेकी तो नौबत ही नही आअी।

गवर्नरके यहाका भोजन सुन्दर था। अुसमें शाकाहारकी वानगिया कौनसी है यह पूछकर अथवा ढूढकर लेनी थी। खाते-खाते लोगोंके साथ बातें भी करनी थीं। 'बूफे' भोजन-व्यवस्थाका अेक लाभ यह है कि अन्न जूठनमें बेकार नही जाता और घूमते-फिरते खाना खानेसे आदमी अधिक लोगोंके साथ बातें कर सकता है।

भोजनके बाद नृत्यके और अभिनयके जो कार्यक्रम हुअे। वे सचमुच निप्पोनकी कलाके अुत्कृष्ट नमूने थे। तीन वर्ष पहले हमने कोबेसे क्योटो जाकर डोरेमिको थियेटरमें जो नृत्य देखे थे वे बड़े पैमाने पर थे। वहा गेशा नर्त्तिकाओने मुह पर अितना अधिक रंग लगाया था कि अुन चमकते चेहरों पर भावोंके प्रदर्शनका सवाल ही न अुठता था। नर्त्तिकाअे हाथ-पैरके संचालनसे और कपड़े व पंखोंके द्वारा ही भाव व्यक्त करती थीं, क्योंकि अुस नृत्यका व्याकरण 'पपेट शो' जैसा ही था।

यहाके नृत्यमें होठ, आख और चेहरे सब पर तरह-तरहके भाव अुभर रहे थे। अेक नर्त्तिकाने तो बहुत ही सुन्दर भावपूर्ण नृत्य किया। प्रेक्षकोंने अुसका तालियोंसे स्वागत किया। अुसने अुन सत्कारको अैसे सुन्दर-मधुर स्मितसे स्वीकार किया कि वह स्वीकृति ही भावप्रदर्शनका

अेक अुत्कृष्ट नमूना सावित हुअी। यहाके अिस कार्यक्रमकी पृष्ठभूमि विलकुल सादी थी, लेकिन नृत्यके प्रकार क्योटोसे हजार गुने अधिक अच्छे थे। क्योटोके थियेटरमें रगभूमिकी खूवीमें विज्ञानका पूरे तौरसे अुपयोग किया हुआ था। वहां पर्देके पीछेके प्रकाशके द्वारा और मचकी सजावटके द्वारा शरद्, हेमन्त 'व वसन्त आदि अृतुओकी शोभा अेकके वाद अेक अप्रतिम तरीकेसे दिखाअी गअी थी। समुद्रका विस्तार, अुसमें अेकाअेक अुठा हुआ तूफान, घवड़ाअी हुअी मछलिया और सव शांत होने पर स्थापित ·अद्‌भुत शाति — यह सव देखकर हम वहुत ही खुश हुअे थे। अुसमें साकुरा (चेरी) पुष्पोकी और मोमो (पीच) पुष्पोंकी वहार भी कितनी सुन्दर थी! यहा गवर्नरके 'यहां तो रगभूमि जैसा कुछ था ही नही। नर्त्तिकाअें और नर्तक अपने हाव-भाव और कपड़ोकी शोभा पर ही सारा आधार रखते थे।

नर्त्तिकाओके सिर पर जो लाल रगका मुकुट था, अुसे मैंने मशरूमके सिरकी अुपमा दी। वह रेवतीको जरा भी अच्छी नही लगी। वह कहने लगी, "अितने सुन्दर शृगारको आप कैसी अुपमा दे रहे हैं?" मैंने कहा, "हीनोपमाका दोष मैं स्वीकार करता हू, लेकिन यह वताओ कि अुपमा सोलह आने सही वैठती है या नही। आकार हूवहू मशरूम जैसा ही है न?"

अुसके वाद अैसे अनेक मुकुट अेक रस्सीमें वांधकर अिधर-अुधर फेंकनेका कार्यक्रम हुआ। फिर रगीन कागजोकी लम्वी-लम्वी सर्पाकृति-वाली डोरियां अिधर-अुधर अुछाली गअी। अुनकी सुन्दरताका किन शव्दोमें वर्णन करू? हम तो अवाक् होकर देखते ही रहे। सगीत भी अुत्कृष्ट था। सारा कार्यक्रम पूरा होने पर स्वागतवाले अधिकारियोंसे विदा लेकर हम जिस तरह आये थे अुसी तरह फिरसे वसमें वैठकर दस वजे घर लौटे।

घर आते ही तुम्हारे सात पत्र अेक साथ मिले! दावत पर दावत रही। चि० रेवतीके लिअे वालके तीन पत्र हैं! अिसलिअे वह भी खिल गअी है। अव तो पहले पत्र पढ़ेंगे। सुनिशम्!

२९

विश्व-सम्मेलन और अुसके पश्चात्

टोकियो,
१३-८-'५७

कल रातको तुम्हारे तथा चि० वालके पत्र पढते-पढते जरा देर हुअी। तुम्हारे आखिरी पत्र पर थाअीलैंडके टिकिट और बैंगकॉककी छाप देखकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ। हम चीन नही जानेवाले हैं अैसा मेरे आखिरी पत्रसे अनुमान करके तुम कहीं हमें बैंगकॉक तक लेने तो नही आ गअी? अैसा विचार — भले विनोदमें ही सही — मनमें अेक क्षणके लिअे तो आ ही गया। पत्र खोलने पर मालूम हुआ कि डाककी हडतालके कारण बम्बअीसे पत्र जानेमें कही देर न हो अिस डरसे तुम्हे बैंगकॉक जानेवाले अेक भाअीके हाथ ये पत्र भेजनेकी सूझी!

सुबह वक्तसे तयार होकर हम साढे आठ बजे 'नाकानो' नामक सार्वजनिक हालमें पहुचे। वहां हमारी अिस परिषद्के धार्मिको (Religionists) की विभागीय परिषद् थी। 'रिलिजनिस्ट' यह कोअी बहुत अच्छा शब्द नही है। लेकिन निप्पोनमें अिसीका अुपयोग होता है, अिसलिअे मैंने अिसका अनुवाद 'धार्मिक' शब्दसे किया है। अिसके अध्यक्षके तौर पर मै पाच-सात मिनट बोला। मैंने कहा. "अेक वक्त था जब समाजमें धर्मका बोलबाला था। अब यह स्थान विज्ञानने ले लिया है। विज्ञानका परिणाम स्पष्ट दिखाअी देता है। यह तत्त्व बडा ही समर्थ है। अिसके मुकाबिलेमें आज धर्म फीके, संकुचित मनके और निस्तेज दिखाअी देते है। विज्ञानकी सहायतासे दुनिया अेटम-बम तक आ पहुंची है। अिससे मनुष्य-जातिका अस्तित्व ही खतरेमें पड गया है। अब धर्मोको अपनी नैतिक शक्तिका अुपयोग करके दुनियाको बचाना चाहिये। धर्म दुनियाकी अिस प्रकारकी सेवा कर सकें अुससे पहले अुन्हे अपनी ही सेवा यानी आत्मशुद्धि करनी चाहिये।

"धर्मके ठेकेदार धर्मके प्राणकी अुपेक्षा करके धर्मके वाह्य आकारको अधिक महत्त्व देने लगे हैं और भीतर ही भीतर लड़-झगड़कर हंसीके पात्र वनते जा रहे हैं।

"पश्चिमकी प्रतिष्ठाके कारण औसाअी धर्मकी प्रतिष्ठा भी खूव वढी। अुसके मिशनरी दुनियामें सव जगह फैल गये। साम्राज्यशाहीके हस्तक वनकर अुन्होने अपनी कीमती सेवाका महत्त्व घटा लिया। अव हम कहने लगे है कि औसाअी धर्मकी कसौटी हो चुकी। यह धर्म हीन-सत्त्व सावित हुआ है। अैसी टीका करनेवालोको विचार करना चाहिये कि दूसरे कौनसे धर्म पूरे खरे अुतरे है। अव तो सभी धर्मोको अन्तर्मुख होकर आत्मशुद्धि करनी चाहिये और धर्मतेज प्रगट करके दुनियाको विज्ञानका सदुपयोग करनेकी वात समझानी चाहिये। अिसके लिअे धर्मके ठेकेदारोको अेक ओर हटाकर धर्मको सकुचिततासे वचाना चाहिये।

"आज हम अणु-वमके प्रयोगको व अुपयोगको जरूर वुरा कहें; युद्धके द्वारा मनुष्यका कल्याण नही होनेवाला है, अिसकी भी घोषणा करे। यह सव जरूरी है। लेकिन हमारा मुख्य कार्य धार्मिक विधि और रूढियोमें फसे हुअे धर्मके प्राणको वचाना है। तभी सव धर्मोके वीच सहकार हो सकेगा और धर्म समाजके जीवन पर अच्छा प्रभाव डाल सकेंगे।"

मेरे वाद जो अेक दो जापानी वोले, अुन्हे मेरा भाषण वहुत पसन्द आया। मैं नही मानता कि परिषद्के मुख्य सचालकोको मेरा रुख अच्छा लगा होगा। अणु-शस्त्रोके विरुद्ध वोलने और अधिकसे अधिक युद्धके विरुद्ध वोलनेके अतिरिक्त प्रत्यक्ष कुछ करनेकी अथवा आत्मशुद्धिकी वात करें तो वह अुन्हे पसन्द नही आती।

जरा थकान महसूस हो रही थी अिसलिअे दोपहरको मैंने परि-षद्में जाना मुलतवी रखा। अुसके वदले पत्र लिखे और अखवारवालोको मुलाकात दी। अिसमें अेक वात लिखने योग्य है। पिछला महायुद्ध शुरू हुआ तव मारुयामाजी आश्रम-जीवनका अनुभव लेनेके लिअे सेवाग्राममें वापूजीके पास आकर रहे थे। युद्ध शुरू होता है तव सरकार शत्रुपक्षके लोगोको देशमें आजाद नही रहने देती। अुन्हे या तो लश्करी जेल

(Concentration Camp) मे वद कर देती है अथवा देश-निकाला दे देती है। अिस नियमके अनुसार भारतकी अंग्रेज सरकारने मारु-यामाजीको पहले तो जेलमें बन्द किया और फिर देशके वाहर भेज दिया। अिस वात परसे कुछ जापानी अखवारवाले मुझे पूछने लगे कि भारतके स्वातंत्र्य-संग्राममें मारुयामा-सानका कितना हिस्सा था? मैंने अुन्हे अूपरकी तफ़सील दी और कहा कि मै तो अितना ही जानता हू। अिसके अलावा कुछ और हो तो मारुयामाजीसे ही पूछिये।

१४–८–'५७

तीन-चार दिनसे चि० रेवती यहीसे स्वदेश वापस जानेकी वातें कर रही थी। मैंने अुस वातको महत्त्व नहीं दिया। परसो जव वालके पत्र आये तव मैंने मान लिया था कि अव वह वापस जानेकी वात भूल जायगी। लेकिन देखता हू कि पत्रोका तो अुलटा ही असर हुआ है और अुसका तुरन्त घर जानेका आग्रह वढ गया है। मैंने अुसे अपना अभिप्राय वताया कि "अितनी दूर अितना खर्च करके आने पर अुसका पूरा लाभ न अुठाना और लौटनेकी अुतावली करना अुचित नही है। मेरी अिजाजत ही जरूरी हो तो वह मिलनेवाली नही है। लेकिन तुम्हे मै रोकूगा नहीं। जाना हो तो खुशीसे जा सकती हो, मैं सव सुविवा कर दूंगा। निप्पोन तो चाहे जव फिरसे आया जा सकता है, किन्तु चीनमें घूमने और देखनेका अैसा मौका आसानीसे नहीं मिलेगा। अिसलिअे दो-तीन दिन ठीक विचार करके जो निर्णय करना हो सो कर लो।" मेरा अैसा तटस्थ रुख देखकर वह दुविवामें पड गअी। मैंने अपना रुख तो नही वदला, लेकिन वह प्रसन्न रहे अिसके लिअे अुसकी ओर अविक ध्यान देना तय किया है।

आज मै राष्ट्रोंके वीचका वैरभाव और अुनकी तनातनी कैसे दूर हो (Reduction of tensions between nations) अुनका विचार करने-वाली समितिमें जाकर वैठा। निप्पोनी भाषणोका अंग्रेजी अनुवाद करनेवाला अेक जापानी युवक मेरे पास ही वैठा था। अुसी काममें मदद करनेवाली अेक जापानी वहन भी वही चाय पीती हुअी काम कर रही थी। अनु-वादक महोदय चतुर दिखाअी दिये। जापानीका अधूरा वाक्य सुनते ही

अुसका अंग्रेजी अनुवाद माअिक (ध्वनि-विस्तारक यंत्र) में बोल जाते थे। फिर जब वाक्य पूरा होता था तब बड़ी कुशलतासे अंग्रेजी वाक्य भी पूरा करते थे। विस्तारको काट-छांटकर मतलबकी बातें थोडेसे शब्दोंमें कहना और वक्ताकी गतिके साथ मेल रखना अिस खूबीको वे निपुणतासे निभा रहे थे।

आज मंजु व रेवती परिषद्में आनेके बदले हमारे दूतावासके प्रथम मंत्री श्री हेजमाडीके यहा अुनकी पत्नीसे मिलने गअी है। हेजमाडीकी पत्नी सगुणा रेवतीकी सहेली है। तीनो मिलकर बाजार गअी और अच्छी-अच्छी चीजें खरीद लाअी। अुसके बाद श्री हेजमाडी मुझे मिलने आये। और रातको अपने यहां खानेका निमंत्रण दे गये।

दोपहरको अखबारवाले आये थे। अुन्होने बहुतसे महत्त्वके प्रश्न पूछे। मैंने अुन्हे विस्तारसे जवाब दिया।

शामको हम टोकियोका विश्वविख्यात बाजार — गिंजा देखने गये। बबअीमे जैसे फोर्टका विस्तार है, दिल्लीमे जैसे कनाट सर्कस है, अुसी तरह टोकियोका यह गिंजा है। रातको हरअेक दुकानमें नीचेसे अूपर तक रंग-बिरगे दियोकी अेकसी दीवाली पूरे वर्ष रहती है। निप्पोनका पूरा वैभव अिस अेक बाजारमें दिखाअी दे जाता है। धनवान लोग, रसिक लोग, विलासी लोग और अुस-अुस क्षेत्रके मर्मज्ञ यहा अिधर-अुधर घूमते हुअे देखे जा सकते है। यह सारा ठाठ-बाट कलायुक्त ढगसे फैला-हुआ देखकर मनुष्यका दिमाग चकरा जाय तो कोअी आश्चर्य नही। सब जगह पैदल घूमकर यह महोत्सव देखा और वहांसे हम श्री हेजमाडीके यहां खाना खाने गये।

सगुणा बहनने हमारे साथ हमारे मेजबान मारुयामाजी और तास्से, अिन दोनोको भी भोजनके लिअे बुलाया था। अीमाअीजी किसी कामसे दूसरी जगह गये थे। सगुणा बहन कला-रसिक और स्वत. कलाकार है। अुनकी कसीदाकारी व चित्रकारी तो सुन्दर थी ही, लेकिन अुन्होने अेक जापानी ढगकी गुडिया भी बनायी थी। वह अितनी सुन्दर बनी थी कि जापानी भी अुसकी सराहना करे। गुड़ियोको जापानी पोशाक पहनाना कोअी सरल कार्य नही है। अुसमें बहुतसी बातोका ध्यान रखना पड़ता है।

स्वदेशी ढंगका भोजन विदेशमें अेक बडे ही सुख व आनन्दका विषय होता है। श्री हेजमाडीने मिस्र, अिण्डोनेशिया वगैरा दो-चार देशोंके प्रतिनिधियोंको भी खानेके लिअे बुलाया था। अिसलिअे खानेसे पहले और बादमें भी बातोंका खूब रग जमा। मिस्रके दूतावासके श्री सेल्विन और श्रीमती सेल्विनके साथ मेरी महत्त्वपूर्ण बातें हुअी। विचारोंके लेन-देनमें अुन दोनोंको खूब रस आया।

बर्माके अुस पारकी दुनियाके विषयमें हम बहुत ही थोडा जानते है। अुन लोगोंका जीवन, अुनका मानस, अुनकी समस्याअें — अिनमें से हमारे लोग कुछ भी नही जानते, यह बहुत बडी कमी है। चि० सतीश अिन लोगोंके देशमें दो वर्ष रह आया है अिसलिअे वह बहुत कुछ जानता है। यूरोपके लोग अुनके अपने महाद्वीपके लोगोंके विषयमें परस्पर जितना जानते है अुतना भी यदि हम अेशियावासी अेक-दूसरेके देशोंके विषयमें न जानें, तो अेशियाकी आत्मा किस प्रकार प्रकट होगी?

हमारे साथ आये हुअे मारुयामा और तास्सेकी हेजमाडीके अरविन्दके साथ देखते ही देखते दोस्ती हो गअी। वे आपसमें जापानीमें बोलने लगे। बातें करते हुअे वे पासके अेक कमरेमें टेलीविज़न देखनेमें तल्लीन हो गये। तास्सेको टेलीविज़न देखनेका बड़ा ही शौक है।

गिजा जाते समय हम भूगर्भ-रेलगाडीमें बैठे थे, यह लिखना तो मैं भूल ही गया। लन्दनमें हम अैसी ही रेलगाडीमें बैठे थे, लेकिन अुससे मुझे जापानकी यह भूगर्भ-रेल अधिक अच्छी लगी। यहाके स्टेशन भी बड़े शानदार है।

जापानी गुडियाके विषयमें मैंने लिखा ही है। गुडिया अिस देशकी विशेषता है। होक्कायडोसे नागासाकी तक जहा-जहा हम गये, शहरोंमें या गावोंमें, वहा हर घरमें तरह-तरहकी छोटी-बडी सुन्दर गुडिया होती ही थी। अेक दिन मैंने अपने गृहपतिसे कहा कि निप्पोनमें जमीन थोडी है और जनसंख्या अधिक, यह बात सच है। लेकिन यदि निप्पोनकी तमाम गुडियोंकी गणना की जाय तो मनुष्योंकी सख्यासे अुनकी संख्या दस-बीस गुनी अधिक निकलेगी। कुदरत मनुष्यको बनाती है और मनुष्य अपनी कला आजमाकर तरह-तरहकी गुड़िया बनाता है। यह अच्छी होड़ है!

1538

१५–८–’५७

आज सुवह परिषद्‌में पहले दो दिन अलग-अलग विभागोमें जो काम हुअे अुनका व्यौरा दिया गया। यह सव सुननेमें, दोपहरका अेक वज गया। खाना खाकर हम लोग कितावें खरीदने निकले। निप्पोनके विषयमे अंग्रेजीमें अुपलव्ध साहित्य देखा। विदेशियोकी लिखी हुअी वहुत-सी कितावे यहाके वाजारमे नही मिलती। देशाटनके रसिक संस्कार-यात्रियोको रुचिकर हो अैसी ही पुस्तकें यहा थी। रेवती व मजुको पुष्प-रचनाकी कला व घरके कमरे सजानेके विषयकी ही खास कितावें चाहिये थी। तीन वर्ष पहले खरीदी गअी कितावोमें से मैं वहुत कम पढ सका था। अिसलिअे अिस वार अधिक खरीदनेका मन नही था। फिर भी प्रवास, साहित्य और भाषाके विषयकी साठ-सत्तर रुपयोकी कितावें तो खरीद ही ली। ये कितावें खरीदते वक्त अेक अनुभव मिला। अिन कितावोमें से अेक किताव अूपरसे कुछ खराव थी। अुनके पास अुसकी दूसरी प्रति नही थी। मैंने कहा कि “कोअी वात नही, जैसी है वैसी ही दे दें।” अुन लोगोने साफ मना कर दिया। अुन्होने कहा: “कल तक अिसकी अच्छी प्रति हम आपको पहुचा देंगे। अैसी मैली-कुचैली किताव हम आपके देशमे कैसे जाने दें?”

अपने वचपनमें मैंने जापानियोके वारेमें काफी भला-वुरा सुना था: ‘वतायेंगे अेक माल भेजेंगे दूसरा’ वगैरा-वगैरा। अुस समयकी यह टीका या तो गलत होगी अथवा अुस वदनामीको धो डालनेका अिस देशने निश्चय किया होगा। चाहे जो हो, दोनो वारकी यात्राओमें अिन लोगोके विषयमें हमारा अनुभव हर तरहसे अच्छा ही रहा।

रातको हम निप्पोनका प्रख्यात कावूकी शैलीका नाटक देखने गये। यह नाटच-प्रकार मूलत. चीनका है। जापानी वहांसे अिसे लाये व अिसमें अपने ढगसे हेर-फेर करके अिसे राष्ट्रीय रूप दिया। ये नाटक पुराने ढगके होने पर भी वडे लोकप्रिय हैं।

हमने नाटक देखना तो तय किया, लेकिन अुसमें अेक दिक्कत खड़ी हुअी। आज भारतका ‘स्वतंत्रता-दिवस’ है। अिसलिअे आज हमारे प्रतिनिधि-मण्डलने जापानी मेहमानोको आमंत्रित करके यह अुत्सव

मनाना तय किया। विदेशमें अैसे अुत्सवोंमें भाग लेना और भी महत्त्व-पूर्ण होता है। अिसलिअे अुसे टाला नही जा सकता। दोनोंमें से किसे अधिक महत्त्व दिया जाय? हमने दोनोंको ही साधनेका निश्चय किया। काबूकी नाटक खासा चार-साढ़े चार घंटे चलता है। बहुतसे लोग बीचमें ही पासके ढाबेमें जाकर खाना खा आते हैं और फिर वापस आकर आगेका नाटक देखते है। हमने थोडी देर नाटक देखा और फिर स्वतंत्रता-दिवसके अुत्सवमें गये। वहा मुझे बोलना था। स्वातंत्र्य-गीत गानेमें रेवती और मजुने भाग लिया। यह अुत्सव अच्छी तरह पूरा करके हम फिरसे नाटकमें पहुंचे। खाना भी हमने नाट्य-गृहके भोजनालयमें ही खाया।

स्वतंत्रता-दिवसके अुत्सवमें मैंने अपने छोटेसे भाषणमें आजादीका अितिहास बताया। अुसमें १९०५ के रूसी-जापानी युद्धका अेशिया पर कैसा अच्छा असर हुआ और अुस समयके हम युवकोंको अुससे कैसी प्रेरणा मिली, अिसका भी मैंने अुल्लेख किया। भारतकी पताकाका विश्व-संदेश भी मैंने थोडेमें समझाया। हमारा श्वेत रंग विश्वशान्तिका प्रतीक है। अुसके अूपरका अशोक-चक्र न्याय, सदाचार व बन्धुत्वका धर्मचक्र है और अभयदानका द्योतक भी है, आदि कुछ बातें मैंने वहा स्पष्ट की।

चार घंटेके नाटकके विषयमें थोडेमें लिखना मुश्किल है। पुरुषका पार्ट स्त्रीको देनेसे अभिनयमें जरूरतसे ज्यादा कोमलता आ जाती है। और रसभंग भी होता है। यह कठिनाअी दूर करनेके लिअे और अिस परिस्थितिसे भी लाभ अुठानेके लिअे अिस ओरके नाटककार कभी-कभी नाटकमें प्रसंग ही अैसा अुपस्थित करते हैं कि यह सब स्वाभाविक मालूम हो। अुदाहरणके लिअे, कोअी लड़की पुरुष-वेषमें किसी मठमें दाखिल हुअी। अुसने तपस्या शुरू की। अेक बार अुसे जानकी जोखिम भी अुठानी पड़ी। अुसमें अुसने अमुक बहादुरी भी दिखाअी। अन्तमें लोगोंके सामने वह अपने असली स्त्री-रूपमें प्रकट हुअी, वगैरा। अैसे कथानकमें कोअी लडकी पुरुषका वेष बनाये, यह सब तरहसे अुचित जान पडता है। अिससे रसभंग होनेके बदले रसका अुत्कर्ष ही होता है। हमारे देखे हुअे नाटकमें विषादका वातावरण कुछ अधिक था।

नाट्य-गृहका रंगमच तो हमारे यहाके रगमंचोसे तीन गुना अधिक वड़ा होगा। अेक वार तो सारे रगमचको ही गोल घुमाकर पीछेका हिस्सा आगे लाया गया था। दिन अथवा रात, मदिर, मठ या श्मशान और भिन्न भिन्न अृतुओंमें कुदरतकी वदलती हुअी शोभा आदि सभी चीजें अुच्च अभिरुचिके साथ हूवहू दिखाअी गअी थी। अभिनय-कला सुन्दर थी। साथियोने वताया कि वीचमें अुठकर आपने अेक सुन्दर दृश्य खोया। खैर, हमने तो जो देखा- अुसीसे हमें वहुत सतोष हुआ। हमें केवल जापानी कलाके कुछ नमूने ही देखने थे।

अव तो जापान छोड़नेके दिन नजदीक आ रहे हैं। अितने दिन जिनके साथ विताये, अुनसे अेक वार तो अलग होना ही होगा। वादमें न मालूम फिर कव मिलें! मिलेंगे यह अुम्मीद भी कैसे रखें? — अिस तरहके मिश्रभाव मनमें अुठने लगे है।

३०

विदा

टोकियो,
१६–८–'५७

कितना अजीव और दु खदायी! अिस वार जव निप्पोनकी यात्राके लिअे निकला तव भारतन् कुमारप्पा गये और अव यह प्रवास पूरा कर रहा हू तव देवदास गाधीके मृत्युके समाचार मिले! प्रथम तो समाचार अुड़ते-अुड़ते ही सुने। किसी तरह भी विश्वास नही होता था। हालमें ही तो वे मिले थे। अुनकी लडकीके विवाहमें हमने अुन्हे देखा था। ताराका अभिनन्दन किया था। वही राजाजीके साथ वातें हुअी थी। देवदासने खुद वडे आग्रहसे हमें मिठाअी खिलाअी थी और आज अुनके जानेके समाचार सुन रहा हू!

देवदास वीमारीमें मद्रास जरूर गये थे, लेकिन अुसके वाद तो अच्छे होकर अुन्होने कामकाज संभाल लिया था और वड़े अुत्साहसे सव काम करते थे।

अशुभ समाचार सुने और अेकदम १९१५ में शांतिनिकेतनमें बालक देवदासको मैं पहले-पहल मिला था अुस समयका अुनका सारा जीवन आखोंके सामने घूम गया। कविवर रवीन्द्रकी शिक्षण-संस्थाको केवल बाहरसे नही बल्कि अन्दर रहकर देखनेके हेतुसे मैं वहा गया था। गांधीजीके फिनिक्स सेटलमेंटवाले कुटुम्बियोके साथ मैं वहा अनायास ही घुल-मिल गया था। अुस व्यापक कुटुम्बमें गांधीजीके तीन पुत्र मणिलाल, रामदास और देवदास भी थे। श्री मगनलाल गाधी अुस परिवारके प्रमुख व्यक्ति थे। अितनी छोटी अुमरमें भी देवदासकी तेजस्विता और तत्त्वनिष्ठा निखर पड़ती थी। अुस समय भी प्रभुदास, केशू और कृष्णदास देवदाससे प्रेरणा लेते थे। सब बुजुर्गोंकी आज्ञा पालन करने पर भी देवदास अपनी स्वतन्त्रता नही खोते थे। वे श्री अेन्ड्रूज़ व पियर्संनसे जितना मिल सके अुतना ग्रहण कर लेते थे। देवदासके गुलाबी चेहरेसे और अुनकी आखोंकी खुमारीसे मैं कल्पना कर सकता था कि बापूजी अपनी युवावस्थामें कैसे दिखाअी देते होंगे। बादमें जब बापूजीने अहमदाबादमें आश्रम खोला और मैं वहां रहने गया तब देवदासको मैं सस्कृत पढाता था। पूज्य बापूजीके सिद्धान्तोंका और अुनके आग्रही स्वभावका देवदासको बचपनसे ही परिचय होनेके कारण अुन्हें हर बातका स्पष्टीकरण करनेकी आदत थी। अेक दिन अुन्होने आश्रमकी सभामें कहा: "मैं नही मानता कि मैं यहा अेक आश्रमवासीके नाते रहता हू। आश्रम-जीवन अच्छा है, लेकिन मैं तो यहां अपने माता-पिताके साथ अुनके पुत्रके नाते ही रहता हू।" आश्रमकी प्रार्थनामें देवदासके भजन अत्यन्त मधुर और असर करनेवाले होते थे। पूज्य बापूजी अुन दिनो सारा दिन दर्जीका काम करते थे और देवदासको भी यह हुनर सिखाते थे। अपनी सारी शिक्षा देवदासने अपनी कल्पनाके अनुसार और अपने प्रयत्नसे ही प्राप्त की थी। जेलमें जवाहरलालजीने भी देवदासको थोडा पढ़ाया था। लेकिन खास तौरसे तो मद्रासमें राजाजीने ही देवदासकी शिक्षामें पूरा रस लिया था।

अेक वार वापूजीके सेक्रेटरीका काम करनेका देवदासने विचार किया। मैंने कहा कि वड़े आदमीके लड़केको पिताके मत्री वननेका प्रयत्न नही करना चाहिये। जिवर देखो अुवर अप्रिय वनना पड़ता है और गलतफहमीका तो पार ही नही रहता। 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' कैसे शुरू हुआ और अुसके द्वारा देवदासने अपने आपको अेक पत्रकारके रूपमें कैसे तैयार किया, अुसका भी सारा चित्र आखोके सामने खिच गया। वापूजीकी तत्त्व-जिज्ञासा और आसपासके सव लोगोको जीत लेनेकी कला देवदासने अच्छी तरह सीख ली थी और अुनकी व्यवहार-कुशलताको तो चरम सीमा पर पहुचा लिया था।

गांधी-स्मारक-निधिको तो मानो शनिकी दशा ही लग गअी है। अिस निधिकी स्थापना हुअी तभी वल्लभभाअी गये। फिर दादा साहेव, अुसके वाद वाला साहेव और अव देवदास तो असमयमें ही चल वसे।

देवदासके वच्चे तो आखिर अपनी-अपनी कार्यशक्ति वढ़ानेमें लग ही जायेंगे, लेकिन चि० लक्ष्मीके वारेमें वहुत विचार आ रहे हैं। अभी-अभी मैंने और मारुयामाने लक्ष्मीको तार भेजा है।

आज जागतिक परिषद्का आखिरी दिन है। सव समितियोके वने हुअे प्रस्ताव कुछ घटा-वढ़ाकर आज परिषद्की ओरसे पास हुअे। अेक प्रस्तावमें ओकीनावाका अुल्लेख हटा देनेका प्रयत्न वहुतसे अमरीकी प्रतिनिधियोकी ओरसे हुआ। यह मुझे जरा भी पसन्द नही आया। अिसलिअे आखिरी दिनके अपने भाषणमें मैंने ओकीनावाका खास अुल्लेख किया। मैंने कहा: "हमें भूलना नही चाहिये कि यह जागतिक परिषद् टोकियोमें की गअी, अिसमें अेक वड़ी विशेषता है। अेटम-वमके कारण सवसे अधिक कष्ट जापानियोंने सहे हैं। हिरोशिमा और नागासाकीके जैसा नुकसान और किसीका नही हुआ है। जापानी लोगोंकी भावना हमारे प्रस्तावमें व्यक्त न हो तो मैं तो अुन प्रस्तावोको निर्जीव समझूगा। ओकीनावाका अुल्लेख भला क्यो निकाल दिया जाय? अुस अभागे द्वीपमें जो ८०,००० जापानी वसते हैं अुन्हें अपने राष्ट्रसे जवरदस्ती अलग किया गया है। वहांके युद्धके अड्डोंका विस्तार करनेके लिये प्रजाकी खेती

नष्ट की जा रही है। अिस भयकर अन्यायके बारेमें हमारा पुण्य-प्रकोप व्यक्त होना ही चाहिये।"

अिस प्रकार थोडा बोलकर मैंने अपना भाषण पूरा किया और अपनी जगह आ बैठा। तब ओकीनावाके अेक-दो प्रतिनिधियोने आकर मेरे भाषणके लिअे मेरा अभिनन्दन किया और भीनी आखोंसे अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। अुन्होंने कहा कि "भारत जैसे दूर देशसे आकर भी आप हमारा दुख समझ सके है।" मैंने अितना ही कहा "विमान-मार्गसे आते-जाते आपका द्वीप दो-अेक बार देखा है। तबसे अिस द्वीपके प्रति हमारी सहानुभूति जाग्रत हुअी है और यदि विश्वशातिका अर्थ विश्व-बन्धुत्व होता हो तो हमें अेक-दूसरेका दुख अपने दुखके जैसा ही लगना चाहिये।"

अुन्होंने आग्रह किया कि "हम ओकीनावाके बीसेक प्रतिनिधि अुधर बैठे है वहा आप हमारे बीच चलिये। हम आपके साथ अेक फोटो खिचवाना चाहते हैं।" मैं अुनके बीच बैठकर आ गया। सच्ची सहानुभूति हो तो दुनियाकी किसी भी प्रजाके साथ हृदयकी अेकता स्थापित हो सकती है।

* * *

दोपहरको सरकारी रेडियो-विभागके लोग हमारे निवास-स्थान पर आये और मुझसे प्रश्न पूछकर अुनके जवाब रिकार्ड करके ले गये। अुनके प्रश्नोमें से अेक मुझे याद है "युद्धोमें आणविक शस्त्रोका अुपयोग होता है और अुन शस्त्रोके प्रयोग भी चल रहे है। अुनके विरुद्ध जापानी प्रजाकी अकुलाहटके विषयमें आपको क्या लगता है?" मैंने अुत्तर दिया. "चार हफ्तेसे मैं निप्पोनमें घूम रहा हू। निप्पोनकी प्रजा शाति चाहती है। आणविक शस्त्रोंका व्यवहार बन्द होना ही चाहिये, अैसा वह अेक स्वरसे पुकार रही है, यह मैं स्पष्ट देख सका हू। दुख अितना ही है कि अुस पुकारका असर जापानकी लोकतात्रिक सरकार पर जितना होना चाहिये था अुतना नही दिखाअी दिया।"

"निप्पोनके लोगोका रहन-सहन आपको कैसा लगा?" अिस सवालके अुत्तरमें मैंने कहा, "अिस देशकी सुघड़ता और कलात्मकता

मुझे बहुत भाअी है। मैं भी अेशियावासी हू। जापानी ढंगसे रहते हुअे मुझे अैसा नही लगा कि मै परदेशमें आया हू।"

निप्पोन आया हू तबसे गुरुजीसे दो-तीन बार ही मिलना हुआ है। परिषद्में जरूर रोज मिलते थे, लेकिन अुसे तो मुह देखी मुलाकात ही कह सकते हैं। अेक-दूसरेको देखकर हसे, नमस्ते की और चले! निप्पोन छोडनेसे पहले मुझे अुनसे खास मिलना था और बहुत-सी बातें अुन्हें खानगीमें कहनी थी। अिसके लिअे आज शामको हम अुनके निवासस्थान पर गये थे। हमारा भोजन भी वही था, अिसलिअे खाते-खाते आरामसे सब बातें हो सकी।

मैंने अुनसे कहा: "पिछले पचास-साठ वर्षोंसे भारतमें भगवान बुद्धके प्रति जो भक्तिकी भावना जाग्रत हुअी है और बौद्ध-धर्मके प्रति शिक्षित लोगोमें जो आदर अुत्पन्न हुआ है अुसमें अधिकसे अधिक असर थेरवादका यानी हीनयानका है। लंका और बर्माके साथ सम्पर्क होनेके कारण थेरवादसे हम अधिक परिचित हैं। अुन लोगोमें हिन्दू-समाजके प्रति सहानुभूति कम है। मेरे बौद्ध मित्र साधुचरित पं० धर्मानन्दजी कोसम्बीने लंकामें ही दीक्षा ली थी और पालि-त्रिपिटकोका गहरा अध्ययन किया था। महायानी शांतिदेवाचार्यका बोधिचर्यावतार अुनका प्रिय ग्रन्थ था। अिससे स्पष्ट होता है कि अुन्हें महायानके प्रति भी आदर था। अब आपने हमारे देशमें राजगिर, कलकत्ता, बम्बअी वगैरा स्थानोंसे सद्धर्मपुण्डरीकके द्वारा महायानका प्रचार चलाया है। अुसका मैं स्वागत करता हूं। विनोबाकी और मेरी यह खास अिच्छा है कि सब लोग महायान व हीनयानके भेद भूलकर बौद्धधर्म, जैनधर्म और वेदान्तका समन्वय करें और अुसके द्वारा धर्मकी पुनर्जागृति करनेका प्रयत्न करें।

"अीमाअी-सान जैसे आपके शिष्य हिन्दी जानते हैं और सुन्दर काम कर रहे हैं। प्रत्यक्ष परिचयसे मैं कह सकता हूं कि अीमाअी-सान अेक अनुभवी तथा गम्भीर व्यक्ति है। कामका विस्तार कैसे करना अिसका अुन्हें खयाल है। अीमाअी-सानको कुछ दिन अपने साथ यात्रामें रखनेकी मैंने श्री विनोबासे सिफारिश की थी। अुसके अनुसार अुनके साथ घूमकर अीमाअी-सानने भूदान और ग्रामदानका रहस्य समझ लिया

है। विनोबा पर अुनका अच्छा असर हुआ है। अुनके द्वारा निप्पोनको और भारतकी बहुत महत्त्वकी सेवा होनेवाली है। अभी तक आपने राजगिरमें स्तूप बनानेका और अनेक जगह मंदिरोंको सुचारु रूपसे चलानेका काम किया है। अुसके साथ अब साहित्यका प्रचार भी करना चाहिये। अिसके लिअे भारतमें आनेवाले आपके शिष्योंको हिन्दीका अुत्तम ज्ञान होना चाहिये। यदि वे हिन्दीमें अस्खलित बोल न सकें या लिख न सकें, तो धर्मकार्यमें अुतनी कमी रहेगी।"

आखिरमें मैंने कहा: "भारतमें अब राजनीतिक और सामाजिक कारणोंकी वजहसे बहुतसे लोग काफी संख्यामें बौद्ध-धर्मकी दीक्षा ले रहे हैं। किसीके साथ वैर न करनेके शाक्यमुनिके अुपदेशको यदि वे स्वीकार करें, तो खुद अुनका और भारतका कल्याण ही होगा। लेकिन अिन्हीं दिनों अेक-दो जगह हिन्दू और बौद्धोंके बीच झगडे होनेके समाचार मिले हैं। अैसे समय खूब सभलकर चलनेकी जरूरत है। आज भारत-सरकार और भारतकी प्रजा बौद्ध-धर्मके प्रति आदर और अनुकूलता रखती है। यह सद्भाव ही हमारी सबसे बडी पूंजी है। यह पूंजी खोनेके बदले अुसे बढानेकी ओर हमारा प्रयत्न होना चाहिये। धर्मको यदि हम राजनीतिक पक्ष-विपक्षमें फसने देंगे तो अुसमें दुर्गन्ध पैदा होने लगेगी और हमारा महान कार्य देखते ही देखते नष्ट हो जायगा।"

गुरुजीने मेरी बात ध्यानसे सुनी और अन्तमें अितना ही बोले "महात्माजीने मुझे बहुतसी सूचनाअें दी थीं और कअी बातोंके बारेमें चेताया भी था। अुनका महत्त्व अब समझमें आ रहा है। अब मैं अपनी सारी शक्ति विश्वशांतिके लिअे ही लगानेवाला हूं। अमुक धर्म या अमुक पंथका आग्रह रखकर कुछ नहीं करूंगा।"

हम जिनके यहां रहते हैं वे लोग आजकल बाहर गये हुअे हैं। अिसलिअे हमारे लिअे खाना पकानेका काम सुमिको-सान नामकी अेक लडकी करती है। नागासाकी जानेसे पहले टोकियोमें जिन भक्तके यहां हमने दो घंटे बिताये थे अुन्हींकी यह लडकी है। यह साधारण ठीक पढी हुअी है और धर्मके प्रति श्रद्धा रखती है। सुमिको-सानका नाम

मैंने सुमित्रा रखा और रामायणकी सुमित्राके विषयमें अुसे थोडी जानकारी दी। अिसका कुछ दिनोमें ही विवाह होनेवाला है। मैंने अुससे विनोदमें कहा कि विवाहसे पहले तुम अपने पतिसे वचन ले लेना कि वे तुम्हे भारत ले जावे तो ही तुम अुनसे विवाह करोगी। मैंने जब अुससे पूछा कि "सुमित्रा नाम तुम्हें पसन्द है?" तब वह हसकर बोली कि "यदि भारत आअी तो अिस नामको धारण कर लूगी।" टोकियोसे निकलनेके पहले अुसने मेरे हस्ताक्षर मागे। मैंने अुसे अेक गुजराती कविकी दो पक्तियोका हिन्दी अनुवाद करके लिख दिया।

अब तो आखिर जागतिक परिषद् पूरी हुअी। साथ ही हमारा जापान-भ्रमण भी पूरा हुआ। अब केवल पी० अी० अेन० वालोसे मिलना और भारतके राजदूत श्री झाके यहा भोजन करना शेष है।

१७–८–'५७

आज यहाका अन्तिम दिन है। आधी रातसे पहले ही हम टोकियो छोडकर अुड़ चलेंगे। अुडनेसे पहले आजके कार्यक्रमका कुछ हाल लिख दू। अुसके बादकी बातें सवेरे हागकाग आनेसे पहले ही लिख डालूगा। यह पत्र वहीसे रवाना होगा।

सुबहका सारा समय तो सामान बाधनेमें ही गया। अिस यात्रामें भी मैंने पहलेसे ही निश्चित कर लिया था कि मैं सामान सभालने, बाधने या खोलनेकी ओर बिलकुल भी ध्यान नही दूगा। बहनोको जो सूझे सो ठीक। हवाअी जहाजकी यात्रामे जितना सामान साथ लिया जा सकता है अुतना साथ लेकर बाकीका सामान दो पेटियोमें बन्द करके समुद्रसे भेजनेके लिअे ओीमाओ-सानको सौप दिया है।

दोपहरको भारतीय मण्डलके सभी सदस्योका भारतीय राजदूत श्री झाके यहा खाना था। श्री झासे मैं आज पहली बार ही मिला। वे बहुत ही मिलनसार और मीठे स्वभावके है। आये हुअे सब लोगोके साथ परिचय हो जानेके बाद श्री झा और मैं बगीचेमें जाकर बैठे और बातोमें लग गये। सबसे पहले मैंने अुनके बगीचेकी प्रशसा की। हमारे यहा मकानके पीछे सुन्दर घास अुगाकर तृणस्थली (लॉन) रखनेका रिवाज है। यहा भी वैसी ही तृणस्थली रखकर अुसके आसपास जापानी

ढगका वगीचा लगाया हुआ है। दो अभिरुचियोंका अैसा मेल अत्यंत सुविधाजनक और आनंददायी था। अिवरसे अुधर यदि चक्कर लगाने हों तो तृणस्थलीका अुपयोग कीजिये, और यदि प्रकृतिके साथ गुफ्तगू करनी हो तो जापानी वगीचा सेवामें हाजिर है!

दो संस्कृतियोंका अैसा सुभग मिश्रण बहुतसे लोगोंको अनुकरणीय लग सकता है। लेकिन जरा सोचने पर मुझे लगा कि अिसमें जापानी वगीचेको कुछ गौण स्थान प्राप्त होता है यह ठीक नहीं है। मेरा यही भाव अनायास ही मेरे अूपरके वाक्यमें आ गया है "वगीचा सेवामें हाजिर!" मैं तो मानता हूं कि अेक संस्कृतिकी चीज दूसरी संस्कृतिमें सम्मिलित करते समय अितना विवेक तो रखना ही चाहिये कि किसीकी भी प्रतिष्ठा कम न हो।

श्री झासे निप्पोनकी शिक्षा-पद्धतिके विषयमें बहुत कुछ जाननेको मिला। अुन्होंने अिसका गहरा अध्ययन किया है। जापानी स्वभावके विषयमें चर्चा करते हुअे अुन्होंने बताया कि यह प्रजा बडी विवेकशील है। अिसीलिअे प्रत्येक प्रसंग पर अपना पूरा-पूरा असर डालनेमें ये लोग सफल होते हैं। श्री झाके यहांका स्नेह-सम्मेलन बडा ही अच्छा रहा। अिस प्रसंग पर बुलाये हुअे जापानी भाअियोंके परिचयसे मुझे बडी खुशी हुअी। वे लोग अंग्रेजी जानते थे, अिसलिअे खुलकर बातें भी हो सकीं। अुनमें से अेक सज्जनके साथ मेरा बीस-पच्चीस दिन पुराना परिचय होनेके कारण अुन्होंने पी० अी० अेन० क्लबके लोगोंसे मिलनेके लिअे मुझे 'मैयोकेन' जलपान-गृहमें ले जानेकी जिम्मेदारी अुठाअी। यह अुपाहार-गृह मारुनोअुची नामकी अेक विशाल अिमारतकी नवीं मंजिल पर था। वहां पी० अी० अेन० की प्रधान मंत्राणी श्रीमती योका मात्सुओकाने दो साहित्यकारोंको मुझसे मिलनेके लिअे बुलाया था। अेक थे कवि शिम्पेअी कुसानो और दूसरे थे कथाकार जून टाकामी। जापानी हरी चाय पीते-पीते हमने बहुतसी बातें कीं। श्री झाके यहां खानेके बाद और कुछ खानेकी गुंजाअिश भी नहीं थी। वे दो सज्जन भी तीन बजे कुछ खानेके लिअे अुत्सुक नहीं दिखाअी दिये। मैं अंग्रेजीमें बोल रहा था। और श्रीमती योका मात्सुओका

अुसका अनुवाद करके समझा रही थी। बातें तो बहुत हुअी लेकिन अुसमें से कुछ खास निष्पन्न नही हुआ।

कभी कभी भाषाकी कठिनाअीके कारण हम पूछते है अेक बात और जवाब मिलता है किसी दूसरी बातका। अेक-दो किताबोंके विषयमें अुन्होंने सिफारिश की; अुनके नाम मैंने लिख लिये · Bunsho Rokiju, Edited by Hokiichi Hanawa. यह अेक विशाल लेख-संग्रह है, अितना ही मैं याद रख सका हू। दूसरे ग्रन्थका नाम था Koji-Ki महाराष्ट्रके 'बखर' के समान यह अेक अैतिहासिक ग्रन्थ है। ये लोग अुसे गद्य महाकाव्य मानते है। श्रीमती मात्सुओकाकी आत्मकथा मैंने खरीद ली।

पी० ओ० अेन० वालोंसे मिलकर जब मैं घर आया तो कलके जापानी रेडियोवाले आभार-प्रदर्शनका अेक पत्र और अेक सुन्दर भेंट लेकर आये। पूछने पर अुन्होंने बताया कि अुस पैकेटमें सिगरेट रखनेका अेक चादीका डिब्बा है, जिस पर सुन्दर कलाका काम है। मैंने बताया कि मुझे बीड़ी-तम्बाकूका व्यसन नही है। मेरा बडा लड़का जरूर अिसका शौकीन है। अुसे यह डिब्बा दू तो वह खुश होगा। लेकिन तम्बाकूका विरोध करनेवाला मैं अैसी चीज लू और अपने लडकेको दू, यह शोभा नही देता। वे समझ गये। पहलेसे पूछा नही अिस 'अविवेक' के लिअे अुन्होंने क्षमा मागी और वापस जाकर वे अेक सुन्दर लकडीकी तश्तरी (ट्रे) ले आये। मैंने अुन्हें धन्यवाद दिये और अुसे ले लिया।

यात्रा पर जानेवाले मनुष्यकी सुविधा-असुविधाका जिनको खयाल होता है, वे ही यात्रियोंको जाते वक्त अपने यहा खानेके लिअे पहलेसे निमत्रण दे रखते हैं। श्री हेजमाडीने हमसे कहा कि आप अपना सब सामान बाधकर दूतावासके अेक कर्मचारीको सौंप दें और फिर आप तीनों हमारे यहा खानेके लिअे आ जायें। आखिर तक हम बातें करेंगे और फिर मैं आपको अपनी मोटरमें हानेडा तक पहुंचा आअूगा।

अितना सुविधाजनक निमंत्रण और वह भी अितने सज्जन व रसिक लोगोंसे मिला हुआ! फिर भला अुसे कौन छोड़ता?

हमने अुनके यहा जाकर वडे आरामसे खाना खाया। वाहरके और कोअी नही थे अिसलिअे खूब वातें हुअी और हम आरामसे हानेडा पहुच गये। यह रास्ता भी अैसा था कि टोकियो शहरके पुराने भागका वहुतसा हिस्सा हम फिरसे देख सके। पुरानी वड़ी-वडी दीवारें, पुराने ढगके दरवाजे और पुराने ही किस्मके घर देखकर मुझे वडा आश्चर्य हुआ। पिछले महायुद्धमे शत्रुने जिस शहरको पूरा तहस-नहस कर दिया था, फिर भी अुसका यह पुराना हिस्सा सावित रह गया, यह अेक आश्चर्यकी ही वात थी।

हम हवाअी अड्डे पर पहुचे। वहा अीमाअी-सान, तारुसे-सान, सुमीको-सान और दूसरे वहुतसे लोग हमें विदाअी देनेके लिअे अेकत्रित हुअे थे। जव तक साथ रह सकते थे तव तक साथ रहे और अुसके वाद वे सव नजदीकके अेक पुल पर चढ गये। वहासे पक्तिवद्ध खडे होकर चमडेके पखे वजाते-वजाते अुन्होने हमें अन्तिम विदा दी। मुझे विश्वास है कि अुनके हृदय भी हमारे जैसे ही भारी हो गये थे। करीव अेक महीनेकी मधुर मेहमानी चखकर हमने अेक समर्थ, सस्कारी और वड़ी ही प्रेमालु प्रजासे विदा ली। किन्तु अुनका प्रेम और अुनके प्रति आत्मीयताकी कीमती और भारी भेंट हमने अपने साथ रख ली। जिसका हवाअी अड्डे पर वजन करनेकी जरूरत नही थी, वरना तो हमारा हवाअी सफर वही रुक जाता। साढे ग्यारह हो गये। वारहका घटा वजते ही दिन वदलता है। पर अुससे पहले ही हमने जापानकी धरती छोड दी और दक्षिणकी ओर प्रयाण किया। जव तक टोकियोके दीये दिखाअी देते रहे तव तक हमारी आखें जहाजकी खिडकीसे ही चिपकी रही। मध्य-रात्रि हो जाने पर भी हृदयकी मीठी अस्वस्थताके कारण नीद नही आअी। आखिर जव शरीर विलकुल थक गया, तव निद्रादेवीने अधिकार किया और हमें स्वप्न-सृष्टिमें पहुचा दिया।

अीश्वरकी वडी कृपा है कि मै दो वार अेशियाके अिस अद्भुत देशका दर्शन कर सका। पहली वार तुम साथ थी। दूसरी वार जो देखा-जाना, अनुभव किया और सोचा अुसको तफसीलवार पत्रोंके द्वारा वारवार भेजकर लिख यात्राका खयाल तुम्हें दे सका हू। अिसलिअे

मैं तो कहूंगा कि जापानके "हमने दो वार दर्शन किये।" फर्क केवल अितना ही है कि पहली यात्रा तुमने खुद मेरे साथ की थी और यह दूसरी यात्रा, मानस-यात्रा होनेके कारण, तुमने मेरे द्वारा की है। हम सब आशा रखते हैं कि भारतके लोग प्रतिवर्ष अधिकसे अधिक सख्यामें निप्पोन देशमें आयेंगे और निप्पोनके लोग भी ज्यादासे ज्यादा सख्यामें बुद्ध भगवानकी जन्मभूमि व पुण्यभूमि भारतमें आयेंगे और अिन दो प्रजाओंका सहयोग दुनियाके लिअे कल्याणकारी सिद्ध होगा।

३१

निप्पोन : वर्तमान और भावी

कोवे (जापान),
१०-८-'५७

मेरे अुस भाषणकी दो नकलें और दूसरे अेक-दो पत्रोंकी नकलें, जो तुमने टोकियोके हमारे दूतावासके मारफत भेजी, मिली। लेकिन अुनमें तुम्हारा अथवा चि० चन्दनका पत्र कैसे नहीं है? तुम अर्थशास्त्री हो, फिर भी शब्दोंकी वचत करनेकी तो तुम्हारी आदत नहीं थी। वहुत करके तुम्हारा समय-दारिद्र्य ही अिसका कारण होगा।

चि० सरोज तो रोज अेक पत्र भेजती है। अुन पत्रोंमें सब लोगोंके समाचार काफी विस्तारमें होते हैं। अुसकी तवीयत अब सुधरने लगी है।

चि० मजु अवनि मेहताकी पत्नी है यह तुम जानते हो, लेकिन तुम्हें यह नहीं मालूम होगा कि वह हमारे कान्ति और जयन्ती मेहताकी वहन भी है। छोटे वच्चोंको छोड़कर अितने दिनका और लम्बा सफर करना ठीक है या नहीं, अैसी अुधेड़-बुन अुसके मनमें चल रही थी और वह निर्णय नहीं कर पा रही थी। तव अुसकी सासने अुसे डपटकर कहा "बड़ी आअी है वच्चोंकी चिंता करनेवाली! घरमें जैसे हम कोअी है ही नहीं! कहती हूं कि विलकुल निश्चिन्त होकर

चली जा। दूर-दूरके देश देखनेका यह मौका मिला है, अुसे खोना नही चाहिये।" मजुको अुसकी मासके सुन्दर और मधुर पत्र मिलते रहते है। अुसकी सास तो मानो साक्षात् मा ही है।

चि० राजा और कुमार मजेमें होगे। चि० गैलाके सुन्दर-सुन्दर पत्र आते होगे।

पूरी यात्रामें हमारी तबीयत खूब अच्छी रही। हमारे खाने-पीनेकी, घूमने-फिरनेकी और सोने-अुठनेकी व्यवस्था अुत्तम है। समुद्रकी मछलिया खानेको हम तैयार नही है, लेकिन समुद्रमें पैदा होनेवाली चित्र-विचित्र वनस्पतियोकी साग-भाजी मुझे भाने लगी है। अिस तरह हमारी यात्रा खूब अच्छी चल रही है। निप्पोनके ठेठ अुत्तरसे ठीक दक्षिण तकका सारा मुल्क हमने जी भरकर देखा। अिस बार चार आखें और मेरी मददमें है। राजाओको चारचक्षु कहते है। मै अिस नये अर्थमें चार-चक्षु अथवा षट्चक्षु बन गया हू। कोअी भी बात षट्कर्णी होती है तो वह छिपी न रहकर सारी दुनियामें फैल जाती है। तब षट्चक्षु दर्शन कहा तक पहुचेगा, यह विचारणीय है। हम तीनोकी तबीयत अुत्तम है। चि० रेवतीको शक होने लगा है कि अुसका वजन कम बतानेवाले काटे शायद ठीक ही हो।

मैंने देखा है कि निप्पोनमें अितनी कम जमीन पर अितनी लोक-सख्या निभानेके लिअे अिन लोगोको छोटे-बडे अनेक अुद्योग बढाने पडे है। परिणाम यह हुआ है कि अिस देशके गाव बडी तेजीसे शहरोका रूप धारण करने लगे है। गावमें बिजली पहुच जाय, हर तरहकी सुघडता हो और लोगोको पुस्तकालय, सग्रहालय (म्यूज़ियम), नाट्य-गृह आदिकी सुविधाअें मिले, यह तो मै चाहता हू। लेकिन खेतोके साथका और जानवरोके साथका सम्बन्ध हमेशा कायम रहना चाहिये। बस्ती बहुत घनी नही होनी चाहिये यह मेरा आदर्श है। निप्पोनमें अब शहरी सस्कृतिके गुण-दोष आने लगे है। जापानी अितिहास और साहित्यका विचार करते हुअे मुझे तो लगता है कि अिस जातिके स्वभावमें शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन दोनोका मिश्रण है। अिस राष्ट्रीय पूजीके भरोसे ही अिस देशने पिछले सौ वर्षोमें अितनी प्रगतिकी है।

ये लोग यदि पूरे-पूरे शहरी बन जाय तो अिनकी अमुक शक्ति नष्ट हो जायगी। फिर तो जिसे मै 'प्रवाल सस्कृति' कहता हू वही बढ सकती है।

प्रवाल सस्कृति — यह अेक नया शब्द मैने गढा है। अिसकी कल्पना भी नअी है। अिसलिअे अिसे जरा समझा दू।

समुद्रमे प्रवालके कीडे बहुत ही छोटे होते है, लेकिन वे करोडो की संख्यामें होते है। अिसलिअे परस्पर सहकारके द्वारा वे बडे-बड़े घर बनाते है। पेड और अुनकी शाखा-प्रशाखाओ जैसे अुनके सफेद और लाल घर हम सग्रहालयोमे देखते है। ये स्पजके आकारके होते है। ये समुद्रकी तलहटीसे घर बाधना शुरू करते है और अूपर बढ़ते-बढते समुद्रकी सतह तक पहुच जाते है। तब अुनके सिरका अेक अगूठी जैसा गोल टापू बन जाता है, जिसे अग्रेजीमें 'अेटोल' कहते है। (यह सब तुम तो जानते हो। लेकिन चि० चन्दन यह पत्र राजा और कुमारको पढकर सुनायेगी। अुनकी सुविधाके लिअे यह जरा विस्तारमें लिखा है।) अिस अगूठी जैसे द्वीपके अन्दर जो समुद्रका हिस्सा रहता वह धीरे धीरे मीठे पानीका सरोवर बन जाता है। फिर पक्षी आते है और अिस द्वीप पर वनस्पतिके बीज गिरा देते है। अिस तरह द्वीप पर जगल बढनेके बाद मनुष्य और जानवर भी यहा आ बसते है।

अिस तरह अगूठी जैसे द्वीप बनानेका धधा ये प्रवालके कीडे करते है। समुद्रसे कैल्शियम प्राप्त करना अुसे, लेकर समुद्रकी तलहटीसे बडे-बड़े प्रवालीय पेड तैयार करना और फिर अुनका विस्तार करना यही अिन कीडोका जीवन है। विस्तार बढानेके अलावा और कोअी भी विविधता या जीवनानन्द ये लोग नही जानते। अुनकी मेहनतका लाभ भले ही फिर कोअी दूसरी सस्कृति अुठावे। अैसी अिन प्रवालके कीड़ोकी केवल विस्तार-परायण, विविधता-शून्य और आनन्द-विहीन लेकिन सुघड़ सस्कृतिको मै प्रवाल सस्कृति कहता हू। तुम्हें संस्कृतकी वह पक्ति याद होगी — "अति-विस्तार-विस्तीर्णम् तद् भवेत न चिरायुषम्।" किसी वस्तुका अनुपातसे अधिक अमर्याद विस्तार बढे तब अुस वस्तुकी आयु कम होती ही है। पश्चिममें जितनी हद तक प्रवाल सस्कृति विकसित हुअी है अुस हद तक अुसकी आयु घटी है। यदि यह सस्कृति समयसे

चेत जाय व सुधर जाय तो अच्छा; नही तो अुस पर अूपरवाला नियम लागू होगा ही। चीन या अमरीका जैसे विशाल देशोंकी बात और है, लेकिन ब्रिटेन या जापान जैसी द्वीपी (अिन्सुलर) संस्कृतिके लिअे अति-विस्तार घातक साबित होगा।

द्वीपी प्रजामें आत्म-विश्वास, अुद्योगिता और महत्त्वाकाक्षा बढे तो अुसका विकास बहुत जल्दी और अद्‌भुत रीतिसे होता है। ब्रिटेन और निप्पोन अुसके अुत्तम नमूने है। लेकिन अुसके लिअे प्रजा अेकजीव होनी चाहिये। हमारे यहा लकाकी प्रजा चाहे तो अैसा ही सामर्थ्य प्राप्त कर सकती है। लेकिन अुसकी बात अभी रहने दें।

तीन वर्ष पहले हम जापान आये थे तब क्वेकर बहन श्रीमती ग्लेडिस ओवेन हमारे साथ ही रही थी। हमारे बीच काफी बातचीत हुअी थी। अेक दिन किसीको मेरा परिचय देते हुअे अुन्होने कहा . 'Kaka Saheb is world-minded' तुरन्त ही अुन्होने अुसे और स्पष्ट कर दिया · 'Not worldly-minded, but world-minded' अुनकी बात बिना सकोच या अभिमानके मैं स्वीकार करनेको तैयार हू । मै विश्वप्रेमी हूं। जहा जाता हू वहाके लोगोंके सुख-दुखके साथ समरस होनेमे मुझे कठिनाअी नही होती। प्रत्येक प्रजाकी आकाक्षा मै समझ सकता हू और अुसे अपने मनमें शिष्टरूप भी दे सकता हू। फिर अुस प्रजाको अैसा रूप स्वीकार करनेमें और अपनानेमें स्वाभाविक रूपसे कोअी कठिनाअी नही होती।

खैर! जिस प्रदेशमें हर जगह मै आत्मीयतासे हिल-मिल सका हूं, यद्यपि लोगोंके साथका मेरा सम्पर्क भाषाकी असुविधाके कारण केवल भिक्षु ओीसाओी-सानके मारफत ही सधा है। हमारे यहां लगभग सब जगह अंग्रेजी जाननेवाले लोग मिलते है । यहा अैसा नहीं है। भले-भले लोग अग्रेजी नही जानते। जो अग्रेजी जाननेका दावा करते है, अुनमे से कअियोंकी अग्रेजी हमारे लिअे जापानी भाषाके जैसी ही अगम्य है।*

---

* मुझे विश्वास हो गया है कि अग्रेजीके द्वारा जापानकी प्रजा, अुनका हृदय, अुनकी विचार-प्रणाली अथवा संस्कृति अिनमें से कुछ भी अच्छी तरह जाना नहीं जा सकता।

अीश्वरकी यह कितनी बडी कृपा है कि हृदयकी भाषा आखोंके द्वारा व्यक्त हो सकती है। हम यदि जानवरोंके प्रति प्रेम करें तो वे भी हमारी आखोसे ही यह पहचान लेते है। फिर मनुष्य तो आखिर मनुष्य ही ठहरा।

यहाका प्राकृतिक सौंदर्य, प्रजाका पुरुषार्थ, लोक-जीवनकी रसिकता, सारे समाजकी रग-रगमें समायी हुअी तत्रनिष्ठा और बौद्धधर्म द्वारा चीन, कोरिया व जापान तीनो देशोकी सस्कृतिके साथ समरस होकर धारण किया हुआ नित्य नूतन स्वरूप — अिन सबका अध्ययन व चिंतन करते करते मैं तल्लीन हो जाता हू।

किसी भी प्रजाके जीवनमें भाग्यके पलटे तो आते ही रहते है। यह पुरुषार्थी और स्वाभिमानी प्रजा आज अमरीकाके प्रभावसे दबी हुअी है। लेकिन यह स्थिति हमेशा टिकनेवाली नही है। यह प्रजा यदि गलत रास्ते न जाय तो अिसके भाग्यकी कोअी सीमा नही है।

गूढ चिंतनकी आदत अिस प्रजाको भले ही न हो, फिर भी कोअी चीज सूझे या गले अुतरे कि तुरन्त अुसे आत्मसात् करनेकी जबरदस्त शक्ति अिसमें है। द्वीपी प्रजाका स्वभाव ही अैसा होता है कि वह विश्वप्रेमका आदर्श सरलतासे नही अपना सकती। लेकिन यदि यह आदर्श अुसके गले अुतरे और अुसरो सब जाय, तो अुसके हाथों युगकार्य अवश्य सम्पन्न हो सकता है। बौद्ध-धर्म और ख्रिस्ती धर्म, दोनो मूलमें ही विश्वप्रेमी है। अिस प्रजाको अुस अुत्तराधिकारकी मदद पूरी तरहसे मिल सकती है। लेकिन कठिनाअी यह है कि कलामें क्या और जीवनमें क्या, यह प्रजा आकृति-पूजक (worshipper of form) है। अिनकी समाज-व्यवस्था, अिनकी तत्रनिष्ठा (डिसीप्लिन), अिनके बगीचे और चित्रकला वे सब आकृति-पूजामें से ही विकसित हुअे हैं। अब यह चीज समझमें आने-जैसी है कि आकृति-परायण प्रजा सहज ही अनुकरणशील बन जाती है और अुसमें असाधारण सफलता भी प्राप्त करती है।

अितिहास-विधाताकी कृपा होगी और यदि अिस प्रजामें युगानुकूल नवजीवन जाग्रत होगा, तो वह आकृतिका बधन छोड़कर जीवन-

परायण, आत्म-परायण और विश्वात्मैक्य-परायण हो सकेगी। अिनके बीच फैला हुआ महायान बौद्ध-धर्म यदि नवजीवन धारण करे, तो जापानी संस्कृतिको नवचैतन्य प्रदान कर सकेगा।

भोग-विलासकी अुपासना करनेवाले शहरी लोग समयसे नही चेते तो वे संस्कृति-विहीन हो जायेंगे। और यदि अैसा हुआ तो अिस प्रजाको फिरसे जीवन प्राप्त करनेमें बडी कठिनाअी होगी। कठिनाअी क्या — बिलकुल क-ख-ग से ही प्रारम्भ करना होगा।

अभी टोकियो शहरमें बसमें जाते हुअे अेक सज्जनके साथ बातें हुअी। मैंने कहा "टोकियो अब दुनियाका सबसे बडा शहर हो गया है। न्यूयार्क, वाशिंगटन, लंदन और बर्लिनसे भी बड़ा। अिसके लिअे जापानी लोग जरूर गर्व कर सकते हैं। लेकिन मुझे यह चिह्न अच्छा नही दिखाअी देता।" मेरे सहयात्रीने आश्चर्य करते हुअे कहा, "आपको यह क्यो नही पसन्द आता?" मैंने कहा · "अैसे शहर आसपासके गावोंके सेवक अथवा रक्षक होनेके बदले अुनके भक्षक ही बन जाते है। अिनके जीवनका फिर कोअी खास अुद्देश्य नही रहता। केवल बढते जाना बस अितना ही ये जानते हैं। सुख-विलासमें पड़े रहने पर भी वे जीवनका सच्चा आनन्द खो बैठते है। अुनका मानस भी विकृत हो जाता है। विस्तारके साथ सत्ताका लोभ जाग्रत होता है और बढता जाता है। वे शान्ति या संतोषका अनुभव तो कर ही नही सकते।"

अेक तरफ तो अैसे विस्तारको मैं भला-बुरा कहता हू और दूसरी तरफ मनमें कामना करता हू कि जापानकी यात्रा पूरी होते ही अनन्त आकाशके नीचे अनन्त सागरका विस्तार देखूगा और हवाअी जहाजके जैसे छोटेसे घेरेमें अनेक देशोंके बडे-बड़े लोगोंको अेक साथ यात्रा करते हुअे देखकर अनन्त शक्ति और अनन्त संकल्पवाले विराट मानवका दर्शन भी करूगा!

समझमें नही आता कि बुद्धि क्या सोचती है और हृदय क्या चाहता है!